शरहुस्सुदूर

क़ब्र के हालात

अल्लामा जलालुद्दीन स्यूती अलैहिर्रहमा

रज़वी किताब घर-दिल्ली-६

शैतान सबसे ज्यादा खुश तब होता है जब वो किसी को इल्मे दीन हासिल करने से रोकता है

एक रोज़ अस्र के बाद शैतान ने अपना तख़्त बिछाया, और शयातीन ने अपनी अपनी कार गुज़ारी की रिपोर्ट पेश करना शुरू की किसी ने कहा कि मैंने इतनी शराब पिलाई, किसी ने कहा मैंने इतने ज़िना कराए, शैतान ने सब की सुनी, एक ने कहा कि मैने एक तालिबे इल्म को पढ़ने से बाज़ रखा, शैतान सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा और उस को गले से लगा लिया और कहा, "अन् त तूने काम किया तूने काम किया, दूसरे शयातीन यह कैफियत देख कर जल गए कि उन्होंने इतने बड़े काम किये, उन पर तो शैतान खुश नहीं हुआ और इस मअमूली से काम करने वाले पर इतना खुश हो गया। शैतान बोला तुम्हें नहीं मलूम जो कुछ तुमने किया सब इसी का सदक़ा है उन्हें इल्म होता तो वह गुनाह नहीं करते, लो मैं तुम्हें दिखाता हूँ, वह कौनसी जगह है जहाँ सब से बड़ा आबिद रहता है मगर वह आलिम नहीं और वहाँ एक आलिम भी रहता हो तो उन्होंने एक मक़ाम का नाम लिया, सुबह को सूरज निकलने से पहले शयातीन को लिए हुए शैतान उस मकाम पर पहुँचा, शयातीन छुपे रहे और यह इन्सान की शक्ल बनकर रास्त में खड़ा हो गया, आबिद साहिब की नमाज़ तहज्जुद के बद फर्ज़ के वास्ते मस्जिद की तरफ तशरीफ लाए रास्ते में शैतान खड़ा था, अस्सलामु अलैकुम, व अलैकुम सलाम के बद कहा हज़रत मुझे एक मसला पूछना है आबिद साहिब ने जल्दी पूछों, मुझे नमाज़ के लिए मस्जिद में जाना है, शैतान ने जेब से एक छोटी सी शीशी निकाली और पूछा, क्या अल्लाह क़ादिर है कि उन सारे आसमानों और ज़मीनों को इस छोटी सी शीशी में दाखिल करदे, आबिद साहिब ने सोचा और कहा कहाँ इतने बड़े आसमान और ज़मीन और कहाँ यह छोटी सी शीशी बोला बस यही पूछना था तश्रीफ़ ले जाईए और शयातीन से कहा, देखो मैंने इस की राह मार दी उसको अल्लाह की कुदरत पर ही ईमान नहीं इबादत किस काम की, फिर सूरज निकलने के क़रीब एक आलिम जल्दी जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए शैतान ने कहा अस्सलामु अलैकुम मुझे एक मसला पूछना है आलिम ने फ़रमाया, पूछो जल्द पूछो नमाज़ का वक़्त कम है, उसने शीशी दिखाकर वही सवाल किया, आलिम साहिब ने फ़रमाया मलऊन तू शैतान मालूम होता है, अरे वह क़ादिर है कि यह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सुई के नाके के अंदर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाखिल करदे, "इन्नल्लाह अला कुल्लि शै इन क़दीर आलिम साहिब के तशरीफ़ ले जाने के बद शैतान ने शयातीन से कहा, देखा यह इल्म ही की बरकत है और वह जिसने इल्म हासिल करने वाले को पढ़ने से रोका उसने बहुत बड़ा काम किया ताकि वह न पढ़े और न आलिम बन सके।
(मलफूजाते आला हज़रत जि:3, स:21-22)

सबक: अब तो शैतान को खुश करने वाला न बनो दीन कि किताबो को पढो शैतान से इल्म के जरिये लड़ो, ईमान बचने के लिए दीन का इल्म बहुत बड़ी जरूरी और मुफीद चीज़ है, शैतान ऐसे इल्म वालो से बहुत डरता है क्यों कि इल्म वाले अपने इल्म की वजह से शैतान के जाल में नहीं फंसता, बिगैर इल्म के जुहद व इबादत भी ख़तरे में रहती है, खूद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है
"फ़क़ीहुन वाहिदुन अशद्दु अल-शैतानि मिन-अल्फि आबिदिन" यअ़नी शैतान पर एक आलिम हज़ार आबिद से भी ज़्यादा भारी है।"
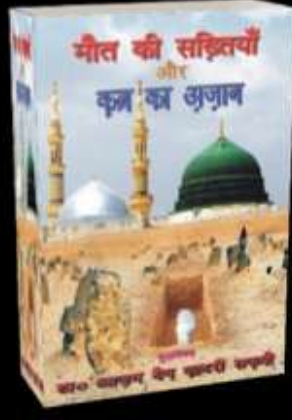
शरहुस्सुदूर

क़ब्र के हालात

मुसन्निफ़

अल्लामा मुहम्मद जलालुद्दीन सयूती अलैहिर्रहमा

मुरतजम

सैयद शुजाअत अली क़ादरी

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 Phone : 011 - 23264524

नाम किताब : शरहुस्सुदूर (क़ब्र के हालात)

लेखक : अल्लामा मुहम्मद जलालुद्दीन सुयूती

नाशिर : रज़वी किताब घर, दिल्ली-6

बएहतेमाम : हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6

प्रेस : रज़ा आफसेट प्रेस, दिल्ली-6

हिन्दी एडीशन : पहली बार 2013

सफ़हात : 304

तादाद : 1100

क़ीमत :

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

मुसन्निफ़ के हालात

इस किताब के मुसन्निफ दुनियाए इस्लाम के माया नाज़ मुफरिसर व मुहद्दिस अबुल-फज़्ल अब्दुर्रहमान इब्ने कमाल अबू बकर जलालुद्दीन हिज़रमी शाफई रहमतुल्लाह अलैह हैं। (जो दुनिया में अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रमा के नाम से मशहूर हैं) आप मादरे इल्म क़ाहिरा (मिस्र) में ८४६ हिज. में पैदा हुए। मां-बाप का साया बचपन में ही उठ गया फिर भी आप शाहराहे इल्म पर तेज़ी से चलते रहे और आठ साल से कम उम्र में कुरआने करीम हिफ़्ज़ कर लिया। फिर उम्दा, मिन्हाज, अल-फिक़्हुल-उसूल, और अल्फ़िया इब्ने मालिक हिफ़्ज़ कर लीं। ८७१ हिज. में मसनदे इफ़्ता पर मुतमक्किन हुए और फिर मैदाने तस्नीफ में जत्वादे क़लम को दौड़ाया तो हर हद को उबूर कर गये। आपकी तमाम तसानीफ पांच सौ से ज़ाइद हैं। आपको आठ उलूम में महारत और कमाल हासिल था वह उलूम यह हैं। १. तफ़सीर। २. हदीस। ३. फ़िक्ह! ४. नह्व। ५. मआनी। ६. बदीअ। ७. बयान। ८. लुग़त।

आपने शाम, हिजाज़, यमन, हिन्द, मग़्रिब और तकरूर की सैयाही की। इस तरह आप किताबी और नीज़ मुशाहिदाती दोनों क़िस्मों के उलूम पर हावी थे। शाहाबुद्दीन क़स्तलानी आपके हमअस्र थे, आपकी किताबों से नक़ल करते लेकिन हवाला न देते। चुनांचे आपकी पूरी एक तस्नीफ अपनी तरफ मन्सूब कर ली। चुनांचे तंग आ कर आपने एक मक़ाला लिखा जिसका नाम अल-फ़ारिक़ु बैनल-मुसन्निफ वस्सारिक़" चोर और मुसन्निफ को मुम्ताज़ करने वाला मक़ाला।

तफ़सीर जलालैन शरीफ़ सूरः बक़र से सूरः असरा तक आप ही की है। और हर अरबी दारुल-उलूम में पढ़ाई जाती है। तारीखुल-खुलफा आप ही की किताब है और दर्से निज़ामी में दाख़िल है। दीगर तस्नीफात की फेहरिस्त बयान करने का यह मौक़ा नहीं। यह शाहबाज़ इल्म ६१२ हिज. में दुनियाए फानी से दारे बाक़ी को कूच कर गये। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। ज़ेरे नज़र किताब आपकी एक बेनज़ीर तस्नीफ है। यह इबरत व नसीहत का मुरक़्क़ा है। हर ख़ास व आम के लिए मुफीद है। खुसूसन वाइज़ीन के लिए बेश बहा तोहफा है। वअज़ व नसीहत और फज़ाइले आमाल के लिए बेहद मुफीद है। तरजमा में पूरी कोशिश की गई है कि सनद को भी ज़िक्र किया जाए और असल में क़तअ व बुरीद से कुल्ली तौर पर परहेज़ किया गया है और यह बजा तौर पर इस तरजमा की खुसूसियत है। ज़ुबान आसान और मतालिब पूरे आ गये हैं। वलिल्लाहिल-हम्द।

आख़िर में क़ारेईन से इस्तदआ है कि वह मेरी ग़ल्तियों को दर गुज़र फरमाएं और मेरे हक़ में तरक़्क़ी इल्म व अमल की दुआ फरमाएं।

इब्ने मसऊद

मुफ़्ती सैयद शुजाअत अली क़ादरी

मुफ़्ती दारुल-उलूम अम्जदिया आलमगीर रोड, कराची

खुतबा

तमाम तारीफें उस खुदा के लिए हैं जिसने जिसको चाहा गफलत की आंघ से बेदार फरमाया और जिसकी मुलाकात पसन्द फरमाई उसे मक़ामे इल्लीयीन की तरफ बुलाया, और उसके गुनाहों के बोझ खत्म किए हैं। मैं निहायत ही खुलूस से गवाही देता हूं कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं और मैं इस बात की भी गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं। वह बेहतरीन दीन के साथ भेजे गये और खुदा की मख़्सूस दोस्ती से सरफराज़ किए गये हैं। उन पर उनकी औलाद पर और उनके सियादत मआब, जलीलुल-क़द्र सहाबा पर दरूद व सलाम हो। यह वह शाफी किताब है इल्मे बरज़ख़ के बयान में जिसका लोगों को शिद्दत से इंतिज़ार था। मैं इसमें मुन्दरजा ज़ैल चीज़ें ज़िक्र करूंगा। मौत नीज़ उसकी फज़ीलत, मलकुल-मौत का हाल, उनके मददगारों का हाल, वक़्ते नज़अ् का हाल, रूह के बदन से जुदा होकर बारगाहे ईज़्दी में पहुंचने और दीगर अरवाह के साथ ठहर जाने का हाल, क़ब्र का हाल, उसकी तंगी, उसका अज़ाब, और उसमें नफअ् देने वाली चीज़ें, यह सब चीज़ें मरजुल-मौत व नफख़े सूर तक तफसील से बयान की जाएंगी। हवाले के तौर पर मरफूअ् अहादीस, मौकूफ़ आसार और मक़्तूअ् आसार पेश करूंगा जो कुतुबे हदीस से लिए गये हैं। इसमें अइम्म-ए-हदीस के कलाम पर एतमाद किया गया है, नीज़ तज़्किर-ए-कुरतबी में जो कुछ इस सिलसिले में है इसमें पूरी तन्क़ीह के साथ फवाइद का इज़ाफा करते हुए इस किताब में नक़ल करता हूं। मैंने उसका नाम रखा है "शरहुस्सुदूर बशरहे हालल-मौता वल-कुबूर" (मुर्दों और क़ब्रों के हालात की तशरीह से सीनों का खोलना) और अगर अल्लाह ने उम्र में बरकत दी तो इरादा है कि इसी के साथ एक किताब और शामिल करूं जिस में अलामाते क़यामत का ज़िक्र हो। और एक किताब और जिस में बेअ़स, क़यामत और जन्नत व दोज़ख़ का मुकम्मल बयान हो। खुदा अपने फज़्ल व करम से मेरी यह उम्मीद बर लाए।

अबू नईम ने मुजाहिद से अल्लाह तआला के इस क़ौल के बारे में कि "व मिन वराइहिम बरज़ख़ुन इला यौमे युबअ़सून।" नक़ल किया कि उस से मुराद मौत और मर कर जी उठने के दर्मियान की चीज़ें हैं।

मौत की इब्तिदा : (१) इब्ने अबी शौबा ने अपनी किताब मुसन्नफ में और इमाम अहमद ने जुहद में कहा कि हम से बयान किया हम्माद बिन सलमा ने और उन्होंने हबीब बिन शहीद से और उन्होंने हसन से उन्होंने कहा कि जब अल्लाह ने आदम और उनकी औलाद को पैदा किया तो फरिश्तों ने कहा कि ज़मीन में उनकी गुंजाइश नहीं, तो अल्लाह ने फरमाया कि मैं मौत पैदा करने वाला हूं, तो उन्होंने कहा तब तो उनकी ज़िन्दगी मुकद्दर और गदली हो जाएगी। तो अल्लाह ने फरमाया बेशक मैं उम्मीद को पैदा करने वाला हूं।

(२) अबू नईम ने हिलया में मुजाहिद से रिवायत किया कि अल्लाह ने जब आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा तो फरमाया कि वीराना होने के लिए बनाओ और मरने के लिए जनो!

माल या जिस्म में किसी मुसीबत की वजह से मौत की तमन्ना और दुआ करना जाइज़ नहीं

(१) शैख़ैन ने हज़रत अनस से रिवायत कि कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम में से कोई मुसीबत आने की वजह से मौत की तमन्ना न करे, और अगर तमन्ना ही करना है तो यह कह ले ऐ अल्लाह! जब तक मेरे लिए ज़िन्दगी बेहतर है, तू ज़िन्दा रख और जब मेरे लिए मौत में बेहतरी हो तो मौत दे।

(२) मुस्लिम ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया। तुम में से कोई मौत की तमन्ना न करे और उसको आने से पहले न बुलाए, क्योंकि जब कोई मर जाता है तो उसके आमाल भी ख़त्म हो जाते हैं और मोमिन के लिए ज़्यादती उम्र में भलाई है।

(३) बुख़ारी और निसाई ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम में से कोई मौत की तमन्ना न करे क्योंकि अगर नेक है तो उम्मीद है कि उसकी नेकियां ज़ाइद होंगी और अगर बद है तो शायद भलाई की तरफ लौट आए। सहाहे सित्ता में है। आतबनी फुलानुन। यह उस वक़्त कहा जाता है जब कोई शख़्स तक्लीफ देने के बजाए खुश करने लगे। इस्तअ़तब और आतबा एक ही माना में हैं।

(४) अहमद, बज़्ज़ार, अबू याला, हाकिम और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मौत की तमन्ना मत करो

क्योंकि नज़अ की हौलनाकी सख़्त है। इंसान की उम्र का ज़ाईद होना नेकबख़्ती है। मुम्किन है कि अल्लाह रुजूअ लाने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। (लुग़वी तश्रीह हज़फ़)

(५) शैख़ैन ने हज़रत अनस से रिवायत की। अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मौत की तमन्ना से मना न फरमाते तो हम तमन्ना करते।

(६) बुख़ारी ने कैस बिन अबी हाज़िम से रिवायत की कि हम हज़रत ख़ुबाब की अयादत को गये। आपको सात जगह आग से दाग़ा गया था। तो आपने फरमाया कि अगर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हम को मौत की दुआ करने से न रोकते तो मैं मौत की दुआ करता।

(७) मरुज़ी, क़ासिम से रिवायत करते हैं (जो हज़रत मुआविया के गुलाम थे) कि हज़रत साअद बिन अबी वक़ास ने मौत की तमन्ना की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुन रहे थे। आपने फरमाया मौत की तमन्ना न करो क्योंकि अगर अहले जन्नत से हो तो ज़िन्दगी बेहतर है और अगर अहले जहन्नम से हो तो क्यों जल्दी जाना चाहते हो।

(८) ख़तीब ने अपनी तारीख़ में इब्ने अब्बास से रिवायत कि कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम में से कोई भी मौत की तमन्ना न करे क्योंकि उसको पता नहीं कि उन से अगले जहान में अपने लिए क्या किया है ?

(९) अहमद, अबू यअ़्ला, तबरानी, हाकिम ने उम्मे फज़ल से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए और हज़रत अब्बास बीमार थे तो उन्होंने मौत की तमन्ना की। तो आपने फरमाया, ऐ चचा! मौत की तमन्ना न करो। क्योंकि अगर आप नेकोकार हैं तो देर से मरना और नेकियों का जाइद होना बेहतर है और अगर बदकार हैं तो देर से मरना और बुराइयों से तौबा कर लेना अच्छा है तो मौत की हरगिज़ तमन्ना न करो।

(१०) अहमद ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, तुम में से कोई भी मौत के आने से पहले उसकी तमन्ना न करे और उसको जब बुलाए जब अपने अमल पर भरोसा हो।

अल्लाह की इताअत में ज़िन्दगी लम्बी होने का बयान

(१) अहमद व तिर्मिज़ी (और उसको हाकिम ने सही कहा) ने अबू बकरह से रिवायत की कि एक शख़्स ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सबसे बेहतर कौन है? फरमाया कि जिसकी उम्र लम्बी हो और अमल अच्छा, फिर दरयाफ़्त किया, सबसे बुरा कौन है? फरमाया जिसकी उम्र लम्बी हो और अमल बुरा।

(२) हाकिम ने जाबिर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया। तुम में बेहतर वह है जिसकी उम्र लम्बी और अमल अच्छा हो। और अहमद ने अबू हुरैरा से भी यही रिवायत की।

(३) तबरानी ने उबादा बिन सामित से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया क्या मैं तुम्हें तुम्हारे सबसे बेहतर आदमी की ख़बर न दूं? सहाबा (रज़ि अल्लाहु अन्हुम) ने अर्ज़ की कि क्यों नहीं या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आपने फरमाया कि तुम में इस्लाम की हालत में जिसकी उम्र ज़ाइद हो और अच्छे काम करे।

(४) तबरानी ने औफ बिन मालिक से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को फरमाते हुए सुना कि मुसलमान की उम्र जब भी ज़ाइद होगी, उसके लिए बेहतर ही होगा।

(५) अहमद और इब्ने ज़ंजवीया ने अपनी तरग़ीब में अबू हुरैरा से रिवायत की कि क़ज़ाअ के दो शख़्स हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) पर ईमान लाए, उन में एक तो शहीद हो गया और दूसरा एक साल बाद तक ज़िन्दा रहा फिर मर गया। तलहा बिन अब्दुल्लाह कहते हैं मैंने देखा कि बाद में मरने वाला शहीद से भी पहले जन्नत में दाख़िल हो गया। सुबह को मैंने यह वाक़िया (हुज़ूर अलैहिस्सलाम) से अर्ज़ किया। आपने फरमाया, क्या उसने उसके बाद एक रमज़ान के रोज़े न रखे थे, और छः लाख रकअत नमाज़ और इतनी इतनी (इशारे से फरमाया) सुन्नतें न पढ़ी थीं?

(६) अहमद और बज़्ज़ार ने तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया अल्लाह के नज़्दीक उस शख़्स से ज़ाइद कोई अच्छा नहीं जो इस्लाम में बूढ़ा हो, क्योंकि तस्बीह व तक्बीर व तहलील ज़ाइद हो जाती है।

(७) अबू नईम ने राईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि मुसलमान की हर दिन की ज़िन्दगी ग़नीमत है क्योंकि वह उस में फराइज़, दीगर नमाज़ें और जो कुछ भी ज़िक्र व फिक्र मयस्सर होता है, करता है।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्राहीम बिन अबी अब्दह से रिवायत की वह कहते हैं कि जब मोमिन मरेगा तो दुनिया में आने की तमन्ना करेगा ताकि खुदा की तक्बीर, तहलील और तस्बीह कर सके।

दीन में फितना के डर से मौत की आरज़ू और दुआ का जवाज़

(१) मालिक ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि क़्यामत उस वक़्त तक नहीं आएगी जब तक कि क़बर के पास से गुज़रने वाला यह न कहेगा। ऐ काश इसकी जगह मैं होता।

(२) मालिक और बज़्ज़ार ने सौबान से रिवायत की कि नबी करीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नेक कामों के करने और बुरे कामों के छोड़ने और मिस्कीनों से मुहब्बत करने की दुआ करता हूं और तू जब लोगों को आज़माइश में डालना चाहे तो मुझे आज़माइश में डाले बग़ैर अपने पास बुला लेना। (वफात देना)।

(३) मालिक ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि ऐ अल्लाह! मेरी कुव्वत कम हुई और उम्र बड़ी हुई, मेरी रिआया मुंतशिर हुई, तो मुझे वफात दे ताकि मैं ज़ाए करने वाला और कोताही करने वाला न बनूं। अभी एक महीना भी गुज़रने न पाया था कि शहीद हुए।

(४) इब्ने अब्दुलबर ने तम्हीद में मरूज़ी ने जनाइज़ में, अहमद ने मुसनद में और तबरानी ने कबीर में अलीम कुन्दी से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैं अबू अबस ग़फ़्फ़ारी के साथ एक छत पर था। उन्होंने देखा कि लोग ताऊन से भाग रहे हैं, तो आपने कहा। ऐ ताऊन मुझे पकड़ ले, यह कलिमा तीन मरतबा कहा। मैंने उन से कहा, तुम यह क्यों कहते हो हालांकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मौत की तमन्ना न करो क्योंकि मौत के वक़्त अमल कट जाता है, और आदमी लौट कर नहीं आता इसलिए वह तबाह हो जाएगा। अबू अबस ने कहा कि तुम ने नहीं सुना। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते थे। छेः चीज़ों से

पहले मर जा बेवक़ूफ़ों की हुकूमत से, शर्त की ज़्यादती से, हिकमत की बातों के बेचने से, ख़ून की नाक़दरी से, क़तअ़ रहमी से और उन लोगों से जो कुरआन को गाते बजाते हैं। एक आदमी को आगे करते हैं जो उनको कुरआन गा कर सुनाए, ख़्वाह वह सबसे कम समझ रखता हो।

(५) हाकिम ने हसन से रिवायत की, उन्होंने कहा कि हकम बिन उमरू ने कहा कि ऐ ताऊन मुझे पकड़ ले। उन से कहा गया कि आप यह क्यों कहते हैं? हालांकि हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने मौत की तमन्ना से मना फरमाया है। हकम ने कहा, जो तुमने सुना मैंने भी सुना है। लेकिन मैं छेः चीज़ों से पहले मरना चाहता हूं, हिक्मत की बातों के बेचने से पहले, शर्त की ज़्यादती से, बच्चों की हुकूमत से पहले, ख़ून बहाने से पहले, क़तअ़ रहमी से पहले और कुरआन को गाना बजाना बनाने वालों से पहले। और इब्ने सअद की एक रिवायत में छेः चीज़ों में गुनाह का किया जाना भी शमिल है। इसी क़िस्म की हदीस तबरानी ने अमर बिन अब्सा से रिवायत की।

(६) अबू नईम ने इब्ने मसऊद से रिवायत की कि जब दज्जाल निकलेगा तो मोमिन के नज़्दीक मरने से बेहतर कोई चीज़ न होगी।

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सुफियान से रिवायत की कि लोगों पर एक ज़माना आएगा कि उसके उलमा के नज़्दीक मौत सुर्ख़ सोने से बेहतर होगी।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि क़रीब है कि मोमिन इंसान के नज़्दीक मौत इस ठंडे पानी से ज़ाइद पसन्दीदा हो जिस पर शहद बहाया जाए और वह इंसान उसे पिये।

(९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हज़रत अबू ज़र से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि एक ज़माना आएगा कि लोगों के पास से जनाज़ा गुज़रेगा तो वह कहेंगे काश हम उसकी जगह होते।

(१०) इब्ने सअद ने अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत की कि अबू हुरैरा बीमार हुए तो मैं उनकी अयादत को आया और कहा ऐ अल्लाह! अबू हुरैरा को शिफा दे। तो उन्होंने फरमाया कि अब इस दुआ को न दोहराना, और यह कहा कि लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मौत सुर्ख़ सोने से बेहतर होगी और ऐ अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु अगर तुम ज़िन्दा रहे तो क़रीब है कि ऐसा ज़माना आएगा कि जब आदमी क़ब्र से गुज़रे तो यह कहे क़ि काश मैं उसकी जगह होता।

(११) मरुज़ी ने जनाइज़ में मुर्रह हम्दानी से रिवायत की कि अल्लाह के एक बन्दे ने अपनी और अपने घर वालों के लिए मौत की दुआ की तो उस से पूछा गया कि तुमने अपने घर वालों के लिए मौत की तमन्ना की ठीक है लेकिन अपने लिए क्यों की? तो उसने जवाब दिया कि अगर मुझे पता होता कि तुम अपनी इस हालत पर बाक़ी रहोगे तो मैं तमन्ना करता कि मैं बीस साल मज़ीद तुम में ज़िन्दा रहूं।

(१२) मरुज़ी ने अबू उस्मान से रिवायत की कि उन्होंने कहा, एक दिन इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साइबान में बैठे थे और आपके निकाह में फलां और फलां दो औरतें हुस्न व जमाल और बड़े ओहदे वाली थीं और दोनों से आपके हसीन बच्चे थे। इतने में एक चिड़िया आपके ऊपर से चहचहाने लगी। फिर आपको उल्टी आई, उसको आपने कुरेदते हुए फरमाया कि अब्दुल्लाह और उसके अहल व अयाल का मरना इस चिड़िया के मरने से बेहतर है।

(१३) मरुज़ी ने क़ैस से रिवायत की है कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद के बच्चे खेल रहे थे आपने फरमाया कि इनका मरना गबरेले (एक छोटा जानवर) के मरने से आसान है।

(१४) हसन से मरवी है कि उन्होंने कहा तुम्हारे इस शहर में एक आबिद था, वह मस्जिद से निकला, जब उसने अपना पैर रिकाब में रखा तो उसके पास मलकुल-मौत आ गया तो उस आबिद ने कहा कि खुश आमदीद! मैं आपका बहुत ही मुश्ताक़ था। मलकुल-मौत ने यह सुन कर रूह क़ब्ज़ कर ली।

(१५) इब्ने सअद ने तबक़ात में और मरुज़ी ने ख़ालिद बिन मअ्दान से रिवायत की कि खुशकी व तरी में किसी जानवर का मेरे बदले मरना मुझे पसन्द नहीं। अगर मौत कोई झण्डा होती जिसकी तरफ लोग दौड़ कर जा सकते तो मैं सबसे पहले पहुंचता। अल्बत्ता जो शख़्स मुझ से ज़्यादा ताक़तवर होता वह मुझ से आगे निकल जाता।

(१६) अबू नईम ने उन्हीं से रिवायत की कि अगर मौत किसी जगह रखी होती तो मैं सबसे पहले दौड़ कर उसके पास पहुंच जाता।

(१७) अबू नईम ने अब्दे रेबा बिन सालेह से रिवायत की कि वह मक्हूल के पास उनके मरज़े वफात में आए तो उनके लिए दुआ की कि अल्लाह उन्हें आफियत अता फरमाए। तो आपने फरमाया हरगिज़ नहीं, क्योंकि उस ज़ात से मिल जाना जिसकी मआफी की उम्मीद है उस से बेहतर है कि ऐसे लोगों के साथ ज़िन्दा रहा जाए जिनकी शरारतों से शयातीनुल-इन्स और शयातीन अपने लश्कर के साथ भाग जाएं।

(१८) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में अबू मसहर से रिवायत की है कि मैंने एक आदमी को सईद बिन अब्दुल-अज़ीज़ मतनूख़ी से एक शख़्स को कहते सुना कि अल्लाह आपकी ज़िन्दगी लम्बी करे, तो आप नाराज़ हुए और फरमाया, नहीं बल्कि अल्लाह मुझे जल्द अपनी रहमत की जगह बुलाए।

(१९) अबू नईम ने अबू उबैदा बिन मुहाजिर से रिवायत की कि अगर कहा जाए कि जो उस लकड़ी को हाथ लगाएगा मर जाएगा, तो मैं सबसे पहले हाथ लगाऊंगा।

(२०) अबू नईम ने अबू अब्दुल्लाह से रिवायत की कि आपने फरमाया कि दुनिया आज़माइश की दावत देती है और शैतान ख़ताकारी की, इन दोनों के साथ रहने से बेहतर है कि खुदा से मुलाक़ात हो जाए।

(२१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अमरु बिन मैमून से रिवायत की कि वह मौत की तमन्ना न करते थे उन्होंने कहा कि मैं हर दिन इतनी-इतनी नमाज़ पढ़ता था। हत्ता कि यज़ीद बिन मुस्लिम ने उनकी तरफ एक पैग़ाम भेजा जिसमें उन्हें सख़्ती से ख़िताब किया था। जिस से आपको तक्लीफ हुई तो उसके बाद आप यह दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह! मुझे नेकों से मिला दे और बुरों से बचा दे।

(२२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने उम्मे दरदा से रिवायत की, उन्होंने कहा कि अबू दरदा की यह आदत थी कि जब किसी अच्छे आदमी की वफात होती, तो आप फरमाते कि ऐ काश मैं तेरी जगह होता तो उस पर उनकी मां ने कुछ एतराज़ किया तो आपने फरमाया। तुम नहीं जानती, कि आदमी सुबह हालते ईमान पर करता है और शाम को मुनाफिक़ हो जाता है और उसका ईमान ला शुऊरी के आलम में उससे छीन कर लिया जाता है, इसलिए मैं उस मैयत पर रश्क करता हूं और उसे इस ज़िन्दगी पर तरजीह देता हूं जिस में नमाज़, रोज़ा हो।

(२३) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ़ में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने जहीफा से रिवायत की, उन्होंने कहा कि कोई जान भी मेरे बजाए मर जाए तो मुझे खुशी न होगी, ख़्वाह वह मक्खी ही क्यों न हो।

(२४) इब्ने अबी अद्दुनिया, ख़तीब और इब्ने असाकिर ने अबी बकरा से रिवायत की कि किसी जानदार की रूह का परवाज़ कर जाना मुझे पसन्द नहीं सिवाए अपनी रूह के परवाज़ करने के, तो लोगों ने घबरा कर पूछा किया कि यह क्यों? तो आपने फरमाया कि

मुझे डर है कि कहीं ऐसे ज़माने को न देखूं जिसमें भलाई का हुक्म न दे सकूं और बुराई से मना न कर सकूं। क्योंकि ऐसे ज़माने में कोई खैर व खूबी न होगी।

(२५) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ़ में और इब्ने सअद और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में अबू हुरैरा से रिवायत कि कि उनके पास से एक आदमी गुज़रा। उन्होंने पूछा, कहां जाते हो? उसने जवाब दिया, बाज़ार को तो आपने फरमाया कि अगर तुम अपने लौटने से पहले मेरे लिए मौत ख़रीद कर ला सको तो ला देना।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया और तबरानी ने ''कबीर'' में रिवायत की और इब्ने असाकिर ने उरवह बिन अदीम की सनद से और उन्होंने अरबाज बिन सारिया से, यह (अरबाज) हुज़ूर के सहाबा में एक बूढ़े सहाबी थे और मौत की तमन्ना रखते थे और यह दुआ करते थे ऐ अल्लाह! मेरी उमर ज़ाइद हो गई, और हड्डी कम्ज़ोर पड़ गई, तो मुझे मौत दे। अरबाज़ कहते हैं कि एक दिन मैं दमिश्क़ की मस्जिद में नमाज़ के बाद अपनी इसी दुआ में मश्ग़ूल था कि एक हसीन व जमील सब्ज़ पोश नौजवान आया और कहा कि क्या दुआ करते हो? मैंने कहा कि और क्या दुआ करूं, तो उसने जवाब दिया कि यूं कहो ऐ अल्लाह! अमल अच्छे कर, और उमर ज़ाइद कर। मैंने दरयाफ़्त किया। खुदा तुम पर रहम करे तुम कौन हो? उसने जवाब दिया मैं अताईल हूं जो मोमिनों के ग़म ग़लत करता है। फिर जो मैंने ग़ौर से देखा तो कोई न था।

मौत की फज़ीलत का बयान

उलेमा फरमाते हैं कि मौत अद्मे महज़ और फना सिर्फ का नाम नहीं। मौत तो बदन से रूह के ताल्लुक़ के ख़त्म हो जाने का नाम है और एक हिजाब है जो रूह और बदन के दर्मियान क़ायम हो जाता है, और एक घर से दूसरे घर की तरफ़ मुन्तक़िल होने का नाम है।

(१) अबुश्शैख़ ने अपनी तफ़सीर में और अबू नईम ने बिलाल बिन सअद से रिवायत की कि उन्होंने अपने वअ़ज़ में कहा ऐ ज़िन्दगी और हमेशगी के चाहने वालो! तुम फना के लिए नहीं पैदा किए गये। तुम अबद और हमेशगी के लिए पैदा हुए हो, एक घर से दूसरे घर की तरफ मुन्तक़िल होने के लिए पैदा हुए हो।

(२) तबरानी ने कबीर में, हाकिम ने मुस्तदरक में उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ से रिवायत की, तुम हमेशगी के लिए पैदा हुए हो, एक

घर से दूसरे घर की तरफ मुन्तकि़ल होते हो।

(३) हाकिम ने मुस्तदरक में और तबरानी ने कबीर में और इब्ने मुबारक ने जुहद में और बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में अब्दुल्लाह बिन तहर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मौत मोमिन का तोहफा है। इसी कि़स्म की हदीस दैलमी ने मसनदे फिरदौस में नक़ल की।

(४) दैलमी ने हुसैन बिन अली से रिवायत की कि मौत मोमिन का फूल है।

(५) दैलमी व बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में हज़रत आइशा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मौत ग़नीमत है, गुनाह मुसीबत है, मुहताजी राहत है, मालदारी अज़ाब है, अक़्ल खुदाई तोहफ़ा है, जिहालत गुमराही है, जुल्म निदामत है, इताअत आंखों की ठंडक है, खुदा की मशीयत से रोना नजात है और हंसना हलाकत है और गुनाह से तौबा करने वाला उसकी तरह है जो बेगुनाह हो।

(६) अहमद और सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में सही सनद से महमूद बिन बसिया से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि दो चीज़ों को इंसान बुरा समझता है। मौत को बुरा समझता है हालांकि मौत उसके लिए फित्ना से बेहतर है। माल की कमी को बुरा समझता है हालांकि माल की कमी से क़्यामत में हिसाब में कमी होगी।

(७) बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में ज़रआ बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि इंसान अपने लिए ज़िन्दगी को बेहतर समझता है हालांकि मौत उसके लिए बेहतर है। और माल की कमी को बुरा समझता है हालांकि यह हिसाब की कमी का बाइस है।

(८) शैख़ैन ने अबू क़तादा से रिवायत की। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास से एक जनाज़ा गुज़रा। आपने फरमाया कि यह मुस्तरीह या मुस्तराह है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुस्तरीह या मुस्तराह से क्या मुराद है? आपने फरमाया कि मोमिन इंसान दुनिया की तकालीफ से अल्लाह की रहमत की तरफ मुन्तकि़ल होता है और राहत पाता है (तो वह मुस्तरीह है) और फाजिर से शहर, बन्दे, दरख़्त और जानवर निजात हासिल करते हैं (तो वह मुस्तराह हुआ)

(९) इब्ने अबी शैबा ने यजीद बिन बतारमाद से रिवायत की। एक जनाज़ा अबू ज़हीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु पर गुज़रा तो आपने फरमाया कि या तो इस ने राहत पाई या बन्दों ने इससे राहत पाई।

(१०) इब्ने मुबारक और तबरानी ने अब्दुल्लाह बिन अमरु बिन आस से रिवायत की कि नबी करीम (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि दुनिया मोमिन के लिए क़ैद ख़ाना और क़हत है।

(११) इब्ने मुबारक ने अब्दुल्लाह बिन अमर से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया, दुनिया मोमिन के लिए क़ैद ख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है। मोमिन की रूह जब निकलती है तो उसकी मिसाल उस शख़्स की सी है जो क़ैद ख़ाने में था और फिर निकाल दिया गया। तो अब वह ज़मीन में ख़ूब सैर व तफ़रीह करता है।

(१२) इब्ने अबी शैबा ने अपनी मुसन्नफ में अब्दुल्लाह बिन अमरु से रिवायत की कि दुनिया मोमिन का क़ैदख़ाना और काफ़िर की जन्नत है। जब मोमिन मर जाता है तो उसकी राह फैला दी जाती है वह जन्नत में जहां चाहता है घूमता है।

(१३) अबू नईम ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से फरमाया कि ऐ अबू ज़र! दुनिया मोमिन के लिए क़ैद ख़ाना है और क़ब्र अमन की जगह है और जन्नत उसका ठिकाना है। ऐ अबू ज़र! दुनिया काफिर की जन्नत है और क़ब्र उसका अज़ाब है और जहन्नम उसका ठिकाना है।

(१४) नसई, तबरानी और इब्ने अबी अद्दुनिया ने उबादा बिन सामित से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जो भी जान रू-ए-ज़मीन पर मरती है उसके लिए उसके रब के पास भलाई है। और वह वापस आना नहीं चाहती, चाहे उसको तमाम दुनिया व माफीहा दे दी जाए सिवाए शहीद के, क्योंकि वह बार-बार आने की तमन्ना करता है ताकि सवाबे अज़ीम पाए।

(१५) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में और मरुज़ी ने जनाइज़ में और तबरानी ने इब्ने मसऊद से रिवायत की कि दुनिया में अब कुछ साफ नहीं रहा हर जगह गदला पन है। तो मौत हर मुसलमान का तोहफा है।

(१६) मरुज़ी, इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि दो बुरी चीज़ें बहुत बेहतर हैं, मुहताजी और मौत।

(१७) इब्ने अबी शैबा और मरुज़ी ने ताऊस अलैहिर्रहमा से रिवायत की कि मोमिन आदमी के बदन को कोई चीज़ नहीं बचा सकती जो हिफाज़त करे सिवाए मौत के गढ़े के।

(१८) इब्ने मुबारक ने ज़ुह्द में और इब्ने अबी शैबा ने और मरुज़ी ने रबी बिन ख़सीम से रिवायत की कि मोमिन के लिए कोई भलाई छुपी हुई नहीं जिसका वह इंतिज़ार करे और वह मौत से बेहतर हो।

(१६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मालिक बिन मग़ूल से रिवायत की कि सबसे पहली चीज़ खुशी की जो मोमिन को हासिल होगी, वह मौत है क्योंकि इसमें वह अल्लाह का सवाब और उसका करम देखता है।

(२०) अहमद ने ज़ुह्द में, और इब्ने अबी अद्दुनिया इब्ने मसऊद से रिवायत करते हैं कि मोमिन के लिए अल्लाह की मुलाक़ात से बेहतर कोई नेमत नहीं।

(२१) सअद बिन मन्सूर और इब्ने जरीर ने अबू दरदा से रिवायत की कि हर मोमिन के लिए मौत बेहतर है और हर काफिर के लिए मौत बदतर है, चुनांचे अल्लाह तआला फरमाता है जो अल्लाह के पास है वह नेकोकारों के लिए बेहतर है, और हरगिज़ गुमान न करें काफिर कि हम जो उनको ढील देते हैं वह उनके लिए बेहतर है।

(२२) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने अपनी तफ़सीर में और हाकिम ने मुस्तदरक में, तबरानी और मरुज़ी ने जनाइज़ में इब्ने मस्ऊद से रिवायत की, हर नेक बन्दा के लिए मौत बेहतर है। अगर नेक है तो अल्लाह के पास नेकों के लिए बहुत अच्छा अज है और बद है तो उनके लिए अल्लाह ने फरमाया कि काफिर यह न समझें कि हमारी ढील उनके हक़ में बेहतर है। हम ढील इसलिए देते हैं कि उनके गुनाह ज़ाइद हो जाएं।

(२३) इब्ने मालिक और अहमद ने ज़ुह्द में हिब्बान बिन अबी हीला से रिवायत की कि अबू दरदा ने कहा तुम मौत के लिए जनते हो, वीरान करने के लिए आबाद करते हो, फानी चीज़ पर लालची हो और बाक़ी रहने वाली चीज़ को नहीं मानते। सुनो! तीन बुरी चीज़ें हैं जो अच्छी हैं : मौत, फ़ुक्र और मरज़, अहमद नें ज़ुह्द में इब्ने मस्ऊद से ऐसी ही रिवायत की।

(२४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने जाफर अहमद से रिवायत की कि जिसके लिए मौत में अच्छाई नहीं उसके लिए हयात में भी अच्छाई नहीं।

(२५) इब्ने सअद ने तब्क़ात में और बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में अबुद्दर्दा से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैं फक्र को सबकी बारगाह

में तवाज़ु करने के लिए अच्छा समझता हूं और मौत को अपने रब की मुलाक़ात के लिए अच्छा समझता हूं और मरज़ को अपनी ख़ताओं के मिट जाने की वजह से पसन्द करता हूं।

(२६) इब्ने सअद और इब्ने अबी शैबा ने और अहमद ने जुह्द में अबू दरदा से रिवायत की कि आप अपने पसन्दीदा शख़्स के लिए क्या पसन्द करते हैं? कहा कि मौत। लोगों ने दरयाफ़्त किया कि अगर न मरे? तो आपने फरमाया कि उसका माल और उसकी औलाद कम हो जाए।

(२७) इब्ने अबी शैबा ने उबादा बिन सामित से रिवायत की कि मैं अपने दोस्त के लिए पसन्द करता हूं कि उसे मौत जल्द आए और उसका माल कम हो।

(२८) अहमद ने जुह्द में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबुद्दर्दा से रिवायत की कि मेरे अहबाब की तरफ से जो हिदाया मौसूल होते हैं उनमें सलाम सबसे बेहतर है, और सब से अच्छी ख़बर उसकी मौत है।

(२९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुहम्मद बिन अब्दुल-अज़ीज़ तैमी से रिवायत की कि अब्दुल-आला तैमी से कहा गया कि तुम अपने और अपने घर वालों के लिए क्या पसन्द करते हो? कहा मौत।

(३०) तबरानी ने अबू मालिक अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि : ऐ अल्लाह! जो लोग मुझे रसूल जानते हैं उनके दिल में मौत की मुहब्बत डाल दे।

(३१) अहमद ने रिवायत की कि मलकुल-मौत (अलैहिस्सलाम) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास आए कि उनकी रूह निकालें तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि आया कभी तुमने एक दोस्त को दूसरे दोस्त की रूह निकालते देखा है? तो मलकुल-मौत खुदा की बारगाह में हाज़िर हुए तो अल्लाह तआला ने फरमाया: जाओ इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से कह दो कि आया कभी तुमने एक दोस्त को दूसरे दोस्त की मुलाक़ात को बुरा जानते हुए पाया? तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा। मेरी रूह अभी क़ब्ज़ कर लो।

(३२) अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उन से फरमाया अगर तुम मेरी वसीयत याद रखो तो वह यह है कि मौत से ज़ाइद पसन्दीदा चीज़ तुम्हारे नज़्दीक कोई न हो।

(३३) इब्ने सअद ने हसन से रिवायत की कि जब हुज़ैफा की

वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो आपने फरमाया कि बहुत इंतिज़ार के बाद महबूब आया, जो शर्मिंदा हो वह कामयाब नहीं। अल्लाह का शुक्र है कि जिसने मुझे फित्ना से पहले बुला लिया। सहल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी अलैहिर्रहमा ने फरमाया कि मौत की तमन्ना तीन अश्ख़ास ही कर सकते हैं : (१) जिनको मौत के बाद के हालात का पता न हो। (२) खुदा की मुक़र्ररह तक़्दीर से राहे फरार अख़्तियार करने वाला। (३) और अल्लाह की मुलाक़ात का मुश्ताक़ हिब्बान बिन असवद ने कहा कि मौत एक पुल है जो एक दोस्त को दूसरे दोस्त से मिलाने का ज़रिया है। अबू उस्मान ने कहा कि शौक़ की अलामत यह है कि राहत के बावजूद मौत की मुहब्बत करना। बाज़ हज़रात ने कहा कि मुश्ताक़ मौत की मिठास शहद से ज़ाइद पाता है।

(३४) इब्ने असाकिर ने जुन्नून मिस्री से रिवायत की कि शैक़ से सबसे बुलन्द दरजा है हुब, इस पर बन्दा पहुंचता है तो वह मौत के देर में आने को बुरा समझता है क्योंकि वह लिक़ाए महबूब का हमा वक़्त मुतमन्नी रहता है और उसके दीदार का हर वक़्त मुंतज़िर।

(३५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने उत्बा ख़ौलानी सहाबी से रिवायत की कि अब्दुल्लाह इब्ने अब्दुल-मलिक ताऊन से भाग कर कहीं चला गया तो उन्होंने कहा कि इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। मैं ऐसे ज़माने तक ज़िन्दा रहा जिसमें ऐसी बात सुनूं। मैं तुमको तुम्हारे गुज़रे हुए भाइयों के हालात सुनाता हूं। पहली बात तो यह कि अल्लाह की मुलाक़ात उनको शहद से ज़ाइद शीरीं मालूम होती थी। दूसरी बात यह कि वह दुशमन से कभी न डरते थे ख़्वाह कम हो या ज़ाइद। तीसरी बात यह कि वह दुनिया के फ़ुक़्र व फ़ाक़ा से न डरते थे उनको खुदा पर पूरा-पूरा भरोसा था कि वह उनको ज़रूर रिज़्क़ देगा। चौथी बात यह कि जब ताऊन आता था तो भागते न थे अल्लाह जो फैसला फरमाता था, उनको क़बूल होता।

(३६) अबू नईम ने हुलिया में इब्ने अब्दे रिबा से रिवायत की कि उन्होंने मक्हूल से कहा कि क्या तुम जन्नत को पसन्द करते हो? उन्होंने कहा कि जन्नत को कौन पसन्द न करेगा। तो उन्होंने कहा कि मौत से मुहब्बत करो क्योंकि जन्नत को मरे बग़ैर नहीं देख सकते।

(३७) अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन जाबिर से मरवी है कि अब्दुल्लाह बिन अबी ज़करिया कहते थे कि अगर मुझे पता चल जाए कि अल्लाह ने मुझे अख़्तियार दे दिया है कि चाहे मैं सौ साल ज़िन्दा रहूं या आज ही मर जाऊं, तो आज ही मर जाने को अख़्तियार कर

लेता, ताकि अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और सहाबा रज़ि अल्लाहु अन्हुम से मुलाक़ात कर सकूं।

(३८) अबू नईम और इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में अहमद बिन अबी अल-हवारी से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि मैंने अबू अब्दुल्लाह नबाजी को कहते हुए सुना कि अगर मुझे दुनिया की हलाल लज़्ज़तों से मुस्तफीज़ होने और अपनी रूह के निकल जाने का अख़्तियार दिया जाए, तो रूह के निकल जाने को पसन्द करूंगा। कहा तुम को यह बात पसन्द नहीं कि तुम उस से मुलाक़ात करो कि जिसकी इताअत करते हो।

(३९) अबू नईम और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में हज़रत अनस (रज़ि अल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मौत हर मुसलमान के लिए कफ़्फ़ारह है। क़रतबी ने कहा कि उसकी वजह यह है कि मुसलमान मरते वक़्त जो तकालीफ पाता है, वह उसके गुनाहों की मुआफी का सबब बन जाती हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मुसलमान के अगर कांटा या उससे कम चीज़ भी लग जाए तो वह भी उसके गुनाहों को मिटा देती है। तो जब कांटे का यह हाल है तो फिर सकराते मौत का क्या हाल होगा जिसमें तल्वार की तीन सौ चोटों से ज़ाइद तक्लीफ होती है।

(४०) इब्ने मुबारक ने जुह्द में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने मस्रूक़ से रिवायत की कि मुझे उस चीज़ के अलावा किसी चीज़ पर रश्क न आया कि मोमिन अपनी क़ब्र में अज़ाब से महफूज़ हो और दुनिया की तकालीफ से रिहाई पा ले। इब्ने अबी शैबा ने भी इसी मज़्मून की हदीस बयान की।

(४१) इब्ने मुबारक, हसीम बिन मालिक से रिवायत करते हैं उन्होंने कहा कि हम ईफअ़ बिन अबदा के पास बाते कर रहे थे और वहीं अबू अतीया फद बूह भी थे तो नेमतों का ज़िक्र चला। लोगों ने दरयाफ़्त किया कि सबसे ज़ाइद नेमतों में कौन शख़्स है, बाज़ ने कहा कि फलां और बाज़ ने कहा कि फलां। ईफअ़ ने कहा कि ऐ अबू अतीया आप क्या अच्छे हैं। उन्होंने कहा वह जिस्म जो क़ब्र में हो और अज़ाब से महफूज़ हो गया हो।

(४२) इब्ने मुबारक ने महारिब बिन वेसार से रिवायत की वह कहते हैं कि मुझ से ख़सीमा ने कहा कि क्या तुम्हें मौत खुश करती है? कहा कि नहीं। तो उन्होंने फरमाया कि मौत नाक़िस शख़्स ही को

नापसन्द होती है।

(४३) इब्ने मुबारक ने अबू अब्दुर्रहमान से रिवायत की कि एक शख़्स ने अबुल-आवर सलमा की मज्लिस में कहा कि बखुदा अल्लाह ने मौत से ज़ाइद पसन्दीदा चीज़ मेरे लिए पैदा नहीं की तो अबुल-आवर ने कहा कि अगर मैं तुम्हारी तरह हो जाऊं तो मेरे नज़्दीक यह सुर्ख़ ऊंटों से ज़ाइद बेहतर है।

(४४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सफ़वान बिन सलीम से रिवायत की कि मौत दुनिया की तकालीफ़ से राहत देती है अगरचे खुद उसमें तकालीफ हैं।

(४५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुहम्मद बिन ज़्याद से रिवायत की। उन्होंने कहा कि मुझ से बाज़ हुकमा ने कहा कि अक़्लमन्द इंसान पर मौत ग़ाफ़िल आलिम की लग़्ज़िश से आसान है।

(४६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सुफियान से रिवायत की कि मौत आबिद के लिए राहत है।

मौत का ज़िक्र और उसकी तैयारी

(१) तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरह (रज़ि अल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ को बकसरत याद करो, यानी मौत को। अबू नईम ने भी उमर बिन ख़त्ताब से ऐसी हदीस रिवायत की।

(२) बज़्ज़ाज़ ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ यानी मौत को बकसरत याद करो क्योंकि जो तंगदस्त है उसे याद करता है उस पर फराख़ी होती है और जो खुश ऐश और फराख़ दस्त होता है, उस पर तंगी होती है।

(३) इब्ने माजा ने हज़रत उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से दरयाफ़्त किया गया कि सबसे अक़्लमन्द मोमिन कौन है? आपने फरमाया जो मौत को सबसे ज़ाइद याद रखे और मौत के बाद के लिए सबसे अच्छी तैयारी करे, यह हैं अक़्लमन्द।

(४) तिर्मिज़ी ने शद्दाद बिन औस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अक़्लमन्द वह है जो अपने नफ़्स को खुद बदला दे और बअ़दल-मौत के लिए काम करे और आजिज़ वह है जो नफ़्स की पैरवी करे और अल्लाह से क़िस्म-

क़िस्म की आरज़ूएं करे।

(५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हज़रत अनस (रज़ि अल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि मौत को बकसरत याद करो, वह गुनाहों को ज़ाइल करती, और दुनिया में जुह्द पैदा करती है और तुम उसको मालदारी के आलम में याद करोगे तो यह उसको ख़त्म कर देगी। और मुहताजी के आलम में याद करोगे तो तुम को तुम्हारी ज़िन्दगी से राज़ी कर देगी।

(६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अता खुरासानी से रिवायत की कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ऐसी मज्लिस से गुज़रे जिसमें ख़ूब हंसी मज़ाक़ हो रहा था। आपने फरमाया कि अपनी मज्लिस में लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ की मिलावट भी करो। अर्ज़ की गई, वह क्या है? आपने फरमाया कि मौत की याद।

(इब्ने अबी अद्दुनिया ने सुफियान से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक शख़्स को वसीयत फरमाई कि मौत को कसरत से याद करो तो दूसरी चीज़ों को भूल जाओगे।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में ज़ैद सलमा से रिवायत की कि नबी करीम (अलैहिस्सलाम) अपने सहाबा (रज़ि अल्लाहु अन्हुम को जब ग़फ़लत में पाते थे तो बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहते थे कि ऐ लोगो! तुम्हारे पास मौत आ गई, या नेक बख़्ती का पैग़ाम बन कर या बदबख़्ती का।

(६) बैहक़ी ने इब्ने अता से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब लोगों में ग़फ़लत देखते तो दरवाज़ा पकड़ कर तीन मरतबा फरमाते या अह्लुल-इस्लाम अततकुमुल-मैतते अलख़ यानी अह्ले इस्लाम मौत आ गई, उसको जो कुछ अपने साथ लाना था ले आई, खुशी और राहत लाई अल्लाह के दोस्तों के लिए और उन लोगों के लिए जो जन्नत में रहेंगे, उनके बरकत की खुशख़बरी ले आई। सुनो हर कोशिश करने वाले की इंतिहा है और हर कोशिश करने वाले की इंतिहा मौत है, कोई आगे जाता है और कोई पीछे।

(१०) तबरानी ने अम्मार से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया, नसीहत करने को मौत काफी है।

(११) हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से अर्ज़ की गई कि क्या शुहदा के साथ किसी और का हश्र भी होगा? आपने फरमाया, हां उसका जो शब व रोज़ में मौत को बीस मरतबा याद

करेगा। नीज़ हज़रत सुदी अलैहिर्रमा इस आयते करीमा *ख़लक़ल-मौता वल-हयाता लेयबलुवकुम अन्नयुकुम अहसनु अमला।* की तफ़सीर में मरवी है कि कौन तुम में से मौत को ज़ाइद याद करता है और कौन् उसके लिए ज़ाइद तैयारी करता है और कौन ज़ाइद डरता है।

इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में भी इस हदीस को रिवायत किया।

(१२) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में और इमाम अहमद ने ज़ुह्द में इब्ने साबित से रिवायत की कि एक शख़्स की हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) के सामने बहुत तारीफ़ की गई, आपने दरयाफ़्त किया कि वह मौत को भी याद करता है या नहीं? अर्ज़ की गई जी नहीं आपने फरमाया तो फिर वह ऐसा नहीं जैसा कि तुम कहते हो।

(१३) बाज़ बुज़ुर्गाने दीन का कहना है कि जिसने मौत को बकसरत याद किया उसे तीन इनामात मिलेंगे : (१) तौबा की जल्द तौफीक़ होगी। (२) दिल में क़नाअत नसीब होगी (३) इबादत में खुशी होगी और जिसने मौत को भुला दिया, इस पर तीन मुसीबतें नाज़िल होंगी। (१) तौबा में टाल मटोल (२) बेसबरी (३) इबादत में सुस्ती तैमी ने कहा दो चीज़ों ने मेरे सामने दुनिया की लज़्ज़तों को बेहक़ीक़त बना दिया। मौत की याद और बारगाहे ईज़्दी में खड़ा होना। इब्ने अबी अद्दुनिया ने इसे रिवायत किया, बाज़ हज़रात ने अल्लाह तआला के क़ौल वला तन्सा नसीबका मिनदुनिया की तफ़सीर कफन से की है। और इससे पहले की आयत में फरमाया कि *वब्तग़ी फीमा अताकल्लाहु अद्दारुल-आख़िरते* दुनिया की चीज़ों को ऐसी राहों पर ख़र्च करो कि जिसके बदले दारुल-आख़िरह में जन्नत भी मिलती है। और याद रखो कि तुम हर चीज़ छोड़ कर चले जाओगे सिवाए अपने हिस्सा के और वह है कफन। किसी शइर ने क्या ख़ूब कहा है :

तरजमा : जो कुछ तूने तमाम ज़माने में जमा कर लिया, उसमें तेरा हिस्सा सिर्फ वह दो चादरें हैं, जिनमें तू लपेटा जाएगा और खुशबू।

(१४) अबू नईम ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि एक शख़्स हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) की बारगाह में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मैं मौत को पसन्द नहीं करता। आपने फरमाया क्या तेरे पास माल है? उसने कहा हां। आपने फरमाया, पहले इसको मार डालो क्योंकि मोमिन का दिल उसके माल के साथ है अगर वह उसको पहले मार दे तो उसका दिल भी उसके पीछे हो जाएगा वरना वह उसी के हम्राह रहेगा।

(१५) सईद बिन मन्सूर ने अबुद्दर्दा से रिवायत की, आपने फरमाया। फसीह व बलीग़ नसीहत के बाद जल्द ही ग़ाफ़िल हो जाते हैं। मौत नसीहत करने को काफी है, ज़माना जुदाई डालने को काफी है आज हम घरों में हैं और कल क़बरों में होंगे।

(१६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने रजा बिन हयात से रिवायत की कि जो बन्दा बकसरत मौत का ज़िक्र करेगा, वह खुशी और हसद छोड़ देगा। इब्ने अबी शैबा और अहमद ने भी इसी जैसी रिवायत की।

(१७) तबरानी, तारिक़ मुहारबी से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमाया कि मुझ से रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मौत के लिए मौत के आने से पहले तैयार हो जाओ।

(१८) इब्ने अबी शैबा, औन बिन अब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमाया कि जो शख़्स मौत को सही तौर पर जानता है तो वह आइन्दा कल को अपनी ज़िन्दगी में शुमार नहीं करता क्योंकि बहुत से वह लोग जो दिन के इब्तिदाई हिस्सा में ज़िन्दा होते हैं उसे पूरा कर नहीं पाते और बहुत से कल के उम्मीदवार अपनी उम्मीद को नहीं पहुंचते। और अगर तू मौत और उसकी रफ़्तार को देख लेता तो तेरी उम्मीद और गुरूर मिट जाता।

(१९) इब्ने अबी शैबा ने अबू हाज़िम से रिवायत की, उन्होंने फरमाया कि जिस काम की वजह से तुम मौत को बुरा समझने लगो, उसे छोड़ दो। फिर मरने के बाद यह तुम्हारी तक्लीफ का बाइस न होगा।

(२०) अबू नईम ने उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रमा से रिवायत की कि मौत जिस शख़्स के दिल के क़रीब हो गई तो वह अपने माल को ज़्यादा समझने लगता है।

(२१) अबू नईम ने रजा बिन नूह से रिवायत की कि उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने अपने घर वालों को लिखा कि अगर तुम शब व रोज़ मौत का शुऊर रखो तो हर फानी चीज़ तुम्हें बुरी मालूम होगी और हर बाक़ी चीज़ से मुहब्बत हो जाएगी।

(२२) अबू नईम ने मज्मा तैमी से रिवायत की कि मौत की याद मालदारी और बेनियाज़ी का बाइस है।

(२३) इन्हीं ने समीत से रिवायत की कि जिसने मौत को अपना नसबुल-ऐन बना लिया तो उसको दुनिया की तंगी की फिक्र होगी और न फराख़ी की।

(२४) इन्हीं ने कअब से रिवायत की कि जिसने मौत को पहचान लिया उस पर दुनिया के मसाइब व आलाम आसान हो गये।

(२५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हसन से रिवायत की कि जिसने मौत को बकसरत याद किया, उसकी निगाह में दुनिया हेच हो जाएगी।

(२६) उन्हीं ने क़तादा से रिवायत की कि जो मौत की याद रखे उसके लिए खुश ख़बरी है।

(२७) उन्हीं ने मालिक बिन दीनार से रिवायत की कि मौत की याद अमल की ज़िन्दगी को काफी है।

(२८) इन्हीं ने सफीया से रिवायत की, कि एक औरत ने आइश रज़ियल्लाहु अन्हु से शिकायत की कि मेरा दिल सख़्त हो गया है। आपने फरमाया कि मौत की याद बकसरत करो।

(२६) इन्हीं ने अबू हाज़िम से रिवायत की, ऐ इंसान मौत के बाद तुझे पता चलेगा।

(३०) इब्ने असाकिर ने हज़रत अली से रिवायत की कि दुनिया अमल की जगह है, मौत के बाद हम को और तुम्हें पता चलेगा।

(३१) दैलमी ने अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि दुनिया में बेहतर ज़ुह्द मौत की याद है। और बेहतर इबादत तफक्कुर है। जिस को मौत की याद ख़ौफज़दह करती हो उसकी क़ब्र जन्नत का बाग़ बन जाएगी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया लोग सो रहे हैं जब मर जाएंगे तो जाग उठेंगे। हाफिज़ अबुल-फज़ल इराक़ी ने क्या ख़ूब कहा है:

यानी लोग सोए हुए हैं, जो उन में से मर जाएगा मौत उसकी नींद को ख़त्म कर देगी।

(३२) तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जो भी मरता है पशीमान होता है। लोगों ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसकी पेशीमानी क्या है? आपने फरमाया कि अगर वह नेकोंकार है तो इस अम्र पर शर्मिंदा होगा कि ज़्यादा अच्छाइयाँ क्यों न कर लीं। और अगर बदकार होगा तो इस बात पर शर्मिंदा होगा कि बुराइयां क्यों न छोड़ दीं।

उन चीज़ों का बयान जो मौत की याद में मदद देती हैं

(१) मुस्मिल ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि क़ुबूर की ज़्यारत करो क्योंकि यह मौत को याद दिलाती हैं।

(२) इब्ने माजा व हाकिम ने इब्ने मसऊद से रिवायत की कि

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मैंने तुमको क़ब्रों की ज़्यारत से रोका था, अब ज़्यारत करो क्योंकि यह दुनिया में ज़ुहद और आख़िरत की याद पैदा करती है।

(३) हाकिम ने अबू सईद से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया तुम्हें ज़्यारते क़ुबूर से मैंने रोका था, अब उनकी ज़्यारत करो क्योंकि यह इबरत हासिल करने का ज़रिया हैं।

(४) इन्हीं ने हज़रत अनस से रिवायत की कि मैंने तुम्हें ज़्यारते क़ुबूर से रोका था अब उनकी ज़्यारत करो क्योंकि यह दिल को नर्म करती हैं और आंखों में आंसू लाती हैं और बेहूदह बातें मत कहो।

(५) इन्हीं ने बुरैदह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मैंने तुमको क़बरों की ज़्यारत से रोका था, अब उनकी ज़्यारत करो कि यह भलाई में ज़्यादती का मूजिब है।

(६) अबू ज़र से मरवी है कि उन्होंने फरमाया, मुझ से रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया। क़बरों की ज़्यारत करो ताकि आख़िरत की याद आए और मुर्दा को नहलाओ कि फानी जिस्म का छूना बहुत बड़ी नसीहत है और जनाज़ा की नमाज़ पढ़ो, ताकि यह तुम्हें ग़म्गीन करे क्योंकि ग़म्गीन इंसान अल्लाह के साये में होता है और नेकी का काम करता है।

खुदा से हुस्ने ज़न रखने और उस से डरते रहने का बयान

(१) शैख़ैन ने जाबिर से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वफात से तीन रोज़ क़ब्ल फरमाते हुए सुना कि तुम लोग खुदा से मरते दम तक अच्छा गुमान रखना।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हुस्नुज़्ज़न में रिवायत की कि बाज़ क़ौमों को अल्लाह तआला ने इसी लिए हलाक किया कि वह अल्लाह तआला के बारे में बद गुमान थे। चुनांचे अल्लाह तआला ने फरमाया: *व ज़ालिकुम ज़न्नकुम अल्लज़ी ज़ननतुम बेरब्बेकुम अरादकुम फस्बहतुम मिनल- ख़ासेरीन*। यानी यह तुम्हारी हलाकत तुम्हारे इस गुमान के बाइस है जो तुमने अपने रब से किया, तो तुम नुक़्सान उठाने वाले हो गये।

(३) अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि नबी करीम (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) एक नौजवान शख़्स के पास नज़अ़ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस से

दरयाफ़्त किया कि क्या हाल है? उसने बताया कि अल्लाह के सवाब का उम्मीदवार हूं और अपने गुनाहों से डरता हूं। तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि यह दोनों चीज़ें जिस शख़्स के दिल में जमा होंगी, अल्लाह तआला उसकी उम्मीद बर लाएगा और उसे डर से महफ़ूज़ फरमा देगा।

(४) हकीम तिर्मिज़ी ने नवादिरुल-उसूल में हसन से रिवायत की, वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि तुम्हारा रब कहता है कि मैं अपने बन्दे पर दो डर जमा नहीं करूंगा और न दो अमन तो जो मुझ से दुनिया में डरेगा मैं आख़िरत में उसे बेख़ौफ करूंगा और जो दुनिया में मुझ से बेख़ौफ रहेगा उसको क़यामत में ख़ौफज़दह करूंगा। यही हदीस अबू नईम ने शद्दाद बिन औस से रिवायत की।

(५) इब्ने मुबारक ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि जब तुम किसी शख़्स को नज़अ़ में देखो तो उसे बताओ कि वह अपने रब से अच्छा गुमान रखते हुए मिले। और जब किसी ज़िन्दा को देखो तो उसे अज़ाबे इलाही से डराओ।

(६) इब्ने असाकिर ने हज़रत अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि हर शख़्स को चाहिए कि अल्लाह तआला से हुस्ने ज़न रखे कि यही जन्नत की क़ीमत है।

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्राहीम नख़ई से रिवायत की कि बुज़ुर्गाने दीन जब किसी शख़्स के पास नज़अ् के वक़्त जाते तो उसके अच्छे काम याद दिलाते ताकि वह अपने रब से अच्छा गुमान रखे।

(८) इब्ने अबी शैबा ने (मुसन्नफ) में इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि वह फरमाते हैं क़सम खुदाए वहदहू ला शरीक लहू की कि बन्दा अल्लाह से जो अच्छा गुमान रखेगा, अल्लाह उसे पूरा फरमाएगा।

(९) अहमद ने वासेला से रिवायत की कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को फरमाते सुना कि मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब हूं, तो वह जैसा गुमान चाहे मेरे साथ रखे। ऐसी ही रिवायत अबू हुरैरह से है।

(१०) इब्ने मुबारक, अहमद और तबरानी ने किब्र में मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अगर तुम चाहो तो मैं तुम को बताऊं कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन सबसे पहले मुमिनीन से

क्या कहेगा और मोमिन उसको क्या जवाब देंगे। हमने अर्ज़ की कि हां रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आपने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाएगा, क्या तुमने मेरी मुलाक़ात को पसन्द किया तो वह जवाब देंगे, हां। वह पूछेगा क्यों? वह अर्ज़ करेंगे कि हमने तेरे अफ़्व व मग़्फ़िरत की उम्मीद पर तमन्ना की। अल्लाह तआला फरमाएगा, तो मेरी मग़्फ़िरत तुम्हारे लिए वाजिब हो गई।

(११) इब्ने मुबारक उक़्बा बिन मुस्लिम से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमाया, बन्दा की ख़स्लतों में अल्लाह तआला को सबसे ज़ाइद यह ख़स्लत पसन्द है कि वह उस से मुलाक़ात को पसन्द करे।

(१२) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी शुअबुल-ईमान में और इब्ने असाकिर अबू ग़ालिब से रिवायत करते हैं, वह फरमाते हैं कि मैं शम में क़ैस के एक बेहतरीन शख़्स के पास गया। उस शख़्स का एक सरकश भतीजा था यह हर चन्द उसको नसीहत करता था मगर वह हिदायत पर न आता था। इत्तिफ़ाक़ से वह बीमार हो गया उसने अपने चचा को बुलवाया। लेकिन उसने इंकार कर दिया। मगर मैं उसको मज्बूर करके ले आया। उसने आते ही भतीजे को गालियां देनी शुरू कर दीं और कहने लगा : कि ऐ दुशमने खुदा! क्या तूने ऐसा नहीं किया, और वैसा नहीं किया। तो उस नौजवान ने पूछा कि: ऐ चचा! यह तो बताइए कि अगर अल्लाह मुझ को मेरी मां के सुपुर्द कर देता तो वह क्या करती? तो चचा ने जवाब दिया कि वह तुझको जन्नत में दाख़िल करती तो नौजवान ने जवाब दिया कि : बखुदा, खुदा मुझ पर मेरी मां से ज़ाइद रहम करने वाला है। अल-ग़रज़ वह जवान मर गया और उसके चचा ने उसको दफन कर दिया। जब उस पर ईंटें रखी जा रही थीं तो एक ईंट गिर पड़ी तो उसका चचा कूदकर एक तरफ को हट गया। मैंने दरयाफ़्त किया कि ऐ भाई क्या मुआमला है उसने जवाब दिया कि उसकी क़बर तो नूर से भर गई और हद्दे निगाह तक उसमें वुस्अत कर दी गई।

(१३) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में हमीद से रिवायत की। उन्होंने ने कहा कि, मेरा एक भांजा नाफरमान था वह बीमार हो गया तो उसकी मां ने मुझे बुलवा भेजा, जब मैं पहुंचा तो देखा कि उसकी मां सरहाने खड़ी रो रही है। तो उस लड़के ने मुझ से दरयाफ़्त किया कि ऐ मामूं! यह क्यों रो रही है? मैंने जवाब दिया कि यह तुम्हारी बुराइयों की वजह से रो रही है। लड़के ने कहा कि क्या मेरी मां मुझ पर रहम न करती थी? मैंने कहा कि क्यों नहीं। तो

उसने कहा कि अल्लाह तआला मुझ पर मेरी मां से ज़ाइद रहम करने वाला है। जब वह मर गया तो मैंने और कुछ दूसरे लोगों ने उसको क़ब्र में उतारा। जब हमने उस पर ईंटें रखीं तो मैंने झांक कर क़बर में देखा तो मालूम हुआ कि वह हद्दे निगाह तक वसीअ कर दी गई। मैंने अपने साथियों से दरयाफ़्त किया कि क्या तुमने भी यही देखा जो में देख रहा हूं? उन्होंने कहा कि हां। तो मैं समझ गया कि यह इसी कलिमा की वजह से है जो उसने मरते वक़्त कहा था।

मौत के डर का बयान

(१) कुरतबी ने कहा कि बाज़ रिवायात में है कि नबी (अलैहिस्सलाम) ने मलकुल-मौत से दरयाफ़्त किया कि आपके पास कोई क़ासिद नहीं जिसको आप अपने आने से पहले रवाना कर दें। ताकि लोग डर जाएं। तो मलकुल-मौत ने कहा कि बखुदा मेरे लिए बहुत से क़ासिद हैं, मसलन इल्लतें, मरज़, बुढ़ापा, कानों और आंखों का मुतग़ैयर हो जाना। जब लोग उन चीज़ों से भी नसीहत हासिल नहीं करते तो मैं निदा करता हूं कि ऐ शख़्स क्या यके बाद दीगरे मेरे क़ासिद तुम्हारे पास नहीं आते रहे, अब मैं खुद आता हूं कि मेरे बाद कोई क़ासिद न आएगा।

(२) अबू नईम ने हुलिया में मुजाहिद से रिवायत की कि जब इंसान पर कोई बीमारी आती है तो मलकुल-मौत का क़ासिद उसके पास होता है। जब उसका मरज़ आख़िर को पहुंचता है तो मलकुल-मौत तशरीफ लाते हैं और कहते हैं कि ऐ इंसान! तेरे पास मेरे क़ासिद यके बाद दीगरे आते रहे लेकिन तूने परवाह न की। अब तेरे पास ऐसा रसूल आया है जो तेरा निशन भी इस दुनिया से मिटा देगा।

(३) बुख़ारी ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जिस शख़्स की उम्र साठ साल की हो गई, खुदा उसके लिए कोई उज़्र न छोड़ेगा।

ख़ात्मा बिल-ख़ैर की अलामत

(१) तिर्मिज़ी व हाकिम ने अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फरमाता है तो उसे मौत से अमले ख़ैर की तौफ़ीक़ देता है। इसी क़िस्म की हदीस हाकिम से भी मरवी है।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने आइश रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत

की कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फरमाता है तो उसके मरने से एक साल पहले एक फरिश्ता मुक़र्रर फरमा देता है जो उसको राहे रास्त पर लगाता रहता है हत्ता कि वह ख़ैर पर मर जाता है और लोग कहते हैं कि फलां शख़्स अच्छी हालत पर मरा है जब ऐसा शख़्स मरने लगता है तो उसकी जान निकलने में जल्दी करती है तो उस वक़्त वह खुदा से मुलाक़ात को पसन्द करता है, और खुदा उसकी मुलाक़ात को। और जब अल्लाह किसी के साथ बुराई का इरादा करता है तो मरने से एक साल क़ब्ल उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देता है जो उसे गुम्राह करता रहता है हत्ता कि वह अपने बदतरीन वक़्त में मर जाता है। उसके पास जब मौत आती है तो उसकी जान अटकने लगती है। यह खुदा से मिलने को पसन्द नहीं करती और खुदा उस से मिलने को।

फाइदा : उलमा ने फरमाया बुरे ख़ात्मा के चार अस्बाब हैं : (१) नमाज़ में सुस्ती (२) शराब ख़ोरी (३) वालिदैन की नाफरमानी (४) मुसलमानों को तक्लीफ देना।

मौत के क़रीब होने और उसकी सख़्ती का बयान

अल्लाह तआला ने फरमाया : आ गये मौत के सकरात हक़ के साथ और फरमाया कि काश तुम ज़ालिमों को मौत की शिद्दत में देख लेते। वग़ैरह आयात।

(१) बुख़ारी ने आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम के सामने पानी का एक बर्तन था जिसमें आप हाथ डाल कर अपने चेहरे पर लगाते थे और फरमाते थे *ला इलाहा इल्लल्लाह इन्ना लिल-मौता सकरातुन*। यानी अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, बेशक मौत की भी सख़्तियां होती हैं।

(२) तिर्मिज़ी ने आइशा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर वफात की तक्लीफ देखने के बाद मैं किसी के आसानी से मर जाने पर रश्क नहीं करूंगा। बुख़ारी ने भी ऐसी ही रिवायत की।

(३) अब्दुल्लाह बिन अहमद ने ज़वाइदुज़्ज़ुहद में साबित से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) व५..त की बेचैनी में फरमाते थे कि इब्ने आदम अगर इस वक़्त के लिए नेक काम करता तो उसके लाइक़ था।

(४) लुक़्मान हन्फी और यूसुफ बिन याकूब हन्फी से मरवी है कि जब बशीर याकूब (अलैहिस्सलाम) के पास आए तो उन से कहा कि

मैं इसलिए आया हूं ताकि अल्लाह मौत की तकालीफ आप पर आसान कर दे।

(५) तबरानी ने कबीर में और अबू नईम ने इब्ने मस्ऊद से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मोमिन की जान इस तरह निकलती है जैसे कोई चीज़ छलकती है और काफिर की जान बह कर निकलती है। मोमिन जब कोई गुनाह करता है तो मौत के वक़्त शिद्दत के ज़रिया उसका कफ़्फ़ारा हो जाता है और काफिर जब कोई नेकी का काम करता है तो मौत के वक़्त आसानी करके उसे बदला दे दिया जाता है।

(६) दैनूरी ने मजालिसा में वहीब बिन हदद से रिवायत की कि अल्लाह तआला फरमाता है जब मैं किसी बन्दे पर रहम फरमाना चाहता हूं तो उसकी हर बुराई का बदला दुनिया ही में देता हूं, कभी बीमारी से, कभी घर वालों में मुसीबत डाल कर, कभी तंगी मआश से, फिर भी अगर कुछ बचता है तो मरते वक़्त उस पर सख़्ती करता हूं। हत्ता कि जब वह मुझ से मुलाक़ात करता है तो गुनाहों से ऐसा पाक होता है जैसा कि उस दिन था जिस दिन कि उसकी मां ने उसे जना था। और मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम कि मैं जिस बन्दे को अज़ाब देने का इरादा रखता हूं उसको उसकी हर नेकी का बदला दुनिया ही देता हूं, कभी जिस्म की सेहत से, कभी फराख़ी रिज़्क़ से, कभी अह्ल व अयाल की खुशहाली से, फिर भी अगर कुछ रह जाता है तो मरते वक़्त उस पर आसानी कर दी जाती है हत्ता कि जब मुझ से मिलता है तो उसकी नेकियों में से कुछ भी नहीं रहता कि वह नारे जहन्नम से बच सके। इब्ने अबी अद्दुनिया ने ज़ैद बिन असलम से भी ऐसी ही रिवायत की।

(७) इब्ने माजा ने आइशा से रिवायत की, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मोमिन को हर चीज़ में सवाब मिलता है यहां तक कि मौत के वक़्त जो तक्लीफ होती है उसमें भी।

(८) तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, हाकिम और बैहक़ी ने रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मोमिन पेशानी के पसीना से मरता है।

(९) हकीम तिर्मिज़ी ने नवादिरुल-उसूल में और हाकिम ने सलमान फार्सी से रिवायत की कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुना आप फरमाते थे कि मरने वाले में तीन अलामतें दखो, अगर उसकी पेशानी पर पसीना आए, आंखों में आंसू आएं और नथुने फैल

जाएं तो यह अल्लाह की रहमत है और अगर वह इस तरह आवाज़ निकाले जिस तरह नौजवान ऊंट जिसका गला घोंटा गया हो, रंग फीका पड़ जाए और झाग डालने लगे तो यह अल्लाह के अज़ाब नाज़िल होने की अलामत है।

(१०) सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में और मरुज़ी ने जनाइज़ में इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि मोमिन की ख़ताओं में से अगर कोई ख़ता बाक़ी रह जाती है तो मरते वक़्त पेशनी के पसीना से उसका कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है। बैहक़ी ने भी यही रिवायत अल्क़मा बिन क़ैस से की।

(११) मरुज़ी ने इब्राहीम नख़्ई से रिवायत की। उन्होंने कहा अल्क़मा ने असवद को वसीयत की मरते वक़्त, तुम मेरे पास रहना, मुझे कलिमे की तल्क़ीन करना और जब पेशनी पर पसीना देखो तो मुझे बशारत देना।

(१२) इब्ने अबी शैबा और मुरुज़ी ने सुफियान से रिवायत की कि बुज़ुर्गाने दीन मैयत की पेशानी के पसीना को फाले नेक समझते थे। उलमा ने फरमाया कि पेशानी पर पसीना का आना इस बात की अलामत है कि यह अपने किए हुए कामों पर शर्मिंदा है और काफिर में हया का नाम नहीं होता, तो उस पर यह अलामत ज़ाहिर नहीं होती।

(१३) इब्ने अबी शैबा ने अपनी मुसनद में अहमद ने ज़ुह्द में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि बनी इस्राईल के वाक़ेआत बयान किया करो, क्योंकि इनमें अजब-अजब बातें हुई हैं। फिर आपने फरमाया कि बनी इस्राईल की एक जमाअत क़ब्रिस्तान में गई और उन्होंने मशवरा किया कि दो रकअत पढ़ कर खुदा से दुआ करनी चाहिए कि वह किसी मुर्दा को ज़िन्दा कर दे जो हम को हालात बताए। चुनांचे वह यह काम कर रहे थे कि अचानक एक सियाह शख़्स नमूदार हुआ। उसकी पेशानी पर सज्दों के निशनाते थे। उसने कहा कि ऐ लोगो! तुमने मुझको क्यों परेशान किया, मुझको मरे हुए सौ साल हुए हैं लेकिन मौत की गर्मी अब तक महसूस कर रहा हूं, तो अल्लाह से दुआ करो कि वह मुझको पहली हालत पर लौटा दे। इसी क़िस्म की हदीस अहमद ने उमर बिन हबीब से रिवायत की।

(१४) अबू नईम ने कअब से रिवायत की कि मुर्दा जब तक क़बर में रहता है मौत की तक्लीफ उसे महसूस होती है, मोमिन पर ज़ाइद और काफिर पर कम।

(१५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने औज़ाई से रिवायत की कि मोमिन

मौत की तक्लीफ़ क़बर से उठने तक पाएगा।

(१६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने बसनदे क़वी हसन से रिवायत की। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मौत की तक्लीफ का ज़िक्र फरमाते हुए इरशाद किया कि यह तल्वार की तीन चोटों के बराबर है। इसी क़िस्म की हदीस ज़हहाक बिन हम्ज़ा से मरवी है।

(१७) ख़तीब ने तारीख़ में अनस से रिवायत की कि मलकुल-मौत की तक्लीफ तल्वार की एक हज़ार चोटों से ज़ाइद है।

(१८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अली से रिवायत की कि आपने फरमाया क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़ा व क़ुदरत में मेरी जान है कि एक हज़ार चोटें तल्वार की मेरे नज़्दीक बिस्तर पर मरने से बेहतर हैं।

(१६) अबुश्शैख़ ने किताबुल-अज़्मत में हसन से रिवायत की कि मूसा (अलैहिस्सलाम) से दरयाफ़्त किया गया कि मौत कैसी है? आपने फरमाया कि झरबेरी के दरख़्त की मानिन्द कि जिसकी शख़ें हर हर रग से उग गई हों और फिर उनको कोई खींचे, यह है मौत की आसान तर तक्लीफ़। इसी क़िस्म की अहादीस इब्ने अबी अद्दुनिया, अहमद वग़ैरहुम से मरवी हैं।

(२०) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि मरने वाले इंसान को फरिश्ते बांध देते हैं वरना वह जंगलात में भागता फिरता।

(२१) अबू शैख़ ने किताबुल-अज़्मत में फुज़ैल बिन अयाज़ से रिवायत की कि उन से दरयाफ़्त किया गया कि यह क्या वजह है कि मैयत की रूह निकाली जाती है और वह ख़ामोश रहता है। लेकिन अगर किसी इंसान के पैर में च्यूंटी काट लेती है तो यह तड़प जाता है? आपने फरमाया कि फरिश्ते उसे बांध देते हैं।

(२२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने शहर बिन हौशब से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से शदाइदे मौत के बारे में सवाल किया गया तो आपने फरमाया कि मौत की आसान तर तक्लीफ की मिसाल यह है कि कोई शख़्स कांटेदार शाख़ को ऊन में डाले और फिर उसे खींचे तो उस शाख़ के साथ ऊन भी निकल आएगा।

(२३) मरुज़ी ने जनाइज़ में मैसरह से रिवायत की कि अगर मौत की तकालीफ का एक क़तरा तमाम आसमान और ज़मीन पर रहने वालों पर टपका दिया जाए तो सब मर जाएं। लेकिन क़्यामत में एक घड़ी की तक्लीफ इस तक्लीफ से सत्तर गुना ज़ाइद होगी।

(२४) इब्ने अबी अद्दुनिया से मरवी है कि जब हज़रत अमर बिन आस की वफात का वक़्त क़रीब आया तो उनके बेटे ने उन से कहा

कि ऐ अब्बा जान! आप कह करते थे कि कोई अक़्लमन्द इंसान मुझे नज़अ के आलम में मिल जाए तो मैं उस से मौत के हालात दरयाफ़्त करूं, तो आपसे ज़ाइद अक़्लमन्द कौन होगा बराहे मेहरबानी अब आप ही मुझे मौत के हालात बता दीजिए। आपने फरमाया कि बख़ुदा ऐ बेटे! ऐसा मालूम होता है कि मेरे दोनों पहलू एक तख़्त पर हैं और मैं सूई के नकवे के बराबर सूराख़ से सांस ले रहा हूं और एक कांटोंदार शाख़ मेरे क़दम की तरफ से सर की जानिब खींची जा रही है। यह ही हदीस इब्ने सअद ने अवाना इब्नुल-हकम से रिवायत की।

(२५) इब्ने अबी शैबा और इब्ने अबी अद्दुनिया और अबू नईम ने हुलिया में इब्ने अबी मिल्कीया से रिवायत की कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि मुझे मौत का हाल बताओ। आपने कहा कि ऐ अमीरुल-मुमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु! वह कांटेदार दरख़्त की मानिन्द है। जो मुसलमान के अन्दर हो और उसकी रग व पै में सिरायत कर चुका हो, अब एक मज़्बूत बाजुओं वाला इंसान उसको खींच रहा हो।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने शद्दाद बिन औस से रिवायत की कि मौत दुनिया व आख़िरत की हौलनाकियों में सबसे ज़ाइद हौलनाक है, यह आरों के चीरने से, क़ैंचियों के कांटने से, हांडियों के उबालने से ज़ाइद है। अगर मुर्दा ज़िन्दा हो कर शदाइदे मौत लोगों को बता देता तो उनका ऐश और नींद सब कुछ ख़त्म हो जाता। इब्ने अबी अद्दुनिया ने ऐसी ही रिवायत वहब बिन मंबा से भी की है।

(२७) अबू नईम ने हुलिया में वासेला से रिवायत की रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि तुम अपने मुर्दों को कलिम-ए-तौहीद की तल्क़ीन करो और जन्नत की बशरत दो क्योंकि उस वक़्त बड़े-बड़े हलीम मर्द और औरतें हैरान होते हैं। उस वक़्त शैतान इंसान से बहुत ही ज़ाइद क़रीब होता है। बख़ुदा मलकुल-मौत को देखना तल्वार की एक हज़ार चोटों से कहीं ज़ाइद है। बख़ुदा जब इंसान मरता है तो उसकी हर रग इंफिरादी तौर पर तक्लीफ बर्दाश्त करती है। इस क़िस्म की एक हदीस इब्ने अबी अद्दुनिया से बरिवायत अबू हुसैन मरवी है।

(२८) इब्ने अबी अद्दुनिया, तअमा बिन ग़ैलान जअफी से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अल्लाह तो पटठों, रगों और पोरों की भी रूह निकालता है। ऐ अल्लाह मुझ पर उसको आसान फरमा दे।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में उबैद बिन उमैर से रिवायत की कि नबी करीम (अलैहिस्सलाम) एक मरीज़ की अयादत को तशरीफ़ ले गये। आपने फरमाया कि मौत की वजह से उसकी हर रग दर्दमन्द थी लेकिन उसके रब की जानिब से उसको यह खुशख़बरी दी गई कि इस अज़ाब के बाद कोई अज़ाब नहीं, पस उसे सुकून मिल गया।

आप एक मरीज़ की अयादत के लिए तशरीफ ले गये तो उस से दरयाफ़्त किया कि क्या हाल है? कहा कि मैं अपने को एक रग़बत करने वाला और डरने वाला महसूस करता हूं। आपने फरमाया जिस शख़्स में यह दो चीज़ें पाई गईं तो वह जिस चीज़ की उम्मीद करेगा खुदा उसे वह दिलाएगा और जिस चीज़ से वह डरेगा खुदा उसको उस से बेख़ौफ बना देगा।

(३०) अहमद ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि आख़िरी तक्लीफ जो बन्दे को पहुंचती है मौत है। इसी मज़्मून की रिवायत अबू नईम, मरूज़ी, बैहक़ी वग़ैरहुम से भी रिवायत की हैं।

(३१) सईद बिन मन्सूर ने ज़ैद बिन असलम से रिवायत की कि एक शख़्स ने कअब अहबार से दरयाफ़्त किया कि वह कौन सा मरज़ है जो ला इलाज है? आपने फरमाया कि वह मौत है। ज़ैद बिन असलम कहते हैं कि मौत एक मरज़ है जिसकी दवा रिज़वाने इलाही है।

(३२) क़शीरी ने (रिसाला) में अबुल-फ़ज़ल तूसी ने उयूनुल-अख़्बार में और दैलमी ने अपनी सनद से, अनस से रिवायत की कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि इंसान पर जब सकरात का आलम तारी होता है और मैयत की बेचैनी हो तो उसके आज़ा एक दूसरे को सलाम कहते हैं कि *अस्सलामु अलैका तुफ़ारिक़्नी व उफ़ारिक़ुका इला यौमिल-क़्यामते* यानी तुम पर सलामती हो, तुम मुझ से जुदा हो रहे हो और मैं तुम से क़्यामत तक के लिए जुदा हो रहा हूं।

(३३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हसन अलैहिर्रहमा से रिवायत की कि मरते वक़्त इंसान को सबसे ज़ाइद तक्लीफ उस वक़्त होती है जब रूह हलक़ तक पहुंचती है तो उस वक़्त वह बेचैन होता है और उसकी नाक उठ जाती है शहीद उस से मुस्तस्ना है।

(३४) तबरानी ने अबू क़तादा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि शहीद मौत की तक्लीफ सिर्फ इतनी पाता है जितनी किसी को च्यूंटी के काटने से होती है।

(३५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुहम्मद बिन कअब क़रज़ी से रिवायत

की कि सबसे आख़िर में मलकुल-मौत का इंतिक़ाल होगा। उन से कहा जाएगा, मर जाइए। तो उस वक़्त वह ऐसी चीख़ मारेंगे कि जिसको अगर ज़मीन व आसमान वाले सुन पाएं तो घबराहट से उनका दम निकल जाए।

(३६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने ज़्यादे नमीरी से रिवायत की कि मलकुल-मौत पर मौत की सख़्ती तमाम मख़्लूक़ की मौत की मज्मूई सख़्ती से ज़ाइद होगी।

फाइदा : कुरतबी ने कहा कि मौत की सख़्ती के दो फवाइद हैं, एक तो फज़ाइल व कमालात की तक्मील व दरजात की बुलन्दी, यह कोई अज़ाब और नुक़्स नहीं बल्कि हदीस शरीफ में आता है सबसे ज़ाइद आज़माइश अंबिया (अलैहिस्सलाम) की हुई फिर उनके बाद जो बुज़ुर्ग हुए और फिर उनके बाद जो हुए, *इला आख़िरही*।

दूसरा फाइदा : यह है कि मौत की तक्लीफ का अंदाज़ा लगाया जा सके अगरचे यह बातिनी चीज़ है क्योंकि बाज़ मरतबा देखने में आता है कि एक शख़्स मौत के शदाइद में मुब्तला है लेकिन देखने वाला यह देख रहा है कि वह हरकत भी नहीं करता। वह समझता है कि शयद रूह आसानी से जुदा हो रही है हालांकि वह उसके अन्दर वाले मुआमले का तसव्वुर तक क़ायम नहीं कर सकता। लेकिन जब यह बात मालूम हो गई कि खुदा के मुख़्लिस बन्दे औलिया व अंबिया दुनिया से रुख़्सत हुए तो उन पर सख़्त तरीन तकालीफ आयीं तो उम्मत के गुनहागारों के लिए यह चीज़ बाइसे तसल्ली हो गई। शहीद पर यह तकालीफ नाज़िल न होंगी।

फाइदा : उलमा की एक जमाअत ने बयान किया कि मिस्वाक का इस्तेमाल वक़्ते नेज़अ आसानी पैदा करता है। इस पर हज़रत आइशा की सही हदीस से इस्तिदलाल किया गया कि वक़्ते वफात आपने मिस्वाक की थी।

फाइदा : अहमद ने ज़ुह्द में मैमून बिन महरान से रिवायत की, उन्होंने फरमाया कि जब कोई शख़्स मौत के क़रीब कोई अमले नेक करता है और मौत के वक़्त उसकी याद आती है तो रूह का निकलना आसान हो जाता है।

फाइदा : इब्ने अबी हातिम ने क़तादा से इस आयत की तफ़्सीर नक़ल की कि *ख़लक़ल-मौता वल-हयाता* में हयात से मुराद जिब्रील का घोड़ा और मौत से मुराद चितकबरा मेंढा है। मक़ातिल और कल्बी ने कहा कि मौत को एक ऐसे मेंढे की सूरत में पैदा किया, जब वह

किसी चीज़ पर गुज़रती है तो वह मर जाती है। और ज़िन्दगी को घोड़े की शक्ल में पैदा किया। जब वह किसी चीज़ पर गुज़रता है तो वह चीज़ ज़िन्दा हो जाती है।

(३७) अबू शैख़ और इब्ने हिब्बान ने किताबुल-अज़्मत में वहब बिन मंबा से रिवायत की कि अल्लाह तआला ने मौत को चितकबरे मेंढे की शक्ल में पैदा किया, उसके चार बाज़ू हैं एक अर्श के नीचे, एक तहतुस्सरा में, एक मश्रिक़ में और एक मग़्रिब में। अल्लाह ने उस से फरमाया कि हो जा तो वह हो गया। फिर फरमाया कि ज़ाहिर हो जाओ तो वह इज़्राईल के सामने ज़ाहिर हो गया। इन आसार से मालूम होता है कि मौत एक जिस्म जो मेंढे की शक्ल में है वह अर्ज़ नहीं है इसलिए सहीहैन में है कि क़्यामत के दिन मौत को चितकबरे मेंढे की शक्ल में ला कर जन्नत व दोज़ख़ के दर्मियान खड़ा कर दिया जाएगा फिर पूछा जाएगा, क्या तुम उसको पहचानते हो? तो वह कहेंगे कि हां। क्योंकि हर एक उसे देख चुका होगा। पस उसे ज़बह कर दिया जाएगा।

फाइदा : बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर से रिवायत की कि मैंने आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्गे मफाजात के बारे में दरयाफ़्त किया कि आया यह बुरी है? तो आपने फरमाया क्योंकर बुरी है, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसके बारे में दरयाफ़्त किया तो आपने फरमाया कि मोमिन के लिए तो रहमत है लेकिन फाजिर के लिए अफसोसनाक गिरिफ़्त है।

इंसान मर्ज़े मौत में क्या कहता है उसके पास क्या पढ़ना चाहिए

और जब मर जाए तो क्या कहा जाए? इन सब चीज़ों का बयान

(१) अहमद, इब्ने अबी अद्दुनिया और दैलमी ने अबुद्दर्दा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जिस मरने वाले के सरहाने सूरः यासीन पढ़ी जाती है, उस पर मौत आसान हो जाती है। इब्ने अबी शैबा, अबू दाऊद, निसई और हाकिम से भी इस क़िस्म की रिवायात मरवी हैं।

(२) इब्ने अबी शैबा और मरुज़ी ने जाबिर बिन ज़ैद से रिवायत की कि मरने वाले के पास सूरः रअद का पढ़ा जाना मुस्तहब है क्योंकि उस से मुर्दा पर आसानी होती है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते मुबारका में जब कोई मरता था तो यह कहा जाता था।

तर्जमा : और हुज़ूर अलैहिस्सलाम पर दरूद पढ़ा जाता है और

बार-बार इस दुआ का तकरार होता था, हत्ता कि वह मर जाता था।

(३) इब्ने अबी शैबा और मरुज़ी ने शअबी से रिवायत की कि अंसार मैयत के पास सूरः बक़रह पढ़ते थे।

(४) अबू नईम ने क़तादा से वमन यत्तक़िल्लाहा यज्अल्लहू मख़्रजन। की तफ़्सीर यह बयान की कि जो अल्लाह से डरता रहता है, अल्लाह तआला उसको दुनिया के शुबहात से नजात देता है और मौत के वक़्त बेचैनी से और क़्यामत के दिन क़्यामत की हौलनाकियों से।

(५) मुस्लिम ने अबू सईद से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि तुम अपने मुर्दों को *ला इलाहा इल्लल्लाह* की तल्क़ीन करो। अहमद, अबू दाऊद, और हाकिम ने भी ऐसी ही रिवायत की।

(६) बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में इब्ने अब्बास से रिवायत की कि अपने बच्चों को सबसे पहले कलिम-ए-तैयबा सुनाओ और अपने मुर्दों को भी। क्योंकि जिस शख़्स का अव्वल व आख़िर कलाम *ला-इलाहा इल्लल्लाह* हो। और फिर वह हज़ार साल भी ज़िन्दा रहे तो उससे किसी गुनाह के बारे में न पूछा जाएगा।

(७) अबुल-कासिम कुशैरी ने अपनी अमाली में अबू हुरैरा से रिवायत की कि जब मरने वाले पर सख़्ती हो जाए तो उसको ज़बरदस्ती कलिमा न पढ़ाओ बल्कि उसको तल्क़ीन करो, क्योंकि उस कलिमा पर किसी मुनाफिक़ का ख़ात्मा नहीं होता।

(८) तबरानी और बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान और दलाइलुन्नुबुव्वह में अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि एक शख़्स हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) की बारगाह में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की यहां एक लड़का है जिसकी मौत का वक़्त क़रीब है लेकिन वह कलिमा पढ़ने की क़ुव्वत नहीं रखता। तो आपने फरमाया, क्या वह ज़िन्दगी में यह कलिमा न पढ़ता था? उसने कहा, हां ज़िन्दगी में पढ़ता था। तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सबके हम्राह उसके पास तशरीफ ले गये। आपने उस लड़के से फरमाया कि *ला इलाहा इल्लल्लाह* कहो! उसने कहा कि मैं उसकी ताक़त नहीं रखता। आपने फरमाया क्यों कहने लगा कि मैं अपनी वालिदा की ना़फरमानी करता था। आपने फरमाया, क्या वह ज़िन्दा है? उसने कहा, जी हां। चुनांचे वह औरत बारगाहे रिसालत में पेश की गई। आपने उस से दरयाफ़्त किया कि क्या यह तुम्हारा बेटा है? उसने कहा, जी हां, आपने फरमाया कि अगर एक बड़ी आग जलाई जाए और तुम से कहा जाए कि हम

उस लड़के को आग में डालते हैं वरना तुम मुआफ कर दो तो क्या तुम मआफ कर दोगी? वह कहने लगी, जी हां। आपने फरमाया कि तू हमें और खुदा को गवाह बना कर कह दे कि मैं उस से राज़ी हो गई। चुनांचे उसने कह दिया कि मैं राज़ी हो गई। फिर आपने लड़के से फरमाया कि अब कलिमा पढ़ो चुनांचे वह कलिमा पढ़ने लगा तो हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि *अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अंक़ज़हू मिनन्नारे।* यानी उस खुदा का शुक्र है कि जिसने मेरे सदक़ा में उसको जहन्नम के अज़ाब से नजात दिलाई।

(९) इब्ने असाकिर ने अब्दुर्रहमान मुहारबी से रिवायत की कि एक शख़्स की वफात का वक़्त क़रीब आ गया तो उस से कलिम-ए-तैयबा पढ़ने के लिए कहा गया। उसने जवाब दिया कि मैं उसके पढ़ने पर क़ादिर नहीं हूं क्योंकि मैं ऐसे लोगों के साथ नशिस्त व बर्ख़ास्त रखता था जो मुझे अबू बकर व उमर के बुरा भला कहने की तल्क़ीन करते थे।

(१०) अबू लैला और हाकिम ने बसनदे सही तलहा और उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की कि हम ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुना कि आप फरमाते थे मैं ऐसे तीन कलिमों को जानता हूं कि जब मरने वाला वह पढ़ ले तो उसकी रूह निहायत ही आराम से जुदा हो जाती है और क़्यामत के दिन उसके लिए नूर हो जाता है।

(११) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-मुह्तज़ेरीन में और तबरानी व बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम एक मरने वाले शख़्स के पास आए तो उसके आज़ा चीर कर देखे लेकिन कोई अमले ख़ैर न पाया, फिर उसका दिल चीरा कोई अमले ख़ैर न पाया, फिर उसके जबड़ों को चीरा तो देखा कि उसकी नोके जुबान तालू से लगी हुई है और वह ला इलाहा इल्लल्लाह कह रहा है। तो इस कलिमा की वजह से उसकी मग़्फ़िरत कर दी गई।

(१२) अबू नईम ने फरक़द संजी से रिवायत की कि जब किसी के मरने का वक़्त क़रीब होता है तो बाईं तरफ का फरिश्ता कहता है कि अज़ाब में तख़्फ़ीफ कर तो दाईं तरफ का फरिश्ता कहता है कि तख़्फ़ीफ़ नहीं करूंगा कि शायद इस तक्लीफ की वजह से यह कलिम-ए-तैयबा पढ़ ले और बख़्शा जाए।

(१३) तबरानी ने औसत में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि जिस ने मरते वक़्त यह कलिमात पढ़े तो उसे आग कभी न

खाएगी। *ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व लाहौला वला कुव्वता इल्लाह बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम।*

(१४) हाकिम ने सअद बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत की कि नबी करीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि क्या मैं तुम्हें इस्मे आज़म बताउंफ, वह इस्मे आज़म यूनुस अलैहिस्सलाम की दुआ है: *ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तुम मिनज़्ज़ालेमीन।* जिस शख़्स ने अपने मरज़ में यह दुआ चालीस मरतबा पढ़ ली और फिर इसी मरज़ में उसका इंतिक़ाल हो गया तो उसे शहीद का सवाब मिलेगा और अगर तन्दुरुस्त हो गया तो गुनाहों से पाक होगा।

(१५) इब्ने अबी अद्दुनिया किताबुल-मरज़ वल-कफ़्फ़ारात में और इब्ने मंबअ ने अपनी मस्नद में अबू हुरैरह की मरफूअ़ हदीस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : ऐ अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु! क्या मैं तुम्हें ऐसी हक़ बात न बताऊं कि जिसको मरीज़ मरज़ की इब्तिदा में पढ़ ले तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम से नजात देगा। मैंने अर्ज़ की हां ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बता दीजिए। आपने फरमाया कि वह कलिमात यह हैं :

तो अगर तुम अपने इसी मरज़ में मर जाओ तो तुम्हारे लिए रिज़वाने खुदावन्दी और जन्नत है और अगर तुम गुनहगार हो तो तुम्हारे गुनाह मआफ कर दिए जाएंगे।

(१६) इब्ने असाकिर अली ने रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को उन्होंने फरमाते हुए सुना कि जिस शख़्स ने वफात के वक़्त इन कलिमात को कह लिया वह जन्नत में दाख़िल होगा : तीन मरतबा *ला इलाहा इल्लल्लाहु अल-हलीमुल-करीम* तीन मरतबा *अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन* तीन मरतबा *तबारकल्लज़ी बेयहदेहिल मुल्कु युन्नयी व युमीतु वहुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर।*

(१७) सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में और बज़्ज़ार ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अल्लाह फरमाता है कि मोमिन मेरे नज़्दीक मुकम्मल भलाई है कि मैं उसकी रूह क़ब्ज़ करता हूं और वह मेरी तारीफ करता है। इसी क़िस्म की रिवायत बैहक़ी ने की।

(१८) सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में, मरुज़ी, मुस्लिम, इब्ने अबी शैबा ने उम्मुल-हसन से रिवायत की कि मैं उम्मे सलमा की ख़िदमत में हाज़िर थी कि इतने में एक शख़्स ने आकर इत्तिला दी कि फलां आदमी मर रहा है। तो आपने फरमाया कि जाओ जब उसके मरने

का वक़्त क़रीब हो तो कहना कि *सलामुन अलल-मुरसलीन वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन।*

(१६) तबरानी ने औसत में अबू बकरह से रिवायत की कि हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) अबू सलमा के पास उनके मरज़ुल-मौत में तशरीफ लाए तो जब उनकी आंखें फटने लगीं तो हुज़ूर ने उनको बन्द फरमा दिया तो घर वाले चीखने लगे। आपने उनको ख़ामोश कर दिया और फरमाया कि जब रूह निकलती है तो निगाह उसका पीछा करती है, जब कोई शख़्स मरता है तो मलाइका हाज़िर होते हैं और घर वाले जो कुछ कहते हैं वह उस पर आमीन कहते हैं। फिर आपने फरमाया ऐ अल्लाह! अबू सलमा को हिदायत याफ़्ता लोगों के दरजा में पहुंचा और उनके पसमांदगान में उनका जांनशीन मुक़र्रर फरमा। हमारी और उनकी क़्यामत के दिन मग़्फिरत फरमा।

(२०) हाकिम ने शद्दाद बिन औस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब कोई मरने लगे तो उसकी आंख बन्द कर दो कि जब रूह निकलती है तो निगाह उसका तआकुब करती है, और फरिश्ते वहां मौजूद होते हैं तो जो अ"ले ख़ाना कहते हैं वह उस पर आमीन करते हैं।

(२१) बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान और अबू नईम ने हुलिया में मुजाहिद से रिवायत की, वह कहते हैं कि मुझ से इब्ने अब्बास ने फरमाया कि देखो बग़ैर वुज़ू हरगिज़ न सोना क्योंकि रूह को जिस हालत में क़ब्ज़ किया जाता है उसी हालत में रखा जाता है।

(२२) तबरानी ने अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जिस शख़्स की रूह मलकुल-मौत ने आलिमे दीन में बहालते वुज़ू क़ब्ज़ की तो वह क़्यामत में मरतबा शहादत का पाएगा।

(२३) मरुज़ी ने बकर बिन अब्दुल्लाह मुज़नी से रिवायत की कि जब तुम किसी मुर्दा की आंखें बन्द करो तो कहो कि *बिस्मिल्लाहे व अला मिल्लते रसूलिल्लाह, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।*

मलकुल-मौत और उनके मददगारों का बयान

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया कि आप फरमा दीजिए कि तुम को मौत का फरिश्ता मौत देता है जो तुम पर मुक़र्रर है। नीज़ फरमाया कि यहां तक कि जब तुम में से किसी की वफात का वक़्त क़रीब आ जाता है तो हमारे फरिश्ते उसको मौत देते हैं और कोताही नहीं करते।

(१) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में और इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से तवफ़्फ़तहू रुसुलना की तफ़सीर में बयान करते हैं, रुसुल से मुराद मलकुल-मौत के मददगार फरिश्ते हैं। अबू शैख़ ने भी इसी क़िस्म की रिवायत की।

(२) अबू शैख़ ने किताबुल-अज़्मत में वहब बिन मंबा से रिवायत की कि जो फरिश्ते इंसानों को मौत देने आते हैं वही इंसान की मौत के औक़ात लिख देते हैं अब जब किसी नफ़्स की मौत का वक़्त होता है वह उसकी रूह मलकुल-मौत के हवाले कर देते हैं।

(३) इब्ने अबी हातिम ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा करने का इरादा फरमाया तो अर्श उठाने वाले फरिश्तों में से एक को भेजा कि ज़मीन से कुछ मिट्टी ले आओ। जब फरिश्ता मिट्टी लेने को आया तो ज़मीन ने फरिश्ता से कहा, मैं तुझे उस ज़ात की क़सम देती हूं जिसने तुझे मेरे पास भेजा कि मेरी मिट्टी तू न लेजा ताकि कल उसे आग में जलना पड़े। जब वह खुदा की बारगाह में पहुंचा तो उसने दरयाफ़्त किया कि मिट्टी क्यों न लाए? फरिश्ता ने ज़मीन का जवाब सुना दिया कि ऐ मौला! जब उसने तेरी अज़्मत का वास्ता दिलाया तो मैंने उसे छोड़ दिया। तो अल्लाह तआला ने दूसरे फरिश्ते को भेजा। उसके साथ भी यही मुआमला हुआ, हत्ता कि मलकुल-मौत (अलैहिस्सलाम) को भेजा। ज़मीन ने उनको भी यही जवाब दिया। तो आपने फरमाया ऐ ज़मीन! जिस ज़ात ने मुझे तेरी तरफ भेजा है वह तुझ से ज़ाइद इताअत व फरमां बरदारी के लाइक़ है मैं उसके हुक्म के सामने तेरी बात कैसे मान सकता हूं। चुनांचे आपने ज़मीन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से थोड़ी-थोड़ी मिट्टी ली और बारगाहे ईज़्दी में हाज़िर हुए तो खुदा ने उसको जन्नत के पानी से गूंधा तो वह कीचड़ हो गई। फिर अल्लाह तआला ने उस से आदम अलैहिस्सलाम को पैदा कर दिया। इब्ने इसहाक़ व इब्ने असाकिर वग़ैरुहुमा ने भी यही रिवायत क़द्रे तग़ैयुर व तबद्दुल से बयान की।

(४) इब्ने अबी हातिम, इब्ने अबी शैबा और अबू शैख़ ने अज़्मत में और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में रिवायत की कि दुनिया का निज़ाम चार फरिश्तों के सुपुर्द है। जिब्रील अलैहिस्सलाम के सुपुर्द लश्करों और हवाओं का काम है। मीकाईल अलैहिस्सलाम के सुपुर्द बारिश और नबातात का काम है। इज़्राईल अलैहिस्सलाम रूह के क़ब्ज़ करने के काम पर मामूर हैं और इस्राफ़ील इन सबको अम्रे इलाही पहुंचाते हैं।

(५) अबू शैख़ इब्ने हिब्बान ने किताबुल-अज़्मत में रबीअ़ बिन अनस

से रिवायत की कि मलकुल-मौत के बारे में उन से भी दरयाफ़्त किया गया कि आया वह तन्हा रूहें क़ब्ज़ करते हैं? तो उन्होंने फरमाया कि मलकुल-मौत के मददगार हैं और मुत्तबा हैं और वह उनके क़ाइद हैं और मलकुल-मौत का एक क़दम मश्रिक़ से मग़्रिब तक है और मुमिनीन की रूहें सिदरह के पास होती हैं।

(६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़ल-मुदब्बिराते अमरा की यह तफ़सीर रिवायत की, कि उससे मुराद वह फरिश्ते हैं जो मलकुल-मौत के साथ मैयत के पास क़ब्ज़े रूह के वक़्त हाज़िर होते हैं, उन में से कोई रूह को लेकर चढ़ता है और कोई आमीन कहता है, कोई नमाज़े जनाज़ा होने तक मैयत के लिए इस्तिग़फ़ार करता रहता है।

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु से *व क़ीला मन राक़* की यह तफ़सीर रिवायत की कि मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम के मददगार फरिश्ते एक दूसरे से कहते हैं कि उस शख़्स की रूह को क़दम से लेकर नाक तक कौन चढ़ाएगा।

(८) तबरानी ने कबीर में अबू नईम और इब्ने सैयदा ने अस्साहाबिया में ख़ज़रज अलैहिर्रमा से रिवायत की उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को एक मैयत के पास देखा कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम से ख़िताब फरमा रहे थे कि ऐ मलकुल-मौत! मेरे साथी के साथ नर्मी करो क्योंकि वह मोमिन है। तो मलकुल-मौत ने जवाब दिया कि आपकी आंखें ठण्डी हों और दिल खुश हो, मैं तो हर मोमिन पर नर्मी करता हूं, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कि मैं जब आदमी की रूह क़ब्ज़ करता हूं तो चीख़ने वाले चीख़ते हैं तो मैं कहता हूं कि बखुदा हम ने इस पर ज़ुल्म नहीं किया, न उसको वक़्त से पहले मौत दी, और हम ने उसको मौत दे कर कोई गुनाह नहीं किया तो अगर तुम अल्लाह के किए पर राज़ी हो तो मुस्तहिक़े अज होगे वरना लाइक़े अज़ाब, और हम को तो बार-बार आना ही है इसलिए डरते हो, ख़ेमे वाले हों या कच्चे मकानों वाले, नेक हों या बद, पहाड़ी इलाक़ों में रहने वाले हों या हम्वार ज़मीनों पर बसने वाले, मैं हर रात और हर दिन उन में से एक-एक के चेहरे को ग़ौर से देखता हूं, इसलिए मैं हर छोटे बड़े को उन से ज़ाइद पहचानता हूं, बखुदा अगर मैं मच्छर की रूह भी क़ब्ज़ करना चाहूं तो बेइज़्ने इलाही क़ब्ज़ नहीं कर सकता। जाफर बिन मुहम्मद कहते हैं कि मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम पंजगाना नमाज़ों के औक़ात में चेहरों को देखते हैं। तो

अगर देखते हैं कि किसी नेक और नमाज़ी इंसान की मौत क़रीब आ गई है तो शैतान को उस से दूर फरमाते हैं और उसको कलिम-ए-तैयबा की तालीम देते हैं।

(९) इब्ने अबी अद्दुनिया और अबू शैख़ की रिवायत में है कि मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम दिन में तीन मरतबा लोगों के चेहरे देखते हैं जिसकी उम्र पूरी हो जाती और उसका रिज़्क़ दुनिया से ख़त्म हो जाता है, उसकी रूह क़ब्ज़ फरमाते हैं। घर वाले रोने लगते हैं, मलकुल-मौत दरवाज़े के पट पकड़ कर खड़े हो कर फरमाते हैं, कि मैंने तुम्हारा कोई कुसूर नहीं किया, मैं तो अल्लाह की तरफ से मामूर हूं, न मैंने उसका रिज़्क़ खाया और न ही उसकी रूह क़ब्ज़ की, और मुझे तो तुम्हारे पास बार-बार आना है हत्ता कि तुम में से कोई बाक़ी न बचे। हसन फरमाते हैं कि लोग अगर उस फरिश्ता को देख पाएं और उसके कलाम को सुन लें तो मैयत को भूल कर खुद अपने ही आपको रोने लग जाएं।

(१०) जुबैर बिन बुकार व इब्ने असाकिर व मरुज़ी ने मैमून के वालिद से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैं मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह बिन हन्तब की मौत के वक़्त मंबज में उनके पास ही था तो एक शख़्स ने उनकी तक्लीफ देख कर कहा कि ऐ मलकुल-मौत उस पर नर्मी कीजिए तो मरने वाला जिस पर बेहोशी का आलम तारी था कहने लगा कि मैं तो हर मोमिन पर नर्मी करने वाला हूं।

(११) इब्ने अबी अद्दुनिया ने उबैद बिन उमैर से रिवायत की कि इब्राहीम (अला नबीयेना व अलैहिस्सलाम) एक रोज़ अपने घर में तशरीफ फरमा थे कि अचानक घर में एक ख़ूबसूरत शख़्स दाख़िल हुआ आपने पूछा, ऐ अल्लाह के बन्दे! तुझे इस घर में किस ने दाख़िल किया? उसने कहा कि घर वाले ने आपने फरमाया कि बेशक साहिबे खाना को उसका अख़्तियार है। यह तो बताओ कि तुम कौन हो? उसने कहा कि मैं मलकुल-मौत हूं। आपने फरमाया कि मुझे तुम्हारी चन्द निशानियां बताई गई हैं मगर तुम में उन में से एक भी नहीं। तो मलकुल-मौत ने पीठ फेर ली। अब जो आपने देखा तो उनके जिस्म पर आंखें ही आंखें नज़र आने लगीं और जिस्म का हर बाल नोकदार तीर की तरह खड़ा था, इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फौरन तअव्वुज़ पढ़ा और उन से कहा कि आप अपनी पहली ही शक्ल पर तशरीफ़ ले आइए। मलकुल-मौत ने फरमाया कि ऐ इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) जब अल्लाह तआला ऐसे शख़्स को वफ़ात देता है जो उसकी मुलाक़ात

को बेहतर जानता है तो मलकुल-मौत को इसी शक्ल में भेजा जाता है जिसमें मैं हाज़िर हुआ और दूसरी रिवायत में है कि जब उसने पीठ मोड़ी तो उसकी वह शक्ल आई जिस से वह बुरे लोगों की रूह को क़ब्ज़ करता है।

(१२) इब्ने मस्ऊद और इब्ने अब्बास (रज़ि अल्लाहु अन्हुम) की रिवायत में यूं है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सवाल किया कि ऐ मलकुल-मौत आप मुझे वह सूरत दिखाइए जिस में आप कुफ़्फ़ार की रूहों को क़ब्ज़ करते हैं। तो मलकुल-मौत ने कहा कि यह आपकी ताक़त से बाहर है। लेकिन आपके इसरार पर उन्होंने वह सूरत दिखानी शुरू की और फरमाया कि आप अपना मुंह मोड़ लीजिए। अब जो देखा तो एक सियाह शख़्स है सर में से आग के शेअले निकल रहे हैं उसके जिस्म से बाल के बजाए मुंह में आग लिए हुए आरह निकल रहे हैं। उसके कानों से भी आग निकल रही है। यह हाल देख कर आप पर ग़शी तारी हुई। अब जो देखा तो आप अपनी शक्ल में मौजूद थे। आपने मलकुल-मौत से कहा कि अगर काफिर को महज़ तुम्हारी शक्ल ही देखने की तक्लीफ बर्दाश्त करनी पड़े तो यह बहुत बड़ी तक्लीफ़ है। अब ज़रा यह बताइए कि मोमिन की रूह किस क़ालिब में हो कर आप निकालते हैं? फरिश्ता ने कहा कि ज़रा मुंह फेरिए। आपने मुंह फेर कर जो देखा तो आपके सामने एक हसीन नौजवान था जिसका जिस्म महक रहा था, जिसके कपड़े सफेद थे। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि अगर मोमिन को सिर्फ आपके दीदार की दौलत दी जाए तो काफी है।

(१३) अहमद ने ज़ुहद में अबू शैख़ ने अज़्मत और अबू नईम ने मुजाहिद से रिवायत की कि ज़मीन मलकुल-मौत के लिए तश्त की तरह कर दी गई है कि जहां से चाहें जिसको चाहें उठा लें उनके कुछ मददगार हैं जो रूहें क़ब्ज़ करके उनके हवाले करते हैं।

(१४) इब्ने अबी अद्दुनिया और अबू शैख़ ने अश्अस बिन सलीम से रिवायत की कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने मलकुल-मौत से दरयाफ़्त किया कि वबा के ज़माने में कोई मश्रिक़ में हो और कोई मग़्रिब में। तो आप क्या करते हैं? तो उन्होंने कहा कि मैं रूहों को अल्लाह तआला के हुक्म से बुलाता हूं, तो वह मेरी इन दो उंगलियों के दर्मियान आ जाती हैं और ज़मीन को तश्त की मानिन्द कर दिया गया है जहां से चाहता हूं उठाता हूं।

(१५) दैनूरी ने मजालिसा में रिवायत की कि मलकुल-मौत से कहा

गया कि आप रूहों को किस तरह क़ब्ज़ करते हैं आपने फरमाया कि मैं उनको पुकारता हूं वह लब्बैक कहती हुई हाज़िर हो जाती हैं।

(१६) इब्ने अबी अद्दुनिया, अबू शैख़ और अबू नईम ने शहर बिन हौशब से रिवायत की कि मलकुल-मौत बैठे हुए हैं और दुनिया उनके दोनों घुटनों के समाने है और लौहे महफूज़ जिसमें उमरें हैं उनके सामने है और उनकी ख़िदमत में कुछ फरिश्ते हमातन खड़े हैं। जूंही किसी की मौत का वक़्त आता है वह फरिश्ते को उसकी रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म देते हैं।

(१७) इब्ने अबी हातिम और अबू शैख़ ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि उन से सवाल किया गया कि दो शख़्स आने वाहिद में मरते हैं कि एक मश्रिक़ में और दूसरा मग़्रिब में, तो फिर मलकुल-मौत कैसे रूहें क़ब्ज़ करता है? तो आपने जवाब दिया कि मलकुल-मौत की कुदरत अह्ले मश्रिक़ व मग़्रिब में ऐसी है, जैसे किसी शख़्स के पास दस्तर ख़्वान हो, अब वह जो चाहे उसमें से उठा ले।

(१८) जुवैबिर ने अपनी तफ़सीर में अपनी सनद से इब्ने अब्बास से रिवायत की कि मलकुल-मौत ही तमाम अह्ले ज़मीन को मौत देते हैं और उनको तमाम अह्ले ज़मीन पर इस तरह मुसल्लत किया गया है जैसे तुम में से कोई अपनी हथेली वाली चीज़ पर जब वह किसी पाक नफ़्स को क़ब्ज़ करते हैं तो उसकी रूह मलाइका रहमत के सुपुर्द करते हैं। और जब कोई ख़बीस रूह क़ब्ज़ करते हैं तो वह मलाइका अज़ाब के हवाले कर देते हैं। इब्ने अबी अद्दुनिया और अबू हातिम वग़ैरुहुमा ने यही रिवायत क़द्रे तग़य्युर से बयान की।

(१६) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में ख़सीमा से रिवायत की कि मलकुल-मौत सुलेमान की ख़िदमत में आए तो सुलेमान ने उन से दरयाफ़्त किया कि ऐ मलकुल-मौत! तुम एक घर में रहने वाले तमाम इंसानों को मार डालते हो और उसके पड़ोस वालों पर आंच तक नहीं आती? हज़रत मलकुल-मौत ने जवाब दिया कि मुझे तो कुछ पता नहीं होता कि किसे मारना है, मैं तो अर्शे इलाही के नीचे होता हूं तो मुझे मरने वालों के नामों की फेहरिस्त दी जाती है इसमें जिसका नाम होता है, उसे मौत देता हूं और जिसका नहीं उसे नहीं।

(२०) इब्ने अबी शैबा ने इसी सनद से रिवायत की कि मलकुल-मौत, सुलेमान की बारगाह में आए और उनके साथियों में से एक को बड़े घूरकर देखने लगे। जब आप चले गये तो उस शख़्स ने सुलेमान से दरयाफ़्त किया, कि यह शख़्स कौन थे? आपने फरमाया कि यह

मलकुल-मौत थे उसने अर्ज़ की सरकार ऐसा मालूम होता है कि यह मेरी रूह निकालने का इरादा रखते थे। आपने फरमाया कि फिर तुम्हारा क्या इरादा है? उसने अर्ज़ की कि हज़रत हवाओं को हुक्म दें कि वह मुझे सर ज़मीने हिन्द में पहुंचा दें। आपने हुक्म दिया और हवाएं उस शख़्स को सरज़मीने हिन्द में छोड़ आईं। फिर मलकुल-मौत तशरीफ लाए तो जनाब सुलेमान ने उन से दरयाफ़्त किया कि तुम मेरे एक साथी को घूर कर क्यों देखते थे? उन्होंने कहा कि हज़रत मैं इस पर तअज्जुब कर रहा था कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उसकी रूह हिन्द में क़ब्ज़ करूं और यह आपके पास बैठा है कैसे हिन्द पहुंचेगा।

(२१) इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि एक फरिश्ते ने इजाज़त चाही कि वह इद्रीस के पास जाए। चुनांचे वह उनकी ख़िदमत में आया और सलाम किया। इद्रीस ने उससे दरयाफ़्त किया कि क्या आपका मलकुल-मौत से भी कुछ तअल्लुक़ है? उसने कहा जी हां, वह मेरे भाई हैं। इद्रीस ने पूछा, क्या मुझे उन से कुछ फाइदा पहुंचवा सकते हैं? फरिश्ते ने कहा कि अगर आप चाहें कि मौत आगे पीछे हो जाए तो यह नामुम्किन है। अल्बत्ता मैं उन से यह कहूंगा कि मौत के वक़्त वह आप पर नर्मी करें। चुनांचे फरिश्ता ने इद्रीस को अपने बाज़ुओं पर बिठाया और आसमान पर पहुंचा यहां मलकुल-मौत से मुलाक़ात हुई। फरिश्ते ने कहा कि मुझे आप से एक काम है, मलकुल-मौत ने फरमाया मुझे आपकी ग़रज़ मालूम है आप इद्रीस अलैहिस्सलाम के बारे में बात करना चाहते हैं उनका नाम तो ज़िन्दों से मिट चुका है अब उनकी ज़िन्दगी का आध लम्हा बाक़ी रहा है। चुनांचे जनाब इद्रीस अलैहिस्सलाम फरिश्ते के बाज़ुओं ही में इंतिक़ाल फरमा गये।

(२२) मरुज़ी, इब्ने अबी अद्दुनिया और अबू शैख़ ने जाबिर बिन ज़ैद से रिवायत की कि मलकुल-मौत पहले लोगों को बिला किसी दर्द व मरज़ के वफात देते थे तो लोग उनको लानतें भेजते और गालियां देते। चुनांचे आपने बारगाहे खुदावंदी में शिकवा किया तो अल्लाह तआला ने अमराज़ को पैदा कर दिया। अब लोग कहते हैं कि फलां शख़्स फलां बीमारी के बाइस मर गया। मलकुल-मौत का नाम कोई नहीं लेता। अबू नईम ने आमश से ऐसी ही रिवायत की।

(२३) अहमद, बज़्ज़ार और हाकिम ने अबू हुरैरह से रिवायत की। वह नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से रिवायत करते हैं कि पहले मलकुल-मौत लोगों के पास खुल्लम खुल्ला आते थे। लेकिन जब मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास आए तो उन्होंने एक थप्पड़ मार कर उनकी

एक आंख फोड़ डाली। तो वह खुदा की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह! तेरे बन्दे मूसा अलैहिस्सलाम ने मेरी आंख फोड़ी अगर वह आपके मुकर्रम बन्दे न होते तो मैं उन पर सख़्ती करता। अल्लाह ने फरमाया : जाओ मेरे बन्दे से कहो कि वह अपना हाथ बैल की पीठ पर रख दें, उनके हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे हर बाल के बदले एक साल उम्र में तौसीअ कर दी जाएगी। मलकुल-मौत ने यह पैग़ाम उनको दे दिया। मूसा अलैहिस्सलाम ने दरयाफ़्त किया कि फिर उसके बाद क्या होगा? कहा कि मौत! कहा कि अगर मौत ही है तो फिर अभी रूह कब्ज़ कर लो। चुनांचे हज़रत मलकुल-मौत ने उनको सूंघा और उनकी मौत वाके हो गई और उधर हज़रत इज़्राईल की आंख दोबारा वापस कर दी गई। बस उसी दिन से हज़रत मलकुल-मौत छुप कर आने लगे।

(२४) अबू हुज़ैफा इस्हाक़ ने किताबुश्शदाइद में इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि फरिश्तों ने कहा कि ऐ अल्लाह! तेरे बन्दे इब्राहीम को मौत से बहुत डर लगता है। अल्लाह ने फरमाया कि उन से कह दो कि जब दोस्तों को मिले हुए ज़ाइद अरसा हो जाता है तो एक दूसरे की मुलाक़ात का मुश्ताक़ हो जाता है। हज़रत इब्राहीम को यह इत्तिला मिली तो आपने बारगाहे कुद्दूस में अर्ज़ की कि ऐ मौला तआला मैं तेरी मुलाक़ात का मुश्ताक़ हूँ। अल्लाह तआला ने एक फूल उनके लिए भेजा आपने वह सूंघा और सूंघते ही रूह क़ब्ज़ हो गई।

(२५) अबू शैख़ ने रिवायत की कि मलकुल-मौत ने इब्राहीम से अर्ज़ की, अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि आपकी रूह को मैं बहुत आसानी से क़ब्ज़ करूं। इब्राहीम ने फरमाया कि रब के पास जाओ और मेरे बारे में गुफ़्तगू करो। मलकुल-मौत खुदा की बारगाह में आए और गुफ़्तगू की। अल्लाह तआला ने फरमाया कि मेरे ख़लील से कहो कि तुम्हारा रब कहता है कि ख़लील तो ख़लील की मुलाक़ात को पसन्द करता है मलकुल-मौत ने खुदा का पैग़ाम इब्राहीम को दिया तो इब्राहीम ने फरमाया कि अच्छा रूह क़ब्ज़ कर लो। मलकुल-मौत ने कहा। ऐ इब्राहीम क्या आपने कभी शराब पी है? आपने फरमाया कि नहीं। मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम ने थोड़ा सा शराब सुंघा दिया और आपकी रूह फौरन क़ब्ज़ हो गई।

(२५) अहमद ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि दाऊद अलैहिस्सलाम बहुत ही बाग़ैरत थे जब घर से निकलते तो दरवाज़ों

में ताले डाल देते ताकि कोई घर में न जाए। एक दिन जब वापस तशरीफ लाए तो देखा कि घर में एक शख़्स खड़ा है आपने दरयाफ़्त किया कि तुम कौन हो? कहा मैं वह हूं जो बादशाहों से नहीं डरता, कोई हिजाब मेरे लिए हिजाब नहीं। दाऊद अलैहिस्सलाम ने कहा। बखुदा तुम मलकुल-मौत मालूम होते हो, मैं तुमको खुश आमदीद कहता हूं। आपने कम्बल ओढ़ा और आपकी रूह क़ब्ज़ हो गई।

(२६) तबरानी ने हुसैन से रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम की वफात के रोज़ जिब्रील हाज़िरे ख़िदमत हुए और मिज़ाज फर्सी की। आपने फरमाया कि मैं बेचैन और मग़्मूम हूं इतने में मलकुल-मौत ने हाज़िरी की इजाज़त चाही। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की कि यह मलकुल-मौत हाज़िरी की इजाज़त चाहते हैं आपसे पहले किसी से इजाज़त न चाही और आपके बाद भी किसी से इजाज़त नहीं चाहेंगे। आप ने इजाज़त मरहमत की। वह हाज़िर हुए और आपके सामने खड़े हो गये और अर्ज़ की अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं आपकी इताअत करूं तो अगर आप फरमाएं तो आपकी रूह क़ब्ज़ कर लूं और अगर न चाहें तो क़ब्ज़ न करूं? आपने फरमाया कि ऐ मलकुल-मौत क्या आप वाक़ई इस पर मामूर हैं? उन्होंने कहा हां, जिब्रील ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) खुदा आपकी मुलाक़ात का मुश्ताक़ है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया, ऐ मलकुल-मौत! तुम हुक्मे इलाही बजा लाओ। चुनांचे उन्होंने रूह क़ब्ज़ कर ली।

(२६) अहमद ने जुह्द में और सईद बिन मन्सूर ने अता बिन यसार से रिवायत की कि मलकुल-मौत हर घर वाले को हर दिन पांच मरतबा ग़ौर से देखते हैं कि आया उन्हें किसी रूह के क़ब्ज़ किए जाने का हुक्म दिया गया है या नहीं?

इब्ने अबी हातिम, अबु शैख़, इब्ने अबी शैबा वग़ैरहुम ने तादाद के इख़्तिलाफ से उसको रिवायत किया।

(२७) अबुल-फज़ल तूसी ने उयूनुल-अख़्यार में और इब्ने नज्जार ने तारीख़े बग़दाद में हज़रत अनस से रिवायत की कि मलकुल-मौत बन्दों के चेहरों को रोज़ाना सत्तर मरतबा देखता है। जब कोई बन्दा हंसता है तो मलकुल-मौत कहता है कि तअज्जुब की बात है मैं उसकी रूह क़ब्ज़ करने को आया हूं और यह हंस रहा है।

(२८) अबू शैख़ और अक़ीली और दैलमी ने हज़रत अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया

कि जानवरों और कीड़े मकोड़ों की रूहें तस्बीह में हैं। जब उनकी तस्बीह ख़त्म हो जाती है, उनकी मौत आ जाती है उनकी मौत मलकुल-मौत के क़ब्ज़े में नहीं। ख़तीब ने अपनी सनद से मुअम्मर कलाबी से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैं मालिक बिन अनस की ख़िदमत में हाज़िर आया और उनसे दरयाफ़्त किया कि मच्छरों की रूह भी मलकुल मौत कब्ज करते हैं तो उन्होंने दर्याफ़्त किया कि क्या उनमें जान है। मैंने कहा जी हां, तो आपने फरमाया कि बस फिर उनकी जान भी मलकुल-मौत ही क़ब्ज़ करते हैं क्योंकि कुरआन में है *अल्लाहु युतवफ़्फ़ीयल-अंफुसा हीना मौतिहा*। जुवैबिर ने अपनी तफ़्सीर ज़हाक से रिवायत की कि मलकुल मौत इन्सानों की रूहें क़ब्ज़ करते हैं और एक फरिश्ता जिन्नात की और एक शयातीन की और एक परिन्दों, चौपायों, दरिन्दों और मछलियों, कीड़े मकोड़ों की और फरिश्ते खुद सअ़क़-ए-उफला में मर जाएंगे और मलकुल-मौत उनकी अरवाह क़ब्ज़ करने के बाद मर जाएंगे और जो खुदा की राह में समुन्द्र का सफर करते हैं और शहीद हो जाते हैं। खुदा खुद उनकी अरवाह क़ब्ज़ करता है क्योंकि वह बहुत ही आला हैं कि समुन्द्र की गहराइयों की परवाह न करते हुए उसमें सवार हुए और जिहाद किया। इब्ने माजा ने भी उसको रिवायत किया।

(२६) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में रिवायत की कि पहली उम्मतों में एक शख़्स था जिसने चालीस साल तक खुश्की में खुदा की इबादत की, फिर उसने दुआ की कि ऐ अल्लाह! मुझे शौक है कि मैं तेरी इबादत समुन्द्र में करूं। चुनांचे वह साहिल समुन्द्र पर आया और लोगों से कहा कि मुझे भी कश्ती में बिठाओ। उन्होंने बिठा लिया। कश्ती चलते-चलते एक दरख़्त के पास पहुंच गई यह दरख़्त पानी में एक किनारे पर था। उसने कहा कि मुझे इस दरख़्त पर बिठा दो। लोग उसे बिठा कर आगे चल दिए। अब एक फरिश्ता आसमान पर चढ़ा और हस्बे मामूल कुछ बात करना चाही, लेकिन बात न कर सका वह समझ गया कि मुझ से कोई ग़लती सरज़द हो गई है चुनांचे वह इस दरख़्त वाले के पास आया कि तुम मेरी शफाअत कर दो। उसने दुआ की और खुदा बन्दे करीम से दर्ख़्वास्त की कि अल्लाह! मेरी रूह क़ब्ज़ करने के लिए इस फरिश्ते को मुक़र्रर फरमाना, जब उसकी मौत का वक़्त क़रीब आया तो वही फरिश्ता आया और उसने कहा कि जिस तरह तुमने मेरी सिफारिश की थी इसी तरह मैंने तुम्हारी सिफारिश की है, अब तुम जहां से चाहो तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करूं। चुनांचे उसने एक सज्दा किया उसकी आंख से आंसू टपका और उसी के साथ उसकी रूह क़ब्ज़ हो गई।

फ़ाइदा : इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में अबू ज़रआ से रिवायत की कि मुझ से नजीब बिन अबी उबैद ने कहा कि मैंने मलकुल-मौत को ख़्वाब में देखा कि वह कह रहे है कि अपने बाप से कहो कि वह मुझ पर दरूद पढ़ें ताकि मैं उन पर नर्मी करूं। मैंने यह बात अपने बाप से कही उन्होंने कहा कि ऐ मेरे बेटे मैं मलकुल-मौत से तुम्हारी मां से भी ज़्यादा मानूस हों।

(३०) इब्ने असाकिर ने ज़ैद बिन असलम से रिवायत की, उन्होंने अपने बाप से रिवायत की कि मेरे बाप ने कहा कि मुझे एक हदीस याद आई जो हज़रत उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) ने रिवायत की कि मुसलमान को जाइज़ नहीं कि वह अपनी वसीयत अपने सरहाने रखे बग़ैर तीन रातें गुज़ार दे। तो मैंने क़लम दवात मंगाई ताकि वसीयत लिखूं। मगर मैं उन सब चीज़ों के अपने सरहाने रख कर सो गया। मैंने ख़्वाब में देखा, कौन हो? कहा मलकुल-मौत। मैं यह सुन कर उन से पहलू तही करने लगा। उन्होंने कहा कि मुझ से एराज़ न करो, मैं तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने को नहीं आया। मैंने कहा कि मेरे लिए जहन्नम की आग से नजात का परवाना लिख दो। उन्होंने कहा कि क़लम दवात लाओ। मैंने उन्हें क़लम दवात और काग़ज़ उठा कर दे दिया जो सरहाने रख कर सो गया था, तो उन्होंने लिखा कि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। अस्तग़्फिरुल्लाह, अस्तिग़्फिरुल्लाह। और इसी से काग़ज़ के दोनों हिस्से भर दिए और काग़ज़ मुझे दे दिया और कहा कि यह है तुम्हारा निजात नामा, मैं घबरा कर उठा और चिराग़ मंगा कर वह काग़ज़ उठा कर देखा, जो सरहाने रखा था और उस पर यही तहरीर मौजूद थी।

फ़सल : बाज़ आयात में वफात देने की निस्बत मलकुल-मौत की जानिब है जैसे कुल यतवफ़्फ़ाकुम मलकुल-मौत। और बाज़ में है ततवफ़्फ़तहु रुसुलुना। और बाज़ में ततवफ़्फ़तहुमुल-मलाइकतु इन सब आयात से पता चलता है कि वफात फरिश्ते देते हैं। और बाज़ में है। अल्लाहु यतवफ़्फ़ल-अंफुसा, इससे पता चलता है कि ख़ुदा ख़ुद वफात देता है। बज़ाहिर इन आयात में टकराव मालूम होता है लेकिन कुरतबी ने कहा कि इनमें कुछ टकराव नहीं क्योंकि मलकुल-मौत रूह क़ब्ज़ करने वाले हैं जब कि दीगर फरिश्ते मददगार हैं और ख़ुदा फाइले हक़ीक़ी है।

कलबी कहते हैं कि मलकुल-मौत जिस्म से रूह निकालते हैं और फिर फरिश्तों के हवाले करते हैं, नेकों की मलाइका रहमत को और बदों की मलाइका अज़ाब को। रहा यह मामला कि मलकुल-मौत नेक,

के पास किस शक्ल में आते हैं और बदों के पास किस शक्ल में, इस का सबब क्या है? तो इस का सबब ज़ाहिर है कि फरिश्ता मुख़्तलिफ़ शक्लें अख़्तियार कर सकता है।

हर साल उम्रों का मुन्क़तअ़ होना

(१) दैलमी ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि शाबान तक उम्रें मुन्क़तअ़ की जाती हैं, हत्ता कि आदमी निकाह करता है और उसके यहां औलाद होती है हालांकि इन्दल्लाह उसका नाम मुर्दों की फेहरिस्त में आ चुका होता है।

(२) अबू यअ़ला ने अपनी सनद से आइशा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) से रिवायत की कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूरे शबान रोज़े रखते। मैंने उन से दरयाफ़्त किया तो आपने फरमाया कि इस साल मरने वाले हर आदमी का नाम इस माह लिखा जाता है, तो मैं पसन्द करता हूं कि जब खुदा तआला से मिलूं तो रोज़ादार हूं।

(३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अता बिन यसार से रिवायत की कि जब निस्फ़ शाबान की रात होती है तो मलकुल-मौत को एक सहीफा दिया जाता है और कहा जाता है कि इसमें जितने आदमी हैं, उनकी रूहें क़ब्ज़ करो, क्योंकि इंसान दरख़्त लगाता है, निकाह करता है, घर बनाता है और उसके यहां औलाद होती है हालांकि उसका नाम मुर्दों में लिखा जा चुका है।

(४) इब्ने जरीर ने उमर (जो अफ़्रह के गुलाम थे) से रिवायत की कि लैलतुल-क़द्र में मरने वालों के नाम लिख दिए जाते हैं। इंसान दरख़्त लगाने और निकाह करने में मसरूफ रहता है हालांकि उसका नाम मुर्दों में है।

(५) इब्ने जरीर ने इक्रमा से रिवायत की कि शाबान की पन्द्रहवीं से लेकर दूसरे शाबान तक के तमाम उमूर तय हो चुके होते हैं। ज़िन्दों और मुर्दों की फ़ेहरिस्त और हाजियों की फेहरिस्त, फिर इसमें ज़्यादती और कमी नहीं होती।

(६) दैनूरी ने मजालिसा में रिवायत की कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि निस्फ शाबान की रात में अल्लाह तआला फरिश्ते को वही् करता है कि जिस नफ़्स को इस साल क़ब्ज़ करना है कर ले।

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया और हाकिम ने मुस्तदरक में उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि बन्दे की मौत का इल्म सबसे पहले हाफिज़ को होता है क्योंकि वह बन्दे का अमल लेकर चढ़ता है और रिज़्क़ लेकर उतरता है। तो जब बन्दे का रिज़्क़ बन्द हो जाता है तो वह जान लेता है कि अब यह मरने वाला है।

(८) अबू शैख़ ने अपनी तफ़सीर में मुहम्मद बिन हम्माद से रिवायत की कि अल्लाह तआला के अर्श के नीचे एक दरख़्त है उसमें हर मख़्लूक़ का एक पत्ता है तो जिस बन्दे का पत्ता टूट कर गिरता है उसकी रूह निकल जाती है। यही मानी हैं अल्लाह के इस क़ौल के *वमा तस्क़ितु मिन वरक़तिन इल्ला यअ्लमुहा।* यानी जो पत्ता टूट कर गिरता है अल्लाह तआला उसको जानता है।

मैयत के पास मलाइक का आना, उसको बशारत का मिलना और डर का सुनाया जाना और जो कुछ मरते वक़्त देखता है उसका बयान!

(१) अहमद, इब्ने अबी शैबा, अबू दाऊद, हाकिम, इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम और बैहक़ी वग़ैरहुम ने बसनदे सही बरा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हम्राह एक जनाज़े में शरीक हुए। अभी क़बर न खोदी गई थी कि हम पहुंच गये। हम सब हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गिर्द ऐसे बैठ गये कि गोया हमारे सरों पर परिन्द हैं। आपके दस्ते अक़्दस में एक लकड़ी थी जिससे आप ज़मीन कुरेद रहे थे। फिर आपने सरे अक़्दस उठाते हुए दो या तीन मरतबा इरशद फरमाया *इस्तइज़ु बिल्लाहे मिन अज़ाबिल-कुबूर*। यानी अल्लाह की पनाह मांगो अज़ाबे क़बर से। फिर आपने फरमाया कि जो मोमिन बन्दा दुनिया से रुख़्सत होने वाला होता है और आख़िरत की तरफ मुतवज्जह होता है उस पर सफेद चेहरे वाले फरिश्ते नाज़िल होते हैं, उनके चेहरे आफताब की मानिन्द रौशन होते हैं, उनके पास जन्नती कफन और खुशबुएं होती हैं, वह हद्दे निगाह तक बैठ जाते हैं फिर मलकुल-मौत आकर मरने वालों के सरहाने बैठ जाते हैं और फरमाते हैं कि ऐ मुत्मइन नफ़्स! अल्लाह तआला की रज़ामन्दी और मग़्फिरत की तरफ निकल। तो उसका नफ़्स इस तरह बह कर निकल जाता है जैसे मश्कीज़ा से क़तरा। जूंही मलकुल-मौत उसके नफ़्स को अपने क़ब्ज़े में लेते हैं फरिश्ते फौरन उनके क़ब्ज़ा से लेते हैं और उसको उन जन्नती कफ़नों और खुशबुओं

में रख लेते हैं। फिर उससे रूए ज़मीन की बेहतरीन मुश्क की सी ख़ुश्बू महकती है। फिर उसको लेकर मलए आला की जानिब रवाना होते हैं। मलए आला के रहने वाले दरयाफ़्त करते हैं कि यह ख़ुशबू कैसी है? फरिश्ते उसका वह नमा बताते हैं जो दुनिया में उसका बेहतरीन नाम था। यहां तक कि वह उसको आसमाने दुनिया पर लेकर पहुंचते हैं और आसमान खुलवाते हैं तो हर आसमान के मुक़र्रब फरिश्ते उसके पीछे क़रीब वाले आसमान तक जाते हैं हत्ता कि सातवें आसमान पर पहुंचते हैं। तो अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरे बन्दे की किताब इल्लियों में लिखो, और उसे ज़मीन की तरफ वापस ले जाओ, क्योंकि मैंने उसको मिट्टी से पैदा किया, मिट्टी में लौटाऊंगा और उसी मिट्टी से दोबारा उठाऊंगा, फिर मुर्दा की रूह उसके जिस्म में वापस आती है और दो फरिश्ते आकर उसको बिठाते हैं और दरयाफ़्त करते हैं कि तेरा रब कौन है? वह कहता है अल्लाह फिर पूछते हैं तेरा दीन क्या है? वह कहता है इस्लाम तो वह पूछते हैं कि यह शख़्स जो तुम में भेजे गये कौन हैं? वह कहता है वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं फिर वह दर्याफ़्त करते हैं कि तुम्हारा इल्म क्या है? वह कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब को पढ़ा और उस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की। तो आसमान से एक पुकारने वाला पुकारता है कि मेरे बन्दे ने सच कहा, उसके लिए जन्नत का फर्श बिछाओ और जन्नत ही का लिबास पहनाओ और जन्नत का दरवाज़ा खोलो। तो जन्नत की हवा और ख़ुशबू आएगी और उसके लिए हद्दे निगाह तक क़ब्र में वुस्अत कर दी जाएगी। फिर उसके पास एक हसीन चेहरे, अच्छे कपड़े और ख़ुशबू वाला शख़्स आएगा और आकर कहेगा कि तुझे ख़ुशख़बरी हो, यह तेरे वादे पूरे किए जाने का दिन है। मुर्दा दरयाफ़्त करेगा कि तू कौन है कि तेरे चेहरे से ख़ैर व भलाई नमूदार है? वह जवाब देगा कि मैं तुम्हारा अच्छा अमल हूं, तो मुर्दा कहेगा कि ख़ुदाया क़यामत बरपा कर दे ताकि मैं अपने घर वालों की तरफ जा सकूं। और जब काफिर मरने के क़रीब होता है तो आसमान से सियाह चेहरों वाले फरिश्ते कम्बल लेकर उतरते हैं और हद्दे निगाह तक बैठ जाते हैं। फिर मलकुल- मौत उसके सरहाने बैठ कर कहते हैं। एक ख़बीस जान! अल्लाह के ग़ज़ब और नाराज़गी की तरफ निकल कर आ। पस वह रूह जिस्म में फैल जाती है और वह फरिश्ता उस रूह को जिस्म से इस तरह खींच लेता है जैसे सीख़ को तरावन से। जब वह रूह निकालता है तो फरिश्ते फौरन ही उस से ले लेते हैं और उसको कम्बल में लपेटते हैं, पस उस

में बदतरीन मुरदार की बदबू निकलती है। फिर फरिश्ते उसे ले कर मंलए आला में पहुंचते हैं तो वहां के बसने वाले दरयाफ़्त करते हैं कि यह ख़बीस रूह कौन है? वह फरिश्ते उसका वह बदतरीन नाम लेते हैं जिस से वह दुनिया में याद किया जाता था। फिर उसको वह आसमाने दुनिया पर लेकर पहुंचते हैं और उसे खुलवाना चाहते हैं, लेकिन खोला नहीं जाता। फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह आयत पढ़ी कि : *ला तुफ़त्तहु लहुम अबवाबस्समाए*। फिर अल्लाह तआला इरशाद फरमाएगा कि उसकी किताब को निचली ज़मीन के सिज्जीन में लिखो। चुनांचे उसकी रूह को सिज्जीन में फेंक दिया जाता है, फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह आयत तिलावत की कि : *व मयं युश्रिक बिल्लाहि फकइन्नमा ख़र्रा मिनस्समाइ फ़तअत्फ़तुत्तैरा व तुहवी बेहिर्रीहे फी मकानिन सहीक़*। फिर उसकी रूह उसके जिस्म में वापस कर दी जाती है। फिर दो फरिश्ते उसको बिठा कर दरयाफ़्त करते हैं कि : मन रब्बुका कि तुम्हारा रब कौन है? तो वह कहता है फ्हा हा ला अदरी अफसोस कि मैं नहीं जानता। फरिश्ते पूछते हैं कि मा दीनुका तुम्हारा दीन क्या है। तो कहेगा कि हाए अफसोस मैं नहीं जानता। फिर फरिश्ते दरयाफ़्त करेंगे कि उस शख़्स के बारे में क्या ख़्याल है जो तुम्हारी तरफ भेजा गया? वह जवाब देगा कि हाए अफसोस मैं यह भी नहीं जानता। पस आसमान से एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देता है कि मेरे इस बन्दे ने झूठ बोला कि उसके लिए जहन्नम का बिछौना बिछाओ, जहन्नम का लिबास पहनाओ और जहन्नम का दरवाज़ा उसकी जानिब खोल दो। पस उसकी लपेटें वहां तक आएंगी। फिर उसकी क़बर इस दरजा तंग कर दी जाती है कि उसकी पिस्लियां पिस कर चूर हो जाती हैं। फिर उसके पास (एक बद शक्ल बदबूदार शख़्स आएगा जिसका लिबास बहुत ना माकूल होगा, उससे कहेगा, तुझको मालूम होना चाहिए कि तुझे वह अज़ाब मिलेगा जिसका दुनिया में तुझसे से वादा किया गया था। वह कहेगा, तुम कौन हो? क्योंकि तुम्हारा चेहरा बुराई को ज़ाहिर करता है। तो वह शख़्स कहेगा कि रब्बे ला तुक़िम अस्साअतु ऐ रब क़्यामत बरपा न कर।

अबू यअ़ला ने अपनी मसनद में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से तमीम दारमी (रज़ि अल्लाहु अन्हु) से रिवायत की, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐ मलकुल-मौत! मेरे वली के पास जाओ और उसे ले आओ क्योंकि मैंने उसे रंज व राहत दोनों ही से आज़माया

है और उसे अपनी रज़ा के मुताबिक़ पाया तो मैं चाहता हूं कि उसे दुनिया के ग़मों से नजात दिलाऊं तो मलकुल-मौत पांच सौ मलाइक की जमाअत के हम्राह चलते हैं उनके साथ जन्नत की खुशबू वाले कफन होते हैं और उनके पास फूलों की शाख़ें होती हैं जिन में से मुख़्तलिफ खुश्बू महकती हैं और यह बीसियों रंगों की होती हैं। उनके पास मुश्क में बसा हुआ सफेद रेशम होता है तो मलकुल-मौत फरिश्तों के हम्राह बैठ जाते हैं। हर फरिश्ता अपना हाथ उसके एक-एक अज़्व पर रख लेता है और मुश्क में बसे हुए इस रेशम को उसकी ठोढ़ी के नीचे बिछा दिया जाता है और एक दरवाज़ा जन्नत की तरफ खोल दिया जाता है। अब उसका दिल जन्नत की जानिब रग़बत करता है कभी अज़्वाजे मुतह्हरह की जानिब, कभी लिबास की तरफ और कभी फलों की तरफ, जैसे घर वाले रोते हुए बच्चा का दिल बहलाते हैं, इसी तरह उसका दिल बहलाया जाता है और उसकी जन्नती अज्वाज उस वक़्त खुश हो रही होती हैं। उसकी रूह कूदती है। फरिश्ता कहता है कि ऐ पाक नफ़्स! अच्छे दरख़्तों, दराज़ सायों और बहते हुए पानियों की तरफ चल। मलकुल-मौत उस पर मां से भी ज़ाइद शफ़्क़त करता है, वह जानता है कि यह रूहुल्लाह के नज़्दीक महबूब है तो वह इस रूह पर नर्मी करके खुदा की रज़ा चाहता है पस उसकी रूह इस तरह निकाली जाती है जिस तरह आटे में बाल'' आपने फरमाया इधर उसकी रूह निकलती है और उधर तमाम फरिश्ते कहते हैं : *सलामुन अलैकुम उदखुलुल-जन्नते बेमा कुन्तुम तअ्मलून*। यही मा हसल अल्लाह तआला के इस फरमान का कि वह लोग जिनको फरिश्ता मौत देते हैं, पाकी की हालत में।

दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया कि अगर मोमिन है तब तो राहत और खुशबूएं और नेमत से पुर जन्नतें होती हैं। जब मलकुल-मौत उसकी रूह निकालते हैं तू रूह जिस्म को मुबारकबाद देती है और कहती है कि ऐ जिस्म! तू मुझे अल्लाह की इताअत की तरफ जल्दी ले जाता था और मासियत से परहेज़ कराता था, तो आज तुझको मुबारक हो कि खुद भी तूने नजात पाई और मुझ को भी नजात दिलाई। जिस्म भी रूह से यही कहता है और ज़मीन के वह हिस्से जिन पर यह नेक बन्दा इबादत करता था, उस पर रोते हैं। और हर वह आसमानी दरवाज़ा जिससे उसका अमले ख़ैर चढ़ता और रिज़्क़ नाज़िल होता था चालीस रोज़ तक रोता है। जब उसकी रूह निकल जाती है तो पाँच सौ फरिश्ते उसके पास खड़े हो जाते हैं। जब इंसान उसको किसी पहलू पर लिटाना

चाहते हैं तो फरिश्ते पहले लिटा देते हैं और इंसानों के कफन से पहले ही कफन पहना देते हैं। और उनकी खुशबू से पहले खुशबू लगा देते हैं और उसके घर के दरवाज़े से क़बर के दरवाज़े तक फरिश्तों की दो रूया क़तारें खड़ी हो जाती हैं और उसके लिए इस्तिग़फार करती हैं। उस वक़्त शैतान इस क़द्र ज़ोर से चीख़ता है कि मुर्दे के जिस्म की बाज़ हड्डियां इससे टूट जाती हैं। शैतान अपने लश्कर से कहता है कि तुम्हारे लिए ख़राबी हो, इस बन्दे ने कैसे नजात पा ली? वह कहते हैं कि यह तो गुनाहों से बचा हुआ था। जब मलकुल-मौत उसकी रूह आसमान पर पहुंचाते हैं तो जिब्रील अलैहिस्सलाम इस्तिक़्बाल करते हैं और सत्तर हज़ार फरिश्ते उनके साथ होते हैं। हर फरिश्ता उस शख़्स को बशरत देता है। जब मलकुल-मौत रूह को लेकर अर्श के पास पहुंचते हैं तो वह खुदा की बारगाह में सज्दा रेज़ होती है। अल्लाह तआला मलकुल-मौत से फरमाता है कि मेरे बन्दे की रूह को लेकर सरसब्ज़ व शदाब दरख़्तों, और बहते हुए पानी में रख दो।

जब उसे क़ब्र में रखा जाता है तो नमाज़ उसकी दाएं तरफ आती है और रोज़े बाएं तरफ। और कुरआन व ज़िक्र व अज़्कार उसके सर के पास और उसका नमाज़ों की तरफ चलना, क़दमों की तरफ आता है और सब्र क़ब्र के एक गोशा में आता है। फिर अल्लाह अज़ाब को भेजता है तो नमाज़ कहती है कि पीछे हट कि यह तमाम ज़िन्दगी तकालीफ बर्दाश्त करता रहा, अब आराम से लेटा है। अब अज़ाब बाएं तरफ से आता है तो रोज़े यही जवाब देते हैं। सर की जानिब से आता है तो यही जवाब मिलता हैं पस अज़ाब किसी जानिब से भी उसके पास नहीं पहुंचता, जिस राह से जाना चाहता है उसी तरफ से अल्लाह तआला के दोस्त को महफूज़ पाता है, पस अज़ाब महफूज़ पा कर वापस होता है। उस वक़्त सब्र तमाम आमाल से कहता है कि मैं इसलिए न बोला कि अगर तुम सब आजिज़ हो जाते तो मैं बोलता। लेकिन मैं अब पुल सिरात और मीज़ान पर काम आऊंगा। फिर अल्लाह तआला दो फरिश्तों को भेजेगा जिनकी निगाहें उचके लेने वाली बिजली की मानिन्द होंगी और आवाज़ कड़क दार बिजली की तरह, दांत सींगों के मानिन्द, सांसें शुअलों की मानिन्द, अपने बालों को रौंदते हुए चलते होंगे, इन दोनों के कांधे के दर्मियान अज़ीम फासिला होगा। मुमिनीन के अलावा उनके दिल किसी के लिए मेहरबानी और रहम करने वाले न होंगे। उनका नाम है मुंकिर और नकीर। उनमें से हर एक के हाथ में एक हथौड़ा होगा। अगर जिन्न व इन्स जमा हो जाएं तो उसको न उठा पाएं। फिर

मुर्दे से कहेंगे बैठ जाओ! वह बैठ जाएगा और उसके कफन के कपड़े उसके बदन से गिर कर नीचे आ जाएंगे फिर वह पूछेंगे कि तुम्हारा रब कौन है, दीन क्या है? रसूल कौन है? यह कहेगा कि मेरा रब अल्लाह तआला! और दीने इस्लाम और रसूल, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं और वह ख़ातमुन्नबीयीन हैं। वह दोनों कहेंगे कि तूने सच कहा। फिर उसको क़बर में रख कर क़ब्र को हर जानिब से फराख़ कर दिया जाएगा। फिर उस से कहेंगे कि ज़रा ऊपर तो देख। अब जो देखेगा तो दरवाज़ा जन्नत की तरफ खुला होगा। फिर वह कहेंगे कि ऐ अल्लाह के वली जन्नत में तेरा यह मक़ाम है क्योंकि तू इताअते खुदावन्दी रहा।

रसूले खुदा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि बखुदा उस वक़्त उसकी ऐसी फरहत होगी कि उसे कभी न भूलेगा। अब उस से कहा जाएगा कि ज़रा नीचे देखो, तो जहन्नम की तरफ एक दरवाज़ा खुलेगा, वह दोनों फरिश्ते कहेंगे कि ऐ वली अल्लाह! तूने इस से नजात पा ली। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि बख़ुदा इस वक़्त उसको ऐसी खुशी होगी जो कभी ख़त्म न होगी, उसके लिए सतहत्तर दरवाज़े जन्नत के खोले जाएंगे जिन से जन्नत की ठंडकें और खुशबुएं आएंगी यहां तक कि उसे हश्र के दिन क़ब्र से उठाया जाएगा। फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐ मलकुल-मौत अब तुम मेरे दुश्मन के पास जाओ और उसे लेकर आओ। मैंने उसके रिज़्क़ में कुशादगी की और नेमतों से सरफराज़ किया लेकिन वह मेरे शुक्र से हमेशा इंकार करता रहा है पस आज उसे लाओ ताकि मैं उस से इंतिक़ाम लूं। पस मलकुल-मौत उसके पास बदतरीन शक्ल में पहुंचते हैं, उनकी बारह आंखें होती हैं और जहन्नमी कांटों की सलाख़ें होती हैं, उनके हमराह पांच सौ फरिश्ते होते हैं हर एक के पास तांबा, जहन्नमी चिंगारियां और भड़कते हुए कोड़े होते हैं। तो मलकुल-मौत यह ख़ारदार सलाख़ें इस तरह मारते हैं कि हर कांटा जड़ तक उस शख़्स के रग व पै में दाख़िल हो जाता है फिर उन सलाख़ों को सख़्ती से मोड़ते हैं तो उसकी रूह उसके क़दमों के नाखुनों से निकलती है और उस वक़्त अल्लाह के दुश्मन पर बेहोशी का आलम तारी होता है और उसके फरिश्ते उसकी पीठ और चेहरे पर कोड़े मारते हैं और मारते उसके हलक़ तक आते हैं। फिर वह तांबा और चिंगारियां उसकी ठोढ़ी के नीचे बिछा दी जाती हैं। फिर मलकुल-मौत फरमाते हैं कि ऐ मल्ऊन जान! बादे समूम, गर्म पानी

और गर्म साए की तरफ़ आ। जब मलकुल-मौत रूह निकालते हैं तो रूह जिस्म से कहती है कि ऐ जिस्म! अल्लाह तुझको मेरी जानिब से बदतरीन सज़ा दे क्योंकि मुझे मासियत की तरफ तेज़ी से ले जाता था और नेकी से पीछे रखता था। तो खुद भी हलाक हुआ और मुझे भी हलाकत में डाला। जिस्म भी रूह से यही कहता हैं ज़मीन के वह हिस्से जिन पर वह निगाह करता था, उसको लानत करते हैं इब्लीस के लश्कर इब्लीस के पास जा कर उसे खुशख़बरी देते हैं कि उन्होंने एक आदमज़ाद को जहन्नम रसीद करा दिया। जब उसे क़बर में रखा जाता है तो उसकी क़बर को तंग किया जाता है। हत्ता कि उसकी एक तरफ की पिस्लियां दूसरी तरफ निकल जाती हैं। अल्लाह तआला उसके पास सियाह सांप भेजता है जो उसे डसना शुरू कर देते हैं। फिर खुदा की तरफ से दो फरिश्ते आकर उस से दरयाफ़्त करते हैं, तेरा रब कौन है, तेरा दीन क्या है, तेरा नबी कौन है? वह कहता है मुझे मालूम नहीं। फरिश्ते कहते हैं कि तूने जानना चाहा ही कब था? फिर वह उसको ऐसे गुरज़ मारते हैं कि क़बर में चिंगारियां उड़ती हैं, फिर कहते हैं कि ज़रा ऊपर को देखो! जब वह ऊपर देखता है तो जन्नत का दरवाज़ा नज़र आता है, फरिश्ते कहते हैं कि अगर तू अल्लाह तआला की इताअत करता तो तेरा मक़ाम यहां होता। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि बखुदा उस वक़्त उसके दिल में ऐसी हसरत पैदा होती है जो कभी ख़त्म न होगी। फिर उसको जहन्नम का दरवाज़ा खोल कर दिखाया जाता है और कहा जाता है कि ऐ अल्लाह के दुश्मन नाफरमानियों की वजह से अब तेरा मक़ाम यह है और सतहत्तर दरवाज़े जहन्नम के खोल दिए जाते हैं जिस में से गर्मी और बादे समूम आती है और यह सिलसिला क़्यामत तक जारी रहेगा।

(२) सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में अली बिन अबी तालिब से रिवायत की कि वन्नाज़ेआते ग़रक़न से मुराद वह फरिश्ते हैं जो काफ़िरों की रूह को निकालते हैं। और वन्नाशेताति नश्ता। मुराद वह फरिश्ते हैं तो काफ़िरों की रूहों को लहू और नाखुनों के दर्मियान से खींचते हैं। और वस्साबेहाते सबहा। से मुराद वह फरिश्ते हैं जो मुसलमानों की अरवाह को लेकर आसमान व ज़मीन के दर्मियान तैरते हैं और फ़स्साबेहाते सबक़ा से मुराद वह फरिश्ते हैं जो मुसलमानों की रूहों को लेकर एक दूसरे से सबक़त करना चाहते हैं।

(३) इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से वन्नाज़ेआते ग़रक़न की तफ़्सीर में फरमाया कि उस से मुराद कुफ़्फ़ार की रूहों को आग में

ग़र्क़ करने वाले फरिश्ते हैं।

(४) जुवैबिर ने अपनी तफ़सीर में इब्ने अब्बास से अल्लाह तआला के क़ौल वन्नाज़ेआते ग़रक़न के बारे में रिवायत की कि इससे मुराद कुफ़्फ़ार की अरवाह हैं। जब वह मलकुल-मौत को देखती हैं तो मलकुल-मौत उनको अल्लाह की नाराज़गी की इत्तिला देते हैं और उनकी रूहों को गोश्त और पट्ठों से निकालते हैं और वस्साबेहात सबहा से मुराद मुमिनीन की अरवाह हैं। जब वह मलकुल-मौत को देखती हैं तो मलकुल-मौत कहते हैं कि ऐ पाक रूह रहमत व रैहान की तरफ आ और इस खुदा की बारगाह में चल जो राज़ी है। रूहें यह सुन कर खुशी से तैरने लगती हैं और जन्नत की तरफ शौक़ का इज़्हार करती हैं। और वसाबेक़ाते सबक़ा से मुराद यह है कि वह खुदा तआला की करामतों की तरफ चलती हैं।

(५) इब्ने अबी हातिम ने रबीअ बिन अनस से रिवायत की कि वन्नाज़ेआते ग़रक़ा वन्नाशेताते नश्ता यह दोनों आयतें कुफ़्फ़ार के बारे में नाज़िल हुईं। नज़अ के वक़्त फरिश्ते उसको सख़्ती से खींचते हैं। *वस्साबेहाते सबहा फ़स्साबिक़ाते सबक़ा* यह मुमिनीन के बारे में नाज़िल हुईं।

(६) इब्ने अबी हातिम ने सुदी अलैहिर्रहमा से रिवायत की कि वन्नाज़ेआते ग़रक़ा से मुराद यह है कि इंसान का नफ़्स मरते वक़्त सीने में डूब जाता है। वन्नाशेताते नश्ता। यानी मलाइके रूह को उंगलियों और क़दमों से सूंतते हैं वस्साबेहाते सब्हा यानी जब नफ़्स मौत के वक़्त सीने में तैरता है। अब्दुर्रहीम अरमनी ने किताबुल-इख़्लास में अपनी सनद से रिवायत की कि ज़हहाक अलैहिर्रमा ने कहा कि जब मोमिन इंसान मरता है तो उसकी रूह मुक़र्रबीन के साथ आसमान पर ले जाई जाती है। रावी कहते हैं कि मैंने दरयाफ़्त किया कि मुक़र्रिबून कौन हैं? तो उन्होंने जवाब दिया कि जिनका मरतबा दूसरे आसमान से क़रीब है। फिर यके बाद दीगरे तमाम आसमानों पर से गुज़ारते हुए सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुंचते हैं और यहीं अम्रे इलाही की हर चीज़ पहुंच कर रुक जाती है। फरिश्ते कहते हैं कि यह तेरा फलां बन्दा है हालांकि अल्लाह को मालूम है फिर उसे अज़ाब से रुस्तगारी का मुहर लगा हुआ परवाना दिया जाता है, यही मक़्सद है अल्लाह तआला के इस क़ौल का कि : *कल्ला इन्ना किताबल-अबरारे लफी इल्लीयीन वमा अदराका मा इल्लीयून किताबुन मरक़ूमुन यशहदुहुल-मुक़र्रबून।* यानी हरगिज़ नहीं! बेशक नेकों की किताब इल्लीयून में है और तुम क्या जानो

कि इल्लीयून क्या है यह एक लिखी हुई किताब है जिस पर मुक़र्रबून गवाह हैं।

(७) मुस्लिम ने इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि शबे मेअ्राज में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब सिद्‌रतुल-मुन्तहा पर पहुंचे जहां रूहें पहुंचती हैं तो आप से कहा गया कि यह सिदरह है यहां आपके हर उम्मती की रूह पहुंचती है। इब्ने अबी हातिम और जरीर वग़ैरहुमा ने भी इसे रिवायत किया।

(८) अबुल-क़ासिम बिन मुन्दह ने किताबुल-अहवाल वल-ईमान बिस्सूल में रिवायत की कि अबू सईद खुदरी ने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब मोमिन दुनिया से रुख़्सत होने लगता है तो खुदा के फरिश्ते जिनके चेहरे सूरज की मानिन्द चमकते हैं नाज़िल होते हैं, उनके हमराह जन्नती खुशबुएं और कफन होते हैं, वह ऐसी जगह बैठते हैं जहां से मुर्दा उनको देखता है, जब उसकी रूह परवाज़ करती है तो हर फरिश्ता उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करता है।

(६) मुस्लिम व बैहक़ी ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि जब मोमिन की रूह परवाज़ करती है, तो दो फरिश्ते उसका इस्तिक़्बाल करते हैं और उसे आसमान की जानिब ले जाते हैं। अहले आसमान कहते हैं कि पाक रूह है जो ज़मीन की तरफ से आती है। फिर वह उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करते हैं, फिर उसे बारगाहे ईज़्दी में पेश किया जाता है। अल्लाह तआला फरमाता है जाओ उसे क़्यामत तक वापस ले जाओ। और जब कोई काफिर मरता है तो उस में से बदबू निकलती है और मलाइक उस पर लानत करते हैं। अहले आसमान कहते हैं कि ख़बीस रूह अहले ज़मीन की तरफ़ से आती है। फिर उसको भी क़्यामत तक के लिए वापस कर दिया जाता है।

(१०) अहमद, निसई, इब्ने हिब्बान, हाकिम और बैहक़ी ने रिवायत की अबू हुरैरह से कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब मोमिन की मौत का वक़्त क़रीब आता है तो रहमत के फरिश्ते सफेद रेशम लेकर आते हैं और रूह से कहते हैं ऐ रूह! अल्लाह तआला की रहमत व मेहरबानी की जानिब और रिज़ाए रब की तरफ़ आ। तो वह ऐसे निकलती हैं जैसे कि बेहतरीन खुशबू महकती हो, हत्ता कि फरिश्ते उसे लेकर एक दूसरे को सुंघाते हैं। फिर उसको आसमानों की जानिब ले जाते हैं। जिस आसमान पर पहुंचती है उस आसमान वाले कहते हैं कि क्या ही पाक रूह अहले ज़मीन की तरफ से आती

है। फिर उसको दूसरी अरवाहे मुमिनीन की तरफ ले जाते हैं तो उनको उस से ज़ाइद खुशी होती है, जैसे किसी का कोई ग़ायब शुदा रिश्तादार वापस आ जाए, जब उस से पूछते हैं कि फलां इब्न फलां का क्या हाल है? तो वह रूह कहती है, उसे छोड़ो, वह दुनिया के ग़म में है अन्क़रीब ही राहत हासिल कर लेगा। और बाज़ के बारे में वह यह कहती है कि फलां इब्ने फलां क्या अभी तुम्हारे पास न पहुंचा? वह रूहें जवाब देती हैं कि उसका ज़िक्र छोड़ वह तो जहन्नम को सुधारा। और जब काफिर की रूह निकलती है तो फरिश्ते उसके पास आते हैं और कहते हैं कि ऐ रूह! अल्लाह तआला के अज़ाब की तरफ निकल, तू खुदा से नाराज़ और खुदा तुझ से नाराज़, तो यह बदबूदार मुर्दे की तरह निकलती है फरिश्ते उसे ज़मीन के दरवाज़े पर ले जाते हैं तो जिस दरवाज़े पर पहुंचते हैं यही निदा आती है कितनी बदबूदार है यह रूह! हत्ता कि उसे कुफ़्फ़ार की रूहों में ला कर मिला देते हैं।

(११) इब्ने माजा और बैहक़ी ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि आदमी नेक होता है तो फरिश्ते उसके पास आकर कहते हैं कि ऐ पाक जिस्म में रहने वाली पाक रूह तू अपने रब की रहमत और मेहरबानी की तरफ आ और उस रब की जानिब आ जो तुझ से राज़ी है। जब वह निकलती है तो आसमान की जानिब ले जाते हैं, जब दरवाज़ा खोलते हैं तो पूछा जाता है कि यह कौन है? तो यह कहते हैं कि फलां इब्ने फलां। अन्दर से खुश आमदीद कहा जाता है और अन्दर आने की गुज़ारिश की जाती है। इसी तरह वह सातवें आसमान पर पहुंचती है। और जब आदमी बदकार होता है तो फरिश्ते कहते हैं कि ऐ ख़बीस जिस्म में रहने वाली ख़बीस रूह निकल! और हमीम व ग़स्साक़ की बशारत में उस रब की तरफ़ आ, जो नाराज़ है। जब वह निकल आती है तो उसे आमसान पर ले जाया जाता है जब दरवाज़ा खुलवाया जाता है तो पूछा जाता है कौन है? इधर से जवाब जाता है कि फलां इब्ने फलां। तो अन्दर से जवाब आता है कि खुश आम्दीद न हो, ऐ ख़बीस रूह! तेरे लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएंगे। फिर उसको वहां से वापस किया जाता है और वह क़हर ही की तरफ लौट आती है।

(१२) बज़्ज़ार और इब्ने मरदवीया ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब मोमिन की वफात का वक़्त क़रीब आता है तो फरिश्ते रेशम और खुशबूदार टेहनियां लेकर आते हैं और उसकी रूह को इस तरह निकालते

हैं जैसे आटे से बाल और उससे कहते हैं कि ऐ मुत्मइन नफ़्स! अल्लाह की रहमत और करामत की तरफ़ निकल कर आ। जब उसकी रूह निकलती है तो उसे मुश्क और ख़ुश्बू पर रखा जाता है और रेशम में लपेट कर इल्लीयीन में ले जाते हैं। और जब काफ़िर की रूह निकलने की होती है तो फ़रिश्ते कम्बल में चिंगारियां रख कर लाते हैं और सख़्ती से उस रूह को निकालते हैं और कहते हैं कि ऐ ख़बीस नफ़्स! तू ख़ुदा से नाख़ुश और ख़ुदा तुझ से नाख़ुश है तो ज़िल्लत और अज़ाबे इलाही की तरफ़ चल! जब उसकी रूह निकलती है तो उसको चिंगारियों पर रख कर भूना जाता है और फिर उसे सिज्जीन में ले जाते हैं।

(१३) हिनाद और इब्नुस्सुदा ने किताबुज़्ज़ुहद में और अब्द बिन हमीद ने अपनी तफ़सीर में और तबरानी ने कबीर में ऐसी सनद से ज़िक्र किया कि जिसके रावी सब सिक़ह हैं। और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब इंसान राहे ख़ुदा में शहीद होता है तो सबसे पहला क़तरा जो ज़मीन पर गिरता है उसके सबब अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह मआफ़ फ़रमाता है। फिर आसमान से एक चादर आती है जिसमें उसके नफ़्स को लिया जाता है और एक जिस्म में उसकी रूह को रखा जाता है। फिर फ़रिश्तों की हमराही में उसे जन्नत की जानिब ले जाता है गोया कि हमेशा यह इन ही फ़रिश्तों के हमराह रहता था। फिर उसको बारगाहे ईज़्दी में हाज़िर किया जाता है तो यह मलाइक से पहले सज्दा रेज़ होता है और बाद में फ़रिश्ते सज्दा करते हैं। फिर उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाती है और उसको पाक कर दिया जाता है। फिर हुक्म होता है कि उसे शुहदा के पास ले जाओ शुहदा को सब्ज़हज़ारों, और रेशम की क़बों में पाएंगे, यह बैल और मछली को खाएंगे लेकिन ख़ास अंदाज़ से कि मछली जन्नत की नहरों में फिर रही होगी कि शम को बैल मौक़ा पा कर उसको हलाक कर देगा तो अह्ले जन्नत उसके गोश्त को खाएंगे और उसमें जन्नत की ख़ुशबुएं पाएंगे और शम के वक़्त बैल जन्नत की चरागाहों में चर रहा होगा कि मछली उस पर अपनी दुम मारेगी और उसे हलाक कर देगी। अहले जन्नत उसे खाएंगे, तो जन्नत के हर मेवे की ख़ुश्बू उसमें पाएंगे और वह अपने मक़ामात का मुशाहिदा करके क़यामत के जल्दी क़ाइम किए जाने की दुआ करेंगे। जब अल्लाह तआला मोमिन को वफ़ात देने का इरादा फ़रमाता है तो उसकी तरफ़ दो फ़रिश्ते जन्नत के कपड़े लिए आते हैं और उनके पास जन्नत के फूलों में से पूफल होते हैं। यह फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ पाक रूह! रब की रहमत और

मेहरबानी की तरफ आ, और उस रब की तरफ जो तुझ से राज़ी और खुश है, तेरे किए हुए आमाल अच्छे हैं। तो वह बेहतरीन महकती हुई खुशबू के मानिन्द निकलता है। इध्र आसमान के किनारों पर फरिश्ते कहते हैं सुब्हानल्लाह! आज ज़मीन से पाक रूह आई है। वह जिस दरवाज़े पर गुज़रता है खोल दिया जाता है, जिस फरिश्ते के पास से उसका गुज़र होता है वह उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत और शफ़ाअत करता है। अब बारगाहे ईज़्दी में हाज़िर होता है और उसके सज्दा रेज़ होने से पहले फरिश्ते सर बसुजूद हो कर अर्ज़ करते हैं कि या अल्लाह यह तेरा बन्दा हमने उसको वफ़ात दी और तू हम से बेहतर जानने वाला है। अल्लाह तआला फरमाता है कि उसको सज्दा का हुक्म दो। पस वह सज्दा रेज़ होता है। फिर मीकाईल अलैहिस्सलाम को बुला कर अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि इस जान को भी मुमिनीन की जानों के हमराह शमिल कर दो ताकि उसके बारे में क़्यामत के रोज़ में तुमसे सवाल करूं। फिर उसकी क़बर में वुस्अत की जाती है, सत्तर लम्बाई और सत्तर चौड़ाई, उसमें फूल बिखेर दिए जाते हैं और रेशम बिछा दिए जाते हैं, और अगर उसने कुछ कुरआन पढ़ा होता है तो वही उसके लिए क़बर में नूर बन जाता है वरना उसको सूरज की मानिन्द एक नूर दिया जाता है। फिर एक दरवाज़ा जन्नत की तरफ खोल दिया जाता है ताकि वह अपनी जन्नत वाली क़्यामगाह सुबह व शम देखता रहे और जब अल्लाह किसी काफिर को मौत देना चाहता है तो उसकी तरफ दो फरिश्ते भेजता है और उसकी तरफ एक बदतरीन बदबूदार चादर का टुक्ड़ा भेजा जाता है जो बहुत सख़्त खुरदुरा होता है। तो फरिश्ते कहते हैं कि ऐ ख़बीस नफ़्स! जहन्नम और अज़ाबे अलीम की तरफ़ आ, और उस रब के हुज़ूर चल जो तुझ पर नाराज़ है। क्योंकि तेरे कोतक बहुत ही बुरे हैं तो वह निहायत ही बहादुर मुर्दे की तरह निकलते हैं। हर आसमान के किनारों पर फरिश्ते कहते हैं, सुब्हानल्लाह! किस क़द्र ख़बीस रूह आसमानों की तरफ ज़मीन से आ रही है तो उसके लिए आसमानों के दरवाज़े नहीं खोले जाते। फिर उसके जिस्म को क़ब्र में डाल कर क़ब्र को तंग कर दिया जाता है और बुख़्ती ऊंटों की गर्दनों की तरह सांप क़बर में भर दिए जाते हैं जो उसके गोश्त को हड्डियों पर से छुड़ा कर खाते रहते हैं। फिर गुरुज़ उठाए हुए ऐसे फरिश्ते आते हैं जो देखते नहीं, कि उसकी बदहाली को देख कर रहम करें और सुनते नहीं कि उसकी दर्दनाक आवाज़ें सुन कर रहम खाएं। और वह इन गुरज़ों से उसको मारते हैं। फिर जहन्नम का एक

दरवाज़ा क़बर तक खुल जाता है ताकि वह अपने जहन्नम के क़याम की जगह को सुबह व शम देख सके। जहन्नम के अज़ाब की सख़्ती को देख कर अल्लाह तआला से वह सवाल करेगा कि मुझे इसी क़बर के अज़ाब में रहने देना ताकि उस अज़ाबे शदीद को मैं न चखूं।

(१४) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में, बैहक़ी और लालकाई ने अबू मूसा अश्अरी से रिवायत की कि मोमिन की जान जो मुश्क से ज़ाइद मुअत्तर है, जब निकलती है तो वफात देने वाले फरिश्ते उसको आसमानों की तरफ ले जाते हैं। (नीज़ आसमान से वरे फरिश्तों की एक जमाअत मिलती है और दरयाफ़्त करती है, यह कौन है? तो फरिश्ते उस जान की तारीफ़ करते हैं और उसकी ख़ूबियां बयान करते हैं। यह फरिश्ते आदाब बजा लाते हैं और आसमान का दरवाज़ा खुल जाता है और उस शख़्स का चेहरा चमक उठता है। अब उसको खुदा का दीदार होता है। और जब काफिर की रूह निकलती है तो उसमें बदतरीन मुर्दे की सी बदबू आती है। उसकी भी वफात देने वाले फरिश्ते आसमान पर ले जाते हैं। रास्ते में मलाइक की एक जमाअत से मुलाक़ात होती है। वह दरयाफ़्त करते हैं, यह कौन है? यह फरिश्ते जवाब देते हैं कि यह फुलां बिन फुलां बदकार शख़्स है और उसकी बुराइयां बयान करते हैं। फरिश्ते कहते हैं कि इसे वापस ज़मीन पर ही ले जाओ। अल्लाह ने उस पर जुल्म नहीं किया। फिर अबू मूसा ने यह आयत पढ़ी। *वला यदखुलूनल-जन्नते हत्ता यलिजल-जमलु फी सम्मिल-ख़्यात*। इस हदीस को अबू दाऊद व त्यालसी ने कम व बेश उन ही अल्फ़ाज़ से बयान किया।

(१५) इब्ने मुबारक ने जुहद में रिवायत की कि इब्ने अब्बास ने कअब अहबार से पूछा कि : *इन्नल-अबरारा लफी इल्लीयीन* के मानी क्या हैं? तो आपने फरमाया कि जब मोमिन की रूह क़ब्ज़ होती है तो फरिश्ते उसको लेकर आसमान की जानिब जाते हैं और दूसरे फरिश्तों की टोलियां आकर उसको जन्नत की बशारत सुनाती हैं हत्ता कि उसको अर्शे इलाही तक ले जाते हैं। फिर फरिश्ते अर्श के नीचे से एक किताब लाते हैं, उस पर कुछ लिख कर और मुहर लगा कर वहीं रख दिया जाता है ताकि हिसाब के दिन उसकी नजात इस किताब के ज़रिया हो। तो यही किताब है जिसका ज़िक्र मज़्कूरा आयत में है, और *कल्ला इन्नल-किताबल-फुज्जारे लफी सिज्जीन*। के मानी यह हैं कि फाजिरों की रूह को आसमान की तरफ ले जाया जाएगा तो आसमान क़बूल करने से इंकार कर देगा तो जमीन की तरफ इस को फेंक दिया जायेगा तो जमीन भी कुबूल करने से इंकार कर देगी, तो उसको सातों ज़मीनों

के नीचे सिज्जीन में ले जाया जाएगा और यह शैतान का गढ़ा है। उसमें से एक किताब निकाली जाएगी और उस पर कुछ लिख कर और मुहर लगा कर उसकी हलाकत की दस्तावेज़ को हिसाब के दिन के लिए इब्लीस के गढ़े में रख दिया जाएगा।

(१६) अब्दुल्लाह बिन अहमद ने ज़वाइदुज़्ज़ुहद में अब्दुल-अज़ीज़ बिन रफीअ़ से रिवायत की कि जब मोमिन की रूह को आसमान की तरफ ले जाया जाता है तो फरिश्ते कहते हैं कि पाक है वह खुदा कि जिसने इस बन्दे को शैतान से नजात दिलाई।

(१७) इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने अबी हातिम ने बरिवायत इब्ने अब्बास, अल्लाह तआला के इस क़ौल वक़ीला मिन रॉक़ की तफ़सीर यह बताई कि या तो रहमत के फरिश्ते मुर्दे की रूह को लेकर चढ़ते हैं या अज़ाब के फरिश्ते।

(१८) ज़हहाक से अल्लाह तआला के इस क़ौल वल-तफ़तिस्साक़ु बिस्साक़ की तफ़सीर यूं मन्क़ूल है कि लोग तो मुर्दे के जिस्म को तैयार करते हैं और फरिश्ते उसकी रूह को इस तरह इंसानों की पिंडलियां फरिश्तों की पिंडलियों के साथ मिलती हैं।

(१९) अबू नईम ने मुआविया बिन अबी सुफियान से रिवायत की कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुना कि एक शख़्स मुसलसल गुनाह करता था। उसने अट्ठानवे आदमी क़त्ल कर दिए और सब नाहक़, तो वह एक गिरजा में पहुंचा तो आया उसकी तौबा क़बूल होगी या नहीं? राहिब ने जवाब दिया नहीं, उसने राहिब को भी मार डाला। फिर दूसरे राहिब के पास आया, उस से भी यही सवाल किया और उसने भी यही जवाब दिया, तो उसको भी क़त्ल कर डाला। फिर एक और राहिब के पास आया और उस से भी यही सवाल किया तो उसने जवाब दिया कि बखुदा अगर मैं यह कहूं कि अल्लाह तआला तौबा करने वाले की तौबा क़बूल नहीं करता तो मैं झूठा बनूंगा। यहां एक इबादतगाह जिसमें खुदा के इबादत गुज़ार बन्दे रहते हैं तू उनके पास चला जा और उनके साथ रह कर खुदा की इबादत कर। तो यह शख़्स तौबा करके उस इबादतगाह को रवाना हुआ। अभी रास्ता ही में था कि उसको मौत आ गई वह मर गया तो अल्लाह तआला ने अज़ाब व रहमत के फरिश्तों को भेजा। यह दोनों जमाअतें आपस में इख़्तिलाफ करने लगीं तो अल्लाह तआला ने एक फरिश्ता को मुंसिफ बना कर भेजा कि यह देखो कि अगर यह गुनाहगारों की बस्ती के क़रीब है तो गुनहागारों में शमिल कर दो और अज़ाब के फरिश्तों के हवाले

करो। और अगर नेक बन्दों की बस्ती के क़रीब है तो मलाइका रहमत के हवाले करो। अब जो नापा तो नेकों की बस्ती के क़रीब था सिर्फ एक पूरे की मिक़्दार में, तो उसकी मग़्फ़िरत हो गई। इस हदीस की असल सहीहैन में है। अबू सईद खुदरी की रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने बुरे लोगों की बस्ती को हुक्म दिया कि तू दूर हो जा और नेक लोगों की बस्ती को हुक्म दिया कि क़रीब हो जा। (यह हदीस अबू अमर, मिक़्दाम बिन मअ्दी करब और अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से भी मरवी है।)

(२०) सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने हसन से रिवायत की कि जब मोमिन की वफात का वक़्त क़रीब होता है तो पांच सौ फरिश्ते आकर उसकी रूह को क़ब्ज़ करते हैं और उसको आसमाने दुनिया की तरफ ले जाते हैं। रास्ते में गुज़रे हुए मुमिनीन की रूहों से मुलाक़ात होती है। रूहें फरिश्तों से दरयाफ़्त करती हैं। फरिश्ते कहते हैं कि यह बहुत बड़ी बेचैनी से नजात पाकर आया है। फिर वह रूहें दूसरी बातें उससे पूछती हैं, हत्ता कि भाई और दोस्तों के बारे में पूछती हैं, वह जवाब देती हैं कि यह लोग इसी तरह हैं जिस तरह कि तुमने देखा था (वग़ैरह) यहां तक कि वह ऐसे शख़्स के बारे में दरयाफ़्त करती हैं जो इस आने वाली यह से पहले मर चुका है। यह रूह कहती हैं कि क्या वह तुम्हारे पास न पहुंचा? वह पूछती हैं क्या वाक़ई वह मर गया? वह जवाब देती हैं, बखुदा वह मर गया। तो वह कहती हैं कि हमारा ख़्याल है कि वह हाविया (जहन्नम का नाम) में चला गया और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

(२१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्राहीम नख़ई से रिवायत की, उन्होंने कहा कि हमें हदीस पहुंची की जब मोमिन की रूह परवाज़ करने वाली होती है तो उसके पास रेशम और जन्नत की खुशबुएं लाई जाती हैं। जब रूह निकल आती है तो उसे रेशम में लपेटा जाता है और उस पर वह खुशबुएं छिड़क दी जाती हैं। फिर उसको फरिश्ते इ़ल्लीयीन में ले जाते हैं।

(२२) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ़ में अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत कि की मोमिन की रूह क़ब्ज़ होने से पहले उसे बशारत सुना दी जाती है जब उसकी रूह क़ब्ज़ होती है तो वह फकारता है, और इंसान व जिन्न के अलावा उसकी आवाज़ को घर में रहने वाला हर छोटा बड़ा जानवर सुनता है। आवाज़ यह होती है कि मुझे जल्दी अरहमुर्राहिमीन की बारगाह में ले जाओ। जब उसे उसके तख़्त पर रखा जाता है तो

कहता है कि जाने में देर क्यों करते हो? जब उसे क़ब्र में दाख़िल किया जाता है तो उसे बिठाया जाता है और उसे जन्नत और तमाम वह चीज़ें जिनका उससे वादा किया गया था, दिखाई जाती हैं और उस की क़ब्र फूलों और खुशबुओं से पुर कर दी जाती है। वह खुदा से अर्ज़ करता है : ऐ खुदा वन्द! मुझे जल्द भेज दे। अल्लाह तआला फरमाता है अभी वक़्त नहीं हुआ तेरे बहुत से भाई बहन अभी तेरे पास नहीं। हां तेरी आंखें ठण्डी होंगी तू सो जा। हज़रत अबू हुरैरह फरमाते हैं कि बखुदा दुनिया में कोई शख़्स इतनी मीठी नींद न सोया होगा जितनी मीठी नींद उसको मयस्सर होती है, हत्ता कि क़्यामत के दिन खुशख़बरी सुनने के लिए बेदार होगा।

(२३) इब्ने मरदवीया और इब्ने मुन्दा ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि कोई शख़्स जन्नत या जहन्नम में अपना मक़ाम देखे बेग़ैर दुनिया से रुख़्सत नहीं होता। फिर आपने फरमाया कि जब वह मरने के क़रीब होता है तो फरिश्तों की दो सफें खड़ी हो जाती हैं, उनके चेहरे आफताब की तरह चमकते हैं तो मुर्दा उनको देखता है और कोई नहीं। अगरचे तुम यही समझते हो कि मुर्दा तुम्हारी तरफ देख रहा हैं हर फरिश्ते के पास जन्नती कफन और खुशबुएं होती हैं अब अगर मरने वाला मोमिन है तो फरिश्ते उसको जन्नत की बशरत देकर कहते हैं कि ऐ मुत्मइन नफ़्स! अल्लाह की रज़ा और उसकी जन्नत की तरफ़ निकल कर आ। क्योंकि अल्लाह तआला ने तेरे लिए वह इंआमात रखे हैं जो दुनिया व माफीहा से बेहतर हैं। फरिश्ते निहायत ही नर्मी और मेहरबानी से उसको यह खुशख़बरियां सुनाते हैं और यके बाद दीगर हर नाखुन और हर जोड़ से उसकी रूह निकाल लेते हैं और यह उस पर आसान होता है अगरचे तुम उसे सख़्त समझते हो, यहां तक कि रूह ठोढ़ी तक पहुंच जाती है। अब वह जिस्म से निकलने को उससे ज़ाइद बुरा जानती है जितना कि बच्चा रहमे मादर से निकलने को। तो फरिश्ते आपस में झगड़ते हैं कि कौन उसकी रूह को उठाने का शर्फ़ हासिल करे, बिल-आख़िर मलकुल-मौत उसको ले लेते हैं फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह आयत पढ़ी कि : *कुल यतवफ़्फ़ाकुम मलकुल-मौतिल्लज़ी वक्किला बिकुम*। यानी आप कह दीजिए कि तुम को वह मलकुल-मौत वफ़ात देते हैं जिनको तुम पर मुक़र्रर किया गया है मलकुल-मौत उसको सफेद कपड़ों में लेकर अपनी गोद में ऐसा दबाते हैं कि मां भी अपने बच्चा को इतनी मुहब्बत से नहीं दबाती। फिर उस से मुश्क से बेहतर खुश्बू निकलती है जिसे

फ़रिश्ते सूंघते हैं और कहते हैं ऐ पाक रूह! ऐ पाक खुशबू! खुश आमदीद! और इसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करते हैं, और एक दूसरे को बशरत देते हैं और उसके लिए आसमान के दरवाज़े खुलते हैं जिस दरवाज़ा पर पहुंचता है उसके फ़रिश्ते उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करते हैं, हत्ता कि बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िर होता है तो वह इरशाद फरमाता है। ऐ पाक नफ़्स और ऐ पाक जिस्म! जिससे तू निकल कर आई है, खुश आमदीद! और जब ख़ुदाए तआला किसी को मरहबा कहता है तो काइनात की हर चीज़ उसे मरहबा कहती है और उसकी तमाम तंगी दूर होती है। फिर इरशाद होता है कि इस पाक नफ़्स को जन्नत में लेजा कर उसकी क़्यामगाह दिखाओ और उसकी तमाम वह नेमतें दिखाओ जो मैंने उसके लिए तैयार की हैं और फिर उसे ज़मीन की तरफ ले जाओ क्योंकि मैं फैसला कर चुका हूं कि मैं उनको ज़मीन से पैदा करूंगा, ज़मीन में दाख़िल करूंगा और फिर ज़मीन ही में लौटाऊंगा। पस अब वह ज़मीन की तरफ जाने को जिस्म से निकलने से भी ज़ाइद बुरा समझेगी और पूछेगी कि क्या अब तुम मुझ को फिर उसी जिस्म की तरफ ले चले हो जिस से रुस्तगारी हासिल करके मैं आई थी? फ़रिश्ते कहेंगे कि हम को उसी का हुक्म दिया गया है। वह फ़रिश्ते इस रूह को इतनी देर में वापस ले आएंगे जितनी देर में लोग जिस्म के गुस्ल व कफन से फ़ारिग़ होंगे। फिर इस रूह को उसके जिस्म और कफन में दाख़िल कर देंगे।

(२४) इब्ने अबी हातिम ने सदी से रिवायत की कि काफिर की रूह जब निकलती है तो फ़रिश्ते उसे लेकर ज़मीन से पटक देते हैं हत्ता कि वह आसमान की तरफ उठती है। जब वह आसमान की तरफ उठती है तो आसमान के फ़रिश्ते उसे मारते हैं तो वह ज़मीन के सबसे निचले तब्क़े में पहुंच जाती है।

(२५) इब्ने अबी शैबा ने रिब्ई बिन हराश से रिवायत की, वह कहते हैं कि जब मैं घर में पहुंचा, तो मुझे इत्तिला मिली कि मेरा भाई मर गया। मैं दौड़ कर आया तो देखा कि उसे कपड़ों में लपेट दिया गया है तो मैं उसके सरहाने खड़ा हो कर इस्तिग़फ़ार और *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ने में मसरूफ़ था कि उसने अचानक कपड़ा उठा कर कहा अस्सलामु अलैकुम तो हमने कहा व अलैकुम अस्सलामु। सुब्हानल्लाह। तो उसने भी कहा कि सुब्हानल्लाह मैं तुमसे जुदा हो कर खुदा की बारगाह में पहुंचा। यहां मैंने अपने रब से मुलाक़ात की जो मुझ से राज़ी था। उसने मुझ को हरीर, सन्दुस और इस्तबरक़ के लिबास

पहनाए और मैंने मुआमला उससे आसान पाया जितना कि तुम समझते थे। अब देर न करो कि मैंने खुदा तआला से इजाज़त चाही थी कि तुमको बशारत देने आऊं, जल्दी करो और मुझे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बारगाह में ले चलो क्योंकि उन्होंने मुझ से वादा फरमाया था कि मेरी वापसी तक मेरा इंतिज़ार फरमाएंगे। फिर यह कह कर वह हस्बे मामूल मर गया।

(२६) अबू नईम ने रिब्ई से रिवायत की, वह कहते हैं कि हम चार भाई थे और मेरा भाई रबीअ़ हम से ज़ाइद पाबन्द सौम व सलात था। उसका इंतिक़ाल हो गया। हम लोग उसके इर्द गिर्द थे कि अचानक उसने कपड़ा उठा कर कहा अस्सलामु अलैकुम हम ने कहा वअलैकुमुस्सलाम क्या मौत के बाद भी, उसने कहा जी हां। उसने कहा कि मैंने तुम्हारे बाद अपने राज़ी और खुश अल्लाह से मुलाक़ात की तो उसने मुझको अपनी रहमत अता की और इस्तबरक़ का लिबास ज़ेबतन कराया। सुनो! अबुल-क़ासिम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नमाज़ के लिए मेरे मुंतज़िर हैं जल्दी करो। फिर वह यह कह कर हस्बे मामूल ख़ामोश हो गये। यह बात हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा तक पहुंच गई तो उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुना है कि आप फरमाते थे कि मेरी उम्मत में एक शख़्स मरने के बाद भी कलाम करेगा। अबू नईम कहते हैं कि यह हदीस मशहूर है। बैहक़ी ने इस हदीस को दलाइलुन्नुबुव्वह में ज़िक्र किया और कहा कि यह सही है और उसकी सेहत में कुछ शक नहीं।

(२७) जुवैबिर ने अपनी तफ़सीर में उबान बिन अबी अयाश से रिवायत की कि मूरिक़ अजली की वफात के वक़्त हम मौजूद थे। जब उनको कफन पहना दिया गया तो हमने देखा कि उनके सर से एक नूर निकला जो छत को चीर कर निकल गया। फिर हमने देखा कि ऐसा ही एक नूर पैरों की तरफ से निकला फिर एक दर्मियान से निकला तो हम थोड़ी देर ठहर गये। फिर उन्होंने अपने चेहरे से कपड़ा उठा कर कहा कि क्या तुमने कुछ देखा? हमने कहा हां। और जो देखा था बता दिया। उन्होंने कहा कि यह सूरः सज्दा है जो मैं हर रात पढ़ता था और जो नूर तुमने मेरे सर से निकलता हुआ देखा यह उसकी इब्तिदा की चौदह आयतें हैं, और जो तुम ने क़दमों की तरफ देखा यह इस सूरत की आख़िरी चौदह आयात का नूर था। और जो तुमने दर्मियान देखा, यह खुद सूरः सज्दा थी। यह ऊपर शफाअत करने के लिए गई और सूरः तबारक मेरी शफ़ाअत व हिफ़ाज़त को बच रही। यह कह

कर फिर ख़ामोश हो गये।

(२८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताब मन आश बअ्दल-मौत में हज़रत अजली से रिवायत की, वह कहते हैं कि हम एक बेहोश शख़्स की अयादत को गये तो हमने देखा कि एक नूर उसके सर से निकला और छत फाड़ कर ऊपर चला गया। फिर उसकी नाफ से इसी तरह नूर निकल गया। फिर वह शख़्स होश में आ गया तो हम ने उससे दरयाफ़्त किया कि जो मुआमला तुम्हारे साथ हुआ है उसका तुमको पता है? उसने कहा, हां! जो नूर मेरे सर से निकला था वह अलिफ लाम मीम तंज़ील की चौदह आयात का था और जो मेरी नाफ से निकला वह आयत सज्दा का था और जो परों से निकला था वह सूरः सज्दा के आख़िर का था। यह सब मेरी शफाअत को गईं और सूरः तबारक मेरी हिफ़ाज़त को रह गई। मैं उसे हर शब पढ़ता था।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने और इब्ने असद ने साबित बनानी से रिवायत की कि वह और एक शख़्स और मतरफ बिन अब्दुल्लाह बिन शंजर की अयादत को गये तो उनको बेहोशी के आलम में पाया। तो उन से तीन नूर चमके। एक सर से और दूसरा पैर से तीसरा दर्मियान से। जब उनको होश आया तो हम ने उसका सबब उन से दरयाफ़्त किया। उन्होंने बताया कि मेरे सर से अलिफ़ लाम मीम सज्दा की इब्तिदाई आयात का नूर चमका और दर्मियानी आयात का दर्मियान से और आख़िरी आयात का क़दमों से, और यह सब मेरी शफाअत को गईं। सूरः तबारक हिफ़ाज़त को रह गई है, यह कह कर उनका इंतिक़ाल हो गया।

(३०) अबुल-हसन बिन सिर्री ने किताबुल-औलिया में रिवायत की कि इब्ने मुंकदिर अपने साथ एक नूर देखते थे। जब उनकी वफात का वक़्त क़रीब हुआ तो उन से दरयाफ़्त किया गया कि वह नूर क्या हुआ? तो आपने फरमाया कि वह नूर यह है।

(३१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हारिस ग़नवी से रिवायत की कि रबीअ़ बिन हराश ने क़सम खा ली कि हंसते में उनके दांत उस वक़्त तक न नज़र आने पाएंगे जब तक कि उनको आख़िरत में अपना ठिकाना मालूम न हो जाए। तो वह मरने के बाद हंसे। उनके भाई रिब्ई ने उनके बाद क़सम खाई कि वह न हंसेंगे हत्ता कि उनको पता न चल जाए कि वह जन्नत में जाएंगे या जहन्नम में, तो रावी कहते हैं कि उनको गुस्ल देने वाले ने मुझ को बताया कि जब तक हम उनको गुस्ल देते रहे वह हंसते रहे।

(३२) मुगीरह बिन ख़लफ़ से मरवी है कि रूबा बेटी बेजान की मर गई, लोगों ने उसे गुस्ल दिया और कफ़न पहना दिया। फिर उन्होंने देखा कि वह हरकत कर रही है और कह रही है कि खुश हो जाओ, जैसा तुम समझते थे मैंने मुआमला उस से आसान पाया और मैंने मालूम किया कि जन्नत में क़तअ़े रहमी करने वाला और शराब का आदी और मुश्रिक दाख़िल न होगा।

(३३) ख़लफ़ बिन हौशब से मरवी है कि मदाइन में एक शख़्स इंतिक़ाल कर गया और उसको कफ़न पहना दिया गया। थोड़ी देर बाद उसमें हरकत हुई और उसने कहा कि कुछ लोग रंगी हुई दाढ़ियों वाले हैं। उस मस्जिद में अबू बकर व उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा को लानत करते हैं और उन से तबर्रा करते हैं। और जो मेरी रूह क़ब्ज़ करने आए हैं, वह उन से बेज़ारी करते हैं और उन पर लानत करते हैं। यह कह कर फिर वह मर गये। यही रिवायत दूसरे अल्फ़ाज़ से भी बयान हुई है।

(३४) इब्ने असाकिर ने अबू मअ़शर से रिवायत की कि मदीना में एक शख़्स का इंतिक़ाल हो गया, जब उसे तख़्ते पर नहलाने के लिए रखा गया तो सीधा बैठ गया और हाथ से आंख की जानिब इशारा करके तीन मरतबा कहा कि मेरी आंख देख रही है। अब्दुल-मलिक बिन मरवान और हज्जाज बिन यूसुफ़ की तरफ़ कि उनकी आंतें आग में खींची जा रही हैं यह कह कर अपनी पहली हालत पर आ गया।

(३५) इब्ने असाकिर और इब्ने अबी अद्दुनिया ने ज़ैद बिन अस्लम से रिवायत की कि मुसव्वर बिन मख़्रमा पर बेहोशी तारी हो गई। फिर होश आया तो कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु रफ़ीक़े आला में हैं, और अब्दुल-मलिक बिन मरवान और हुज्जाज बिन यूसुफ़ अपनी आंतों को जहन्नम में घसीट रहे हैं।

यह वाक़या अब्दुल-मलिक और हज्जाज की विलायत से काफी अरसा पहले का है। क्योंकि हज़रत मुसव्वर ने मक्का में ६४ हिज. में वफात पाई और हज्जाज की विलायत तो ७० हिज. के बाद है।

(३६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से रिवायत की कि हम अपने एक मरीज़ के गिर्द बैठे थे कि अचानक वह ठण्डा हो गया और मर गया। हमने उसको कपड़ों में लपेट दिया और कफ़न दफ़न का सामान मंगाने के लिए आदमी भेज दिया। जब हम उसे गुस्ल देने गये

तो उसमें हरकत पैदा हुई। हम ने कहा कि सुब्हानल्लाह, हम तो यही समझे थे कि तुम मर चुके। उसने कहा कि हां मैं मर चुका और मुझे क़बर मैं पहुंचाया गया। एक ख़ूबसूरत और ख़ुशबूदार इंसान ने मुझे क़बर में रख कर काग़ज़ों से ढक दिया। इतने में एक बदबूदार सियाह औरत आई और उसने उस बुज़ुर्ग इंसान के सामने मेरे गुनाह गिनाने शुरू कर दिए कि बख़ुदा इसने ऐसा किया वैसा किया। मुझे बहुत शर्म आई। मैंने उस नेक आदमी से कहा कि मैं आपको ख़ुदा का वास्ता देता हूं कि आप मुझे और उसको तन्हा छोड़ दें। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया। फिर उसने कहा कि चलो मैं तुम्हारे से मुक़द्दमा लड़ूंगी। वह एक फराख़ मकान में ले गई जिसमें एक तरफ तो चांदी का आबशर था और दूसरे कोने में मस्जिद थी एक साहब खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे। उन्होंने सूरः नहल पढ़ी। उसमें उन्हें कुछ तशबुह हुआ मैंने लुक़्मा दिया। तो वह फौरन मेरी तरफ मुतवज्जह हो कर कहने लगे कि क्या आपको यह सूरत याद है मैंने कहा, हां तो वह कहने लगे कि यह तो नेमतों वाली सूरत है और अपने क़रीब ही से एक गत्ता उठाया और सहीफा निकाल कर उसे देखने लगे। इतने में काली औरत भाग कर आई और कहने लगी कि उसने ऐसा किया और वैसा और अच्छे चेहरे वाले आदमी ने मेरी नेकियां शुमार कराना शुरू कर दीं। तो उस नमाज़ पढ़ने वाले आदमी ने कहा कि, है तो यह ज़ालिम लेकिन अल्लाह ने उसको मआफ कर दिया उसकी मौत का वक़्त अभी नहीं, इसकी मौत का वक़्त दो शंबा के दिन है यह कह कर उस शख़्स ने कहा कि अगर मैं पीर के रोज़ ही मरूं तो समझ लेना कि यह बात सच्ची है वरना समझना कि यह सब कुछ हज़ियान था। जब पीर का दिन हुआ तो वह शख़्स बिल्कुल ठीक-ठाक था लेकिन ज़ूंही दिन ख़त्म के क़रीब हुआ वह अचानक मर गया।

(३७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अता ख़ुरासानी से रिवायत की कि बनी इस्राईल के एक आदमी ने चालीस क़ज़ा की। उसको एक मरज़ लाहिक़ हुअ तो उसने लोगों से कहा कि मैं अपने इस मरज़ में मर जाऊंगा, जब मैं मर जाऊंगा तो तुम चार पांच रोज़ मुझे अपने ही पास रखना। अगर तुम मुझ में कोई ख़ास बात देखो तो तुम में से कोई एक मुझ को पुकारना। पस जब वह मर गया तो लोगों ने उसको एक ताबूत में रख लिया जब तीन रोज़ गुज़रे तो उसमें से एक हवा आई तो एक शख़्स ने उसका नाम पुकार कर कहा कि यह हवा कैसी है? तो उसको बोलने की इजाज़त मिली और उसने कहा कि ऐ लोगो!

मैंने तुम में चालीस तक अहद-ए-क़ज़ा को निभाया तो मुझे दो शख़्सों के अलावा किसी ने शक में न डाला, उन में से एक से मुझे मुहब्बत थी मैं उसकी बात इस कान से ज़ाइद सुनता था जो उसके क़रीब था, यह उस से आ रही है। यह कह कर मर गया।

(३८) इब्ने असाकिर ने कुर्रा बिन ख़ालिद से रिवायत की कि हमारे घराने में एक औरत मर गई लेकिन हम उसको दफन न करते थे क्योंकि उसमें एक रग थी जो हरकत करती थी फिर वह बोलने लगी कि जाफर बिन ज़ुबैर ने क्या किया हालांकि जाफर का इंतिक़ाल ऐसे ज़माना में हुआ जिसका उस औरत को पता भी न था। मैंने कहा कि उनका तो इंतिक़ाल हो गया। उसने कहा कि बखुदा मैंने उनको देखा कि वह सातवें आसमान पर हैं। और फरिश्ते उनको ख़ुशख़बरी दे रहे हैं और मैं उनको उनके कफन में पहचान रही हूं और फरिश्ते कह रहे हैं कि अच्छा अमल करने वाला आया, अच्छा अमल करने वाला आया।

(३९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सालेह बिन यह्या से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मुझ को मेरे एक पड़ोसी ने इत्तिला दी कि एक शख़्स की रूह परवाज़ कर गई, फिर उस पर उसके आमाल पेश किए गये तो उसने जिन गुनाहों से तौबा और इस्तिग़फ़ार कर लिया था वह मिट गये और जिन से इस्तिग़फ़ार न किया था वह इसी तरह मौजूद थे। हत्ता कि अनार का एक दाना जिसको मैंने उठा कर खा लिया, उसके बदले में भी एक नेकी लिखी गई। और एक दिन मैं नमाज़ बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहा था कि मेरा पड़ोसी सुन कर नमाज़ पढ़ने लगा, उसके बदले में भी एक नेकी लिखी और एक मरतबा मैं कुछ लोगों के पास था कि एक शख़्स आया। मैंने एक दरहम महज़ उन लोगों की ख़ातिरदारी में दिया तो वह भी मौजूद था, लेकिन उस से मुझे नफ़ा हुआ न नुक़्सान।

(४०) इब्ने असाकिर ने इब्ने माहब्शून से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मेरे बाप मा हब्शून का इंतिक़ाल हो गया तो हमने उनको तख़्त पर नहलाने के लिए रखा। अब जो गुस्ल देने वाला दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि उनकी एक रग हरकत कर रही है। यह रग उनके क़दम के निचले हिस्से की थी, तो हमने उनको दफन न किया। तीन दिन के बाद वह उठ कर बैठ गये और कहा कि सत्तू लाओ। हम ने पेश किए उन्होंने पी लिए। हम ने कहा कि जो तुम्हारे साथ हुआ है उसकी ख़बर हम को दो। उन्होंने कहा कि मेरी रूह को एक फरिश्ता लेकर आसमाने दुनिया पर आया और उसने दरवाज़ा खुलवाया।

दरवाज़ा खुला, इसी तरह सातों आसमानों पर गये। जब आसमान पर पहुंचे तो फरिश्ते से दरयाफ़्त किया गया कि तुम्हारे हम्राह कौन है? फरिश्ते ने कहा कि मा हब्शून। उन्होंने कहा कि अभी तो उनका वक़्त नहीं हुआ है, अभी उनकी उम्र इतनी बाक़ी है। फिर मैं नीचे आया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम और उनके दाएं बाएं अबू बकर व उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) को पाया। और उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रमा को उनके सामने पाया। मैंने अपने साथ वाले फरिश्ते से दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? कहा कि तुम उनको नहीं पहचानते? मैंने कहा कि मैं फुख़्ता इल्म हासिल करना चाहता हूं। उसने जवाब दिया कि यह उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रमा हैं। मैंने कहा कि यह हुज़ूर अलैहिस्सलाम से बहुत क़रीब हैं। उसने जवाब दिया। क्यों न हों क्योंकि उन्होंने ज़ुल्म व जूर के ज़माने में भी हक़ व इंसाफ़ पर अमल किया और अबू बकर व उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) ने हक़ के ज़माने में हक़ पर अमल किया।

(४१) इब्ने अबी अद्दुनिया और हाकिम ने मुस्तदरक में और बैहक़ी ने दलाइलुन्नुबुव्वह में और इब्ने असाकिर ने अपनी सनद से रिवायत की कि अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु अन्हु पर मरज़ की वजह से बेहोशी तारी हुई। हत्ता कि लोग समझे कि आपकी वफात हो गई। चुनांचे सब उठ गये और उनको एक कपड़े में लपेट दिया। फिर अचानक वह होश में आ गये और फरमाने लगे कि मेरे पास दो सख़्त ख़ू फरिश्ते आए और कहा कि हमारे साथ चलो ताकि खुदा के सामने फैसला कराएं। वह मुझे लेकर चले, रास्ते में दो मेहरबान फरिश्ते मिले उन्होंने दरयाफ़्त किया कि किधर जा रहे हो? उन्होंने जवाब दिया बारगाहे ईज़्दी में फैसला को जाते हैं। इन मेहरबान फरिश्तों ने कहा कि उसको छोड़ दो क्योंकि पहले ही उसकी क़िस्मत में सआदत लिखी जा चुकी है। यह बतने मादर से ही नेक बख़्त पैदा हुए हैं। इसके बाद आप एक माह ज़िन्दा रह कर वफात पा गये, रज़ि अल्लाहु अन्हु।

(४२) अबू बकर शाफ़ई ने ग़ैलानियात में सलाम बिन सलाम से रिवायत की, उन्होंने कहा मैं फज़ल बिन अतीया के हम्राह मक्का तक गया जब हम फैदा के मक़ाम पर पहुंचे तो निस्फ़ शब को मुझे जगा दिया मैंने कहा कि क्या चाहते हो? उन्होंने कहा कि मैं आपको वसीयत करना चाहता हूं। मैंने कहा कि आप तो ठीक ठाक हैं। उन्होंने कहा कि मैंने ख़्वाब में देखा है कि फरिश्ते कह रहे हैं कि हम को तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म दिया गया है। मैंने फरिश्तों से कहा कि क्या

ही अच्छा होता कि तुम मुझको हज पूरा करने की इजाज़त दे देते? उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे हज को कुबूल कर लिया। फिर एक ने दूसरे से कहा कि तुम अपनी अंगुश्ते शहादत और बीच वाली उंगली खोलो जब उसने उंगलियां खोलीं तो उनमें से दो कीड़े निकले, उनकी सब्ज़ी ज़मीन व आसमान के दर्मियान फैल गई। फिर उन दोनों ने कहा कि यह तुम्हारा जन्नती कफन है। फिर उस फरिश्ते ने लपेट कर अपनी दोनों उंगलियों के दर्मियान रख लिया। रावी कहते हैं कि हम अभी घर लौटने भी न पाए थे कि उनका इंतिक़ाल हो गया।

(४३) सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में अपनी सनद से रिवायत की कि सलमान को कहीं से मुश्क मिल गई। वह उन्होंने अपनी बीवी के पास रखवा दी। जब उनकी वफात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने बीवी से दरयाफ़्त किया कि वह मेरी अमानत कहां है? उन्होंने कहा कि वह यह है। आपने कहा कि उसको भिगो कर मेरे बिछौने के इर्द गिर्द छिड़क देना क्योंकि मेरे पास वह शख़्सियतें हैं जो न पानी पिएं। और न खाना खाएं, हां खुशबू को महसूस करती हैं।

(४४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू बकरा से रिवायत की, उन्होंने कहा कि जब किसी के मरने का वक़्त आता है तो मलकुल-मौत से कहा जाता है कि उसके सर को सूंघो! वह सूंघ कर बताते हैं कि मैं उसके सर में कुरआन की खुशबू पाता हूं। फिर कहा जाता है कि उसके क़ल्ब को सूंघो! वह बताते हैं कि उसके क़ल्ब में रोज़ों की बू है। फिर कहा जाता है कि उसके पैरों को सूंघो! वह बताते हैं कि उसके क़दमों में क़याम की बू है। फिर कहा जाता है कि उसने अपने नफ़्स की हिफ़ाज़त की तो अल्लाह ने भी उसको महफ़ूज़ कर दिया।

(४५) अबू नईम ने सुफियान से रिवायत की और उन्होंने दाऊद बिन हिन्द से रिवायत की उन्होंने बयान किया कि मुझ को ताऊन लाहिक़ हो गया और उसकी वजह से बेहोशी तारी हो गई, जब होश आया तो दो फरिश्ते मेरे पास आए उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि तुम क्या महसूस करते हो? उन्होंने कहा कि तस्बीह व तक्बीर और मस्जिद की तरफ क़दम बढ़ना, और कुछ कुरआन का पढ़ना।

(४६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताब मन आश बअ्दल-मौत में रिवायत की कि दाऊद बिन हिन्द सख़्त मरीज़ हो गये। उन्होंने देखा कि एक शख़्स बड़े सर, चौड़े चकले कांधे वाला, जैसे कि जुत्ती होते हैं आ रहा है। मैंने उसे देख कर *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन*। पढ़ा और उस से कहा कि क्या तुम मुझे मारना चाहते हो, क्या मैं काफिर

हूं? क्योंकि मैंने सुना है कि काफिर की रूह एक काले रंग का फरिश्ता निकालेगा। अभी मैं इसी अस्ना में था कि अचानक घर की छत फटी, मैंने आसमान की तरफ देखा कि एक सपेद पोश शख़्स मेरी तरफ उतर रहा है और उसके बाद दूसरा। उन दोनों ने सियाह को चीख़ कर फकारा तो वह दूर भाग गया और दूर से देखने लगा और वह उसको डांटते रहे। अब उन में से एक सर के पास और दूसरा क़दमों के पास बैठ गया। सर वाले ने पैर वाले से कहा कि छू कर देखो। तो उसने मेरी उंगलियां छू कर देखीं, और कहा कि उनके ज़रिया यह शख़्स बकसरत नमाज़ों को जाता था। फिर पैर वाले ने सर वाले से कहा कि तुम छुओ, उसने सर के जबड़े के पास का हिस्सा छू कर कहा, यह खुदा के ज़िक्र से तर हैं।

(४७) लालकाई ने सुन्नत में रिवायत की कि अबू क़लाबा जर्मी का एक भतीजा था, और वह गुनाह का आदी था। जब मौत का वक़्त आया तो उसके पास दो परिन्दे सफेद रंग के गिध से मुशबेह आये और घर के रोशनदान में बैठ गये। एक परिन्दे ने दूसरे से कहा कि उतर कर देखो तो उसने अपनी चोंच मुर्दे के पेट में दाख़िल कर दी, हालांकि अबू क़लाबा देख रहे थे, फिर उसने कहा कि अल्लाहु अक्बर! ऐ मेरे साथी नीचे उतरो क्योंकि मैंने उसके पेट में तक्बीर पाई जो उसने इंताकिया की दीवार पर कही थी। परिन्दे ने यह सुन कर सफेद कपड़ा निकाला और उसकी रूह को उसमें लपेट लिया। फिर दोनों परिन्दों ने कहा कि ऐ अबू क़लाबा! अपने भतीजे को दफन कर दो, क्योंकि यह जन्नती है। अबू क़लाबा लोगों में बहुत ही मुअज़्ज़ज़ थे। उन्होंने लोगों से तमाम वाक़या बयान किया। रावी ने कहा कि फिर उस शख़्स के जनाज़े में इस क़दर ज़ाइद मज्मा था कि मैंने किसी के जनाज़े में इतना न देखा।

(४८) हकीम तिर्मिज़ी ने इसी रिवायत की क़दरे मुख़्तलिफ़ तौर पर तरजुमानी की है। उसमें यह है कि परिन्द उतरा और उसने मुर्दे के सर, पेट और क़दमों को सूंघा और अपने साथी से जा कर कहा कि मैंने उसका सर सूंघा लेकिन कुरआन की खुशबू न पाई, पेट सूंघा उसमें रोज़ों की खुशबू न पाई, क़दम सूंघे उनमें रात को नमाज़ पढ़ने की खुशबू न पाई। फिर उसका साथी आया और उसने भी इसी तरह सूंघा और कहा कि बड़े तअज्जुब की बात है कि यह शख़्स उम्मते मुहम्मदीया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से है और इन ख़स्लतों में से एक भी इसमें नहीं। फिर उसने मुर्दे की ज़ुबान निकाल कर उसको

निचोड़ा, सुना तो वह कह रहा था कि अल्लाहु अक्बर यह तक्बीर वह थी जो निहायत खुलूस से उसने इंताकिया पर कही थी। उससे मुश्क की खुश्बू आ रही थी। चुनांचे उसकी रूह क़ब्ज़ कर ली गई। फिर वह चला गया और देखा कि यह सफेद फरिश्ता सियाह फरिश्तों से कह रहा है कि तुम लौट जाओ कि तुम्हारे लिए उस पर कोई सबील नहीं। फिर हकीम तिर्मिज़ी ने जनाज़े में कसरते हुजूम का वाक़या लिखा।

(४६) लालकाई ने मसनद में मैमून मुरादी से रिवायत की है कि हमारे घर एक बदकार शख़्स मर गया। लोगों ने उसको रास्ता में डाल दिया और उस से बचने लगे। मैं उसके बारे में सोचने लगा। इतने में मुझे नींद आ गई। मेरे पास दो सफेद परिन्द आए, एक ने दूसरे से कहा कि इसको देखो क्या इसमें कुछ भलाई है। तो वह उसकी खोपड़ी से दाख़िल हो कर पाखाना की जगह से निकला और कहा कि मैंने तो इसमें कुछ भलाई न पाई, परिन्द ने कहा कि जल्दी न करो। अब दूसरा उसके सर से घुस कर क़दमों से निकला और कहा कि अल्लाहु अक्बर एक कलिमा उसकी तली से चिपका हुआ है। इतने में मुर्दा बोल उठा कि *अश्हदु अन ला इलाहा इल्लल्लाह*। मैंने लोगों को बुला कर कहा कि देखो।

(५०) इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने असाकिर ने शहर बिन हौशब से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मेरा एक नाबालिग़ भतीजा था, उसके साथ मैं जिहाद में गया वह मर गया। मैं एक इबादतगाह में दाख़िल हो कर नमाज़ पढ़ने लगा इतने में वह इबादतगाह फटी और दो सफेद फरिश्ते नाज़िल हुए उनके साथ ही दो सियाह फरिश्ते नाज़िल हुए। सफेद दाएं तरफ और सियाह बाएँ तरफ बैठ गये। सफेद फरिश्तों ने कहा कि उसे हम ले जाएंगे और सियाह फरिश्तों ने कहा कि हम ले जाएंगे। ऐ सफेद फरिश्ते ने अपनी उंगली उसके मक़्इद में की नीज़ तक्बीर कह कर बताया कि हम उसके ज़ाइद मुस्तहिक़ हैं क्योंकि इंताकिया की जंग में फतह के दिन एक नार-ए-तक्बीर लगाया था तो शहर बिन होशब निकले और लोगों को नमाज़े जनाज़ा के लिए इत्तिला दी। लोगों ने नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत की।

(५१) तबरानी ने कबीर में मैमूना बिन्ते सअद से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से दरयाफ़्त किया कि अगर कोई नापाक हो जाए तो बिला गुस्ल सो सकता है या नहीं? आपने फरमाया कि मैं पसन्द नहीं करता कि बिला गुस्ल सोए क्योंकि वह शयद इसी हालत में मर जाए और जिब्रील अलैहिस्सलाम

उसके पास न आएं।

(५२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-मुहतज़ेरीन में रिवायत की कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया। कि अपने मुर्दों के पास बैठ कर उनको यादे खुदा दिलाओ, क्योंकि वह ऐसी चीज़ें देखते हैं जो तुम नहीं देखते।

(५३) सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में और मरुज़ी ने रिवायत की कि उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि अपने मरने वालों को कलिम-ए-तैयबा की तल्क़ीन करो और जो तुम्हारी तल्क़ीन पर अमल करें। उनकी बातें ग़ौर से सुनो क्योंकि उनकी सच्ची बातें मालूम होती हैं।

(५४) इब्ने माजा ने अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से दरयाफ़्त किया कि मरने वाला इंसानों को कब से पहचानना ख़त्म करता है? आपने फरमाया कि जब देख लेता है कुरतबी कहते हैं कि यानी मलकुल-मौत और दूसरे फरिश्तों को।

(५५) इब्ने अबी अद्दुनिया और अबू नईम ने हुलिया में लैस इब्ने अबी अक़्बा से रिवायत की कि उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रहमा ने मरजुल-मौत में सर को उठाया और तेज़ निगाह से देखा तो लोगों ने इसका सबब दरयाफ़्त किया। आपने फरमाया कि मैं ऐसी मख़्लूक़ का मुशहिदा कर रहा हूं जो न इंसान हैं न जिन्न। इसके बाद इनका इंतिक़ाल हो गया।

(५६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-मुहतज़ेरीन में फुज़ाला बिन दीनार से रिवायत की कि मुहम्मद बिन वासेअ़ की वफात के वक़्त मैं आपके पास मौजूद था तो वह कह रहे थे ऐ मेरे रब के फरिश्तो! खुश आमदीद, *वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह*। मैंने ऐसी खुशबू, महसूस की कि ज़िन्दगी भर कभी ऐसी खुशबू महसूस न की। फिर उनकी आंखें फट गईं और मर गये।

(५७) हाफिज़ अबू मुहम्मद ख़ल्लाल ने किताब करामातुल-औलिया में हसन बिन सालेह से और इब्ने मुन्दह ने किताबुल-अहवाल वल-ईमान बिस्सुवाल में, और अबुल-हुसैन बिन अरीफ ने अपने फ़वाइद में हसन बिन सालेह समाजी से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मुझ से मेरे भाई अली बिन सालेह ने कहा अपनी वफात की रात को, ऐ भाई मुझे पानी पिलाइए। मैं नमाज़ में मस्रूफ था। नमाज़ पढ़ कर मैंने पानी दिया और कहा लो पियो! तो उन्होंने कहा। मैंने अभी पिया है मैंने कहा कमरे

में तो कोई नहीं तुम्हें किसने पानी पिलाया? उन्होंने कहा कि अभी जिब्रील आए थे उन्होंने पिलाया है और कहा है कि तुम, तुम्हारा भाई और तुम्हारी मां उन हज़रात के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने इंआम किया है, यानी नबी, सिद्दीक़, शुहदा, और सालेहीन। यह कह कर मर गये।

(५८) इब्ने असाकिर ने अब्दुर्रहमान बिन ग़नम अशअरी से रिवायत की कि मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे को अमवास के साल एक नेज़ा लग गया तो कहा कि महबूब! बड़े इंतिज़ार के बाद आया जो शर्मिंदा हो, कामयाब न हो। मैंने पूछा : ऐ मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु! क्या कुछ देखते हो? उन्होंने ने कहा कि हां मेरे रब ने मुझको सब्रे जमील पर जज़ा अता की। मेरे बेटे की रूह मेरे पास आई और मुझे बशरत दी कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), मलाइक-ए-मुक़र्रेबीन और शुहदा व सालेहीन की सौ सफों में खड़े हुए मेरे लिए दुआए रहमत कर रहे हैं और फरिश्ते मुझे जन्नत की तरफ ले जा रहे हैं। यह कह कर बेहोश हो गये। मैंने देखा कि वह हाथ बढ़ा कर गोया किसी से मुसाफहा कर रहे हैं और कह रहे हैं, ख़ुश आमदीद मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं। यह कह कर उनका इंतिक़ाल हो गया उसके बाद मैंने उनको ख़्वाब में देखा कि उनके गिर्द इस तरह मज्मा है जैसे चितकबरे घोड़े के गिर्द होता है जिन पर सफेद पोश सवार हों। वह फकार कर कह रहे हैं, ऐ सअद! जो नेज़ों और तीरों की बौछाड़ में है। तमाम तारीफ़ इस खुदा तआला की है जिसने हमको जन्नत अता फरमाई जहां चाहें इसमें क़याम करें, तो अमल करने वालों का अंजाम बहुत ही उम्दा है। फिर मैं बेदार हो गया।

(५९) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान और अबू नईम ने मुजाहिद से रिवायत की। जब भी कोई शख़्स मरता है तो उसके साथी उस पर पेश किए जाते हैं। अगर वह अह्ले ज़िक्र से है तो ज़िक्र वाले और अगर खेल कूद वाले होते हैं तो वह पेश किए जाते हैं।

(६०) इब्ने अबी शैबा ने अपनी सनद से यज़ीद बिन उमरा से रिवायत की कि जब भी कोई मरता है तो उसके अह्ले मज्लिस उस पर पेश किए जाते हैं अगर खेल कूद वाले हैं तो वह और अगर अह्ले ज़िक्र हैं तो वह।

(६१) बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में रबीअ बिन बर्रा से रिवायत की (यह बसरा के आबिद थे) कि मरते वक़्त एक शख़्स से कहा गया कि ला इलाहा इल्लल्लाह कहो। तो उसने कहा कि मुझे भी शराब पिलाओ और खुद भी पियो। और अहवाज़ में एक शख़्स को कलिमा

पढ़ने की तल्क़ीन की गई तो कहने लगा वह याज़दह, दवाज़दह। और बसरह में एक शख़्स को कलिमा की तल्क़ीन की गई, तो वह यह शेअर पढ़ने लगा।

तरजमा : यानी बहुत सी औरतें जो थक हार कर हम्माम का रास्ता पूछती हैं मुझको याद आ रही है।

अबू बकर कहते हैं कि उस शख़्स से एक औरत ने हम्माम का रास्ता पूछा तो उसने उसे अपने घर का पता दे दिया, तो मौत के वक़्त भी यही कलिमा कहने लगा।

(६२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू जाफर बिन अली से रिवायत की कि अब भी कोई मरता है तो मरते वक़्त उसके अच्छे और बुरे आमाल की सूरते मिसालिया उसके सामने पेश की जाती है तो वह अपनी हसनात को आंखें फाड़ कर देखता है और सैयात को देख कर सुर झुका लेता है।

(६३) हसन ने अल्लाह तआला के क़ौल युनब्बेउल-इंसानु बिमा क़द्दमा व अख़्ख़रा की तफ़सीर यह बयान की कि मौत के वक़्त उसकी हिफाज़त करने वाले फरिश्ते उतरते हैं और अच्छाई और बुराई को पेश करते हैं। जब मुर्दा अच्छाई को देखता है तो उसका चेहरा खुल जाता है और जब बुराई को देखता है तो चेहरा मांद पड़ता है और तुर्श रूई अख़्तियार करता है।

(६४) हंज़ला बिन अस्वद से रिवायत है। उन्होंने कहा कि मेरे गुलाम के मरने का वक़्त आया तो कभी वह अपना सर ढकता था और कभी खोलता था। तो मैंने मुजाहिद से यह बात बयान की। उन्होंने फरमाया कि जब मोमिन की जान निकलती है तो उसके अच्छे और बुरे आमाल उस पर पेश किए जाते हैं।

(६५) बज़्ज़ार और तबरानी ने कबीर में रिवायत की, हज़रत सलमान से कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम एक क़रीबुल-मर्ग अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु की अयादत को तशरीफ़ लाए। आपने उससे दरयाफ़्त किया कि क्या महसूस करते हो? उसने कहा कि अच्छाई। और उसने कहा कि मेरे पास दो फरिश्ते आए हैं, एक सियाह और दूसरा सफेद। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि तुम से कौन क़रीब है? कहा कि सियाह। हुज़ूर अलैहिस्सलमा ने फरमाया कि ख़ैर कम और शर ज़ाइद है। उन्होंने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे अपनी दुआ से सरफराज़ फरमाइए। आपने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह तआला! इनके कसीर गुनाहों को मआफ फरमा दे और कम नेकी को मुकम्मल फरमा दे। फिर फरमाया, अब क्या देखते हो? अर्ज़ की या रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! अब तो भलाई को बढ़ते हुए देख रहा हूं, मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और बुराई को ख़त्म होते देख रहा हूं, अब सियाह फरिश्ता दूर हो चुका है। आपने इरशद फरमाया कि तुम्हारा कौन सा अमल उम्मीद अफ़ज़ा है? अर्ज़ की कि मैं पानी पिलाता था। आपने फरमाया कि उस शख़्स को जो तक्लीफ हो रही है मैं उसे जानता हूं। उसकी कोई रग ऐसी नहीं जो मौत का दर्द महसूस न करती हो।

(६६) इब्ने अबी अद्दुनिया, वहैब बिन दिरा से रिवायत करते हैं कि हमको हिदायत पहुंची कि जब भी कोई शख़्स मरने लगता है तो उसके हिफाज़त करने वाले दो फरिश्ते उसके सामने हो जाते हैं। अगर उसने उनके साथ रह कर अल्लाह तआला की इताअत की है तो वह कहते हैं कि ऐ हमारे बेहतर साथी! अल्लाह तुझे जज़ाए ख़ैर दे, क्योंकि बहुत सी सच्चाई की महफिलों में तू हमारे साथ शिर्कत करता रहा। और बहुत से नेक कामों के वक़्त तूने हम को बुलाया और बहुत सी अच्छी बातें सुनाईं और अगर मरने वाले ने उन दोनों फरिश्तों के साथ अच्छा सुलूक नहीं किया तो यह तारीफी कलिमात ही पलट देते हैं और कहते हैं कि तुझे खुदा जज़ाए ख़ैर न दे क्योंकि तूने हमारे साथ बहुत सी बुरी मज्लिसों में शिर्कत की और बहुत से बुरे काम किए, और बहुत सी बुरी बातें सुनाईं। आपने फरमाया कि मुर्दा उन्हीं दो फरिश्तों को देख कर अपनी आंखें फाड़ता है और यह दुनिया की तरफ फिर कभी न लौटेगा।

(६७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सुफियान से रिवायत की कि जब मोमिन की रूह क़ब्ज़ करने का वक़्त आता है तो उसके साथ रहने वाले दो फरिश्ते कहते हैं कि ऐ घर वालो न रोओ! हम को अपनी मालूमात के मुताबिक़ उस शख़्स की तारीफ़ करने दो, तो वह कहते हैं कि ऐ मुर्दे अल्लाह तुझ पर रहम करे और जज़ाए ख़ैर दे क्योंकि तू अल्लाह तआला की इताअत में जल्दी करने वाला था और उसकी मासियत से पीछे हटने वाला था और तू उन लोगों में था कि हम तेरी पोशीदा चीज़ों की हिफाज़त करते थे तो अब तुम्हारी रूह लेकर उफपर जाते हैं अब तुम हमको मलाइक के हमराह ज़िक्र करने से न रोको, और जब बदकार बन्दे की मौत का वक़्त क़रीब आता है और घर वाले चीख़ते चिल्लाते हैं तो दोनों फरिश्ते यह कह कर खड़े होते हैं कि छोड़ दो हम अपनी मालूमात के मुताबिक़ उसकी सिफात बयान करते हैं। ऐ बुरे आदमी! अल्लाह तआला तुझे बदला दे तू बुरा आदमी था, अल्लाह

तआला की इताअत में देर करने वाला और उसकी मासियत में जल्दी करने वाला था और हम तेरी पसे पुश्त हिफ़ाज़त न करते थे फिर वह दोनों इस रूह को लेकर आसमान पर चढ़ जाते हैं।

(६८) शैख़ान से उबादा बिन सामित से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जो अल्लाह से मुलाक़ात करने को पसन्द फरमाता है, अल्लाह उसकी मुलाक़ात को पसन्द फरमाता है और जो अल्लाह की मुलाक़ात को बुरा जानता है, अल्लाह तआला उसकी मुलाक़ात को बुरा जानता है। हज़रत आइशा ने अर्ज़ की कि हम मौत को बुरा समझते हैं। आपने फरमाया यह मतलब नहीं, बल्कि जब मोमिन मरने लगता है तो अल्लाह की रज़ा और उसकी खुशनूदी की बशारत उसको दी जाती है। तो अब कोई चीज़ उसके लिए उसके मुस्तक़्बिल में उस से बेहतर नहीं जो उसके सामने है और यह अल्लाह से मुहब्बत करता है। और काफिर जब मरने लगता है तो अज़ाब की और सज़ा की खुश ख़बरी उसे दी जाती है तो उसके नज़्दीक आने वाली चीज़ें सबसे बुरी होती हैं। अल्लाह तआला से इसलिए वह मुलाक़ात करना पसन्द नहीं करता और अल्लाह तआला भी उस से मिलना पसन्द नहीं करता।

(६९) आदम बिन अबी यास ने अपनी सनद से इब्ने अबी लैला से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह आयात तिलावत कीं। *फ़लौला इज़ा बलग़तिल-हुल्क़ूमा फ़रौजुन व रैहानुन व जन्नतु नईम।* से लेकर *फ़नज़ुलुन मिन हमीमिन व तस्लियतु जहीमिन।* तक फिर फरमाया। जब आदमी मौत के क़रीब होता है तो उस से यही कहा जाता है। अगर दाएं बाज़ू वालों में से है तो वह अल्लाह तआला की मुलाक़ात को पसन्द करेगा और अल्लाह तआला उसकी मुलाक़ात को पसन्द करेगा। और अगर बाएं बाज़ू वालों से है तो वह अल्लाह तआला की मुलाक़ात को नापसन्द करेगा और अल्लाह तआला उसकी मुलाक़ात को।

(७०) अहमद ने अपनी सनद से अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से रिवायत की कि वह एक जनाज़ा के साथ चल रहे थे कि उन्होंने फरमाया कि मुझे हदीस पहुंची कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जो अल्लाह तआला की मुलाक़ात को पसन्द करेगा अल्लाह उसकी मुलाक़ात को पसन्द करेगा, और जो अल्लाह की मुलाक़ात को नापसन्द करेगा, अल्लाह तआला उसकी मुलाक़ात को नापसन्द करेगा। तो लोग रोने लगे आपने फरमाया क्यों रोते हो? अर्ज़

की कि हम मौत को नापसन्द करते हैं। आपने फरमाया, यह मतलब नहीं बल्कि जब मौत का वक़्त होता है तो अगर मुक़र्रेबीन से है तो रहमत और खुशबुएं हैं और नेमत वाली जन्नतें। पस जब मरने वाले को उन चीज़ों की बशारत सुनाई जाती है तो वह मौत को पसन्द करता है और अल्लाह की मुलाक़ात को अच्छा जानता है और अगर झुठलाने वालों और गुमराहों में से है तो खौलता हुआ पानी और जहन्नम में पहुंचता है। पस जब यह ख़बर उसको मिलती है तो वह अल्लाह की मुलाक़ात को बुरा जानता है और खुदा उस से भी ज़ाइद उसकी मुलाक़ात को नापसन्द फरमाता है।

(७१) इब्ने जरीर और इब्ने मुंज़िर ने अपनी तफ़सीरों में इब्ने जरीर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत आइशा से फरमाया कि जब मोमिन फ़रिश्तों को देखता है तो फरिश्ते कहते हैं कि हम तुम को दुनिया में लौटा देंगे तो वह कहता है, क्या ग़मों और मुसीबतों के घर की तरफ लौटाओगे, नहीं नहीं मैं तो हमेशा खुदा की बारगाह में रहूंगा। जब काफिर से कहते हैं कि हम तुम को दुनिया की तरफ लौटा देंगे। तो वह कहता है कि मुझको लौटा दो ताकि मैं वह अच्छे काम करूं जो नहीं किए थे।

(७२) मरुज़ी ने हसन से रिवायत की कि मोमिन की जान एक फूल में निकलती है फिर यह आयत पढ़ी : *फ़अम्मा अन काना मिनल-मुक़र्रेबीन फ़रूहुन व रैहानुन व जन्नतुन नईम*।

(७३) इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने क़तादा से, अल्लाह तआला के इस क़ौल की तफ़्सीर में यह रिवायत की कि अल्लाह तआला का क़ौल फ़रूहुन व रैहानुन यह मरते वक़्त इंसान को अता होते हैं।

(७४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने बकर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि जब मलकुल-मौत को मोमिन की रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म दिया जाता है तो उसे जन्नत के फूल दे कर कहा जाता है कि उसकी रूह इन फूलों में रख लाओ। और जब काफिर की रूह क़ब्ज़ किए जाने का हुक्म होता है तो एक चादर आग की दी जाती है कि उसकी रूह उसमें लाओ।

(७५) अब्दुल्लाह बिन अहमद ने ज़वाइदुज़्ज़ुहद में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू इमरान से रिवायत की, हमें मालूम हुआ कि मोमिन की रूह जब क़ब्ज़ की जाती है तो जन्नत से फूलदार टहनियां आती हैं और उसकी रूह उनमें रखी जाती है।

(७६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुजाहिद अलैहिर्रहमा से रिवायत की

कि मोमिन की रूह जन्नत के रेशम में रखी जाती है।

(७७) इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने अबुल-आलिया से रिवायत की कि जब भी किसी मुक़र्रब बन्दे की रूह क़ब्ज़ होती है उसके पास जन्नती फूलों की टहनियां लाई जाती हैं, वह सूंघता है और उसकी जान परवाज़ करती है।

(७८) इमाम अहमद ने जुह्द में रबीअ बिन ख़सीम से रिवायत की कि फ़अम्मा अन काना मिनल-मुक़र्रेबीना फरूहुन व रैहानुन। यह मरते वक़्त के लिए है और आख़िरत में उसके लिए जन्नत है यह मौत के वक़्त है और आख़िरत में जहन्नम है।

(७६) अबू नईम ने दलाइलुन-नुबुव्वत में और इब्ने असाकिर ने अदी बिन हातिम ताई से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत उस्मान (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) की शहादत के दिन एक आवाज़ सुनी ऐ इब्ने अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु! रहमत और फूलों की बशारत कुबूल करो, राज़ी रब की बशारत कुबूल हो, रिज़वान व मग़्फ़िरत की बशारत कुबूल हो। जब मैं आवाज़ की तरफ मुतवज्जह हुआ तो किसी को न पाया।

(८०) अबुल-क़ासिम बिन मुन्दह ने किताबुल-अहवाल वल-ईमान बिस्सुवाल में, हसन से अल्लाह तआला के क़ौल फ़रौहुन व रैहानुन की तफ़्सीर यह नक़ल की कि बखुदा यह बात मौत के वक़्त सुनाई जाएगी।

(८१) अबुल-क़ासिम ने सलमान से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया। सबसे पहली खुशख़बरी मौत के वक़्त रूहुन व रैहानुन की होती है और नेमतों वाली जन्नत की। और सबसे पहली खुशख़बरी मोमिन को क़ब्र में यह है कि अल्लाह की रज़ामन्दी से खुश हो जाओ। और जन्नत में यह है कि ख़ूब आए। और जो तुमको क़बर तक पहुंचाने आए खुदा तआला ने उनको भी बख़्शा, और जिसने तुम्हारे लिए गवाही दी उसने सच्ची बात कही, और जिसने तुम्हारी मग़्फ़िरत चाही उसकी दुआ क़बूल हुई।

(८२) इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से अल्लाह तआला के क़ौल फ़नुज़ुलुम मिन हमीम के मानी बताए कि काफिर दुनिया से निकलने से पहले गर्म जहन्नमी पानी का प्याला ज़रूर पिएगा।

(८३) उन ही ने ज़हहाक से रिवायत की कि जो शराबी मरता है उसके चेहरे पर जहन्नम का गर्म पानी डाला जाता है।

(८४) अहमद ने जुह्द में अबू इमरान जूनी से रिवायत की कि काफिर व फाजिर दुनिया से प्यासे निकलेंगे और क़बरों में प्यासे दाख़िल होंगे

और क़्यामत के दिन प्यासे हाज़िर होंगे और जहन्नम में प्यासे डाले जाएंगे।

(८५) अबुल-क़ासिम बिन मुन्दा ने किताबुल-अहवाल में इब्ने मस्ऊद से रिवायत की जब अल्लाह तआला मोमिन की रूह क़ब्ज़ करना चाहता है तो मलकुल-मौत को हुक्म देता है कि उस बन्दा को मेरा सलाम कहना। चुनांचे मलकुल-मौत उस बन्दे को खुदा का सलाम पहुंचाते हैं।

(८६) मरुज़ी और अबू शैख़ ने अपनी तफ़सीर में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्ने मस्ऊद से रिवायत की कि मलकुल-मौत रूह क़ब्ज़ करने को जब आते हैं तो मोमिन को खुदा तआला का सलाम कहते हैं।

(८७) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में इब्ने अबी अद्दुनिया और हाकिम ने बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की (बैहक़ी ने इसे सही कहा) तहीयतुहुम यौमा यल्क़ूनहू सलामुन यानी जिस दिन मलकुल-मौत से वह मुलाक़ात करेंगे तो हर वह मोमिन जिसकी रूह क़ब्ज़ की जाएगी वह फरिश्ते को सलाम करेगा।

(८८) इब्ने मुबारक और बैहक़ी ने शुअ़ब में और अबू शैख़ ने किताबुल-अज़मत में और अबुल-क़ासिम ने किताबुल-अहवाल में मुहम्मद बिन कअ़ब क़र्ज़ी से रिवायत की कि जब मोमिन की रूह माइले परवाज़ होती है तो मलकुल-मौत आकर कहते हैं अस्सलामु अलैका या वली अल्लाह। आपका रब आपको सलाम कहता है। फिर इस आयत से इस्तिदलाल किया कि *अल्लज़ीना ततवफ़्फ़ाहुमुल-मलाइकतु तैयेबीना यक़ूलूना सलामुन अलैकुम*।

(८९) क़ाज़ी अबुल-हसन बिन अरीफ ने फ़वाइद में, और अबू अर्रबीअ़ ने अपने फ़वाइद में, अनस बिन मालिक से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब मलकुल-मौत वली अल्लाह के पास आता है तो उसे सलाम करता है और कहता है अस्सलामु अलैका या वली अल्लाह उठ इस घर से जिसको तूने वीरान किया, उस घर की तरफ जिसे तूने आबाद किया। और जब मरने वाला वली अल्लाह नहीं होता तो फरिश्ता कहता है कि उठ अपने इस जहान से जिसे तूने आबाद कर रखा था, उस जहान की तरफ़ जिसको तूने वीरान कर रखा था।

(९०) अबू नईम ने मुजाहिद से रिवायत की कि मोमिन को उसके बच्चे के नेक होने की इत्तिला दी जाती है ताकि उसे खुशी हो।

(९१) इब्ने अबी शैबा, इब्ने अबी अद्दुनिया, इब्ने मुन्दह और इब्ने जरीर ने जह्हाक से रिवायत की कि *लहुमुल-बुशरा फ़िल-हयातिद्-दुनिया व फ़िल-आख़िरते*।

(६२) इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने अबी शैबा ने ईसा बिन अबी तालिब से रिवायत की, दुनिया से किसी का भी जांबर निकलना हराम है जब तक वह यह न जान ले कि उसका ठिकाना कहां है।

(६३) इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने मुन्दा ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि एक दिहाती शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से दरयाफ़्त किया कि *लहुमुल-बुशरा फ़िल-हयातिद्-दुनिया व फ़िल-आख़िरति*। के माना क्या हैं? तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया फ़िल-हयातिद्-दुनिया के मानी हैं वह अच्छे ख़्वाब जो मुसलमान देख कर खुश होता है, और फ़िल-आख़िरते से मुराद वह बशारत है जो मौत के वक़्त इंसान को दी जाती है कि अल्लाह ने तुझे बख़्श दिया और उसको भी जो तुझको उठा कर तेरी क़ब्र तक लाया।

(६४) बैहक़ी ने मुजाहिद से अल्लाह के क़ौल *इन्नल्लज़ीना क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू* की तफ़सीर बताई, यह मौत के वक़्त होगा। सुफियान से भी ऐसी ही रिवायत है।

(६५) इब्ने अबी हातिम और इब्ने मुन्दह ने मुजाहिद अलैहिर्रहमा से रिवायत की कि ला तख़ाफ़ू (न डरो) उस चीज़ से जो आ रही है यानी मौत और मुआमल-ए-आख़िरत वला तहज़नु (ग़म न करो) उस पर जो तुम छोड़ आए यानी औलाद और क़र्ज़ क्योंकि अल्लाह तआला उस पर ख़लीफ़ा बना देगा।

(६६) इब्ने अबी हातिम ने ज़ैद बिन असलम से इसी आयत के बारे में रिवायत की कि इस आयत से मरते वक़्त, क़ब्र में और क़ब्र से उठते वक़्त मोमिन सालेह को बशारत दी जाएगी और वह जन्नत में इस बशारत की लज़्ज़त महसूस करेगा।

(६७) इब्ने मुन्दह ने कसीर बिन अबी कसीर ख़ादिम इब्ने अब्बास से रिवायत की, अहले जन्नत में से हर एक फरिश्ता मुअक्किल है जन्नत की जब उसको खुश ख़बरी दी जाती है तो फरिश्ता अपना हाथ उसके दिल पर रखता है कि खुशी की ज़्यादती के बाइस उसका दिल निकल न जाए।

(६८) इब्ने अबी हातिम और अबू नईम ने सईद बिन जुबैर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने यह आयत पढ़ी गई कि : या ऐयुहन्नफ़्सुल-मुत्मइन्नह तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि यह तो अच्छी बात है। हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि फरिश्ता मौत के वक़्त यह कहेगा।

(६६) इब्ने अबी हातिम ने हसन से इस आयत के बारे में रिवायत की कि आप से जब इस आयत के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आपने फरमाया कि अल्लाह जब अपने मोमिन बन्दे की रूह क़ब्ज़ करना चाहता है तो नफ़स अल्लाह तआला की तरफ़ से मुत्मइन होता है और अल्लाह बन्दे की तरफ से और हाफ़िज़ सल्फ़ी ने मशीख़ा बग़दादिया में कहा अबू सईद अल-हसन बिन अली अल-वाइज़ को मैंने कहते हुए सुना कि वह कह रहे थे कि मेरे वालिद फरमाते थे कि अल्लाह तआला मलकुल-मौत के हाथ पर यह अल्फ़ाज़ ज़ाहिर फरमाएगा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम यह नूरानी ख़त से लिखे हुए होंगे। फिर उससे कहा जाएगा कि जब आरिफ बिल्लाह की वफात का वक़्त क़रीब आए तो यह अपना हाथ फैला दे और यह लिखा हुआ उसे दिखा दे। जब आरिफ की रूह उसे देखेगी, बेसाख़्ता उड़ कर उसकी तरफ आएगी, पलक झपकने से भी पहले, फिर्दौस में इब्ने अब्बास से मरवी है (मरफूअन) कि अल्लाह तआला जब गुनहगाराने उम्मत की अरवाह क़ब्ज़ करने का हुक्म देता है तो फरमाता है कि उनको जन्नत की बशारत दो लेकिन बता देना कि गुनाहों की सज़ा भुगतने के बाद और जहन्नम का मज़ा चखने के बाद। (आफानल्लाहु मिन्हा)

(१००) अबू नईम ने रबीअ बिन राशिद से रिवायत की कि अगर मोमिनों की उम्मीदें खुदा से वाबस्ता न होतीं तो दुनिया में उनकी राहें फट जातीं और दुनिया में उनके पेट फट जाते।

(१०१) अस्बहानी ने हज़रत अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जिसने जुमा के दिन एक हज़ार मरतबा मुझ पर दरूद पढ़ा तो वह ज़रूर मरने से पहले अपना ठिकाना जन्नत में देखेगा।

(१०२) इब्ने असाकिर ने शहर बिन जौशब से रिवायत की कि उन से दरयाफ़्त किया गया कि *व इन्ना मिन अह्लिल-किताबे इल्ला लेयुमिनुन्ना बेही क़ब्ला मौतेही*। से मुराद क्या है? तो आपने फरमाया कि यह यहूदियों के बारे में है। जब मलकुल-मौत उनकी रूह क़ब्ज़ करने को आते हैं तो उनके हम्राह एक फरिश्ता आग का शेअ्ला लिए होता है, वह फरिश्ता यह शेअ्ला उसके मुंह और दुबुर पर मारता है और कहता है कि बताओ मानते हो कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं या नहीं? वह ऐसा ही करता रहता है हत्ता कि वह मान लेता है। जब वह इक्रार कर लेता है तो मलकुल-मौत उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं।

(१०३) मुस्लिम ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि क्या तुम नहीं देखते कि जब इंसान मरने लगता है तो उसकी आंखें फट जाती हैं। सहाबा रज़ियल्लहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि जी हां या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। आपने फरमाया कि यह उस वक़्त होता है जब उसकी रूह परवाज़ करती है और उसकी निगाह उसका पीछा करती है।

(१०४) इब्ने सअद और इब्ने अबी अद्दुनिया ने भी अपनी सनदों के साथ ऐसी ही रिवायत की।

(१०५) दैनूरी ने मजालिसा में सुफियान सूरी से रिवायत की कि जब मलकुल-मौत इंसान की शहे रग दबाता है तो वह इंसानों को पहचानना और बात करना ख़त्म कर देता है और दुनिया व माफ़ीहा को भूल जाता है। अगर उस पर सकरात का आलम न हो तो वह तक्लीफ की वजह से अपने क़रीब वालों को तलवार लेकर मारने लगे।

(१०६) इब्ने अबी हातिम ने जुहैर बिन मुहम्मद से रिवायत की कि मलकुल-मौत ज़मीन व आसमान के दर्मियान एक सीढ़ी पर बैठे हैं और उनके कुछ कारिन्दे फरिश्ते हैं, जब जान गले में होती है तो वह मलकुल-मौत की सीढ़ी की तरफ देखता है और मलकुल-मौत अपनी सीढ़ी पर से उसको देखते हैं और यह मुर्दे का आख़िर होता है।

(१०७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हकम बिन अदनान से रिवायत की कि हज़रत इकरमा से पूछा गया कि क्या अन्धा भी मलकुल-मौत को देखता है? आपने फरमाया हां।

(१०८) अबू नईम ने मआज़ बिन जबल से रिवायत की कि मलकुल-मौत के पास एक नेज़ा है जो मश्रिक़ से लेकर मग़्रिब तक लम्बा है। जब किसी इंसान की मुद्दते हयात ख़त्म होती है तो वह उस नेज़ा को उसके सर पर मारते हैं और कहते हैं, अब तुम मौत के लश्करों को देखोगे।

(१०९) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में अपनी सनद से इब्ने अब्बास से रिवायत की (मरफूअ़) कि मलकुल-मौत के पास एक ज़हरीला नेज़ा है जिसका एक किनारा मश्रिक़ में और दूसरा मग़्रिब में है उससे वह रगे ज़िन्दगी काटते हैं।

(११०) इब्ने मुंज़िर और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने अपनी तफ़सीर में वहब बिन मंबा से रिवायत की कि इंसान की जान उसके हर अज़्व से निकलती है जितनी कि इस अज़्व की होती है और जिस्म की मिसाल क़मीस की सी है जिसको इंसान उतार देता है, बस क़मीस को जितना किसी

चीज़ का एहसास होता है जिस्म को भी इतना ही होता है असल राहत और तक्लीफ़ महसूस करने वाली तो रूह है।

फ़सल

इस फसल में यह बयान किया गया है कि तौबा उन्हीं की क़बूल होती है जो जिहालत से गुनाह कर लेते हैं और फिर जल्द ही तौबा करते हैं।

(१) इब्ने अबी हातिम और इब्ने जरीर ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि अल्लाह का क़ौल सुम्मा यतूबूना मिन क़रीब। इस से मुराद मलकुल-मौत के देखने तक का वक़्फ़ा है।

(२) अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब तक रूह हलक़ में न आ जाए उस वक़्त तक अल्लाह तआला बन्दे की तौबा को क़बूल फरमाता है। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ऐसी ही हदीस अपनी तफ़सीर में इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल की।

(३) इब्ने मुंज़िर ने नख़्ई से रिवायत की कि तौबा बन्दे के लिए खुली हुई है जब तक मौत की अलामात ज़ाहिर न हों।

(४) इब्ने अबी हातिम ने अल्लाह तआला के क़ौल हत्ता इज़ा हज़रा अहदकुमुल-मौता की तफ़सीर में फरमाया कि जब मौत को देखे।

(५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू मजलज़ अलैहिर्रहमा से रिवायत की कि जब तक बन्दा मलाइकए मौत को न देखे, तौबा क़बूल होती है।

(६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने बकर बिन अब्दुल्लाह मुज़नी से रिवायत की कि बन्दा जब तक फरिश्तों को न देखे तौबा क़बूल होती है और जब फरिश्तों का मुआइना कर ले तो मारिफत ख़त्म हो जाती है।

(७) इब्ने मरदवीया ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत की कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को फरमाते सुना कि जिसको तौबा की तौफ़ीक़ हुई उसकी तौबा क़बूल भी होगी, क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है। *हुवल्लज़ी यक़्बलुत्तौबता अन इबादिही। वल्लाहु आलम।*

जब मुर्दे की रूह निकलती है तो उस से अरवाह मिलती हैं और पूछताछ करती है

(१) इब्ने अबी अद्दुनिया और तबरानी ने औसत में अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

ने फरमाया कि जब इंसान की रूह क़ब्ज़ की जाती है तो अल्लाह के रहम करने वाले बन्दे उस से इस तरह मुलाक़ात करते हैं जैसे खुशख़बरी लाने वाले से मुलाक़ात करते हैं और कहते हैं कि देखो तुम्हारे साथी ने दुनिया के रंज व ग़म से नजात पाई फिर उस से अह्ले दुनिया के हालात पूछते हैं कि फलां ने क्या किया, क्या फलां औरत ने दूसरी शदी की या ना? फिर वह एक ऐसे शख़्स के बारे में दरयाफ़्त करते हैं जो उस शख़्स से पहले मर चुका है जब यह उसके मरने की इत्तिला देता है कि इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। वह जहन्नम रसीद हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम्हारे आमाल तुम्हारे मर जाने वाले ख़ुवेश व अक़ारिब के सामने पेश किए जाते हैं अगर अच्छा काम होता है तो वह सुन कर खुश होते हैं और अग़र बुरा काम होता है तो सुन कर ग़म्गीन होते हैं। अच्छा काम देख कर कहते हैं कि ऐ अल्लाह! यह तेरा फज़्ल व करम है तू अपनी नेअमत उस पर मुकम्मल फरमा और इसी पर उसको वफात दे। और बुरा अमल देख कर कहते हैं कि ऐ खुदावन्द उसको ऐसे आमाल की हिदायत दे जिन से तू राज़ी हो और जो उसको तेरा कुर्ब नसीब करें।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबी लबीबा से रिवायत की कि ज़ब बशर बिन बरा बिन मअ्रूर का इंतिक़ाल हुआ तो उनकी मां उन पर बहुत ग़म्गीन हुई और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू सलमा में से कोई न कोई मरता ही रहता है, यह फरमाइए क्या यह अरवाह एक दूसरे को पहचानती हैं? अगर ऐसा है तो मैं बशर को किसी के ज़रिया सलाम भेज दूं? तो आपने फरमाया, बखुदा जिस तरह परिन्दे दरख़्तों की टहनियों पर एक दूसरे को पहचानते हैं इसी तरह मुर्दे एक दूसरे को पहचानते हैं। अब जब कोई शख़्स बनू सलमा से मरने लगता तो बशर की मां उसके पास आती और कहती ऐ फलां! तुझ पर सलाम हो। वह कहता है व अलैकुमुस्सलाम फिर यह कहती कि बशर को सलाम पहुंचा देना।

(३) इब्ने माजा ने मुहम्मद बिन मुंकदिर से रिवायत की कि मैं जाबिर बिन अब्दुल्लाह की वफात के वक़्त उनके क़रीब गया और कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में मेरा सलाम पहुंचा देना।

(४) बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में ख़ालिदा बिन्त अब्दुल्लाह बिन अनीस से रिवायत की कि उम्मुल-बनीन बिन्त अबी क़तादा अपने वालिद की वफात के पन्द्रह रोज़ बाद अब्दुल्लाह बिन अनीस के पास आईं वह

बीमार थे। उन से कहा कि ऐ चचा! मेरे बाप को मेरा सलाम पहुंचा देना।

(५) इब्ने अबी शैबा ने अब्दुल्लाह बिन अमर से रिवायत की। जन्नत आफताब के सींगों से लटकी हुई है। साल में एक मरतबा खोली जाती है। और मुमिनीन की अरवाह परिन्दों के पोटों में हैं वह एक दूसरे को पहचानती हैं और जन्नत के मेवों से उनको रिज़्क़ मिलता है।

(६) अहमद व हकीम तिर्मिज़ी ने नवादिरुल-उसूल में अब्दुल्लाह बिन अमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दो मुसलमानों की रूहें एक दिन की मसाफत से देख कर एक दूसरे से मिल जाती हैं, ख़्वाह ज़िन्दगी में उन्होंने एक दूसरे को न देखा हो।

(७) बज़्ज़ाज़ ने बसनद सही अबू हुरैरह से रिवायत की (मरफूअन) कि जब मोमिन की मौत आती है वह अजीब-अजीब चीज़ें देखता है और पसन्द करता है कि काश यहीं उसकी रूह निकल जाए। और खुदा उसकी मुलाक़ात को पसन्द करता है। और जब मोमिन की रूह आसमान पर ले जाई जाती है तो मुमिनीन की रूहें उसके पास आकर अपने जान पहचान के आदमियों के बारे में उस से पूछती हैं, जब वह कहता है कि मैं फलां को दुनिया में छोड़ कर आया हूं। तो यह बात उनको अजीब मालूम होती है और जब वह कहता है कि फलां शख़्स मर चुका है तो वह कहते हैं कि लेकिन वह हमारे पास नहीं आया। आदम बिन अबी यास ने इस हदीस की शरह में फरमाया कि जब मोमिन मरता है तो उसकी मुलाक़ात दूसरी रूहों से होती है और वह रूहें दुनिया वालों के बारे में उस से पूछती हैं। जब वह कहता है कि फलां शख़्स तो मुझ से भी पहले मर चुका है तो वह कहती हैं कि उसको हाविया (जहन्नम का नाम) में ले गये और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है और उसमें जाने वाला।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सईद बिन जबीर से रिवायत की कि जब कोई मरता है तो उसका बच्चा उसका इस्तिक़्बाल करता है जैसे कि ग़ायब का इस्तिक़्बाल किया जाता है।

(९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने साबित बनानी से रिवायत की कि जब कोई शख़्स मर जाता है तो उसके अज़ीज़ व अक़ारिब उसका इस्तिक़्बाल करते हैं, तो वह आपस में मिल कर उस से ज़ाइद खुश होते हैं जितना कि किसी के आने से खुश होते हैं।

(१०) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने उबैद बिन उमैर अलैहिर्रहमा से रिवायत की, क़बर वाले मैयत से इस

तरह मिलते हैं जिस तरह किसी सवार से लोग मुलाक़ात करते हैं, जब वह ऐसे शख़्स के बारे में सवाल करते हैं जो उस शख़्स से पहले ही मर चुका है। तो यह शख़्स कहता है कि क्या वह अभी तक तुम्हारे पास न पहुंचा? तो वह कहते हैं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। उसको किसी दूसरी राह पर ले जाया गया है। उसको हाविया में ले गये हैं।

(११) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सालेह मरी से रिवायत की कि मुझे हदीस पहुंची कि मरने के बाद रूहें आपस में मुलाक़ात करती हैं तो मुर्दों की रूहें नई रूह से दुनिया का हाल दरयाफ़्त करती हैं और यह दरयाफ़्त करती हैं कि तुम लतीफ जिस्म में थे या ख़बीस जिस्म में?

(१२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने उबैद बिन उमैर से रिवायत की। रूहें इस तरह हालात मालूम करती हैं जिस तरह आने वाले सवार से मालूम किए जाते हैं कि फलां का क्या हाल है और फलां का क्या? सअलबी अलैहिर्रहमा ने अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से इसी जैसी रिवायत की, इस रिवायत के आख़िर में है कि हत्ता कि वह घर वालों के बारे में दरयाफ़्त करते हैं और घर की बिल्ली तक के बारे में पूछते हैं। कुरतबी अलैहिर्रहमा ने कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के क़ौल *यानी रूहों के लश्कर हैं जो एक दूसरे के पहचानते हैं वह मिल जाते हैं और जो नहीं पहचानते वह नहीं मिलते।* की तफ़सीर यह की गई है कि सोने वालों की रूहें मुर्दों की रूहों से मुलाक़ात करती हैं।

(१३) अहमद ने जुहद में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने उबैद बिन उमैर से रिवायत की, वह कहते हैं कि अगर मुझ को अपने मुर्दों से मुलाक़ात की उम्मीद न रहती तो मैं अफसोस से मर चुका होता।

(१४) इब्ने असाकिर ने अपनी सनद से अब्दुर्रहमान बिन महदी से रिवायत की कि जब सुफियान के मरज़ में ज़्यादती हुई तो वह सख़्त घबराने लगे तो मरहूम बिन अब्दुल-अज़ीज़ उनके पास आए और कहा कि अल्लाह के बन्दे यह घबराहट कैसी? तुम अपने रब की बारगाह में जा रहे हो जिसकी तुमने साठ साल इबादत की, नमाज़ पढ़ी और रोज़े रखे और हज किए, तुम सोचो! अगर तुम्हारा किसी शख़्स पर एहसान होता तो क्या तुम उस से मुलाक़ात करने में खुशी महसूस न करते। यह सुन कर उनका ग़म दूर हुआ। अबू नईम कहते हैं कि जब हसन बिन अली पर दर्द की ज़्यादती हुई तो उन पर एक शख़्स दाख़िल हुआ और कहा कि ऐ अबू मुहम्मद! यह घबराहट कैसी? यह तो सिर्फ़ इतनी सी बात है कि तुम्हारी रूह जिस्म से जुदा हो रही है। अब तुम अपने बाप अली और मां फातिमा और दादा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम) और दादी खदीजा और चचा हम्ज़ा व जाफर व अली और मामूं क़ासिम, तैयब, ताहिर और इब्राहीम और ख़ाला रुक़ैया, उम्मे कुल्सूम और ज़ैनब से मिलने वाले हो। यह सुन कर उनकी तक्लीफ दूर हुई।

(१५) अबू नईम ने लैस बिन सअद से रिवायत की कि एक शख़्स शाम वालों में से शहीद हो गया। तो वह हर जुमा की रात को ख़्वाब में अपने बाप के पास आता और उन से गुफ़्तगू करता लेकिन एक जुमा की रात को न आया और फिर दूसरे जुमा आया। बाप ने उस से शिकायत की कि क्यों न आए। उसने कहा वजह यह हुई कि तमाम शुहदा को हुक्म दिया गया था कि वह उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के जनाज़ा में शिर्कत करें यह वाक़्या ठीक उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ की वफात के वक़्त वाक़े हुआ।

(१६) बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में हज़रत अली से रिवायत की कि दो मोमिन दोस्त थे और दो काफिर। मोमिनों में से एक मर गया तो उसे जन्नत की बशारत दी गई तो उसे फौरन अपने दोस्त की याद आई तो उसने बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह! मेरा फलां दोस्त मुझे तेरे और तेरे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की इताअत का हुक्म देता था, नेकी की रग़बत दिलाता और बुराई से रोकता था और मुझे बताता था कि मुझे तुझ से ज़रूर मिलना है, तो ऐ अल्लाह! तू मेरे बाद उसको गुम्राह न करना हत्ता कि वह मुझ से मुलाक़ात करे और तू उससे इस तरह राज़ी होना जिस तरह कि तू मुझ से राज़ी हुआ। इतने में दूसरा भी मर जाता है फिर वह दोनों आपस में मिलते हैं, तो हुक्म होता है कि तुम में से हर एक दूसरे की तारीफ़ करो। चुनांचे हर एक दूसरे की तारीफ़ करता है और कहता है कि तुम बहुत ही अच्छे भाई हो और बहुत ही अच्छे मसाहिब। और जब दो काफिर दोस्तों में से कोई मरता है और उसे जहन्नम की इत्तिला दी जाती है तो वह अपने दोस्त को याद करता है और कहता है कि अल्लाह मेरा दोस्त मुझे तेरी और तेरे रसूल की नाफरमानी का हुक्म देता था, बुराई का हुक्म करता था और भलाई से रोकता था और बताता था कि मुझे तुझ से कभी मिलना नहीं तो ऐ खुदावन्द तू इसको मेरे बाद हिदायत न देना हत्ता कि वह मुझ से मिल न जाए और तू उस पर भी इसी तरह नाराज़ होना कि जिस तरह तू मुझ से नाराज़ हुआ। इतने में दूसरा भी मर जाता है, और दोनों आपस में मुलाक़ात करते हैं तो कहा जाता है कि अब हर एक दूसरे का हाल बयान कर डालो तो एक कहता है कि तू बुरा साथी और बुरा भाई था।

मैयत का अपने गुस्ल देने वाले, तज्हीज़ व तक्फीन करने वाले और अपने बारे में कही जाने वाली बातों को सुनना और पहचानना!

(१) अहमद और तबरानी ने औसत में इब्ने अबी अद्दुनिया, मरुज़ी और इब्ने मुन्दा ने अबू सईद खुदरी से रिवायत की रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मैयत अपने गुस्ल देने वाले, उठाने वाले, कफन देने वाले और क़बर में उतारने वाले को पहचानती है।

(२) अबुल-हुसैन ने किताबुर्रौज़ा में बसनदे ज़ईफ़ इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मुर्दा अपने गुस्ल देने वाले को पहचानता है, और अगर मरते वक़्त उसको रूह व ईमान की बशारत दी गई है तो अपने उठाने वाले से जल्दी चलने की गुज़ारिश करता है। और अगर जहन्नम रसीद होने की उसे इत्तिला दी गई है तो वह रोके रहने की दर्ख़्वास्त करता है।

(३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुजाहिद से रिवायत की जब मुर्दा मर जाता है तो वह अपने गुस्ल से लेकर क़बर तक जाने के हाल को देखता है। इब्ने अबी शैबा ने भी ऐसी ही रिवायत की।

(४) अबू नईम ने उमर बिन दीनार से रिवायत की कि जो भी मरता है उसकी रूह एक फरिश्ता के क़ब्ज़े में रहती है जो उसके जिस्म की तरफ देखता है कि कैसे गुस्ल दिया जा रहा है और कैसे उसे ले जाया जा रहा है और वह फरिश्ता उस शख़्स से कहता है कि लोगों की तारीफ अपने बारे में सुन।

(५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने बकर बिन अब्दुल्लाह मुज़नी से रिवायत की। मुझे मालूम हुआ है कि जब कोई शख़्स मर जाता है तो उसकी रूह एक फरिश्ते के क़ब्ज़े में रहती है और वह फरिश्ता अपने गुस्ल व कफन की हालत देखता रहता है और अगर वह बात कर सकता तो लोगों को रोने से मना कर देता।

(६) सुफियान से इब्ने अबी अद्दुनिया ने रिवायत की कि मैयत हर चीज़ को पहचानती है हत्ता कि वह अपने गुस्ल देने वाले से कहती है कि आहिस्ता गुस्ल दो। और फरिश्ता उसको चारपाई पर कहता है कि लोगों की तारीफ़ सुन।

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हुज़ैफा से रिवायत की कि इंसान की

रूह मलकुल-मौत के हाथ में रहती है और वह फरिश्ता क़बर तक साथ रहता है। जब क़बर बराबर कर दी जाती है तो वह उसमें दाख़िल हो कर मुर्दे से मुख़ातब होता है। बैहक़ी वग़ैरह ने भी इसी क़िस्म की रिवायात बयान कीं।

(८) शैख़ैन ने अनस से रिवायत की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक़्तूलीने बद्र के पास खड़े हुए और कहा कि ऐ फलां बिन फलां जो तुम्हारे रब ने तुम से वादा किया, आया वह तुमने पा लिया? क्योंकि मैंने अपने रब के वादे को सच्चा पाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप ऐसे जिस्मों से कलाम फरमा रहे हैं जिनमें रूह नहीं, आपने फरमाया कि तुम मेरी बात उन से ज़्यादा नहीं सुनते हां फर्क़ यह है कि यह जवाब नहीं दे सकते।

(९) अबू शैख़ ने (मुरसल) उबैद बिन मज़रूक़ से रिवायत की कि मदीना में एक औरत थी जो मस्जिद की सफाई सुथराई क़रती थी, वह मर गई और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पता न चला। एक रोज़ उसकी क़ब्र पर गुज़र हुआ। दरयाफ़्त किया कि यह क़ब्र किस की है? सहाबा ने अर्ज़ की कि उम्मे महजिन की आपने फरमाया कि वही जो मस्जिद का काम करती थी? अर्ज़ की, जी या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। तो आपने सफ बांधी और उसकी नमाज़े जनाज़ा अदा फरमाई। फिर दरयाफ़्त किया कि ऐ औरत! कौन सा अमल अच्छा पाया? सहाबा ने अर्ज़ की क्या यह सुनती है? आपने फरमाया कि तुम इससे ज़ाइद सुनने वाले नहीं, मरवी है कि उसने जवाब दिया कि मस्जिद की सफाई।

(१०) शैख़ैन ने अबू सईद खुदरी से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब जनाज़े को लोग अपने कांधें पर उठाते हैं तो अगर नेक होता है तो कहता है कि जल्दी चलो और अगर बुरा होता है तो कहता है, अफसोस कहां लिए जाते हैं। इंसान के अलावा हर चीज़ उसकी आवाज़ को सुनती है। और अगर इंसान उसे सुन ले तो बेहोश हो जाए।

(११) शैख़ैन ने अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि जनाज़े को जल्दी लेकर चलो ताकि अगर अच्छा है तो अच्छाई की तरफ तुम उसे बढ़ा दो। और अगर अच्छा नहीं है तो अपनी गर्दनों से जल्द उतार दो।

(१२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू सईद खुदरी से रिवायत की कि उन्होंने मैयत के बारे में फरमाया कि उसको जल्द उसके गढ़े की तरफ

ले जाओ क्योंकि वही उसका ठिकाना है ताकि उसमें जाकर वह अच्छाई बुराई को देख ले।

(१३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने बकर मुज़्नी से रिवायत की कि मैयत जल्द क़ब्र में पहुंचने से खुश होती है। अबू अय्यूब से भी यही रिवायत है।

(१४) इब्ने अबी अद्दुनिया अल-कुबूर में उमर बिन ख़त्ताब से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब मैयत को उसके तख़्त पर रख कर तीन क़दम चला जाता है तो वह बात करती है इंसान व जिन्न के सिवा जो चाहे उसके कलाम को सुन सकता है। मुर्दा कहता है कि ऐ मेरे भाईयो! ऐ मेरी लाश के उठाने वालो! दुनिया तुम को धोखे में न डाल दे जैसे मुझ को डाला, और ज़माना तुम से खेल न करे जैसे मुझ से किया, जो कुछ मेरे पास था वारिसों के लिए छोड़ दिया और क़र्ज़ ख़्वाह क़यामत के दिन मुझ से झगड़ा करेगा और हिसाब करेगा और तुम मुझ को छोड़ कर जा रहे हो।

अहमद अलैहिर्रहमा ने ज़ुहद में उम्मे दरदा से इसी क़िस्म की रिवायत की। तारीख़ इब्ने नज्जार में अबू मुहम्मद बिन नज्जार से (यह मरुज़ी के साथियों में थे, बल्कि ख़लाल उनको मरुज़ी से अफ़ज़ल कहते थे) मरवी है। वह कहते हैं कि मैंने एक मुर्दा को गुस्ल दिया, मैं गुस्ल दे रहा था कि अचानक उसने आंखें खोलीं और मेरा हाथ पकड़ कर कहा : ऐ अबू मुहम्मद! इस दिन के लिए अच्छी तैयारी कर लो। वल्लाहु आलम।

मलाइका के जनाज़ा में चलने का बयान और वह क्या कहते हैं?

(१) सईद बिन मन्सूर ने इब्ने ग़फ़ला से रिवायत की कि मलाइका जनाज़े के आगे यह कहते हुए जाते हैं कि फलां शख़्स ने आख़िरत के लिए क्या किया? और लोग कहते हैं कि उसने हमारे वास्ते क्या छोड़ा।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अल-कुबूर में अबुल-खुल्द से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने दाऊद की दुआ पढ़ी वह रब से अर्ज़ करते हैं कि ऐ अल्लाह! जिसने जनाज़ा का साथ महज़ तेरी मर्ज़ी के लिए दिया, उसकी जज़ा क्या है? अल्लाह तआला ने फरमाया कि जिस दिन वह मरेगा तो फरिश्ते उसके जनाज़े के हमराह चलेंगे और मैं उसकी मग़्फ़िरत करूंगा। यही रिवायत इब्ने असाकिर ने इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से की।

(३) बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में और दैलमी ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया, जब

कोई शख़्स मरता है तो फरिश्ते कहते हैं कि आख़िरत के लिए इसने क्या किया? और इंसान कहते हैं कि हमारे लिए क्या छोड़ा?

मोमिन की मौत पर आसमान व ज़मीन का रोना

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया कि फ़मा बकत *अलैहिमुस्समाऊ वल-अर्ज़ु।*

(१) तिर्मिज़ी, अबू नईम, अबू यअ़ला और इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने अबी हातिम ने हज़रत अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हर इंसान के दो दरवाज़े हैं, एक तो वह जिससे उसका अमल चढ़ता है और दूसरा वह जिससे उसका रिज़्क़ उतरता है। जब मोमिन मर जाता है तो वह दोनों रोते हैं।

(२) इब्ने जरीर ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि उन से पूछा गया। क्या किसी पर आसमान व ज़मीन रोते हैं? आपने फरमाया, हां हर इंसान के लिए दो दरवाज़े हैं, एक तो वह जिस से उसका अमल जाता है, दूसरा वह जिस से उसका रिज़्क़ उतरता है। जब वह मर जाता है तो यह दोनों इसलिए रोते हैं कि क्योंकि यह बन्द हो जाते हैं। इसी तरह वह ज़मीन जिस पर यह नमाज़ पढ़ता था और ज़िक्रे खुदा करता था रोती है और फिरऔन की क़ौम के लिए ज़मीन में अच्छे निशनात न थे और न ही उनका कोई अमल अच्छा था जो आसमान पर जाता। पस उसके आने पर न आसमान रोया और न ज़मीन। यही मानी हैं अल्लाह तआला क़ौल फ़मा बकत अलैहिमुस्समाओ वल-अर्ज़ु। के। वल्लाहु आलम।

(३) इब्ने जरीर, इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में शरीह बिन उबैद हज़रमी अलैहिर्रमा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जो मोमिन भी मुसाफिरी के हाल में मरता है और उसको रोने वालियां नहीं होतीं तो उस पर आसमान व ज़मीन रोते हैं। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह आयत पढ़ी फ़मा बकत अलैहिमुस्समाओ वल-अर्ज़ु। और फरमाया यह काफिरों पर नहीं रोते।

(४) सईद बिन मन्सूर और अबू नईम ने मुजाहिद से रिवायत की कि जब भी कोई मोमिन मरता है तो चालीस रोज़ तक सुबह के वक़्त ज़मीन उस पर रोती है।

(५) अबू नईम ने अता खुरासानी से रिवायत की, जो मुसलमान ज़मीन के किसी गोशे में भी खुदा की बारगाह में सर बसुजूद होता है,

वह गोश उसकी मौत पर रोता है और क़यामत के रोज़ उसके हक़ में गवाही देगा।

(६) इब्ने अबी अद्दुनिया, इब्ने अबी हातिम और बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में हज़रत अली से रिवायत की। उन्होंने फ़रमाया कि जब मोमिन मरता है तो उसकी नमाज़ की जगह उस पर रोती है, और उसके अमल के चढ़ने की जगह आसमान से रोती है। फिर यह आयते मज़्कूर पढ़ी :

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया और हाकिम ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की। उन्होंने फरमाया कि ज़मीन मोमिन की मौत पर चालीस सुबह रोती है।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया अबू उबैदह (सुलेमान बिन अब्दुल-मलिक के मसाहिब) से रिवायत की कि मोमिन जब मरता है तो ज़मीन का गोशा-गोशा पुकार कर कहता है कि अल्लाह का बन्दा मर गया तो ज़मीन व आसमान दोनों इस पर रोते हैं तो खुदा पूछता है तुम क्यों रोते हो? तो वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब वह जिस गोशे से गुज़रता था वह तेरी याद करता था।

(९) मुहम्मद बिन कअब से मरवी है कि ज़मीन उस शख़्स पर रोती है जो ज़मीन पर इबादत करता था और उस शख़्स से रोती है जो उस पर गुनाह करता था।

(१०) सईद बिन मन्सूर और इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुहम्मद बिन मतीन से रिवायत की कि आसमान व ज़मीन मोमिन की मौत पर रोते हैं। आसमान कहता है कि उसकी नेकियां बराबर आती रहती थीं और ज़मीन कहती है कि यह बराबर मुझ पर नेक अमल करता था।

(११) इब्ने जरीर ने जह्हाक से रिवायत की कि मोमिन बन्दे की मौत पर ज़मीन के वह हिस्से रोते हैं जिन पर उसके निशनात हैं और आसमान के वह हिस्से रोते हैं जिन से अमले ख़ैर जाता है।

(१२) अता से मरवी है कि आसमान के रोने से मुराद उसके किनारों का सुर्ख़ होना है।

(१३) सुफियान सूरी से मरवी है कि आसमान की यह सुर्ख़ी मोमिन पर उसके रोने की निशानी है।

(१४) हसन से मरवी है कि जब कोई मुसाफिर हालते सफर में मरता है तो अल्लाह तआला उस मुसाफिरी की वजह से उसको अज़ाब नहीं करता और उसके रोने वालों के न होने की वजह से आसमान के फरिश्ते उसको रोते हैं।

इंसान का उसी ज़मीन में दफन होना जिस से वह पैदा हुआ है

(१) बज़्ज़ार, हाकिम और बैहक़ी ने शुअ़ब में अबू सईद से रिवायत की कि एक मरतबा रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना में गुज़रे तो मुलाहिज़ा फरमाया कि चन्द लोग क़ब्र खोद रहे हैं, तो आपने उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि एक शख़्स हब्शा से आया था यहां मर गया है। तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, इसको इसकी अपनी ज़मीन से निकाल कर इस ज़मीन की तरफ भेजा गया कि जिस से यह पैदा हुआ था।

(२) तबरानी ने कबीर में इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि एक हब्शी मदीना में दफन हुआ, तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि जिस ज़मीन से यह पैदा हुआ उसी में दफन हुआ। इसी क़िस्म की हदीस तबरानी ने औसत में रिवायत की। नीज़ हकीम तिर्मिज़ी ने भी इसी को अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से नवादिरुल-उसूल में रिवायत किया।

(३) अबू नईम ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि हर बच्चा पर उसकी क़ब्र की मिट्टी से थोड़ा सा हिस्सा छिड़का जाता है।

(४) हकीम तिर्मिज़ी ने नवादिरुल-उसूल में इब्ने मसऊद से रिवायत की कि एक फरिश्ता रहम पर मुक़र्रर है वह नुत्फ़ा को रहम से लेकर हाथ पर रखता है और कहता है कि ऐ रब! इसको पैदा किया जाएगा या न? अगर अल्लाह तआला फरमाता है कि पैदा होगा तो यह पूछता है कि उसका रिज़्क़ क्या है असर क्या है मौत का वक़्त क्या है, अमल क्या है? अल्लाह तआला फरमाता है लौहे महफ़ूज़ में देखो! तो वह लौहे महफ़ूज़ में देखता है, तो सब चीज़ लौहे महफ़ूज़ में लिखी देखता है। फिर वह उसकी दफन की जगह की मिट्टी लेकर उसमें उसके नुत्फ़ा को गोंधता ह। यही मुराद है अल्लाह तआला के क़ौल मिन्हा ख़लक़्नाकुम व फीहा नुईदुकुम से।

(५) दैनूरी ने मजालिसा में हिलाल बिन यसार से रिवायत की कि हर बच्चा की नाफ में उसके मरने की जगह की मिट्टी होती है।

(६) तिर्मिज़ी ने मुतिर बिन मस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे की मौत का फैसला किसी ज़मीन में फरमा लेता है तो उसकी कोई न कोई ज़रूरत उस ज़मीन की तरफ पैदा कर देता है।

(७) हाकिम और बैहक़ी ने शुअब में इब्ने मस्ऊद से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से किसी की मौत जिस ज़मीन में लिखी होती है तो उसको अल्लाह तआला किसी काम के बहाने वहां भेजता है और उसकी रूह वहां निकलती है तो क़्यामत के रोज़ ज़मीन कहेगी कि ऐ अल्लाह! यह अमानत तेरी है।

(८) ने इब्ने मस्ऊद से रिवायत की कि एक फरिश्ता रहम पर मुक़र्रर है। जब नुत्फा रहम में ठहरता है तो फरिश्ता उसे अपने हाथ में लेकर पूछता है : ऐ अल्लाह! यह पैदा होने वाला है या न? तो अगर वह कहता है कि पैदा होने वाला नहीं। तो रहम उसे फेंक देता है, और अगर कहता है कि पैदा होने वाला है तो फरिश्ता पूछता है। ऐ अल्लाह! मर्द है या औरत, बदबख़्त है या नेक बख़्त, उसकी मौत का वक़्त क्या है, असर क्या है, रिज़्क़ क्या है, किस ज़मीन में मरेगा? अल्लाह तआला फरमाएगा कि यह सब कुछ लौहे महफ़ूज़ से देखो। तो नुत्फ़ा से पूछता है कि तेरा रब कौन है? वह कहता है, अल्लाह। पूछा जाता है कि तेरा राज़िक़ कौन है? कहता है कि अल्लाह। तो उसे पैदा कर दिया जाता है वह अपने घर वालों में ज़िन्दा रहता है और अपना रिज़्क़ खाता है और निशनाते क़दम बनाता है और जब मौत आती है तो मर जाता है और उसी जगह दफन होता है (जिस से पैदा हुआ था)

(६) अबू नईम और इब्ने मुन्दह ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम अपने मुर्दों को नेक लोगों के दर्मियान दफन करो क्योंकि मुर्दा को भी बुरे पड़ोसी से इसी तरह तक्लीफ होती है जिस तरह ज़िन्दा को। इब्ने असाकिर अपनी तारीख़ में और मालीनी ने मोतलिफ में भी इसी क़िस्म की रिवायत की।

(१०) मालीनी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से कोई मर जाए तो उसको अच्छा कफन दो और उसकी वसीयत जल्द ही पूरी करो और क़ब्र गहरी खोदो और बुरे पड़ोसी से बचाओ। अर्ज़ की गई कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या मुर्दे को अच्छा साथी नफ़अ देता है? आपने फरमाया कि आया अच्छा साथी ज़िन्दा को नफ़अ देता है? अर्ज़ की गई, हां या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। तो आपने फरमाया कि बस इसी तरह आख़िरत में भी नफा देता है।

(११) दैलमी और इब्ने मुन्दह ने अबू सलमा की मरफ़ूअ हदीस से रिवायत की कि अपने मुर्दों को अच्छा कफ़न दो और चिल्ला कर

अपने मुर्दो को तक्लीफ न दो। और वसीयत के नाफिज़ करने में देर करके और न क़तअ रहमी करके उसके क़र्ज़ों की अदाइगी में जल्दी करो, और उसको बुरे पड़ोसियों से बचाओ।

(१२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने क़ुबूर में अब्दुल्लाह बिन नाफ़े मुज़नी से रिवायत की कि एक शख़्स मदीना में मर गया तो उसे एक शख़्स ने देखा कि वह जहन्नमी है तो उसे ग़म हुआ। फिर सात या आठ राज़ बाद वह ख़्वाब में नज़र आया तो ऐसा मालूम हुआ कि वह अह्ले जन्नत से है। उन से मुआमला दरयाफ़्त किया तो मालूम हुआ कि उसके हम्राह एक आदमी दफन किया गया है जिसने चालीस आदमियों के लिए शफ़ाअत की, उनमें से एक यह भी था।

(१३) इब्ने सअद ने मुआविया बिन सालेह से रिवायत की कि जब उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ की वफात का वक़्त क़रीब हुआ तो आपने वसीयत की कि मेरी क़बर गहरी न खोदना क्योंकि ज़मीन का सबसे बदतरीन हिस्सा निचला है। इब्ने असाकिर ने उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के भाई के बारे में भी इसी क़िस्म की रिवायत की।

(१४) हकीम तिर्मिज़ी, इब्ने अदी, इब्ने असाकिर और इब्ने मुन्दह ने (बसनदे ज़ईफ़) इब्ने उमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब मोमिन मरता है तो क़बरें अपने आपको मुज़ैयन कर लेती हैं और ज़मीन का हर हिस्सा तमन्ना करता है कि मेरे अन्दर दफन किया जाए और जब काफिर मरता है तो ज़मीन का हर हिस्सा खुदा से पनाह मांगता है कि यह इंसान उसमें न दफन किया जाए।

(१५) इब्ने नज्जार ने तारीख़े बग़दाद में मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह असदी से रिवायत की, वह कहते हैं कि अब्दुस्समद बिन अली के घराने के एक फर्द के जनाज़े में शरीक हुआ तो वह लोगों को जल्दी करने पर बरअंगेख़्ता कर रहे थे कि शाम से हम को आराम दिलाओ। तो हमने दरयाफ़्त किया कि क्या इस बारे में कोई रिवायत है। उन्होंने कहा कि हां, मेरे दादा ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत की और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दिन के फरिश्ते रात के फरिश्तों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं।

(१६) इब्ने असाकिर ने वहब ख़ौलानी से रिवायत की, वह कहते हैं कि हम अमरु बिन आस के हमराह उस पहाड़ की सतह पर (मक़्तम) चल रहे थे और हमारे साथ मक़ोक़श था तो आप ने उस से कहा कि

ऐ मक़ोक़स! तुम्हारे मुल्क के पहाड़ गंजे हैं न उन पर दरख़्त हैं न घास है जैसे शम के पहाड़ों पर है। उसने कहा कि अल्लाह तआला यहां वालों को इस नील (दरियाए नील) के जरिया ग़नी कर दिया है लेकिन उस पहाड़ के नीचे एक ऐसी चीज़ है जो उस नील से भी बेहतर है और वह यह कि अल्लाह तआला उसके नीचे एक ऐसी क़ौम को दफन फरमाएगा कि जिन पर क़्यामत के रोज़ हिसाब न होगा। तो अमरु बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ मांगी कि फ्ऐ अल्लाह! मुझे भी उनमें कर दे हुरमला कहते हैं कि मैंने अमर बिन आस, अबू नज़रह ग़िफ्फ़ारी और उक़्बा बिन आमिर की क़बरें देखीं।

(१७) दैलमी ने और तूसी ने उयूनुल-अख़्बार में अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक जनाज़े के साथ चले। फिर आपने एक कपड़ा निकाल कर क़ब्र पर बिछा दिया और फरमाया कि इसको हटा कर अन्दर न देखना क्योंकि यह अमानत है क्योंकि शायद तुम उसकी गर्दन में सियाह सांप लिपटा हुआ देखो या उसके पैरों में ज़ंजीरें डालने का हुक्म दिया जाए और तुम उनकी आवाज़ सुनो।

(१८) तूसी और दैलमी ने मसनदे फ़िर्दौस में रिवायत की हज़रत अनस से (मरफूअन) कि जनाज़े के हम्राह जाने वालों पर अल्लाह तआला एक फरिश्ते को मुकर्रर फरमाता है तो वह ग़म्गीन रहते हैं और जब वह उसको क़बर के सुपुर्द करके लौटते हैं तो फरिश्ता एक मुटठी मिट्टी उन पर फेंक कर कहता है कि जाओ तुम अपनी दुनिया की तरफ, खुदा तुम को मौत भुला दे, तो वह लोग अपने मुर्दे को भूल जाते हैं और अपनी ख़रीद व फरोख़्त में मश्ग़ूल हो जाते हैं गोया कि उनका उससे कुछ तअल्लुक़ ही न था। और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि (इब्ने वत्तह की अमाली) अल्लाह का एक फरिश्ता क़बरों पर मुक़र्रर है, जब लोग उस पर मिट्टी बराबर करके लौटते हैं तो वह एक मुट्ठी मिट्टी लेकर फेंकता है और कहता है कि जाओ अपनी दुनिया की तरफ और अपने मुर्दों को भुला दो। वल्लाहु आलम।

दफ़न और तल्क़ीन के वक़्त क्या कहना चाहिए?

(१) बज़्ज़ार ने अली से रिवायत की कि जब जनाज़ा क़बर पर पहुंच जाए और लोग बैठ जाएं तो तुम न बैठो बल्कि उस क़ब्र के किनारे पर खड़े हो जाओ। जब मुर्दे को क़ब्र में उतारा जाए तो कहो :

तर्जमा : *अल्लाह तआला के नाम से शुरू करता हूं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मज़हब पर, ऐ अल्लाह तेरा बंदा तेरे*

पास आता है और सबसे बेहतर मेज़बान ही दुनिया को अपनी पीठ पीछे छोड़कर आया है तो जिसकी तरफ वह आया है उसे उसके लिये बेहतर बना, क्योंकि तूने फरमाया है कि जो अल्लाह के पास है वह नेकियों के लिये अच्छा है।

(२) तबरानी और बैहक़ी ने शुअ़ब में इब्ने उमर से रिवायत की। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब कोई मर जाए तो उसे रोके न रखो बल्कि जल्दी ले जाओ क़ब्र की तरफ, और उसके सर की जानिब सूरः फातिहा पढ़नी चाहिए और उसकी क़ब्र की पाएं जानिब सूरः बक़रः की आख़िरी आयात।

(३) तबरानी ने अब्दुर्रहमान बिन उला बिन जल्लाह से रिवायत की। उन्होंने कहा कि मेरे वालिद ने मुझे वसीयत की कि ऐ मेरे बेटे! जब तुम मुझे क़बर में रखो तो यह कहना : *बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।* फिर मुझ पर मिट्टी डालना, फिर मेरे सरहाने सूरः बक़रः की इब्तिदाई और आख़िरी आयात पढ़ना, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यही सुना है।

(४) इब्ने अबी शैबा ने क़तादा से रिवायत की कि अनस ने अपना एक बेटा दफन किया तो कहा ऐ अल्लाह! ज़मीन को उसके दोनों किनारों से खुश्क कर दे और जन्नत के दरवाज़े उसके लिए खोल दे और उसको उसके घर से बेहतर घर अता कर।

(५) सईद बिन मन्सूर ने हज़रत अनस से रिवायत की कि जब वह मैयत को क़बर में रखते तो यह फरमाते कि ऐ अल्लाह! क़बर को उसके दोनों पहलुओं से दूर कर और उसकी रूह को ऊपर चढ़ा और उस पर रहमत नाज़िल फरमा।

(६) इब्ने माजा और बैहक़ी ने अपनी सुनन में इब्ने मुसैयिब से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि मैं हज़रत उमर के साथ उनकी लड़की के जनाज़े में शरीक हुआ तो उन्होंने उसको क़ब्र में उतारते वक़्त कहा: *बिस्मिल्लाहि व फ़ी सबीलिल्लाहि।* और जब मिट्टी बराबर की, तो कहा : *अल्लाहुम्मा अजिरहा मिनश्शैताने व अज़ाबिल-क़बरे।* जब सब काम पूरा हो चुका तो टीले के एक तरफ खड़े हो गये और कहा कि ऐ अल्लाह! इसके दोनों पहलुओं से ज़मीन को दूर कर दे और उसकी रूह को ऊपर बुला ले और अपनी रज़ामन्दी उसे अता कर। फिर फरमाया कि यह मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है।

(७) इब्ने अबी शैबा ने मुजाहिद अलैहिर्रहमा से रिवायत की कि वह दफन के वक़्त कहते थे।

तर्जमा : *शुरू करता हूं अल्लाह तआला के नाम से और उसकी राह में ऐ अल्लाह इसके क़ब्र को कुशादा और मुनव्वर फरमा और उसके नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम से मिला।*

(८) हकीम ने अमरु बिन मुर्रह से रिवायत की कि बुजुर्गाने दीन मुर्दा को क़ब्र में उतारते वक़्त मुस्तहब समझते थे कि यह कहें : *अल्लाहुम्मा उइज़हु मिनश्शैतानिर्रजीम।*

(९) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ़ में ख़सीमा से रिवायत की कि बुजुर्गाने दीन मैयत को क़ब्र में उतारते वक़्त -

तर्जमा : *यानी इस मौक़े पर खुसूसी तौर पर मां की तरफ निसबत की जायेगी।* यह कहना पसन्द करते थे।

(१०) तबरानी ने कबीर में और इब्ने मुन्दह ने अबू अमामा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से कोई मर जाए और तुम उस पर मिट्टी डाल चुको तो कोई एक आदमी क़बर के सरहाने खड़े हो कर पुकारे, ऐ फलां इब्ने फुलानिया। मुर्दा यह बात सुनेगा लेकिन जवाब न देगा। फिर दोबारा ऐसे ही पुकारे, तो वह उठ कर बैठ जाएगा। फिर ऐसे ही पुकारे तो कहे कि खुदा तुझ पर रहम करे मुझे हिदायत की बात बता। लेकिन तुम उसकी आवाज़ न सुन सकोगे तो बाहर वाले को कहना चाहिए कि वही कलिमा याद करो जो पढ़ते हुए तुम दुनिया से आए हो यानी *अश्हदु अन ला-इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू!* और यह बात कहो कि मैंने राज़ी खुशी खुदा को अपना रब और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नबी और इस्लाम को दीन और कुरआन को इमाम मान लिया है, क्योंकि ऐसा कहने से मुंकर नकीर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहते हैं कि चलो ऐसे आदमी के पास बैठ कर हम क्या करेंगे कि जिसको उसकी हुज्जत बता दी गई है तो अल्लाह ही उस से पूछ गछ करेगा। एक शख़्स ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अगर किसी की मां का नाम मालूम न हो तो ? आपने फरमाया कि उसे जनाबे हव्वा की तरफ मन्सूब कर दे।

(११) इब्ने मुन्दह ने अबू अमामा बाहली से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि जब तुम मुझको दफन कर चुको तो एक शख़्स मेरे सरहाने खड़े हो कर कहे कि :

तर्जमा : *यानी ऐ सदी बिन अजलान इस कलिमा को याद करो जो तुम दुनिया में पढ़ते थे।*

(१२) सईद बिन मन्सूर ने राशिद बिन साअद से और ज़मरा बिन हबीब से और हकीम बिन उमैर से कहा कि जब मैयत की क़ब्र बन चुके तो उस वक़्त यह कहना मुस्तहब है : *या फुलान कुल ला इलाहा इल्लल्लाहु* यह तीन मरतबा कहा जाए। *या फुलां कुल रब्बी अल्लाहु व दीनी अल-इस्लामु व नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम* फिर आ जाए।

(१३) आजरी ने कहा कि दफन के बाद थोड़ी देर क़बर पर ठहरा रहना मुस्तहब है और यह भी मुस्तहब है कि मैयत की तरफ मुतवज्जह हो कर उसके लिए दुआ की जाए कि ऐ अल्लाह! यह तेरा बन्दा है तू हम से ज़ाइद उसको जानता है और हम तो उसको अच्छा ही समझते थे। और ऐ अल्लाह! तूने उसको सवाल के लिए बिठाया है, तो ऐ अल्लाह! उसको क़ौल साबित से साबित क़दमी अता फरमा जैसे कि तूने दुनिया में उसको साबित क़दमी अता की, ऐ अल्लाह! उस पर रहम कर और अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुलाक़ात उसको अता कर, जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं और हम को उसके बाद गुम्राह न कर और उसके अज्र से महरूम न फरमा।

तिर्मिज़ी ने कहा कि दफन के बाद मैयत की क़ब्र पर ठहरना और साबित क़दमी की दुआ मांगना मैयत की मदद है, बिल-खुसूस जमाअत की नमाज़ के बाद, क्योंकि जमाअत मुसलमानों के लिए लश्कर की तरह है। जो बादशाह के दरवाज़े पर शफाअत के लिए आया हो, और यह वक़्त मैयत के लिए हौलनाकी का है क्योंकि यह सवाल का वक़्त है।

(१४) इब्ने असद ने ज़ह्हाक से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मुझ से नज़ाल बिन सबरह ने कहा कि तुम जब मुझको क़ब्र में उतारो तो कहना कि ऐ अल्लाह! इस क़ब्र में और उसके दाख़िल होने वाले में तू बरकत अता फरमा।

क़बर हर एक को दबाएगी

(१) अहमद और हकीम तिर्मिज़ी ने नवादिरुल-उसूल में और बैहक़ी ने किताबुल-क़ब्र में हुज़ैफा से रिवायत की, वह कहते हैं कि हमने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ एक जनाज़ा में शिर्कत की, जब आप एक क़ब्र पर पहुंचे तो उसके एक पहलू में बैठ गये और उसको देखने लगे और फरमाने लगे कि इसमें मोमिन को इस तरह दबाया जाता है कि उसकी पिसलियां उखड़ जाती हैं और काफिर के लिए यह आग से भर जाती है।

(२) अहमद और इब्ने जरीर ने तज़्हीबुल-आसार में और बैहक़ी ने आयशा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि क़ब्र दबाती है और उस से किसी को नजात मिल सकती थी तो सअद बिन मआज़ थे।

(३) अहमद और हकीम तिर्मिज़ी, तबरानी और बैहक़ी ने जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने सअद बिन मआज़ के दफन के बाद बहुत देर तक सुब्हानल्लाह कहा और फिर अल्लाहु अक्बर कहा। सहाबा ने वजह दरयाफ़्त की तो आपने फरमाया कि इस सालेह इंसान की क़बर तंग हो गई थी तो अल्लाह ने इसकी वजह से कुशदा कर दी।

(४) सईद बिन मन्सूर, हकीम तिर्मिज़ी, तबरानी और बैहक़ी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि अगर कोई अज़ाबे क़बर से बच सकता है तो वह सअद बिन मआज़ थे। लेकिन क़बर ने उनको भी दबाया, और फिर छोड़ दिया।

(५) निसई और बैहक़ी ने अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सअद बिन मआज़ के लिए फरमाया, यह वह हैं कि अर्शे इलाही उनके लिए हरकत में आ गया और जन्नत के दरवाज़े खुल गये और सत्तर हज़ार फरिश्ते नाज़िल हुए। फिर क़बर ने उनको दबाया और छोड़ दिया। हसन कहते हैं कि अर्श उनकी रूह की आमद में खुश हुआ और हरकत करने लगा। सअद बिन मआज़ के बारे में बकसरत अहादीस मुतअद्दद रिवायात से तक़रीबन इसी मज़्मून की हैं।

(६) हकीम तिर्मिज़ी और बैहक़ी ने इब्ने इस्हाक़ की सनद से रिवायत की कि मुझ से उसैद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया कि हज़रत सअद के ख़ानदान में से किसी से दरयाफ़्त किया गया कि इस सिलसिला में (अज़ाबे क़ब्र) तुमको हुज़ूर का कौन सा क़ौल याद है? तो उसने जवाब दिया कि हम को मालूम हुआ कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से इस बारे में पूछा गया तो आपने फरमाया कि पेशब की छींटों में बचने से कुछ कोताही करते थे (यानी सअद बिन मआज़)।

(७) तबरानी ने अनस से रिवायत की कि ज़ैनब बिन्ते रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इंतिक़ाल हो गया तो हम उनके जनाज़े में आपके हमराह गये। आप बहुत ही ग़म्गीन थे। तो आप थोड़ी देर क़ब्र पर बैठ कर आसमान की जानिब देखने लगे, फिर क़ब्र से

उतर आए और ग़म और ज़ाइद हो गया, फिर थोड़ी देर बाद ग़म ख़त्म हो गया और तबस्सुम फरमाने लगे। दरयाफ़्त करने पर फरमाया कि मैं क़ब्र के दबाने को याद कर रहा था और ज़ैनब की कमज़ोरी को यह बात मुझ पर दुश्वार गुज़री तो पहले ख़ुदा की बारगाह में दुआ की कि क़ब्र के दबाने में कमी कर दी जाए तो दुआ मक़्बूल हुई लेकिन फिर भी क़ब्र ने ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु को इतना दबाया कि उसके दबाने की आवाज़ को इन्स व जिन्न के अलावा हर चीज़ ने सुना।

(८) तबरानी ने सनदे सही से अबू अय्यूब से रिवायत की कि एक बच्चा दफन किया गया तो आप ने फरमाया कि अगर क़बर के दबाने से कोई बच सकता तो यह बच्चा बच जाता। तबरानी औसत में भी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसी ही रिवायत है।

(९) नहाद बिन सिर्री ने जुह्द में इब्ने अबी मुल्कीया से रिवायत की कि क़ब्र के दबाने से कोई न बचा, हत्ता कि सअद बिन मआज़ भी कि जिसका एक रूमाल भी दुनिया व माफीहा से बेहतर है।

(१०) अली बिन मुईद ने किताबुत्ताअते वल-इस्यान में एक शख़्स से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैं आइशा के पास था तो एक बच्चा का जनाज़ा गुज़रा। आप रोने लगीं। मैंने कहा आप क्यों रोती हैं? फरमाया कि इस बच्चे पर क़बर के दबाने से शफ़क़त करते हुए।

(११) उमर बिन अबी शैबा ने किताबुल-मदीना में अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि क़बर के दबाने से किसी ने नजात न पाई मगर फातिमा बिन्त असद ने। तो अर्ज़ की गई कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और न आपके बेटे क़ासिम ने ? आप ने फरमाया। हां और न इब्राहीम ने (यह छोटे थे)।

(१२) इब्ने असाकिर और इब्ने अबी अद्दुनिया ने अब्दुल-मजीद बिन अब्दुल-अज़ीज़ से रिवायत की कि अब्दुल-अज़ीज़ ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर के गुलाम नाफ़े की वफात का वक़्त जब क़रीब हुआ तो वह रोने लगे तो उन से उसका सबब दरयाफ़्त किया गया तो उन्होंने कहा कि मैं सअद और क़बर के दबाने को याद करके रोता हूं।

(१३) सुयूती ने सअद बिन मआज़ का वाक़या लिख कर कहा कि अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) पर क़बर का दबाना नहीं होता।

(१४) अबुल-क़ासिम सअदी ने किताबुर्रूह में कहा कि क़ब्र के दबाने से न अच्छे महफ़ूज़ रहेंगे और न बुरे। लेकिन फ़र्क़ यह है कि काफिर पर यह हालत हमेशा रहेगी और मुसलमान को इब्तिदा में क़ब्र दबाएगी

और फिर फराख़ हो जाएगी। और क़ब्र के दबाने से मुराद यह है कि उसके दोनों किनारे आपस में मिल जाएंगे।

(१५) हकीम तिर्मिज़ी फरमाते हैं कि क़ब्र का दबाना इसलिए होता है कि कोई शख़्स ख़्वाह कितना ही नेक क्यों न हो, इससे कोई न कोई ख़ता ज़रूर होती है, तो यह क़बर का दबाना उसकी जज़ा में है। उसके बाद खुदा की रहमत आ जाती है। चुनांचे सअद पेशाब के बारे में कोताही करते थे लेकिन अंबिया के लिए क़ब्र के दबाने का हम को इल्म नहीं और न ही उन से सवाल का कुछ इल्म है क्योंकि वह मासूम हैं।

(१६) सुबकी ने बहरुल-कलाम में फरमाया कि इताअत गुज़ार मोमिन के लिए अज़ाबे क़ब्र न होगा लेकिन क़ब्र का दबाना होगा। चुनांचे वह उसकी हौलनाकी को पाएगा, क्योंकि उसने अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा न किया।

(१७) इब्ने अबी अद्दुनिया मुहम्मद तैमी से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि क़ब्र के दबाने की असल वजह यह है कि लोग इसी से पैदा हुए और अब एक अरस-ए-दराज़ तक उस से ग़ायब होने के बाद फिर मिले हैं तो वह उनको बिल्कुल इस तरह दबाएगी जैसे मां अपने मुद्दत के छूटे हुए बच्चा को दबाती है तो जो खुदा का फरमाबरदार होता है उसको बतौर मुहब्बत दबाती है और जो नाफरमान होता है उसे बतौर नाराज़गी दबाती है।

(१८) बैहक़ी, इब्ने मुन्दह, दैलमी और इब्ने नज्जार ने सईद बिन मुसैयिब से रिवायत की कि आइश रज़ि अल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब से आपने मुंकर नकीर की आवाज़ और क़ब्र के दबाने का ज़िक्र किया है, मुझे किसी चीज़ में लज़्ज़त नहीं आती। आपने फरमाया कि ऐ आइशा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) मुंकर नकीर की आवाज़ मुमिनीन के कानों में ऐसी है जैसे इस्मिद का सुर्मा आंखों में, और कबर का दबाना उनके लिए ऐसा है जैसा मां अपने उस बच्चा का सर दबाती है जिसके सर में दर्द हो। लेकिन वह लोग जो अल्लाह के बारे में शक करते हैं उनके लिए हलाकत हो क़ब्र उनको ऐसे कुचलेगी जैसे पत्थर अंडे को।

(१९) बाज़ उलमा-ए-किराम ने फरमाया कि इंसान के गुनाह दस चीज़ों से मआफ होते हैं : तौबा करे और तौबा क़बूल हो, इस्तिग़फ़ार करे और मग्फ़िरत हो जाए, या नेकियां करे कि बदियां उन से मिट जाएं, या दुनियावी मसाइब आएं कि उख़रवी मसाइब ख़त्म हों, या बरज़ख़ का अज़ाब हो या उसके मुसलमान भाई

उसके लिए दुआए मग्फ़िरत करें, या अपने आमाल के सवाब का बदला करें जिस से उसको नफ़ा हो, या मैदाने क़यामत में उस पर ऐसी हौलनाकी हो कि उसके गुनाह मिट जाएं, या उसको नबी करीम की शफ़ाअत और खुदा तआला की रहमत नसीब हो।

(२०) अबू नईम ने हुलिया में अब्दुल्लाह बिन शख़ीर से रिवायत की, उन्होंने कहा, कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जिस ने अपने मरज़ुल-मौत में कुल-हुवल्लाहु अहद पढ़ ली वह क़ब्र के दबाने से महफ़ूज़ हुआ और मलाइका उसे अपने परों पर उठा कर पुल सिरात से पार करा देंगे।

(२१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-कुबूर में वलीद बिन उमर बिन वसाज से रिवायत की कि सबसे पहले इंसान को अपने पैर के पास हरकत मालूम होती है तो वह दरयाफ़्त करता है कि तू कौन है? जवाब आता है कि मैं तेरा अमल हूं।

(२२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने यज़ीद रक़ाशी से रिवायत की, उन्होंने कहा कि क़ब्र में मैयत के पास सबसे पहले उसके आमाल आते हैं। फिर अल्लाह तआला उनको कुव्वते गोयाई अता फरमाता है तो वह कहते हैं कि ऐ क़ब्र के गढ़े में तन्हा ठहरने वाले बन्दे आज तेरे रिश्तेदार और दोस्त ख़त्म हुए, अब हमारे सिवा तेरा मूनिस व ग़म्गुसार कोई नहीं।

(२३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अता बिन यसार से रिवायत की कि जब मैयत को क़ब्र में रखा जाता है तो सबसे पहले उसका अमल आकर उसकी बाएं रान को हरकत देता है और कहता है कि मैं तेरा अमल हूं। मुर्दा पूछता है कि मेरे अहल व अयाल कहां हैं? और मेरी नेमतें कहां हैं? तो अमल कहता है कि यह सब तेरी पीठ पीछे रह गये और सिवाए मेरे तेरी क़ब्र में कोई न आया। अहमद बिन अबी हवारी कहते हैं कि हम से इब्राहीम बिन फज़ल ने बयान किया। उन्होंने अबुल-मलीह से रिवायत की कि जब इंसान क़ब्र में दाख़िल होता है तो वह तमाम चीज़ें उसको डराने के लिए आ जाती हैं जिन से वह दुनिया में डरता था और अल्लाह से न डरता था।

क़ब्र का मुर्दे से ख़िताब

(१) तिर्मिज़ी ने अबू सईद से रिवायत की (और इसे हसन कहा) कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि लज़्ज़तों के तोड़ने वाली चीज़ का ज़िक्र बकसरत किया करो। क्योंकि क़ब्र हर रोज़ कलाम करती है कि मैं तन्हाई और मुसाफिरी का घर हूं। मैं कीड़ों

और मिट्टी का घर हूं। और जब मोमिन मद्फून हो जाता है तो क़ब्र मरहबा कहती है और कहती है कि तू मेरी पुश्त पर चलने वालों में सबसे ज़ाइद महबूब था और अब तू मुझ में समा गया है तो अब तू मेरा बर्ताव अपने साथ देख लेगा। फिर वह क़ब्र उसके लिए हद्दे निगाह तक फराख़ हो जाती है और उसके लिए जन्नत तक एक दरवाज़ा खुल जाता है। और जब फाजिर व काफिर इंसान मदफून होता है तो क़ब्र नाराज़गी का इज़्हार करती है, और कहती है कि तू मेरी पुश्त पर चलने वालों में मेरे नज़्दीक सबसे बुरा था और अब तो मुझ में समा गया, तू अब तो मेरा बर्ताव अपने साथ देख लेगा। तो अब वह क़ब्र उस पर बन्द हो जाती है और उसकी पिसलियां एक तरफ से दूसरी तरफ निकल जाती हैं। रावी कहते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी बाज़ उंगलियों को बाज़ में डाल कर अमली तौर पर वह मंज़र दिखाया और फरमाया कि अल्लाह तआला उस पर सत्तर अज़्दहे मुक़र्रर फरमा देता है उनमें अगर कोई एक भी ज़मीन पर एक फुंकार मार दे तो वह कभी सब्ज़ा न उगाए। ऐसे अज़्दहे उसे काटते हैं यहां तक कि रोज़े हिसाब आ जाता है। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि क़ब्र तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा है।

(२) तबरानी ने औसत में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की। उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हम्राह एक जनाज़ा में शरीक हुए तो आपने फरमाया कि एक दिन ऐसा आएगा कि जब यह बजुबाने फसीह पुकार कर कहेगी कि ऐ इंसान! तूने मुझको क्योंकर भुला दिया हर शख़्स के लिए मैं तन्हाई, मुसाफिरी, वहशत और कीड़े मकोड़ों का घर हूं, सिवाए उस शख़्स के जिसके लिए अल्लाह तआला मुझे फराख़ कर दे। फिर आपने फरमाया कि क़ब्र जन्नत के बाग़ों में एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में एक गढ़ा।

(३) इब्ने अबी अद्दुनिया, हकीम तिर्मिज़ी, अबू यअ्ला, अबू अहमद और हाकिम ने कुना में और तबरानी ने कबीर में और अबू नईम ने अबुल-हुज्जाज समाली से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि जब क़ब्र में मुर्दा रखा जाएगा तो क़ब्र कहेगी कि क्या तू नहीं जानता कि ख़राबी हो तेरे लिए, मैं फित्ना, तारीकी और कीड़े मकोड़ों का घर हूँ। ऐ इंसान! तू मेरे पास से अकड़ता हुआ गुज़रता था। अगर नेक होगा तो क़ब्र में जवाब देने वाला फरिश्ता जवाब देगा कि अगर यह मुर्दा नेकी का हुक्म करने वाला और बुराई

से रोकने वाला हो तो क्या होगा? क़ब्र कहेगी कि तब तो मैं उसके लिए सरसब्ज़ हो जाऊंगी और जिस्म उसका मुनव्वर हो जाएगा और उसकी रूह बारगाहे ईज़्दी में चली जाएगी।

(४) इब्ने मुन्दह ने किताबुल-अरवाह में बसनदे मुजाहिद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से रिवायत की कि आपने फरमाया कि जब मोमिन की मौत का वक़्त होता है तो एक फरिश्ता अच्छी सूरत और खुश्बू में महकता हुआ आता है और उसकी रूह क़ब्ज़ करने के बाद बैठ जाता है। और उसके पास दो फरिश्ते जन्नत की खुश्बू और कफन लाते हैं और उससे कुछ दूर बैठ जाते हैं, पस मलकुल-मौत उसकी रूह निकालता है। जूंही वह रूह मलकुल-मौत के पास आती है जल्दी से वह दोनों फरिश्ते उसको ले लेते हैं और उसको जन्नत की खुश्बू और कफन में रख कर जन्नत की तरफ ले जाते हैं, तो उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और आसमान के फरिश्ते उसको देख कर खुश होते हैं और वह उसका अच्छा नाम लेकर कहते हैं यह खुशबूदार रूह किस की है तो बताया जाता है कि यह फुलां बन्दे की रूह है। अब वह जिस आसमान पर भी गुज़रते हैं वहां के मुक़र्रब फरिश्ते उनके हमराह हो लेते हैं। जाकर उसे अर्शे इलाही के नीचे खुदा के सामने रख दिया जाता है। उसके आमाल इल्लीयून से निकाले जाते हैं। तब अल्लाह तआला फरिश्तों को गवाह करके फरमाता है कि गवाह रहो, मैंने इस अमल वाले की मग़्फ़िरत फरमा दी और उसकी किताबे आमाल को मुहर लगा कर इल्लीयून में रख दिया जाता है। फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरे बन्दे की रूह को ज़मीन की तरफ वापस ले जाओ क्योंकि मैंने उन से वादा किया है कि मैंन उनको इसी मिट्टी से उठाऊंगा। पस जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो ज़मीन कहती है कि जब तू मेरी पीठ पर चलता था तो तू मेरे नज़्दीक पसन्दीदा था, अब जब कि तू मेरे पेट में आ गया है तो क्या हाल होगा। अब मैं तुझे बताती हूं कि तेरे साथ क्या करने वाली हूं। तो उसके लिए उसकी क़ब्र हद्दे निगाह तक फराख़ कर दी जाती है और उसके पैर के पास एक दरवाज़ा जन्नत की तरफ खोल दिया जाता है। उस से कहा जाता है कि जो अल्लाह तआला ने तेरे लिए तैयार किया है उसे देख! और एक दरवाज़ा सर की जानिब खोल दिया जाता है और कहा जाता है कि अब वह देखो जो अल्लाह ने तुम से टाल दिया। फिर उस से कहा जाता है कि अब ठण्डी आंखों से सो जा। लेकिन उसके नज़्दीक सब से पसन्दीदा चीज़ यह होती है कि क़यामत जल्द क़ायम हो जाए।

(५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अब्दुल्लाह बिन उबैद से रिवायत की कि जब मुर्दे के साथ आने वाले चलते हैं तो मुर्दा बैठ कर उन के क़दमों की आवाज़ सुनता है और उस से उसकी क़ब्र से पहले कोई हम कलाम नहीं होता। क़ब्र कहती है कि ऐ इब्ने आदम! क्या तूने मेरे हालात न सुने थे कि क्या तू मेरी तंगी, बदबू, हौलनाकी और कीड़ों से न डराया गया था? अगर ऐसा था तो फिर तूने क्या तैयारी की?

(६) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में अब्दुल्लाह बिन अमर से रिवायत की कि इंसान जब क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र उस से कहती है कि आया तुझे पता न चला था कि मैं तारीकी, तन्हाई और वहशत का घर हूं? ऐ इब्ने आदम! तू मेरे इर्द गिर्द चलने के बावजूद किस चीज़ पर इतराता था पस अगर मुर्दा मोमिन होता है तो उसकी क़ब्र में वुसअत की जाती है और उसके नफ़्स को आसमान पर पहुंचा दिया जाता है।

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने यज़ीद बिन शजरा से रिवायत की कि क़ब्र फाजिर व काफिर से कहेगी कि क्या तूने मेरी तारीकी, मेरी वहशत, तन्हाई, तंगी और ग़म को याद न किया।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने उबैद बिन उमैर से रिवायत की कि क़बर मुर्दे से कहती है कि अगर तू अपनी ज़िन्दगी में खुदा का मुतीअ़ व फरमां बरदार था तो आज मैं तुझ पर रहमत करूंगी और नाफरमान था तो मैं तेरे लिए अज़ाब हूं, मैं वह घर हूं कि जो मुझ में इताअत गुज़ार हो कर दाख़िल हुआ तो वह मुझ से खुश हो कर निकलेगा और जो नाफरमान व गुनहगार था, वह मुझ से तबाह हाल निकलेगा।

(९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने जाबिर से मरफूअन रिवायत की कि क़ब्र की एक ज़ुबान है जिस से वह कहती है कि ऐ इंसान तूने मुझ को कैसे भुला दिया, क्या तू मेरे बारे में न जानता था कि मैं वहशत, गुर्बत, कीड़ों और तंगियों का घर हूँ।

(१०) अबू बकर बिन अब्दुल-अजीज़ बिन जाफर फ़कीह हंबली किताबुल-मसानी फिल-फिक्ह में फरमाते हैं कि हम से इस्माईल बिन इब्राहीम शीराज़ी ने बयान किया और उन्होंने अपनी सनद से बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हम्राह एक जनाज़ा में शिर्कत की, कब्रिस्तान पहुंच कर मालूम हुआ कि क़ब्र अभी तक नहीं खुदी है तो हम आपके साथ क़बर के गिर्द बैठ गये तो आपने फरमाया कि जब मुर्दे को क़ब्र में रख कर ईंटें बराबर कर दी जाती हैं तो क़बर कहती है कि ऐ मुर्दे

क्या तुझ को पता न था कि मैं गुर्बत तन्हाई और कीड़ों का मस्कन हूँ? तो तूने क्या तैयार किया है?

बैहक़ी ने शुअ़ब में, और दैलमी ने इब्ने अब्बास से इसी क़िस्म की रिवायात बयान की हैं।

(११) इब्ने अबी अद्दुनिया ने क़ुबूर में, और इब्ने मुन्दह ने उमर बिन ज़र से रिवायत की कि जब मोमिन क़ब्र में दाख़िल होता है तो वह उसको पुकार कर कहती है कि फरमां बरदार है या नाफ़रमान है अगर वह नेक होता है तो क़ब्र के गोशे से एक पुकारने वाला फकार कर कहता है कि ऐ क़ब्र! तू उस पर सरसब्ज़ व शादाब हो जा और उसके लिए रहमत बन जा। क्योंकि यह अल्लाह का सबसे अच्छा बन्दा था और अब यह करामत व शराफत का मुस्तहिक़ है।

(१२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने क़ुबूर में मुहम्मद बिन सबीह से रिवायत की जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है और उसको अज़ाब होता है तो उसके मुर्दे पड़ोसी उसको फकार कर कहते हैं कि ऐ दुनिया से आने वाले क्या तूने हम से नसीहत हासिल न की, क्या तूने न देखा कि हमारे आमाल कैसे ख़त्म हुए और तुझे अमल करने की गुंजाइश थी, लेकिन तूने वक़्त ज़ाए किया। क़ब्र के गोशे उसको पुकार कर कहते हैं कि ऐ ज़मीन पर इतरा कर चलने वाले क्या तूने मरने वालों से इबरत हासिल न की? क्या तूने न देखा कि किस तरह तेरे रिश्तेदारों को लोग उठा कर क़ब्रों तक ले गये।

(१३) बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में अनस बिन मालिक से रिवायत की कि आपने फरमाया कि क्या मैं तुम को दो दिनों और दो रातों की ख़बर न दूं? एक दिन तो वह जब बशीर, तुम्हारे पास आएगा या तो अल्लाह तआला की रज़ामन्दी और या उसकी नाराज़ी का पैग़ाम लेकर और दूसरा दिन वह जब कि तुम बारगाहे ख़ुदावन्दी में खड़े होगे और तुम्हारा नाम-ए-आमाल तुम्हारे हाथ में दिया जाएगा या दाएं हाथ में या बाएं हाथ में। एक रात वह जब मैयत अपनी क़ब्र में पहली रात गुज़ारेगी, यह रात वह होगी कि इससे पहले ऐसी रात कभी न आई होगी और एक रात वह कि जिसकी सुबह क़यामत क़ाइम होगी कि उसके बाद कोई रात न होगी।

फ़ित्न-ए-क़ब्र और फरिश्तों के सवाल का बयान

इस सिलसिला में अहादीसे मुतवातिरह मौजूद हैं। मुन्दरजा ज़ेल अस्हाब (रजि अल्लाहु अन्हुम) की रिवायत से इन अहादीस की ताईद

व तक़्वियत होती है : अनस, बरा, तमीम दारमी, बशीर बिन कमाल, सौबान, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन रवाहा, उबादा बिन सामित, हुज़ैफ़ा, ज़मरा बिन हबीब, इब्ने अब्बास, इब्ने उमर, इब्ने मसऊद, उस्मान बिन अफ्फान, उमर बिन ख़त्ताब, अमर बिन आस, मआज़ बिन जबल, अबू अमामा, अबू दर्दा, अबू राफ़े, अबू सईद ख़ुदरी, अबू क़तादा, अबू हुरैरह, अबू मूसा, अस्मा और आइश रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन।

(१) शैख़ैन ने हज़रत अनस से रिवायत की कि लोग जब मुर्दे को क़ब्र में रख कर चलते हैं तो वह मुर्दा उनके जूतों की आवाज़ सुनता है। फिर दो फरिश्ते आकर उसको बिठाते हैं और कहते हैं कि तेरा इस मुक़द्दस शख़्स के बारे में क्या ख़्याल है जो तुम ही लोगों में रहता था जिसका नाम मुहम्मद था? तो अगर वह मोमिन होता है तो कहता है कि मैं गवाही देता हूं कि यह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। फिर उस से कहा जाएगा कि तू अपना जहन्नम का ठिकाना देख कि अल्लाह तआला ने उसके बदले जन्नत अता की है तो वह दोनों को देखता है और उसकी क़ब्र सत्तर गज़ वसीअ़ कर दी जाती है और उसमें सब्ज़ाज़ार बना दिया जाता है। फिर मुनाफ़िक़ और काफिर से भी यही सवाल होता है तो वह जवाब देता है कि मैं तो कुछ नहीं जानता जो लोग कहते थे, मैं वही कहता था। यह सुन कर फरिश्ते उसे जवाब देते हैं कि तुझे तो कुछ ख़बर ही नहीं। फिर उसे लोहे के हथौड़ों से ऐसी मार पड़ती है जिसको इन्स व जिन्न के अलावा सब ही सुनते हैं। अहमद व अबू दाऊद ने भी ऐसी ही रिवायत की हैं।

(२) दैलमी ने हज़रत अनस से मरफ़ूअन रिवायत की कि मुंकर व नकीर मैयत की क़ब्र में दाख़िल हो कर उसको बिठाते हैं तो अगर वह मोमिन होता है तो उस से दरयाफ़्त करते हैं कि मन रब्बुका तो वह कहता है : अल्लाह। फिर पूछते हैं। मन नबीयुका वह कहता है : मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फिर पूछते हैं कि मन इमाम का (तेरा इमाम कौन है?) वह कहता है : कुरआन। फिर वह उसकी क़ब्र में फराख़ी पैदा करते हैं। फिर यही सवालात काफिर से किए जाते हैं लेकिन वह हर सवाल के जवाब में लाअदरी (मैं नहीं जानता) कहता है तो वह उसको ऐसी मार मारते हैं कि जिस से शुअ़ले निकल कर तमाम क़ब्र को रौशनी से भर देते हैं। और क़ब्र में उस पर ऐसी तंगी होती है कि उसकी पिसलियां टूट जाती हैं।

(३) बज्जार व तबरानी ने बशीर बिन कमाल से रिवायत की और उन्होंने अपने बाप कमाल से रिवायत की, वह कहते हैं कि बनू मुआविया में कुछ इख़्तिलाफ हो गया तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम सुलह कराने को तशरीफ ले गये तो आपने एक क़ब्र की तरफ मुतवज्जह हो कर ला दरैता (यानी तू कुछ न जाने) तो सहाबा रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने दरयाफ्त किया कि यह मुआमला क्या है? तो आपने फरमाया कि इस क़ब्र वाले से मेरे बारे में पूछा जा रहा था तो उसने कहा कि ला अदरी।

(४) अबू नईम ने सौबान से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, कि जब मोमिन मर जाता है तो नमाज़ उसके सर की तरफ़, सदक़ा दाएं तरफ, और रोज़ा सीना की तरफ होता है।

(५) अहमद व तबरानी व बैहक़ी ने और इब्ने अबी अद्दुनिया ने हदीसे क़ब्र में जाबिर से यह मज़ीद रिवायत की कि मोमिन को जब बताया जाता है कि अल्लाह ने तेरे लिए बजाए जहन्नम के जन्नत कर दी है तो वह खुशी से कहता है कि मुझे इजाज़त दो ताकि मैं अपने घर वालों को बता कर आ जाऊं। लेकिन फरिश्ते उसको यहीं ठहरने का हुक्म देते हैं। और काफिर को बताया जाता है कि अल्लाह तआला ने तेरे लिए बजाए जन्नत के जहन्नम कर दिया है। हज़रत जाबिर फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स जिस हालत पर दुनिया से गया है उसी पर उठेगा। मोमिन ईमान पर और मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ पर।

(६) इब्ने माजा, इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने आसिम ने अस्सुन्नह में जाबिर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब मोमिन को उसकी क़ब्र में दाख़िल किया जाएगा, तो उसको सूरज की ऐसी रौशनी नज़र आएगी जैसी कि गुरूब के वक़्त होती है। तो वह मुर्दा आंखें मसलता हुआ कहेगा कि मुझको छोड़ दो ताकि मैं नमाज़ पढ़ूं।

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया और अबू नईम ने जाबिर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इंसान को पता नहीं कि उसके लिए कौन सी चीज़ को पैदा किया। जब अल्लाह तआला इंसान को पैदा फरमाने का इरादा फरमाता है तो फरमाता है कि इसका रिज़्क़ लिखो, उसके निशानाते क़दम लिखो, उसकी मौत का वक़्त लिखो, उसकी नेकबख़्ती या बदबख़्ती लिखो। फिर एक फरिश्ता को भेजता है जो उसको महफ़ूज़ कर लेता है। फिर अल्लाह

तआला उस पर दो फ़रिश्तों को मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उसकी नेकियां और बुराइयां लिखते हैं। अब जब कि उसकी मौत का वक़्त आता है तो यह दोनों फ़रिश्ते उसका साथ छोड़ देते हैं और मलकुल-मौत तशरीफ़ लाते हैं जो उसकी रूह क़ब्ज़ करते हैं फिर जब उस शख़्स को क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाता है तो उसकी रूह मलकुल-मौत वापस कर देते हैं और अब क़बर वाले फ़रिश्ते आकर उस से सवालात करते हैं और इम्तिहान लेते हैं। फिर जब क़यामत होगी तो नेकियों का फ़रिश्ता उतरेगा और उसके हम्राह बुराइयों का भी। फिर वह उसकी गर्दन से बंधी हुई किताब को खोलते हैं। एक का नाम साइक़ (हंकाने वाला) है और दूसरे का शहीद (गवाह)। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे सामने बहुत बड़ा मुआमला दरपेश है कि जिस की तुम ताक़त नहीं रखते तो अल्लाह ही से मदद चाहो।

(८) अबू नईम ने ज़मरा बिन हबीब से रिवायत की कि क़ब्र में आज़माने वाले तीन हैं। अंकर, नाकूर और रोमान।

(६) इब्ने लाल और इब्ने जौज़ी ने मौज़ूआत में ज़मरा बिन हबीब से मरफ़ूअन रिवायत कि क़बर में आज़माइश करने वाले चार हैं। मुंकर, नकीर, नाकूर और उनके सरदार रूमान हैं। शैखुल-इस्लाम इब्ने हजर से दरयाफ़्त किया गया कि आया क़ब्र में कोई फ़रिश्ता मैयत का इम्तिहान लेने के वास्ते आता है जिसका नाम रूमान है, तो उन्होंने कहा कि हां यह एक ज़ईफ़ हदीस से मालूम होता है।

(१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने तहज्जुद में और इब्ने अल-फरीस ने फ़ज़ाइलुल-कुरआन में और हमीद बिन नज्वियह ने फ़ज़ाइलुल-आमाल में उबादा बिन सामित से रिवायत की कि जब तुम रात को कुरआन पढ़ो तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ो क्योंकि उससे शयातीन और सरकश जिन्न भाग जाते हैं और हवा में रहने वाले फ़रिश्ते नीज़ घर के रहने वाले सुनते हैं, नीज़ जब कोई कुरआन नमाज़ में पढ़ता है तो लोग उसको देख कर नमाज़ पढ़ते हैं और घर वाले भी पढ़ते हैं। जब यह रात गुज़र जाती है तो यह रात अगली रात को वसीयत कर देती है कि इस इबादत गुज़ार बन्दे को इसी तरह रात को जगा देना और उसके लिए तू आसान हो जाना। फिर जब मौत का वक़्त आता है तो कुरआन उसके सर के पास आकर ठहर जाता है। जब लोग उसे गुस्ल दे कर फ़ारिग़ होते हैं तो कुरआन उसके सीना और कफ़न में दाख़िल हो जाता है और जब क़ब्र में उसके पास मुंकर नकीर आते हैं तो कुरआन बन्दे और उनके दर्मियान हाइल हो जाता है तो वह कहते हैं कि तू

दर्मियान से हट जा। हम उस से पूछगछ करना चाहते हैं तो कुरआन कहता है कि बखुदा मैं इस शख़्स का पीछा उस वक़्त तक नहीं छोड़ता जब तक कि यह जन्नत में दाख़िल नहीं होता। तो अगर तुमको उसके बारे में कुछ हुक्म दिया गया है तो तुम उसे पूरा करो। फिर कुरआन मुर्दे की तरफ़ देख कर कहता है कि तू मुझ को देख कर पहचाना या नहीं पहचाना? वह कहेगा कि नहीं। कुरआन कहेगा कि मैं कुरआन हूं जो तुझको रात भर बेदार रखता था और दिन में प्यासा रखता था, नफ़सानी ख़्वाहिशात से मना करता ख़्वाह वह आंख की हों या कान की, तो अब तू मुझे सबसे बेहतर दोस्त और सच्चा भाई पाएगा। तो अब तू बशारत सुन कि तुझ से मुंकर नकीर का सवाल न होगा। फिर मुंकर नकीर उसके पास से उठ जाते हैं और कुरआन खुदा तआला की बारगाह में हाज़िर होता है और उस मुर्दे के लिए बिछौना और चादर तलब करके लाता है, जन्नत के क़िन्दील और यासमीन के फूल एक हज़ार मुक़र्रब फरिश्ते उठा कर लाते हैं लेकिन कुरआन उन से पहले क़ब्र में पहुंचता है और कहता है कि क्या तू मेरे बाद वहशतज़दह तो न हुआ? मैं तो सिर्फ़ इसलिए बारगाहे ईज़्दी में पहुंचा था कि उस से बिस्तर और चादर और चिराग़ की सिफ़ारिश करूं। अब यह तमाम चीज़ें लेकर हाज़िर हुआ हूं। फिर फरिश्ते आकर उसका बिस्तर करते हैं, चादर क़दमों के नीचे रखते हैं और यासमीन के फूल सीने के पास। वह शख़्स उनको क़्यामे कियामत तक सूंघता रहेगा। फिर वह अपने घर वालों के पास हर रोज़ एक या दो मरतबा आता है और उनके लिए सर बुलन्दी और भलाई की दुआ करता है। अगर उसकी औलाद में से कोई कुरआन हिफ्ज़ करता है तो वह उस से खुश होता है। और अगर कोई बुरा हो जाता है तो वह उस पर अफ़सोस करता है और रोता है और यह तरज़े अमल सूर फूंके जाने तक होगा। हाफिज़ अबू मूसा मदनी कहते हैं कि यह ख़बर हसन है, इस को अहमद बिन हंबल और अबू ख़सीमा ने रिवायत किया है।

(११) बैहक़ी ने किताब अज़ाबे क़ब्र में इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ऐ इब्ने उमर बताओ तुम्हारा इस वक़्त क्या हाल होगा कि जब तुम्हारे लिए तीन हाथ और एक बालिश्त लम्बा और एक हाथ एक बालिश्त चौड़ा गढ़ा खोदा जाएगा, फिर तुम्हारे पास मुंकर नकीर सियाह शक्ल वाले अपने बालों को घसीटते हुए आएंगे उनकी आवाज़ें कड़कदार बिजली की मानिन्द होंगी और निगाहें ख़ीरह कर देने वाली बिजली की तरह

वह ज़मीन को अपने दांतों से खोदेंगे और तुझको बिठाएंगे और डरायेंगे? तो इब्ने उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या में उस वक़्त भी इसी हालत पर होऊंगा? आपने फरमाया, हां। तो उन्होंने अर्ज़ की कि तब तो मैं बहुक्मे खुदा उनको काफी हो जाऊंगा। (फिर असल किताब में दो हदीसें मुंकर नकीर के मुतअल्लिक़ मुकर्रर हैं।)

(१२) इब्ने अबी हातिम और बैहक़ी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि जब मोमिन की मौत का वक़्त होता है तो उसके पास फरिश्ते आते हैं और उसको सलाम करके जन्नत की खुशख़बरी देते हैं और जब वह मर जाता है तो उसके जनाज़े के साथ चलते हैं और लोगों के हमराह उसकी नमाज़े जनाज़ा अदा करते हैं और जब उसे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाता है तो उससे पूछा जाता है कि तेरा रब कौन है? वह कहता है। अल्लाह फिर पूछते हैं कि रसूल कौन है? वह कहता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फिर वह पूछते हैं कि तेरी गवाही क्या है? वह कहता है कि अश्हदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लल्लाह। और यही मक़्सद है इस आयते करीमा का कि युसब्बितुलल्लाहुल्लज़ीना आमनू बिल-क़ौलिस्साबिते। फिर हद्दे निगाह उसकी क़ब्र में वुस्अत कर दी जाती है। लेकिन काफिर को किसी सवाल का जवाब नहीं आएगा। यही मतलब है अल्लाह तआला के इस फरमान का कि: व युज़िल्लुल्लाहुज़्ज़ालेमीन।

(१३) जुवैबिर ने अपनी तफ़सीर में ज़हहाक से रिवायत की और वह इब्ने अब्बास से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह हम एक अंसारी के जनाज़ा में शरीक हुए, जब क़ब्रिस्तान पहुंचे तो उस वक़्त तक क़ब्र न खोदी गई थी। तो आप एक क़ब्र के पास तशरीफ़ फरमा हो गये और लोग भी बैठ गये। ऐसा मालूम होता था कि गोया उनके सरों पर परिन्द बैठे हैं। फिर आप ज़मीन की तरफ देखने लगे और छोटी लकड़ी से कुरेदने लगे फिर नज़रे मुबारक आसमान की तरफ उठा कर तीन मरतबा फरमाया कि अउफज़ुबिल्लाहि मिन अज़ाबिल-क़बरे। फिर फरमाया कि जब मोमिन की वफात का वक़्त क़रीब आता है तो उसके पास मलकुल-मौत आते हैं और सर की जानिब बैठ जाते हैं और दूसरे फरिश्ते जन्नती तोहफ़े तहाइफ़ लेकर, नीज़ जन्नती खुशबुएं लेकर हाज़िर होते हैं और बहिश्ती लिबास लाते हैं, फिर सफ़ बस्ता हद्दे निगाह तक बैठ जाते हैं। फिर मलकुल-मौत बशारत की इब्तिदा करते हैं और उनके बाद तमाम

फरिश्ते बशारत सुनाते हैं तो उसकी रूह इस तरह बह जाती है जिस तरह की कतरह मश्कीजह से, अब जूंही मलकुल-मौत उसकी रूह निकालते है वह फरिश्ते अलल-फौर उसकी रूह लेकर उन जन्नती तोहफों के दर्मियान रख लेते हैं। उसकी खुशबू इतनी महकती है कि जमीन व आसमान की फज़ाएं महक जाती हैं, तो फरिश्ते कहते हैं कि यह खुशबू कैसी है? तो ज़मीन के फरिश्ते कहते हैं कि यह फलां मोमिन के नफ़्स की खुशबू है जिसका आज इंतिक़ाल हुआ है तो फरिश्ते उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करते हैं। फरिश्ते जब उसको आसमान के दरवाज़ों पर ले जाते हैं दरवाज़े खुलते हैं हर दरवाज़ा मुश्ताक़ होता है कि यह उस से दाख़िल हो, हत्ता कि यह अपने आमाल के दरवाज़ से दाख़िल होता है तो वह दरवाज़ा रोता है, वह जिस दरवाज़ा से गुज़रता है फरिश्ते कहते हैं कि क्या ही खुशबूदार है यह नफ़्स, जिसने अपने रब के फरामीन को क़बूल किया। हत्ता कि वह सिद्रतुल-मुन्तहा तक पहुंचते हैं तो मलकुल-मौत और वह फरिश्ते जो उसकी रूह क़ब्ज़ करते वक़्त मौजूद थे, कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ने फलां बिन फलां की रूह क़ब्ज़ की है (हालांकि वह अच्छी तरह जानने वाला है।) तो अल्लाह तआला फरमाता है कि उसको ज़मीन की तरफ वापस ले जाओ क्योंकि मैंने उनको इसी से पैदा किया और उसी में मिलाऊंगा और दूसरी मरतबा उसी से उठाऊंगा। वह मुर्दा लोगों की जूतियों की आवाज़ और हाथ झाड़ने की आवाज़ तक सुनता है और जब लोग उसको दफना कर वापस चलते हैं तो उसके पास तीन फरिश्ते आ जाते हैं, दो रहमत के फरिश्ते और एक अज़ाब का फरिश्ता। लेकिन उसके नेक आमाल उसको घेर लेते हैं। नमाज़ पैरों के पास होती है और रोज़ा सीना के पास होता है ज़कात दाईं तरफ और सदक़ा बाईं तरफ़, नेकी और खुश ख़ल्क़ी उसके सीने में, तो जिस तरफ से भी अज़ाब का फरिश्ता आता है उसी तरफ का अमल उसे भगा देता है। तब वह एक इतना बड़ा हथौड़ा लेकर खड़ा होता है कि अगर तमाम अहले मिना मिल कर भी उसे उठाने की कोशिश करें तो न उठा सकें। फिर वह कहता है कि ऐ नेक बन्दे अगर तेरा नमाज़, रोज़ा, ज़कात, सदक़ा तुझे न घेर लेता तो मैं यह हथौड़ा तुझ को मारता और उस मार से तेरी क़बर आग से भर जाती, ऐ रहमत के फरिश्तो! यह तुम्हारे लिए है और तुम इसको ले जा सकते हो। फिर अज़ाब का फरिश्ता वापस चला जाता है और वह फरिश्ते आपस में एक दूसरे से कहते हैं कि अल्लाह तआला के वली के साथ नर्मी से पेश आओ क्योंकि वह सख़्त हौलनाकी से गुज़र

कर आ रहा है। फिर पूछते हैं। तेरा रब कौन है? वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है। फिर कहते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह कहता है कि इस्लाम फिर सवाल होता है कि तेरा नबी कौन है? वह कहता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फिर पूछते कि तेरा इल्म क्या है? वह कहता है कि मैं अल्लाह तआला की किताब पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की यह सवालात कद्रे दुरुश्त लेहजे में होते हैं और यही मोमिन के लिए क़बर की आज़माइश है। फिर आसमान से निदा दी जाती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा उसके लिए जन्नत का फ़र्श बिछाओ और जन्नत के कपड़े पहनाओ, और जन्नती खुशबुएं लगाओ और हद्दे निगाह तक उसकी क़ब्र में वुस्अत करो, और जन्नत का एक दरवाज़ा क़दमों की तरफ और दूसरा सर की तरफ खोल दो। और फिर फरिश्ते कहते हैं कि अब इस तरह सो जा जिस तरह कि दुल्हन अपने हुजल-ए-अरूसी में सोती है तुझे अज़ाबे क़ब्र का ज़ाइक़ा तक न मिलेगा। वह कहेगा कि ऐ अल्लाह! क़्यामत क़ायम फरमा दे ताकि मैं अपने अहलो अयाल में चला जाऊं और तेरी अता कर्दह नेमतों को हासिल कर लूं। तो वह क़्यामत ही को सफेद चेहरे में उठाया जाएगा।

(१४) बैहक़ी ने ज़ुहद में और इब्ने असाकिर ने सनदे मुन्क़तअ से इब्ने उमर से रिवायत की कि उन्होंने एक शख़्स से कहा कि ऐ भाई क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मौत तुम्हारे सामने भी कब आ जाए, ख़्वाह सुबह को या शाम को, रात को या दिन को, फिर क़ब्र और वह निकलने की जगह है, और मुंकर नकीर और फिर क़्यमात जिस में बातिल परस्तों को जमा किया जाएगा।

(१५) दैलमी ने फिर्दौस में इब्ने उमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अपनी ज़बानों को इन कलिमात का आदी बनाओ : ला इलाहा इल्लल्लाहु, मुहम्मदर्रसूलुल्लाह, अल्लाहु रब्बुना, अल-इस्लामु दीनना, मुहम्मदु नबीयेना। क्योंकि यह सुवालात क़ब्र में किए जाएंगे।

(१६) अहमद, तबरानी और इब्ने अदी ने बसनदे सही रिवायत की और इब्ने अबी अद्दुनिया और आजरी ने शरीअत में इब्ने उमर से रिवायत की कि इब्ने उमर ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या क़्यामत के दिन हमारी अक़्लें वापस कर दी जाएंगी तो आपने फरमाया कि हां, बिल्कुल इसी तरह जिस तरह आजकल हैं।

(१७) अबू दाऊद, हाकिम और बैहक़ी ने उस्मान से रिवायत की

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक जनाज़े के हम्राह क़ब्रिस्तान पहुंचे तो एक मुर्दा दफन किया जा रहा था। आपने फरमाया कि अपने भाई के लिए दुआए मग़्फ़िरत व सबात करो क्योंकि इस से अब सवाल किया जाएगा।

(१८) मुस्लिम ने अमरु बिन आस से रिवायत की कि उन्होंने वसीयत की कि जब तुम मुझ को दफन करो तो मुझ पर मिट्टी डाल कर इतनी देर ठहरना कि जितनी देर में ऊंट ज़बह करके उसका गोश्त तक़्सीम कर दिया जाता है, ताकि मुझे उन्स हासिल हो और मैं रब के फरिश्तों को जवाब दे सकूं।

(१६) बज़्ज़ार ने मआज़ बिन जबल से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस घर में कुरआन शरीफ़ पढ़ा जाता है उस पर नूर का एक ख़ेमा होता है उस ख़ेमे के नूर को देख कर फरिश्ते राहें मालूम करते हैं जैसे समुन्द्र की तारीकियों में समुन्द्री मुसाफिर और चटियल मैदान के अन्धेरों में खुश्की के मुसाफिर सितारों को देख कर रास्ता पाते हैं। लेकिन जब कुरआन पढ़ने वाला मर जाता है तो वह नूर ग़ायब हो जाता है और फरिश्ते उसको नहीं देखते तब हर आसमान के फरिश्ते उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करते हैं और गह सिलसिला क़यामत तक जारी रहेगा। और जब भी कोई मुसलमान कुरआन पढ़ लेता है और फिर किसी रात में खड़े हो कर नमाज़ में उसकी तिलावत करता है, तो वह रात आने वाली रात को वसीयत कर देती है कि उसको वक़्ते मुक़र्ररह पर जगा देना और उसके लिए आसान हो जाना। जब वह मर जाता है तो लोग तो उसके कफन की तैयारी में होते हैं लेकिन कुरआन अच्छी शक्ल में उसके सर के पास आकर ठहर जाता है। फिर जब उसे कफन में लपेट दिया जाता है तो कुरआन सीने के पास आ जाता है फिर जब उसे क़ब्र में रख कर उस पर मिट्टी बराबर कर दी जाती है तो उसके पास मुंकर नकीर आते हैं और उसको बिठाते हैं मगर कुरआन मुर्दे और उनके दर्मियान हाइल हो जाता है, वह दोनों कहते हैं कि एक तरफ हट जा। कुरआन कहता है कि काबा के रब की क़सम ऐसा हरगिज़ न होगा कि यह मेरा दोस्त और ख़लील है मैं उसे बे मदद न छोड़ूंगा हत्ता कि वह जन्नत में दाख़िल हो। फिर कुरआन साहिबे कुरआन की तरफ देखता है और कहता है कि मैं वही कुरआन हूं जिसको तू ब-आवाज़े बुलन्द पढ़ता था और कभी आहिस्ता पढ़ता था और मुझे से मुहब्बत करता था तो मैं अब तुझ से मुहब्बत करता हूं, और जिस से मैं मुहब्बत करता हूं

अल्लाह भी उस से मुहब्बत करता है। मुंकर नकीर के सवाल के बाद तुझ पर न कोई ग़म है और न ख़ौफ़। मुंकर नकीर सवाल करने के बाद वापस चले जाते हैं। अब वह मुर्दा होता है और कुरआन कुरआन कहता है कि मैं तेरे लिए नर्म व आराम दह बिस्तर बिछाऊंगा और हसीन व जमील चादर दूंगा और यह इसलिए है कि तू रात भर मेरे लिए जागता और दिन भर मेरे लिए थकता फिर कुरआन पल झपकने में आसमान की तरफ रवाना होता और खुदा से यह तमाम चीज़ें मांगता है और अल्लाह तआला उसको यह सब कुछ अता फरमाता है। चुनांचे छठे आसमान के एक हज़ार मुक़र्रब फरिश्ते नाज़िल होते हैं और कुरआन आकर उस शख़्स से दरयाफ़्त करता है कि क्या तू इस अरसा में वहशतज़दह तो न हुआ। फिर फरिश्ते कहते हैं कि उठ जाओ ताकि हम तुम्हारे लिए बिस्तर कर दें और उसकी क़बर को चार सौ साल की मसाफत तक फराख़ कर दिया जाता है। फिर उसके लिए एक ऐसा गदा बिछा दिया जाता है जिस का अस्तर सब्ज़ रेशम का है और उसमें मुश्क भरी हुई है और सर और पैरों के पास सुन्दुस और इस्तबरक़ के तकिए रख दिए जाते हैं और जन्नत के नूर के दो चिराग़ उसके सर और पैरों की तरफ जलाए जाते हैं जो क़्यामत तक रौशन रहेंगे फिर उसे दांए पहलू पर क़िब्ला रू फरिश्ते लिटा देते हैं। फिर जन्नत की यासमीन के फूल उस पर चढ़ा दिए जाते हैं, अब वह और कुरआन क़्यामत तक साथ रहेंगे। कुरआन दिन रात उसकी ख़बर उसके घर वालों को देता है और कुरआन उसके साथ इस तरह रहता है जिस तरह मेहरबान वालिद अपने बच्चे से, अब अगर उसकी औलाद में से कोई कुरआन पढ़ लेता है तो कुरआन उसको बशरत देता है और अगर उसकी औलाद में से बुरा होता है तो उसके लिए इस्लाह की दुआ करता है। यह हदीस ग़रीब है और सनद में इन्क़ेताअ़ है।

(२०) इब्ने मुबारक ने जुहद में और इब्ने अबी शैबा ने और आजरी ने शरीअत में, और बैहक़ी ने अबू दर्दा से रिवायत की कि एक शख़्स ने उन से गुज़ारिश की कि मुझे एक ऐसा इल्म सिखाइए कि जिस से आख़िरत में अल्लाह तआला मुझे फाइदा अता फरमाए। आपने फरमाया कि ज़रा यह तसव्वुर करो कि जब तुम्हारे लिए ज़मीन चार हाथ लम्बी और दो हाथ चौड़ी जगह होगी तो तेरे वह घर वाले और भाई यह करेंगे जो तेरी जुदाई को नापसन्द करते थे वह तुझे उसमें दाख़िल करके ऊपर से ईंटें डाल देंगे और फिर बहुत सी मिट्टी डाल देंगे। फिर तेरे पास नीली आंखों और घुंघिरियाले बालों वाले दो फरिश्ते आएंगे उनका

नाम मुंकर नकीर है (फिर सवाल व जवाब का ज़िक्र है) तो अगर तूने ठीक जवाब दिया तो बखुदा तू नजात पाएगा और यह महज़ अल्लाह की तरफ से अता करदह साबित क़दमी से हो सकता है और अगर तूने ला अदरी कहा तो तू नाकाम हुआ।

(२१) अहमद, बज़्ज़ार, इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने अबी आसिम ने अपनी सनद से और बैहक़ी ने बसनद सही अबू सईद खुदरी से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह एक जनाज़ा में शरीक हुआ, तो आपने फरमाया कि यह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़माइश में डाली जाएगी। जब इंसान को दफन करने वाले उसको दफन करके रुख़्सत हो जाते हैं, तो मलकुल-मौत अपने हाथ में एक हथौड़ा लेकर आते हैं और उसको बिठाते हैं और पूछते हैं कि तुम इस शख़्स (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में क्या कहते हो? तो अगर वह मोमिन होगा तो कहेगा कि अश्हदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू। फरिश्ता यह सुन कर कहेगा कि तूने यह सच कहा। फिर उसके सामने एक दरवाज़ा जहन्नम का खोला जाएगा और उससे कहा जाएगा कि अगर तू ईमान न लाता तो तेरा ठिकाना यह था, लेकिन अब उसके बजाए तेरा ठिकाना जन्नत में कर दिया गया है। वह जन्नत का दरवाज़ा देख कर उसकी तरफ जाएगा ताकि दाख़िल हो जाए तो उससे कहा जाएगा कि अभी यहीं ठेहरो फिर उसकी क़ब्र में वुस्अत कर दी जाएगी। लेकिन अगर वह शख़्स काफिर या मुनाफिक़ होगा तो उससे दरयाफ़्त किया जाएगा, कि तू इस शख़्स के बारे में क्या कहता है? वह जवाब देगा कि मैं तो कुछ नहीं जानता लोग जो कहते थे वह मैं भी कहता था। फिर उस से कहा जाएगा कि तूने कुछ भी न जाना और तुझे हिदायत न मिली। फिर उसके लिए जन्नत की तरफ एक दरवाज़ा खोल दिया जाएगा और कहा जाएगा और अगर तू ईमान लाता तो तेरा ठिकाना यह था लेकिन अब चूंकि तूने कु- किया है। इसलिए बजाए जन्नत के तेरा ठिकाना जहन्नम है। फिर एक दरवाज़ा जहन्नम की तरफ खोल दिया जाएगा और फरिश्ता एक गुरज़ इस ज़ोर से उसको मारेगा कि इन्स व जिन्न के अलावा हर चीज़ उसकी आवाज़ सुनेगी। जब सरकारे दो आलम ने यह फरमाया तो किसी ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फरिश्ता वह गुरज़ लेकर खड़ा होगा तो कौन होगा कि जिस पर हैबत तारी न हो? आपने फरमाया कि जो लोग ईमान लाए। अल्लाह उनको साबित क़दम रखेगा, क़ौले साबित की वजह से (यानी कलिम-ए-तैयबा की वजह से)।

(२२) तबरानी और अबू नईम ने दलाइले नुबुव्वह में अबू राफे से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का गुज़र एक क़ब्र पर हुआ तो आपने फरमाया! उफ़ उफ़ उफ़ मैंने अर्ज़ की कि मेरे मां-बाप आप पर कुरबान या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आपके हम्राह मेरे अलावा कोई नहीं तो आप किस को उफ़ उफ कह रहे हैं? आपने फरमाया कि मैं उस क़बर वाले से कह रहा था क्योंकि जब उस से मेरे बारे में सवाल किया गया तो शक करने लगा। इसको बैहक़ी ने भी रिवायत किया, फिर उसके बाद मुसन्निफ़ ने चन्द अहादीसे मुत्तहिदुल-मानी मुंकर नकीर के सवालात की बयान कीं, जो यहां मुकर्रर होने की वजह से हज़फ़ की जाती हैं। क्योंकि इब्लाग़ के लिए वही काफी हैं।

(२३) तबरानी ने औसत में और इब्ने मुन्दा ने अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की (मरफ़ूअन) कि इंसान पर उसकी क़ब्र में अज़ाब आता है। जब सर की जानिब से आता है तो कुरआन दूर कर देता है और हाथों की जानिब से सदक़ा और पैरों की जानिब से उसका मसाजिद की तरफ चल कर आना और सब्र करना अलग कोने में होता है। वह कहता है कि मैं इसलिए चुपका खड़ा हूं कि अगर कुछ कमी देखूं तो पूरी कर दूं।

(२४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि जब मैयत को उसकी क़बर में रख दिया जाता है तो उसके आमाले सालेहा उसको घेर लेते हैं अब अगर गुनाह उसके सर की तरफ़ से आता है तो क़िराते कुरआन उसे बचाती है और अगर पैरों की तरफ से आता है तो उसका क़याम बचाता है अगर हाथ की तरफ आता है तो हाथ कहता है कि बखुदा यह हमें सदक़ा के लिए खोलता था और दुआ के लिए इसलिए तुझ को कोई राह नहीं। अगर मुंह की तरफ़ से आता है तो उसका ज़िक्र करना और रोज़ा रखना आगे आता है। इसी तरह नमाज़ और सब्र एक तरफ खड़ा रहता है कि अगर कोई कमी रह जाए तो पूरी कर दे। ग़र्ज़ कि उसके आमाले सालेहा उस से अज़ाब को इस तरह दफ़ा करेंगे जिस तरह कि कोई शख़्स अपने अहल व अयाल से मुसीबत दूर करता है। उसके बाद उस से कहा जाएगा कि खुदा तुझ को बरकत दे सो जा क्योंकि तेरे साथी बहुत ही अच्छे हैं।

(२५) इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने मुन्दह ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि मौत के वक़्त जब इंसान की रूह निकलती है तो फरिश्ते कहते हैं कि पाक रूह पाक जिस्म की तरफ से आई। फिर जब उसको घर

से क़ब्र की तरफ ले जाते हैं तो वह जल्दी जाने को पसन्द करता हैं जब उसे क़ब्र में रख दिया जाता है तो आने वाला आता है और उसका सर पकड़ना चाहता है लेकिन उसका सज्दा करना दर्मियान में आ जाता है, और पेट पकड़ने के लिए आता है तो रोज़ा हाइल हो जाता है, हाथ पकड़ने आता है तो सदक़ा हाइल आ जाता है, पैर पकड़ने आता है तो उसका नमाज़ की जानिब चलना और क़याम करना दर्मियान में आ जाता है, फिर उसके बाद मोमिन कभी नहीं घबराएगा। फिर जब उसे अपना मक़ाम और वह चीज़ें नज़र आती हैं जो उसके लिए तैयार की गई हैं तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझ को मेरे मक़ाम पर जल्द पहुंचा दे! तो उस से कहा जाता है कि तेरे कुछ भाई और बहनें हैं जो अभी तक तेरे साथ शमिल नहीं हुए। इसलिए तू ठण्डी आंख सो जा। और जब काफिर की रूह निकलती है तो फरिश्ते कहते हैं कि यह ख़बीस रूह ख़बीस जिस्म से निकल कर आई है। फिर जब उसे उसके घर से निकाला जाता है तो जिस क़दर भी क़बर तक पहुंचने में ताख़ीर होती है पसन्द करता है और चिल्ला कर कहता है कि मुझ को कहां ले चले हो। फिर जब क़ब्र में वह देखता है जो उसके लिए तैयार किया गया है तो कहता है कि ऐ मेरे रब! मुझे वापस कर दे ताकि मैं नेक आमाल करूं। तो उससे कहा जाता है कि जितना दुनिया को आबाद करना था तो आबाद कर चुका। फिर उसकी क़ब्र उस पर इस क़दर तंग कर दी जाती है कि उसकी पिस्लियां टूट जाती हैं। उस का आलम उस शख़्स का सा होता है कि जिस को सांप डस ले कि वह सोते हुए भी घबराता है और ज़हरीले कीड़े मकोड़े उसकी तरफ बढ़ते और दौड़ते हैं।

(२६) बज़्ज़ार और इब्ने जरीर ने तहज़ीबुल-आसार में अबू हुरैरह से मरफ़ूअन रिवायत की कि मोमिन की मौत का वक़्त जब क़रीब होता है और वह अजीब व ग़रीब चीज़ों को देखता है तो वह चाहता है कि उसकी जान जल्दी निकल जाए क्योंकि ख़ुदा उसकी मुलाक़ात को पसन्द करता है और मोमिन की रूह जब आसमान पर जाती है तो दूसरी अरवाह उससे सवाल करती है कि हमारी जान पहचान के लोग किस हाल में हैं। जब वह कहता है कि फलां को मैं दुनिया में छोड़ कर आया हूं तो यह बात उनको अच्छी मालूम होती है। और जब वह कहता है कि फलां शख़्स मर गया तो वह हैरान हो कर कहते हैं कि उसकी रूह तो हमारे पास नहीं आई, क्योंकि उसकी रूह को जहन्नम की तरफ़ पहुंचा दिया जाता है। (फिर साहिबे किताब ने क़बर के सवाल

व जवाब का तज़्किरा किया)

(२७) इब्ने माजा ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफूअन रिवायत की कि उन्होंने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मोमिन मुर्दा अपनी क़बर में निहायत ही मुत्मइन और पुर सुकून बैठ जाता है। फिर उस से दीन और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में सवाल किया जाता है, वह सही जवाब देता है। फिर उस से दरयाफ़्त किया जाता है कि तुझ को खुदा का पता कैसे चला? क्या तूने खुदा को देखा है? वह कहता है कि खुदा को कौन देख सकता है। फिर उसको जन्नत व जहन्नम दिखाया जाता है इसी क़िस्म की अहादीस मुख़्तलिफ़ सनदों के साथ हज़रत अस्मा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से भी मरवी हैं।

(२८) अहमद व बैहक़ी ने बसनद सही हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की वह फरमाती हैं कि एक यहूदी औरत मेरे दरवाज़े पर आई और कहने लगी कि मुझे खाना खिलाओ, खुदा तुम्हें फ़ित्न-ए-दज्जाल, और फित्न-ए-क़बर से महफूज़ रखे। मैंने उसको रोक रखा। जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो मैंने उसको पेश किया आपने दरयाफ़्त किया कि यह क्या कहती है? मैंने उसकी बात दुहरा दी। तो आपने भी फित्न-ए-दज्जाल और अज़ाबे क़बर से हाथ उठा कर दुआ मांगी और फरमाया कि हर नबी ने अपनी उम्मत को दज्जाल से डराया, और मैं भी तुमको डराता हूं और ऐसे अल्फ़ाज़ से कि किसी नबी ने ऐसे अल्फ़ाज़ से नहीं डराया। वह काना है, उसकी दोनों आंखों के दर्मियान लफ़्ज़ काफिर लिखा होगा जिस को हर मोमिन पढ़ सकेगा। फिर आपने क़बर की आज़माइश का बयान फरमाया।

(२९) बज़्ज़ार ने अबू हुरैरा से और उन्होंने हज़रत आयशा से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैंने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह उम्मत क़ब्र में आज़माई जाएगी तो मेरा क्या होगा मैं तो एक कमज़ोर औरत हूं? तो आपने यह आयत तिलावत की कि अल्लाह तआला ईमान वालों को साबित क़ौल के ज़रीए दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी में सबात अता फरमाएगा।

(३०) अहमद ने ज़ुह्द में अबू नईम ने हुलिया में ताऊस से रिवायत की कि मुर्दे अपनी क़ब्रों के अन्दर सात दिन तक आज़माइश में मुब्तला रहते हैं। इसलिए उलमाए किराम अच्छा समझते थे कि मुर्दे की तरफ से सात यौम तक फुक़रा को खाना खिलाया जाए।

(३१) अबू नईम ने अनस बिन मालिक से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने एक सहाबी की क़ब्र पर खड़े हुए और फरमाया कि इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। ऐ अल्लाह! यह तेरे पास आया है इसे अच्छी तरह रखियो और क़ब्र को उसके दोनों पहलुओं से हटा देना और उसकी रूह के लिए आसमान के दरवाज़े खोल देना और उसको अच्छी तरह क़बूल फरमाना और सवाल के वक़्त उसकी कुव्वते गुफ़्तार को सबात अता फरमाना।

(३२) हकीम ने नवादिरुल-उसूल में सुफियान सूरी से रिवायत की कि जब मुर्दे से यह सवाल होता कि मन रब्बुका तो शैतान एक मख़्सूस शक्ल में आकर अपनी तरफ इशारा करता है कि कह दे मैं तेरा रब हूं। हकीम तिर्मिज़ी ने कहा कि शैतान के क़बर में आने का सुबूत इस से भी मिलता है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने दीगर अहादीस में फरमाया कि अल्लाहुम्मा अजरिह मिनश्शैताने इब्ने शाहीन ने अस्सुन्नह में अपनी सनद से रिवायत की कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अपने बच्चों को हुज्जत सिखाओ। तो इस हुक्म का इतना चर्चा हुआ कि अंसार में से जब किसी पर मौत आती तो वह उसे मुंकर नकीर के जवाबात बताते थे और जब बच्चा क़दरे समझदार होता था तो उसको भी सिखाते थे।

(३३) सलफ़ी ने तुयूरियात में सहल बिन अम्मार से रिवायत की कि मैंने यज़ीद बिन हारून को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा। मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे साथ तुम्हारे रब ने क्या किया? तो उन्होंने जवाब दिया कि मेरे पास दो सख़्त दिल मोटे फरिश्ते आए और उन्होंने मुझ से सवालात करना शुरू किए। तो मैंने अपनी सफेद दाढ़ी पकड़ कर कहा कि मुझ जैसे आदमी से तुम यह सवालात करते हो। मैंने अस्सी साल तक लोगों को तुम्हारे जवाबात सिखाए हैं फिर वह चले गये और जाते हुए कहने लगे कि तुमने जरीर बिन उस्मान से कुछ लिखना सीखा? मैंने कहा हां वह कहने लगे कि वह उस्मान से अदावत रखता था तो ख़ुदा ने उस से अदावत रखी फिर फरिश्तों ने कहा कि अब तुम दुल्हन की तरह सो जाओ। तुम पर आज के बाद कोई ख़ौफ नहीं, इसको लालकाई ने भी रिवायत किया।

(३४) इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने जरीर ने अपनी तहज़ीब में यज़ीद बिन तरीफ़ बिजली से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि मेरे भाई का जब इंतिक़ाल हो गया तो मैंने अपने कान को उनकी क़बर से लगाया तो मैंने मुंकर नकीर के सवालात की आवाज़ सुनी और अपने भाई

के जवाबात भी सुने।

(३५) तारीख़ इब्ने नज्जार में अबुल-क़ासिम बिन हैबतुल्लाह बिन सलाम मुफस्सिर से मरवी है कि हमारे एक उस्ताद थे जिनके एक साथी का इंतिक़ाल हो गया तो शैख़ ने उनको ख़्वाब में देखा और पूछा कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया? कहा कि अल्लाह तआला ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी। शैख़ ने पूछा कि मुंकर नकीर के साथ कैसी गुज़री? तो उन्होंने कहा कि ऐ शैख़ जब उन्होंने मुझ को बिठाया और सवालात किए तो अल्लाह तआला ने मुझे इल्हाम फरमाया कि मैं उन से कह दूं कि अबू बकर व उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) के वसील-ए-जलीला से तुम मुझ को छोड़ दो, तो उन में से एक ने दूसरे से कहा कि : इस ने बहुत ही बुजुर्ग शख़्सियतों का वसीला पेश किया है इसलिए इसको छोड़ दो। चुनांचे उन्होंने मुझ को छोड़ दिया और चले गये।

(३६) लालकाई ने अस्सुन्नह में अपनी सनद से रिवायत की, वह कहते हैं कि मेरे वालिद नमाज़े जनाज़ा पढ़ने पर बहुत ही हरीस थे वह हर एक की नमाज़ पढ़ते थे ख़्वाह वह उसको जानें या न जानें तो उन्होंने बताया कि एक रोज़ मैंने एक शख़्स की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत की। जब वह उसको दफ़्न करके चले गये तो मैंने देखा कि उसकी क़ब्र में दो शख़्स नाज़िल हुए उन में से एक तो वापस निकल आया और दूसरा अन्दर ही रह गया। मैंने लोगों से कहा, क्या तुम ज़िन्दा को भी मुर्दे के साथ दफन करते हो? उन्होंने कहा कि क़बर में कोई ज़िन्दा तो है नहीं। मैंने अपने दिल में सोचा कि शायद मुझे शुबह हो गया हो फिर जब में वापस हुआ तो मेरे दिल ने कहा कि यक़ीनन मैंने दो आदमियों को जाते हुए और एक को वापस निकलते हुए देखा है और मैं ज़रूर इस राज़ को मालूम करके रहूंगा। चुनांचे मैं क़ब्र पर वापस आया और इस मरतबा सूरह यासीन और तबारकल्लज़ी पढ़ कर दुआ की और रोया कि ऐ अल्लाह! जो मैंने देखा है उसको मेरे लिए खोल दे क्योंकि मुझे अपनी अक़्ल और दीन का ख़तरा लाहिक़ हो गया है। अभी मैं यह कहने ही पाया था कि एक शख़्स क़ब्र से निकला और पीठ फेर कर जाने लगा। मैंने कहा कि तुझ को तेरे माबूद की क़सम ठहर जा, और मुझे माजरा बता। तीन मरतबा के कहने पर वह मेरी तरफ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा कि तुम नुसर सुना रहे हो? मैंने कहा हां। उस ने कहा कि तुम मुझको नहीं जानते? मैंने कहा कि नहीं। उसने कहा कि हम रहमत के फरिश्ते हैं अहले सुन्नत पर मुक़र्रर किए गये हैं कि उनकी क़ब्रों में जा कर उनको उनकी हुज्जत

की तल्क़ीन करें। यह कह कर वह ग़ायब हो गया।

शैख़ अब्दुल-ग़फ़्फ़ार क़ौसी ने किताबुत्तौहीद में रिवायत की कि मैं शैख़ नासिरुद्दीन और शैख़ बहाउद्दीन अख़्मीमी के घर के नज़्दीक था तो मैंने उनकी फरोह (पोस्तीन) को अपने कांधे पर उठा लिया तो उन्होंने मुझे बताया कि अबू यज़ीद का ख़ादिम उनकी फरोह (पोस्तीन) को अपने कांधे पर रखता था और वह बहुत नेक आदमी था। बात से बात निकलती है, चुनांचे होते-होते मुंकर नकीर का तज़्किरा आ गया तो उन्होंने कहा कि अगर मुझ से मुंकर नकीर ने सवाल किया तो मैं कह दूंगा कि मैं अबू यज़ीद का ग़ाशिया बरदार हूं। तो हमने दरयाफ़्त किया कि हमें कैसे मालूम होगा कि तुमने क्या जवाब दिया? तो उन्होंने कहा कि तुम मेरी क़ब्र पर बैठ जाना तो सुन लोगे। चुनांचे जब उनका वेसाल हो गया तो हम उनकी क़बर के पास बैठ गये तो हम ने सुना कि वह कह रहे हैं कि तुम मुझ से क्यों सवाल करते हो, मैं अबू यज़ीद के ग़ाशिया बरदारों में हूं। चुनांचे वह यह जवाब सुन कर उन्हें छोड़ कर चले गये।

चन्द फ़वाइद का ज़िक्र

(१) क़ुरतबी कहते हैं कि बाज़ रिवायात में दो फरिश्तों के सवाल करने का ज़िक्र है जबकि बाज़ दूसरी रिवायात में सिर्फ़ एक ही सवाल का ज़िक्र है तो उन में तत्बीक़ की सूरत यह है कि बाज़ लोगों के पास दो फरिश्ते एक साथ सवाल करने आएंगे ताकि उस पर ज़ाइद घबराहट तारी हो। और यह सवाल तमाम लोगों के जाने के बाद होगा ताकि हौलनाकी में इज़ाफ़ा हो, और किसी के पास दफन करने वालों के जाने से क़ब्ल ही सवाल होगा ताकि तख़्फ़ीफ़ हो जाए और किसी के पास एक ही फरिश्ता आता है ताकि उस से ज़ाइद सवाल न हों। और यह भी मुम्किन है कि आने वाले दो आने वाले हों और सवाल एक ही करे और यही तावील असह और सवाब है, क्योंकि अक्सर अहादीस में दो ही फ़रिश्तों का ज़िक्र है।

(२) क़ुरतबी ने यह भी ज़िक्र किया कि अहादीस में मुख़्तलिफ़ सवालात का ज़िक्र है। किसी से तमाम एतक़ादी मसाइल का ज़िक्र होता है और किसी से सिर्फ़ चन्द बातें दरयाफ़्त होती हैं। और यह भी मुम्किन है कि बाज़ रावियों ने तमाम सवालात मुकम्मल ज़िक्र किए हों, जब कि दूसरों ने चन्द एक के ज़िक्र ही पर इक्तिफ़ा कर लिया हो। और यही असह है क्योंकि उस पर अक्सर अहादीस का इत्तिफ़ाक़ है, लेकिन अबू अदाऊद और इब्ने मरदवीया की रिवायत में यह लफ़्ज़ मौजूद

हैं कि फला यस्आलु अनिश्शैये ग़ैरहा इन से मालूम होता है कि एतक़ादात के अलावा तक्लीफ़ात का सवाल न होगा और बैहक़ी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि अल्लाह तआला का फरमान कि व युसब्बितुल्लाहु अल्लज़ीना आमनू अलख़ इस से मुराद शहादत का सवाल किया जाना है। इकरमा अलैहिर्रहमा से दरयाफ़्त किया गया कि शहादत से मुराद क्या है तो उन्होंने फरमाया कि तौहीद व रिसालते मुहम्मद पर ईमान लाना मुराद है।

(३) कुरतबी ने कहा कि बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि यह सवालात तीन-तीन मरतबा होंगे जब कि दूसरी रिवायात तादाद से ख़ामोश हैं तो उन में भी तादाद मल्हूज़ रहेगी और या यह कि अश्ख़ास की निस्बत से तादाद सवाल में इख़्तिलाफ़ होगा! क्योंकि ताऊस अलैहिर्रहमा से मरवी है कि मुर्दों को सात रोज़ तक आज़माइश में डाला जाएगा।

(४) क़ाज़ी कहते हैं, जो लोग किसी वजह से क़ब्र में दफन न किए जा सके, उन से भी सवाल होगा और अज़ाब भी होगा। लेकिन इंसान व जिन्न इस मंज़र को नहीं देख सकते, जैसे कि इंसान फरिश्तों और जिन्नों को नहीं देखते।

बाज़ उलमा ने कहा कि सूली ज़दह को ज़िन्दा किया जाता है लेकिन हम उसको नहीं पहचानते जिस तरह कि बेहोश ज़िन्दा होता है लेकिन हम को पता नहीं चलता और उस पर फ़िज़ा ऐसी ही तंग होती है जिस तरह कि मुर्दे पर क़ब्र। जिसके दिल में ईमान होगा वह उन में से किसी चीज़ का भी इंकार न करेगा। इसी तरह जिस शख़्स के जिस्म के टुकड़े हो जाते हैं, उसके जिस्म के टुकड़ों में जान डाल दी जाती है। बाज़ उलमा ने फरमाया कि यह सब कुछ उस से ज़्यादा हैरत अंगेज़ नहीं कि अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम की से जुर्रियत को निकाला और उन से दरयाफ़्त किया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ। तो सबने कहा कि क्यों नहीं!

(५) इब्ने अब्दुल्लाह ने कहा कि सवाल मुद्दई ईमान से ही होगा। काफिर से सवाल न होगा, लेकिन कुरतबी और इब्ने क़य्यिम ने उनकी मुख़ालिफ़त की और कहा कि सवाल की अहादीस आम हैं, मगर मैं कहता हूं कि इन दोनों हज़रात का क़ौल सही नहीं, क्योंकि किसी हदीस में मुस्लिम के साथ काफिर का ज़िक्र नहीं। अल्बत्ता बाज़ अहादीस में बजाए मुनाफ़िक़ के लफ़्ज़ काफ़िर है और उस से मुराद मुनाफ़िक़ ही है जैसा कि हदीसे अस्मा में है कि अम्मल-मुनाफ़िक़ वल-मरताब अलख़ और हदीस अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु में तो उसकी तस्रीह है।

(६) हकीम तिर्मिज़ी ने कहा कि सवाले क़ब्र इस उम्मत के साथ ही ख़ास है, क्योंकि पहली उम्मतें जब रसूलों की तक्ज़ीब करती थीं तो इन पर फौरन ही अज़ाबे आलमगीर आ जाता था और अपने कैफ़रे किरदार तक पहुंचते थे। लेकिन जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए। तो उनके सदक़ा में इस उम्मत से अज़ाबे आलमगीर रोक लिया गया और उनको तल्वार दी गई, ताकि उसकी हैयत से लोग इस दीन को क़बूल करें। और फिर ईमान उनके दिल में रासिख़ हो जाता था। उस वक़्त से निफ़ाक़ शुरू हुआ कि लोग ईमान ज़ाहिर करते और कुछ छुपाते और मुसलमानों के लिए उन से हिजाब था। अब जबकि वह मर गये तो अल्लाह तआला ने उन पर दो आज़माइश करने वाले मुक़र्रर कर दिए, ताकि ख़बीस तैयब से जुदा हो जाए। और बाज़ उलमा ने इसकी मुख़ालिफ़त की और कहा कि यह सवाल हर उम्मत से होगा। इब्ने अब्दुल-बर्र कहते हैं कि इस इख़्तिसास पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम का क़ौल दलालत करता है कि औहा या इलैया अन्नकुम तफ़्तनून फ़ी कुबुरेकुम और आपका क़ौल फ़बी तफ़्तनून व अन्नी तस्अलून।

(७) हकीम तिर्मिज़ी ने कहा कि सवाल करने वाले फरिश्तों को फ़त्ता फ़िल-क़ब्रे इसलिए कहते हैं कि उनके सवाल में झिड़कियां पाई जाती हैं और उनकी सीरत में कुछ करख़्तगी है और उन्हें मुंकर नकीर इसलिए कहते हैं कि उनकी शक्ल व सूरत इंसानों से मिलती जुलती नहीं और न ही फरिश्तों, चौपायों और कीड़े मकोड़ों से, बल्कि उनकी सूरत कुछ अजीब ही है अल्लाह तआला ने उन्हें मोमिन के लिए बाइसे इज़्ज़त व एहतराम और वज्हे बसीरत बनाया है जबकि यह मुनाफ़िक़ के लिए पर्दा दरी का बाइस होंगे। इब्ने यूनुस जो हमारे अस्हाबे शफ़ईया से हैं उन्होंने बताया कि मोमिन के पास आने वाले फरिश्तों का नाम मुबश्शिर और बशीर है।

(८) कुरतबी ने कहा कि दो फरिश्ते दूर दराज़ मक़ामात पर मुंतशिर मुर्दों को कैसे पुकारेंगे इसका जवाब यह है कि उनका जुस्सा इस क़द्र अज़ीम होगा कि वहएक जुमा में एक ही वक़्त तमाम मख़्लूक़ात को एक आवाज़ देंगे, तो हर शख़्स यही समझेगा कि यह ख़िताब ख़ास तौर पर मुझ से ही है और अल्लाह तआला एक दूसरे के जवाब सुनने से मुर्दों को मना फरमा देगा, नीज़ मैं कहता हूं कि यह भी मुम्किन है कि इस काम पर मुतअद्दद फरिश्ते मुऐयन हों, जैसे हफ़ज़ह वग़ैरहा चुनांचे हमारे अस्हाब में हलीमी इसी तरफ़ गये हैं।

(६) एक सवाल यह है कि मोमिन की क़बर की वुरअत में मुख़्तलिफ़ अहादीस हैं। जवाब यह है कि कोई तआरुज़ नहीं कि यह हर मोमिन की शान के मुताबिक़ होगा।

अबुल-फ़ज़ल बिन हजर से चन्द सवालात के जवाबात!

(१) क्या मैयत को सवालात के वक़्त बिठाया जाएगा, या सोते ही में सवालात हो जाएंगे? आपने फरमाया कि बिठाया जाएगा। फिर पूछा गया कि क्या सवाल के वक़्त रूह को पहला जैसा जिस्म अता किया जाएगा? आपने फरमाया कि हां। लेकिन बज़ाहिर मालूम होता है कि रूह उस शख़्स के जिस्म के आधे ऊपरी हिस्से में आएगी। फिर पूछा गया कि क्या मैयत के सामने हुज़ूर अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाएंगे? तो आपने फरमाया कि इस सिलसिला में कोई हदीस नहीं, लेकिन बाज़ नाक़ाबिले एतमाद लोगों ने हाज़रुंजुलुसे इस्तिदलाल किया है, लेकिन यह दलील सही नहीं कि इशारा फ़िज़्ज़हन के लिए है। फिर पूछा गया कि क्या बच्चों से भी क़बर में सवाल होगा? तो जवाब दिया कि ज़ाहिर यह है कि सवाल मुकल्लफ़ ही से होगा। इब्ने क़ैय्यिम ने कहा कि क़बरें में जिस्म के अन्दर रूह का एआदा होगा लेकिन उस से पहली जैसी ज़िन्दगी हासिल न होगी कि जिसमें खाने पीने की ख़्वाहिशात शामिल हों बल्कि उस से एक क़िस्म की ज़िन्दगी हासिल होगी जिस से सवाल हो सकेगा, जिस तरह सोने वाले की ज़िन्दगी, जागने वाले की ज़िन्दगी से मुख़्तलिफ़ है। इसी तरह साहिबे क़ब्र की ज़िन्दगी, आम लोगों की ज़िन्दगी से मुख़्तलिफ़ है यह एक ऐसी ज़िन्दगी है जिस के होते हुए मौत का लफ़्ज़ भी सादिक़ आता है। यह मौत व ज़ीस्त के दर्मियान एक दरजा है। हदीस में यह कहीं नहीं कि यह हयात बाक़ी रहेगी, हदीस से तो उसकी मिसाल का बदन से मुतअल्लिक़ होना मालूम होता है और यह मिसाल रूहे बदनी के फूल फट जाने और मुंतशिर होने के बाद भी मुतअल्लिक़ है। इब्ने तैमिया कहते हैं कि सवाल के वक़्त रूह का जिस्म में आना अहादीसे मुतवातिरह से साबित है। अगरचे एक गरोह का कहना है कि यह सवाल बिला रूह के किए जाएंगे। इस गरोह में इब्ने ज़ाग़वानी हैं और इब्ने जरीर के बारे में भी यही सुना गया है, लेकिन जम्हूर इस क़ौल का इंकार करते हैं और उनके मुक़ाबले में बाज़ हज़रात कहते हैं कि सवाल सिर्फ रूह से ही होगा, इसके क़ाइल इब्ने हज़्म, इब्ने अक़ील, इब्ने जौज़ी वग़ैरहुम हैं, लेकिन यह ग़लत है, क्योंकि अगर यही बात है तो फिर सवाल व जवाब के क़ब्र में ख़ास होने की वजह क्या है।

(११) रौज़ुर्रियाहीन (याफई) में शक़ीक़ बल्ख़ी से रिवायत है, वह फरमाते हैं कि हमने पांच चीज़ों की तलाश की तो उनको पांच चीज़ों में पाया : (१) गुनाहों के छोड़ने को नमाज़े चाश्त में। (२) क़ब्रों की रौशनी को तहज्जुद में (३) मुंकर नकीर के जवाब को तिलावते कुरआन में (४) पुल सिरात पर से गुज़रने को रोज़ा और सदक़ा में (५) साय-ए-अर्श को गोश नशीनी में।

(१२) अबुल-फ़ज़ल तूसी ने उयूनुल-अख़ियार में अपनी सनद से अनस से रिवायत की कि मैयत मलकुल-मौत का बेहोशी के आलम में मुशहिदा करती है और मुंकर नकीर का इसी हालत में।

(१३) हमारे शैख़ इल्मुद्दीन बिल्क़ीनी के फतावा में है कि मैयत क़ब्र में मुंकर नकीर के सवालात का जवाब सुरयानी में देगी, लेकिन मुझे उसकी सनद नहीं मिलती। और इब्ने हजर ने फरमाया कि ज़ाहिर हदीस से पता चलता है कि यह जवाबात अरबी में होंगे और यह भी मुम्किन है कि हर शख़्स से उसकी ज़ुबान में सवाल हो।

(१४) बज़ाज़ी हन्फ़ी ने अपने फतावा में ज़िक्र किया कि मैयत जिस मक़ाम पर ठहरेगी, वहीं उस से सवाल होगा, मसलन जो किसी दरिन्दे के पेट में होगा उस से वहीं सवाल होगा और जिस को किसी ताबूत में रखा जाएगा, तो उस से उस वक़्त तक सवाल न होगा कि जब तक उसको क़ब्र में दफन न किया जाए।

उन लोगों का बयान जिन से क़ब्र में सवाल नहीं होगा

(१) अबुल-क़ासिम सअदी ने किताबुर्रूह में कहा कि बरिवायाते सहीहा यह बात साबित है कि बाज़ हज़रात से क़ब्र में सवाल न होगा और मुंकर नकीर उनके पास न आएंगे और यह तो उस शख़्स की ज़ाती खुसूसियात हैं, या मौत के वक़्त की शिद्दत की वजह से या मुबारक ज़माने की वजह से।

(२) निसई ने अपनी सनद से रिवायत की कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया यह क्या बात है कि शहीद के अलावा हर मोमिन क़ब्र में आज़माइश के अन्दर डाला जाएगा? तो आपने फरमाया कि तलवार की बिजली उसके लिए बजाए अज़ाबे क़ब्र के हो गई।

(३) निसई और तबरानी ने औसत में अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस ने दुश्मन से सब्र के साथ मुक़ाबला किया हत्ता कि ग़ालिब

हुआ, या शहीद हुआ तो उसे अज़ाबे क़बर न होगा।

(४) मुस्लिम ने सलमान (फ़ारसी) से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते थे कि एक दिन रात अल्लाह तआला की राह में जिहाद के लिए जो सरहद पर मुस्तइद रहा (तो उसका यह अमल) एक माह की नमाज़ और रोज़ों से बेहतर है। और वह इस हालत में मर गया तो उसका अमल जारी कर दिया जाएगा और उसका रिज़्क़ भी, नीज़ मुंकर नकीर से भी उसे नजात मिल जाएगी।

(५) तिर्मिज़ी ने फुज़ाला बिन उबैद से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हर मैयत का अमल ख़त्म हो जाता है सिवाए उस शख़्स के जो राहे खुदा में जिहाद की तैयारी में हो क्योंकि उसका यह अमल क़्यामत तक बढ़ता ही रहेगा और वह फ़ित्न-ए-क़बर से महफ़ूज़ हो जाएगा इब्ने माजा की रिवायत में अबू हुरैरह से मन्कूल है कि क़्यामत की घबराहट से भी महफ़ूज़ रहेगा। अहमद, तबरानी, बज़्ज़ार, इब्ने असाकिर वग़ैरेहिम ने इसी मज़्मून की रिवायात अपनी सनद से कीं।

(६) इब्ने माजा व बैहक़ी ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो मरज़ में मरा वह शहीद हुआ और अज़ाबे क़बर से बचा। और सुबह व शम उसका रिज़्क़ जन्नत से लाकर उस पर पेश किया जाएगा। कुरतबी कहते हैं कि अगर यह मरज़ आम है। लेकिन दीगर अहादीस से उस में क़ैद मालूम होती है कि जिस को इस्तिस्क़ा या इस्हाल की बीमारी हो, उसको क़बर में अज़ाब न होगा। और उसकी वजह यह है कि ऐसा शख़्स बक़ाइमी होश व हवास मरता है, तो अब उस से मज़ीद सवाल न होगा, बख़िलाफ़ दूसरे अमराज़ में मरने वालों के कि उनकी अक़्ल व हवास गुम हो जाती है।

(७) मरवी है कि जो शख़्स हर रात सूरः तबारक पढ़ेगा। उस से मुंकर नकीर सवाल न करेंगे।

(८) जुवैबिर ने अपनी तफ़सीर में इब्ने मसऊद से रिवायत की कि जिस ने सूरः मुलक हर रात तिलावत की, वह फित्न-ए-क़बर से महफ़ूज़ रहेगा। और जो पाबन्दी से इन्नी आमन्तु बेरब्बिकुम फ़स्मऊन। पढ़ता रहा। तो उस पर मुंकर नकीर का सवाल आसान हो जाएगा। कअब रज़ि अल्लाहु अन्हु से भी ऐसी ही रिवायत है।

(६) अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने इब्ने उमर से रिवायत की कि जो मुसलमान जुमा के रोज़ या जुमा की रात में इंतिक़ाल करेगा वह फ़ित्न-ए-क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगा।

(१०) क़ुरतबी कहते हैं कि यह अहादीस गुज़िश्ता अहादीस से मुतआरज़ नहीं बल्कि इन अहादीस की तख़्सीस करती हैं और यह बताती हैं कि जो शख़्स दुनिया में इन मसाइब को बर्दाश्त कर चुका है वह सवाल से महफ़ूज़ रहेगा। इन बातों में क़यास व अक़्ल को दख़ल नहीं बल्कि यहां तो इताअत व इंक़ियाद के अलावा कुछ चारा नहीं। क्योंकि ज़ाहिर है कि जो शख़्स मैदाने जंग में गया और उसके सामने मौत आई और तल्वार की झंकार उसने सुनी, फिर भी जमा रहा तो यह उसके सच्चे मोमिन होने की अलामत है क्योंकि अगर मुनाफ़िक़ होता तो मुनाफ़िक़ ऐसे मवाक़े पर कभी ठहर नहीं सकता बल्कि मैदान छोड़ कर भाग जाता है। यह तो मोमिन सादिक़ की शन है। अब जब कि मैदाने जंग में उस ने अपने पाक अक़ीदे का बैयिन सुबूत दे दिया तो सवाल का एआदा क़ब्र में क्योंकर होगा? क़ुरतबी कहते हैं कि जब शहीद से सवाल न होगा तो सिद्दीक़ तो उस से भी मरतबा में आला है बल्कि वह शख़्स जिस ने जिहाद भी न किया बल्कि महज़ अपने घर बार को छोड़ कर सरहद की हिफ़ाज़त को आया, वह भी सवाल से महफ़ूज़ रहेगा। तो सिद्दीक़ का तो फिर क्या कहना। हकीम तिर्मिज़ी ने सराहत कर दी कि सिद्दीक़ीन से सवाल न होगा। उनके अपने अल्फ़ाज़ यह हैं कि व यफ़्अ़लल्लाहु मा यशओ। हम इसका मतलब यह समझे हैं कि अल्लाह तआला की मशीयत यह है कि कुछ लोगों का वह मरतबा इतना बुलन्द फरमा दे कि उनको सवाले क़बर से मुस्तस्ना कर दे, जैसे कि सिद्दीक़ीन और शुहदा, हकीम तिर्मिज़ी से जो बात मन्कूल है इस से पता चलता है कि यह इन्आम मैदाने जिहाद में शहीद होने वालों ही के साथ मख़्सूस है लेकिन अहादीस से इस तरफ रहनुमाई होती है कि यह हर क़िस्म के शहीद को आम है। इब्ने हजर ने *बज़लल-माऊन फ़ी फ़ज़लत्ताऊन*। में यक़ीन से कहा कि ताऊन से मरने वाला भी सवाले क़बर से मुस्तस्ना है क्योंकि वह मअ्रका में शहीद होने वाले की तरह है क्योंकि जो इस मरज़ में सब्र करता है वह यक़ीन कर लेता है कि इसको वह मुसीबत ही पहुंच सकती है जो अल्लाह की तरफ़ से मुक़द्दर होती है इस तरह उसके ज़मीर की सदाक़त और हक़्क़ानियत ज़ाहिर हो जाती है फिर इससे दोबारा सवाल की क्या हाजत। हकीम तिर्मिज़ी ने फरमाया कि जो शख़्स अल्लाह की राह में सरहदों की हिफ़ाज़त करता है। इससे सवाल साक़ित होने की वजह यह है कि उसने अपने आपको अल्लाह के दुश्मनों से मुक़ाबला करने के लिए रोक रखा है अब जब कि वह इसी हालत पर मर गया तो उसके ज़मीर की सदाक़त ज़ाहिर हो जाएगी

और फ़िल्न-ए-क़ब्र से महफ़ूज़ हो जाएगा। और जो शख़्स जुमा को मरता है उस पर इन इन्आमात से हिजाबात उठ जाते हैं, जो अल्लाह ने उसके लिए तैयार किए हैं, क्योंकि जुमा के रोज़ जहन्नम भड़काया नहीं जाता और न ही जहन्नम के दरवाज़े खुलते हैं। तो उस दिन अल्लाह तआला का किसी मोमिन की रूह को क़ब्ज़ करना उसके सआदतमन्द होने की काफी दलील है। जो शख़्स जुमा को मरता है उसको शहीद का सा अज्र मिलता है नीज़ क़्यामत के दिन उस पर शहीद की मुहर होगी।

(११) हमीद ने अपनी तरग़ीब में अयास बिन बुकैर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स जुमा को मरा, उसे शहीद का अज्र मिलेगा और अज़ाबे क़बर से महफ़ूज़ रहेगा।

(१२) हमीद ने अपनी सनद से अता बिन यसार से रिवायत मज़्कूर मआ इज़ाफ़ा के की, लेकिन अगर शहीद में मज़ीद तामीम कर दी जाए तो बहुत ही अच्छा हो क्योंकि शुहदा तीस से ज़ाइद हैं। मैंने उनको एक मुस्तक़िल रिसाले में लिखा है। यह सवाल बकसरत किया जाता है कि आया क़ब्र में बच्चों से भी सवाल होगा? तो इस मस्अला को इब्ने क़ैयिम ने किताबुर्रूह में ज़िक्र करते हुए हनाबला के दो क़ौल नक़ल किए हैं : पहला तो यह कि सवाल होगा, क्योंकि हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बच्चा की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और दुआ की कि ऐ अल्लाह तू इसको अज़ाबे क़ब्र से बचाना। क़रतबी ने भी उस पर यक़ीन ज़ाहिर किया है और कहा कि इस वक़्त उनकी अक़्ल मुकम्मल कर दी जाती है, ताकि वह अपनी नेक बख़्ती को पहचान सकें। और उनको सवालात के जवाबात भी बज़रिया इल्हाम बता दिए जाते हैं। ज़ह्हाक ने भी यही कहा। इब्ने जरीर ने जुवैबिर से रिवायत की कि ज़ह्हाक बिन मज़ाहिम का छेः रोज़ का बच्चा मर गया तो आपने फरमाया कि जब मेरे बच्चे को उसकी क़ब्र में रखो तो उसके चेहरे को खोल देना और गिरह भी खोल देना क्योंकि मेरे बेटे को बिठाया जाएगा और सवाल किया जाएगा। मैंने पूछा कि उससे क्या सवाल होगा? तो उन्होंने कहा कि आदम अलैहिस्सलाम की पीठ में जो इक़रार लिया गया था।

दूसरा क़ौल यह है कि सवाल न होगा। क्योंकि सवाल तो उस से होगा जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उसके भेजने वाले को समझता हो, तो उस से पूछा जाएगा कि उसने उसकी इताअत की या नहीं? और हदीस का जवाब यह है कि अज़ाबे क़ब्र से मुराद न क़ब्र का अज़ाब है और न सवाल, बल्कि वह तक्लीफ़ है जो ग़म

और हसरत और वहशत की वजह से होगी। और यह बच्चों को भी है, यह क़ौल सही और सवाब है। नस्फ़ी ने बहरुल-कलाम में कहा कि अंबिया और मुमिनीन के बच्चों से हिसाब व किताब न होगा और न ही मुंकर नकीर का सवाल होगा। हमारे उलमा-ए-शफ़ईया ने फरमाया कि दफन के बाद बच्चा को तल्क़ीन न की जाए, यह सिर्फ़ बालिग़ के लिए है। चुनांचे अल्लामा नौवी अलैहिर्रमा ने अरौंज़ा में भी ज़िक्र किया और यह उस अम्र की दलील है कि बच्चों से सवाल न होगा और हाफ़िज़ इब्ने हजर अलैहिर्रहमा का भी यही फतवा है।

फाइदा : इब्ने जौज़ी ने अनस की हदीस से मरफूअन रिवायत की, जो शख़्स दाढ़ी में ख़िज़ाब लगाता था वह मर गया तो उस से मुंकर नकीर सवाल न करेंगे। मुंकर कहेगा, ऐ नकीर मैं उस शख़्स से क्योंकर सवाल करूं कि जिस के चेहरे पर इस्लाम का नूर दरख़्शां है।

क़ब्र की घबराहट और उसका मोमिन के लिए फ़राख़ और आसान होना

(१) हाकिम, बैहक़ी, इब्ने माजा और हनाद ने जुह्द में उस्मान के गुलाम हानी से रिवायत की कि हज़रत उस्मान जब क़बर पर खड़े होते तो इतना रोते कि आपकी दाढ़ी तर हो जाती तो उन से कहा जाता कि आप जन्नत का ज़िक्र करते हैं और नहीं रोते, लेकिन क़ब्र को देख कर रोते हैं? तो आपने फरमाया कि क़ब्र पहली मंज़िल है, जिसने इससे नजात पाई तो बाद वाली मनाज़िल उसके लिए आसान हैं और अगर उसने नजात न पाई तो बाद वाली मनाज़िल उस से भी ज़ाइद कठिन और दुश्वार हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क़ब्र का मंज़र हर मंज़र से ज़्यादा हौलनाक है।

(२) इब्ने माजा ने बरा से रिवायत की कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हम्राह एक जनाज़ा में शरीक थे तो आप क़ब्र के किनारे पर बैठे अैर खुद भी रोए और दूसरों को भी रुलाया, हत्ता कि मिट्टी भीग गई। फिर फरमाया कि ऐ भाईयो! इसके लिए तैयारी करो।

(३) अहमद, निसई और इब्ने माजा ने इब्ने उमर से रिवायत की कि एक शख़्स का मदीना में इंतिक़ाल हो गया तो आपने फरमाया कि काश कि उसका इंतिक़ाल उसकी जाए पैदाइश में न होता तो लोगों ने अर्ज़ की कि वह क्यों? तो आपने फरमाया इसलिए कि जब इंसान अपने मौलिद के सिवा कहीं और मरता है तो उसको जन्नत में इस क़द्र ही मसाफ़त दे दी जाएगी। (इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसा

ही मरवी है।)

(४) बैहक़ी ने अज़ाबे क़ब्र में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क़बर या तो जहन्नम का गढ़ा है या जन्नत का एक टुक्ड़ा है। (इब्ने अबी शैबा ने भी यही रिवायत की।)

(५) इब्ने मुन्दह ने अबू हुरैरा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मोमिन अपनी क़ब्र में सत्तर हाथ के सब्ज़ाज़ार में फिरता रहता है और चौदहवीं के चांद की तरह क़बरें होती हैं।

(६) अली बिन माबद ने मआज़ा से रिवायत की वह फरमाते हैं कि मैंने हज़रत आइशा से दरयाफ़्त किया कि आप बताइए कि मुर्दे के साथ क्या होता है? तो आपने फरमाया कि अगर वह मोमिन है तो उसकी क़ब्र चालीस हाथ बढ़ा दी जाती है। कुरतबी ने कहा कि यह मुआमला ज़ग्त-ए-क़ब्र और सवाल के बाद होगा और काफिर की क़ब्र मुसलसल तंग ही रहेगी। हुज़ूर अलैहिस्सलाम का फरमान कि रौज़ह मिन रियाज़िल-जन्नते औ हुफ़्रतुन मिन हुफ़्रतिन्नारे। हमारे नज़्दीक हक़ीक़त पर महमूल है इस से मजाज़ी मानी मुराद नहीं और मोमिन की क़ब्र सब्ज़ा से भर जाती है और बाज़ उलमा ने इसके मजाज़ी मानी मुराद लिए यानी मोमिन पर सवाल का आसान हो जाना और राहत व ऐश से रहना, गोया कि हद्दे निगाह तक वुस्अतें फैली हुई हैं, क़रतबी कहते हैं सही पहली बात ही है।

(७) अहमद ने ज़ुह्द में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-कुबूर में वहब बिन मंबा से रिवायत की कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने हवारीयीन के हमराह एक क़ब्र पर खड़े थे, तो लोगों ने क़ब्र की वहशत, तारीकी और तंगी का ज़िक्र किया। तो आपने फरमाया कि तुम उस से भी ज़ाइद तंग जगह में थे, यानी मां के पेट में।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-मुख़्तसेरीन में अबू अमामा के साथी अबू ग़ालिब से रिवायत की कि शाम में एक शख़्स की मौत का वक़्त आ गया तो उसने अपने चचा से कहा कि अगर मुझ को अल्लाह मेरी मां की तरफ लौटा दे तो बताइए कि वह मेरे साथ क्या सुलूक करेगी? उन्होंने कहा कि बखुदा वह तुमको जन्नत में दाख़िल कर देगी। तो उस शख़्स ने कहा कि अल्लाह मुझ पर वालिदा से भी ज़ाइद मेहरबान है। फिर इस नौजवान का इस गुफ़्तगू के बाद इंतिक़ाल हो गया तो मैं उसके चचा के साथ क़ब्र में दाख़िल हुआ तो अचानक एक ईंट गिर

पड़ी तो उसका चचा कूद कर आगे बढ़ा। फिर रुक गया। मैंने कहा क्या है? तो उसने जवाब दिया कि उसकी क़ब्र नूर से भर पूर है नीज़ हद्दे निगाह तक वसीअ़ है।

(९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुहम्मद बिन अबान से रिवायत की और उन्होंने हमीद से, उन्होंने कहा कि मेरी एक भतीजी थी। और उन्होंने भी (एक रिवायत) मज़्कूरा बाला हिकायत की तरह सुनाई। लेकिन उन्होंने यह कहा कि मैंने क़ब्र में झांक कर देखा तो वह मेरी हद्दे निगाह तक वसीअ थी, तो मैंने अपने साथी से कहा कि क्या तुम को भी वह नज़र आया जो मुझ को भी नज़र आया था तो उन्होंने कहा कि हां। मैंने कहा कि तुम को मुबारक हो।

(१०) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से रिवायत की, वह कहते हैं कि बनू हज़रमी के बुज़ुर्गों में एक बुज़ुर्ग शख़्स बसरा में रहता था उसका एक भतीजा था जो फाहिश औरतों की सोहबत में रहता थां बूढ़ा हमेशा अपने उस भतीजे को नसीहत करता था। इत्तिफ़ाक़न वह लड़का मर गया। जब उसको क़ब्र में उतारा गया तो कुछ शुबह हुआ। चुनांचे एक ईंट सिरका कर अन्दर देखा गया तो मालूम हुआ कि उसकी क़ब्र बसरा के घोड़ दौड़ के मैदान से भी ज़ाइद वसीअ़ है और वह दर्मियान में खड़ा है फिर ईंट को वापस लगा दिया गया और घर आ कर उसकी बीवी से उसके आमाल के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो उसने कहा कि यह जब मुअज़्ज़िन की शहादत को सुनता था तो कहता था कि जिस की तू गवाही देता है उसी की गवाही मैं भी देता हूं। और दूसरों से भी कहता था कि यही कहो।

(११) मुझ से अब्दुर्रहमान बिन अहमद जअ़फी ने अपनी सनद से बयान किया कि मैंने कूफ़ा में एक जवान की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत की, अब जो मैं उसकी क़ब्र दुरुस्त करने को दाख़िल हुआ, तो ईंटें लगाते में एक ईंट गिर गई तो मुझे अन्दर काबा और तवाफ का मंज़र नज़र आया।

(१२) अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन अबी सुफ़ियान की किताबुद्दीबाज में है कि मुझे एक क़ब्र खोदने वाले ने बताया कि मैं दो क़ब्रें खोद चुका तो तीसरी क़ब्र में लग गया। धूप बहुत सख़्त थी तो मैंने गढ़े के ऊपर चादर डाल दी और मैं अन्दर बैठ गया। इतने में दो शख़्स सफ़ेद घोड़ों पर सवार हो कर आए और पहली क़ब्र पर खड़े हो गये, फिर उन में से एक ने दूसरे से कहा कि लिखो! उसने कहा कि क्या लिखूं? उसने कहा तीन मील मुरब्बा लिखो। फिर दूसरी क़ब्र पर पहुंचे और कहा

कि लिखो, हद्दे निगाह तक। फिर वह उस क़बर पर आग गये जिस में मैं था तो एक ने दूसरे से लिखने को कहा। उसने कहा क्या लिखूं? कहा कि लिखो फुतरुन फ़ी फ़तरुन अब मैं बैठ कर जनाज़ों का इंतिज़ार करने लगा। तो एक जनाज़ा थोड़े से इंसानों के साथ आया और पहली क़ब्र पर रोक दिया गया। मैंने कहा कि यह किस की मैयत है? जवाब मिला की एक बहिश्ती है (पानी भरने वाला) कबीरुस्साल था मर गया, हमने चन्दा किया और उसके दफन का इंतिज़ाम कर दिया। मैंने कहा कि मैं कुछ न लूंगा यह उसके बच्चों को दे देना। मैंने उसको उनके साथ लेकर दफन करा दिया। फिर दूसरा जनाज़ा आया उसके साथ सिर्फ़ उसके उठाने वाले ही थे, यह उस (क़बर) पर जिसके बारे में कहा गया था कि हद्दे निगाह तक, रुका। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह किस की क़ब्र है? उन्होंने कहा कि एक मुसाफिर है जो घोड़े पर मर गया था और उसके पास कुछ न था। मैंने उस से भी कुछ न लिया। फिर तीसरे का इंतिज़ार करने लगा। अब इश के क़रीब एक सरदार की औरत को लाए। मैंने दफन करके पैसे मांगे तो उन्होंने मेरे सर पर जूते मारे और चल दिए।

(१३) इब्ने अबी अद्दुनिया से मरवी है कि एक शख़्स ऐसे वक़्त आया जब कि मैयत को उसकी क़बर में लिटाया जा रहा था तो उसने कहा कि जो मां के पेट में बच्चे पर आसानी करता है वह तुझ पर भी आसानी कर सकता है।

(१४) इब्ने अबी अद्दुनिया से मरवी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़बर की तारीकी और तंगी का क्या हाल होगा? आपने फरमाया कि इंसान जिस हाल पर होता है इसी हाल पर उसकी वफ़ात होती है।

(१५) आजरी ने किताबुल-गुरबा में रिवायत की कि एक शख़्स ने बयान किया कि मैंने बहरीन में एक मैयत को गुस्ल दिया तो उसके गोश्त पर लिखा था कि तूबा लका या ग़रीब मैंने ग़ौर से देखा तो यह लिखाई खाल और गोश्त के दर्मियान थी।

(१६) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में उक़्बा बिन अबी मुईत से रिवायत की वह कहते हैं कि मैं अहनफ बिन क़ैस के जनाज़ा में शरीक हुआ और उनकी क़ब्र में उतरा तो मैंने देखा कि उसको हद्दे निगाह तक फराख़ कर दिया गया है तो मैंने साथियों को बताया। लेकिन जो मैंने देखा, वह न देख सके।

(१७) अबुल-हसन बिन सिरली ने किताब करामातुल-औलिया में

रिवायात की। हुज्जाज ने माहान हन्फ़ी को उनके दरवाज़े पर सूली दी क्योंकि उसकी आदत थी कि क़ादरियों को उनके दरवाज़े ही पर सूली देता था। तो हम रात के वक़्त वहां रौशनी देखते थे।

(१८) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में और अबू दाऊद ने अपनी सुनन में आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत की कि जब नजाशी का इंतिक़ाल हो गया, तो हम उसकी क़बर पर मुसलसल नूर देखते थे।

(१६) अबू नईम ने मुग़ीरह बिन हबीब से रिवायत की कि अब्दुल्लाह बिन ग़ालिब दानी एक जंग में शहीद हो गये। जब उनको दफन किया गया तो उनकी क़ब्र से मुश्क की महक आई।

एक मरतबा उनके किसी भाई ने उनको ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे साथ क्या बर्ताव हुआ? कहा कि बहुत अच्छा। फिर पूछा क्या ठिकाना मिला? कहा जन्नत। फिर पूछा, किस सबब से? कहा कि हुस्ने यक़ीन और तहज्जुद की नमाज़ और प्यासा रहना। पूछा कि खुशबू तुम्हारी क़ब्र में कैसी आती है? कहा कि यह तिलावत और रोज़ा की वजह से है।

(२०) अहमद ने जुह्द में मालिक बिन दीनार अलैहिर्रमा से रिवायत की कि मैं अब्दुल्लाह बिन ग़ालिब की क़बर में उतरा और उसकी थोड़ी सी मिट्टी हाथ में ली वह मुश्क की तरह थी। अब लोग उस क़बर की वजह से फित्ना में मुब्तला हुए तो उसको पाट दिया गया।

(२१) फिर्दौस दैलमी में है कि आख़िरत के इंसाफ़ की पहली मंज़िल क़ब्र है जिस में शरीफ़ व कमीन की कुछ तमीज़ नहीं।

(२२) इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बन्दे की सबसे ज़ाइद क़ाबिले रहम हालत वह होती है जब उसके घर वाले उस को दफन करके वापस जाते हैं।

(२३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू आसिम हंबली से मरफूअन रिवायत की कि सबसे पहला तोहफ़ा मोमिन को उसकी क़बर में यह मिलता है कि तू ख़ुश हो जा, कि जिन लोगों ने तेरे जनाज़ा का साथ दिया उनकी मग़्फ़िरत हुई। (जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ऐसी ही रिवायत है।)

इसी मज़्मून की बहुत सी अहादीस दूसरे हज़रात से मरवी हैं।

बाब

(१) मुस्लिम ने उम्मे सलमा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू सलमा के इंतिक़ाल पर फरमाया

कि ऐ अल्लाह! उनके लिए फराख़ी अता फरमा और उनकी क़ब्र को मुनव्वर फरमा।

(२) मुस्लिम ने अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क़बरें तारीकी में डूबी हुई हैं, अल्लाह तआला लोगों पर मेरी दुआ करने की वजह से उनको मुनव्वर फरमाएगा।

(३) दैलमी ने हज़रत अनस से रिवायत की कि मस्जिद में हंसना क़बर में तारीकी का बाइस है।

(४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुत्तहज्जुद में सिरी बिन फ़हलद से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू ज़र से फरमाया कि जब तुम कहीं सफर पर जाते हो तो कितनी तैयारी करते हो, तो क़्यामत के सफर की तैयारी का क्या आलम होगा। ऐ अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बताता हूं जो तुम को नफ़ा दे। अबू ज़र ने अर्ज़ की कि मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों बताइए। फरमाया कि सख़्त गर्मी के मौसम में हश्र के लिए रोज़ा रखो और रात की तारीकी में दो रकाअतें पढ़ना, ताकि क़बर में रोशनी हो।

(५) दैलमी और ख़तीब ने अर्रूया में मालिक से और अबू नईम व इब्ने अब्दुल्लाह ने तम्हीद में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने हर दिन सौ मरतबा ला इलाहा इल्लल्लाहु अल-मलकुल-हक़्क़ुल-मुबीन। पढ़ा तो वह फ़ुक्र से महफ़ूज़ रहेगा, क़ब्र में वहशत न होगी और जन्नत के दरवाज़े उसके लिए खुल जाएंगे। (ख़तीब ने भी उसे हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया।)

(६) दैलमी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब आलिम मर जाए तो उसका इल्म क़्यामत तक क़ब्र में उसको मानूस करने के लिए मुतशक्कल हो कर रहता है और ज़मीन के कीड़ों को दफ़ा करता है।

(७) इमाम अहमद ने ज़ुह्द में और इब्ने अब्दुल्लाह अलैहिर्रहमा ने किताबुल-इल्म में अपनी सनद से कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को वही फरमाई कि ख़ैर और भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ क्योंकि मैं ख़ैर के सीखने और सिखाने वालों की क़ब्र को मुनव्वर करूंगा ताकि उनको वहशत न हो।

(८) लालकाई ने सुन्नह में इब्राहीम बिन अदहम से रिवायत की

कि मैंने एक जनाज़ा को उठाया तो कहा कि अल्लाह मेरे लिए मौत में बरकत दे। तो कोई बोलने वाला मैयत के तख़्त पर से बोला। और मौत के बाद भी यह सुन कर मुझ पर बहुत ख़ौफ तारी हुआ। जब लोग दफर कर चुके तो मैं क़बर के पास मुतफक्किर हो कर बैठ गया कि अचानक क़ब्र से एक शख़्स नमूदार हुआ, जिसके कपड़े साफ़ थे हसीन चेहरा था और खुश्बू महक रही थी। उस ने मुझ से कहा कि ऐ इब्राहीम! मैंने कहा कि लब्बैक, आप कौन हैं खुदा आप पर रहम फरमाए। उसने कहा कि तख़्त पर से मौत के बाद भी कहने वाला मैं ही हूं। मैंने कहा कि आख़िर आप का नाम क्या है? तो उन्होंने कहा कि मेरा नाम सुन्नत है मैं दुनिया में इंसान की होती हूं, और क़ब्र में नूर व मूनिस व ग़म गुसार, और क़यामत में जन्नत की तरफ़ रहनुमा और क़ाइद बनती हूं।

(९) मुहम्मद बिन लाल और अबू शैख़ ने अस्सवाब में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने जाफर बिन मुहम्मद से उन्होंने बाप से उन्होंने अपने दादा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब कोई शख़्स किसी मोमिन को खुशी की बात सुनाता है तो अल्लाह तआला उससे एक फरिश्ता पैदा फरमाता है जो खुदा की इबादत और तौहीद बयान करता है और जब यह बन्दा मरता है तो खुशी का यह फरिश्ता उसकी क़ब्र में आता है और दरयाफ़्त करता है कि क्या तुम मुझको पहचानते हो? तो वह बन्दा पूछता है कि आप कौन हैं? वह कहता है मैं इस खुशी की शक्ल हूं जो तूने फलां मोमिन को अता की थी, अब मैं तेरी वहशत में तेरा मूनिस हूं और मैं तुझे तेरी हुज्जत बताऊंगा और क़ौले साबित से तुझको साबित क़दमी अता करूंगा और क़यामत में तेरे पास आऊंगा और तेरे लिए शफ़ाअत करूंगा और तेरा मक़ाम तुझको जन्नत में दिखाऊंगा।

(१०) इब्ने मुन्दह ने अबू काहिल से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ऐ अबू काहिल! ख़ूब जान लो कि जो लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहा तो खुदा तआला उसको लाज़मी क़ब्र की तक्लीफ़ से महफ़ूज़ रखेगा।

(११) अबुल-फ़ज़ल तूसी ने उयूनुल-अख़्बार में उमर से मरफ़ूअन रिवायत की कि जिस ने अल्लाह की मसाजिद को रौशन किया, अल्लाह तआला उसकी क़ब्र को रौशन फरमाएगा और जिसने उसमें खुशबूएं रखीं तो अल्लाह तआला जन्नत में उसके लिए खुशबू मुहैया फरमाएगा।

(१२) दैलमी ने अबू बक्र सिद्दीक़ से रिवायत की कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ की कि मरीज़ की अयादत करने वाले को क्या अज्र मिलेगा? तो अल्लाह तआला ने फरमाया कि उसके लिए दो फरिश्ते मुक़र्रर किये जाएंगे जो क़ब्र में हर रोज़ उसकी अयादत करेंगे? हत्ता कि क़यामत आ जाएगी। सईद बिन मन्सूर ने भी ऐसा ही रिवायत किया।

(१३) हकीम तिर्मिज़ी ने अबू हुज़ैफ़ा से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि क़ब्र में भी हिसाब है और आख़िरत में भी हिसाब है तो जिसका हिसाब क़ब्र में हो गया उसे नजात हो गई और जिसका न हुआ उसे क़यामत में अज़ाब होगा। तो मोमिन का हिसाब क़ब्र में होता है कि कल मैदाने हश्र में आसानी हो।

(१४) अहमद ने हज़रत आइश से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कोई शख़्स ऐसा न होगा कि उसका हिसाब हश्र में हो और उसकी मग्फ़िरत की जाए मुस्लिम अपना अमल क़ब्र ही में देखेगा।

(१५) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि क़सम है उस ज़ात की कि जिसके क़ब्ज़े व क़ुदरत में मेरी जान है कि जो शख़्स क़त्ले उस्मान से ज़र्रा बराबर रग़बत रखेगा अगर वह दज्जाल का ज़माना पाएगा तो उस पर ईमान लाएगा, वरना वह उस पर क़ब्र में ईमान लाएगा।

अज़ाबे क़ब्र का बयान

हम खुदा की पनाह मांगते हैं अज़ाबे क़ब्र से। अज़ाबे क़ब्र का का तज़्किरा कुरआने हकीम में जा बजा है जैसा कि मैंने अपनी किताब इक्लील फ़ी इस्तिंबात अत्तन्ज़ील में बयान किया।

(१) बुख़ारी ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ फरमाते थे कि *अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिन अज़ाबिल-क़ब्रे।*

(२) बुख़ारी अलैहिर्रहमा ने आइश से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अज़ाबे क़ब्र हक़ है।

(३) इब्ने अबी शैबा और मुस्लिम ने ज़ैद बिन साबित से रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम बनू नज्जार के बाग़ में अपने ख़च्चर पर सवार थे और हम आप के साथ थे कि इतने में वह ख़च्चर शोख़ी करने लगा। अब जो देखा तो छः या पांच या चार क़ब्रें उसके क़रीब थीं।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने दरयाफ़्त किया कि इन क़ब्र वालों को कौन पहचानता है? तो एक शख़्स बोला कि मैं पहचानता हूँ। आपने फ़रमाया कि यह कब मरे? तो उसने कहा कि हालते शिर्क में मरे, तो आपने फ़रमाया इन लोगों को क़ब्र में अज़ाब हो रहा है। अगर तुम्हारे मर जाने का ख़तरा न होता तो मैं दुआ करता कि यह अज़ाब तुम को सुना दिया जाता। अहमद और बज़्ज़ार ने जाबिर से भी यह ही रिवायत की।

(४) इब्ने अबी शैबा और शैख़ैन ने आइशा से रिवायत की कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क़ब्र वालों को ऐसा अज़ाब दिया जाता है जिसको चौपाए सुनते हैं।

(५) अहमद, अबू यअ्ला और आजरी ने अबू सईद खुदरी से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि काफिर पर उसकी क़ब्र में क़यामत तक के लिए निन्नानवे अज़्दहे मुक़र्रर किए जाते हैं जो उसे डसते रहते हैं।

(६) अबू याअ्ला, आजरी और इब्ने मुन्दह ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मोमिन की क़ब्र में बाग़ होता है और क़ब्र सत्तर गज़ उसके लिए फराख़ कर दी जाती है और उसमें चौदहवीं के चांद की तरह रौशनी होती है। फिर आपने फरमाया कि क्या तुम को यह आयत फ़इन्ना लहू मईशतन ज़नकन मालूम है कि किस बारे में नाज़िल हुई? तो सहाबा ने अर्ज़ की अल्लाहु व रसूलुहू आलमु। तो आपने फरमाया यह काफिर के अज़ाबे क़ब्र के बारे में नाज़िल हुई। क़सम है उसकी कि जिसके क़ब्ज़े व कुदरत में मेरी जान है, काफिर पर उसकी क़ब्र में निन्नानवे अज़्दहे मुसल्लत कर दिए जाते हैं जो क़यामत तक उस पर फुनकारते रहेंगे और उसे डसते रहेंगे।

(७) अहमद ने आइश से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि काफिर पर दो साँप मुक़र्रर होंगे कि एक सर की जानिब से और दूसरा पैर की जानिब से, वह उसको क़यामत तक काटते रहेंगे।

(८) इब्ने अबी शैबा, इब्ने अबी अद्दुनिया और आजरी ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि पेशब की छींटों से बचो कि उमूमन अज़ाबे क़ब्र इसी वजह से होता है।

(९) इब्ने अबी शैबा और शैख़ैन ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो आपने फरमाया कि उन दोनों को अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े

मुआमले में नहीं, उन में से एक तो पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ल ख़ोरी करता था। फिर आपने एक तर शख़ ली और उसके दो टुकड़े किए और हर क़ब्र पर एक-एक लगा दी। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह क्यों किया? तो आपने फ़रमाया कि शायद जब तक यह ख़ुश्क न हों, अल्लाह उनके अज़ाब में कमी फ़रमाए। इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से ऐसी ही रिवायत की।

(१०) अहमद ने अनस (रज़ि अल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबू तलहा के खुजूर के बाग़ में चल रहे थे और हज़रत बिलाल उनके पीछे थे। आपने फ़रमाया कि ऐ बिलाल! क्या तुम वह सुन रहे हो जो मैं सुन रहा हूं? इस क़ब्र वाले को अज़ाब दिया जा रहा है। पस उसके बारे में दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि वह यहूदी था।

(११) बैहक़ी ने अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अज़ाब क़ब्र में तीन चीज़ों से होता है : पेशाब, ग़ीबत, चुग़ल ख़ोरी।

(१२) इब्ने अबी शैबा ने इकरमा अलैहिर्रमा से अल्लाह तआला के क़ौल कमा यइसल-कुफ़्फ़ारे मिन असहाबिल-कुबूरे। की तफ़सीर यह बयान की कि कुफ़्फ़ार जब क़ब्र में रुस्वा कुन अज़ाब का मुशाहिदा करेंगे तो रहमते इलाही से महरूम हो जाएंगे।

(१३) तबरानी से औसत में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-कुबूर में लालकाई ने मुसनद में, इब्ने मुन्दह ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि मैं बद्र के क़रीब से गुज़र रहा था कि अचानक एक शख़्स गढ़े से निकला जिसकी गर्दन में ज़ंजीर थी। उसने मुझे पुकार कर कहा कि ऐ अब्दुल्लाह मुझे पानी पिलाओ। अब मुझे मालूम नहीं कि उसने मेरा नाम लेकर पुकारा या अरब के तरीक़ा पर पुकारा। उसके पीछे एक आदमी कूड़ा लिए हुए निकला। उसने मुझ से कहा कि ऐ अब्दुल्लाह तुम उसको पानी न पिलाना क्योंकि यह काफ़िर है। फिर उसको कोड़े से मारा हत्ता कि वह अपने गढ़े की तरफ़ वापस लौट गया। तो मैं हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और वाक़या अर्ज़ किया तो आपने फ़रमाया कि क्या तुमने उसको देखा? मैंने कहा हां। तो आपने फ़रमाया कि वह अल्लाह तआला का दुश्मन अबू जहल था, और यह उसका अज़ाब है क़यामत तक।

(१४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताब मिन आश बादल-मौत में और

ख़िलाल ने अस्सुन्नह में और इब्नुल-बरा ने रौज़ा में इब्ने उमर से रिवायत की कि मैं एक सफर के मौक़ा पर ज़मान-ए-जाहिलीयत के क़ब्रिस्तान पर गुज़रा तो एक क़ब्र से एक आदमी निकला जिस पर आग के शेअले भड़क रहे थे और गले में आग की ज़ंजीर थी। मेरे पास पानी का एक बर्तन था। जब उसने मुझे देखा तो कहा कि ऐ अब्दुल्लाह! मुझे सैराब करो। इतने में उसी के पीछे एक आदमी क़ब्र से और निकला और उसने कहा कि अब्दुल्लाह! तुम उसको सैराब न करना क्योंकि यह काफिर है। फिर उसने उसको कोड़े से मारा और खींच कर क़बर में ध्केल दिया। फिर मैंने रात ऐसी बुढ़िया के पास गुज़ारी जिसके घर के क़रीब एक क़ब्र थी तो मैंने क़ब्र से आवाज़ सुनी।

तर्जमा : *पेशाब, पेशाब क्या है, बहाना और बहाना क्या है?* बुढ़िया से दरयाफ़्त किया कि यह क्या है? उसने कहा यह मेरा शौहर है जब पेशाब करता था तो उसके छींटो से नहीं बचता था। मैं उससे कहती थी कि ऊंट जब पेशाब करता है तो तू छींटों से नहीं बचता है। लेकिन वह न सुनता था। तो अब जब से मरा है कह रहा है कि बोल वमा बोल। मैंने कहा कि अलशान वमा अलशान क्या है? उसने जवाब दिया कि उसके पास एक प्यासा शख़्स आया। तो उसने कहा कि मुझे पानी पिलाओ। उसने कहा कि मश्कीज़ा ले लो। जब उस शख़्स ने मश्कीज़ा उठाया तो वह ख़ाली था। वह शख़्स उसको ख़ाली देख कर बेहोश हो गया और फिर मर गया तो यह उस दिन ही से पुकार रहा हैमश्कीज़ह, मश्कीज़ह फिर जब मैं हुज़ूर अलैहिस्सलाम की बारगाह में हाज़िर हुआ तो आपने तन्हा सफर करने की मुमानेअत फरमा दी।

(५) इब्ने अबी शैबा ने क़बूर में, हुवैरिस बिन रुबाब से बिल्कुल इसी तरह वाक़या बयान किया, उसमें इतने अल्फ़ाज़ मज़ीद है। कि जब मैं इस अजीब व ग़रीब वाक़या को देख चुका तो सुबह को उमर फारूक़ की बारगाह में हाज़िर हुआ और वाक़या सुनाया तो आपने फरमाया कि बख़ुदा मैं तेरी तक्ज़ीब नहीं करता तूने मुझे सच्चा वाक़या सुनाया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने चन्द बुज़ुर्गों को बुलाया, जो ज़मान-ए-जाहलीयत पा चुके थे। जब वह आए तो आपने हुवैरिस से कहा कि पूरा वाक़या उन बुज़ुर्गों को सुनाओ चुनांचे उन्होंने सुनाया। वह बुज़ुर्ग सुन कर कहने लगे कि ऐ अमीरुल-मुमिनीन! क़बर वाले आदमी को हम ने पहचान लिया यह बनू ग़फ़्फ़ार का एक शख़्स है जो ज़मान-ए-जाहिलीयत में मर चुका था, यह शख़्स मेहमानों का कोई हक़ अपने ऊपर न रखता था।

(६) अहमद व निसई, इब्ने खुज़ैमा और बैहक़ी ने अबू राफ़े से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह बक़ीअ़ में गुज़रा तो आपने फ़रमाया कि उफ़, उफ़ तो मैंने गुमान किया कि शायद आप मेरा इरादा फ़रमाते हैं। मैंने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह! क्या मुझ से कोई ग़लती हुई? आपने फ़रमाया कि नहीं। बल्कि इस क़ब्र वाले शख़्स को मैंने बनू फुलां के पास ज़कात वसूल करने भेजा था तो उसने एक ज़िरह बतौर ख़्यानत बचा ली। अब वह ज़िरह आग की हो गई है और उसको पहना दी गई है।

(७) इब्ने अबी शैबा, हिनाद और इब्ने अबी अद्दुनिया ने उमर बिन शरजील से रिवायत की कि एक ऐसा शख़्स इंतिक़ाल कर गया जिसको लोग मुत्तक़ी समझते थे। जब वह अपनी क़ब्र में आया तो फ़रिश्तों ने कहा कि हम तुझको अल्लाह के अज़ाब् के सौ कोड़े मारेंगे। उसने कहा कि क्यों मारोगे हालांकि मैं तो वरअ़ व तक़्वा को अख़्तियार किए हुए था। तो उन्होंने कहा कि अच्छा चलो पचास ही मार देंगे। फिर वह बराबर बहस करता रहा, हत्ता कि वह फ़रिश्ते एक कोड़े पर आ गये और उन्होंने एक कोड़ा मारा। जिस से तमाम क़ब्र भड़क उठी और वह शख़्स जल कर ख़ाकिस्तर हो गया। फिर उसको ज़िन्दा किया गया तो उसने दरयाफ़्त किया कि अब यह तो बताओ कि तुमने यह कोड़ा क्यों मारा? तो उन्होंने जवाब दिया कि एक रोज़ तूने बेवुज़ू नमाज़ पढ़ ली थी और एक रोज़ एक मज़्लूम तेरे पास फ़रियाद लेकर आया। मगर तूने फ़रियाद रसी न की। अबू शैख़ ने किताबुत्तौबीख़ में इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसी ही रिवायत की।

(८) बुख़ारी और बैहक़ी ने सुमरा बिन जुन्दुब से रिवायत की, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा से बसा औक़ात दरयाफ़्त फ़रमाते, क्या तुम में किसी ने आज ख़्वाब देखा है तो एक रोज़ आपने फ़रमाया कि आज रात मेरे पास दो शख़्स आए और उन्होंने मुझ से कहा कि हमारे साथ चलो, मैं उनके साथ हो लिया वह मुझको अर्ज़े मुक़द्दसा में ले आए और हमने देखा कि एक शख़्स लेटा है और उसके सरहाने एक शख़्स पत्थर उठाए खड़ा है और पै दर पै पत्थरों से उसके सर को कुचल रहा है। सर हर मरतबा कुचलने के बाद ठीक हो जाता है। मैंने उन फ़रिश्तों से कहा कि सुब्हानल्लाह, यह कौन हैं? उन्होंने कहा कि आगे चलिए। चुनांचे हम एक ऐसे शख़्स के पास पहुंचे जो गुद्दी के बल सो रहा था और एक शख़्स लोहे का चिमटा लिये हुए उस पर खड़ा था और वह उसकी बाछें एक तरफ़ से पकड़कर उसकी

गुद्दी की तरफ खींचता था और उसके नथुने और आंखें भी गुद्दी की तरफ और फिर दूसरी जानिब से भी ऐसा ही करता था। अभी एक जानिब से वह अपना काम मुकम्मल कर पाता था कि दूसरी तरफ ठीक हो जाती। फिर वह इसी काम में लग जाता। मैंने उनसे दर्याफ़्त किया कि यह कौन हैं? उन्होंने कहा कि आगे चलिये, हम आगे चल कर एक तनवीर पर बैठे जिसमें से शोर शगब की आवाज़ें आ रही थीं हमने अंदर झांककर देखा तो उसमें मर्द और औरत नंगे थे नीचे से उनकी तरफ शोले लपकते थे जब शोला उनकी जानिब बढ़ते थे वह शोर मचाते थे मैंने पूछा कि यह कौन हैं? कहा गया आगे चलिये। हम आगे चल कर एक नहर पर पहुंचे जो सुर्ख़ ख़ून थी। नहर में एक आदमी तैर रहा था और किनारे पर बहुत से पत्थर लिए एक आदमी खड़ा था। यह तैरने वाला शख़्स इस किनारे वाले शख़्स के सामने आकर मुंह फाड़ता था तो यह उसके मुंह में एक पत्थर डाल देता था, फिर वह कुछ देर तैर कर वापस आता था और मुंह फाड़ता था और यह फिर उसके मुंह में पत्थर रख देता था। और यह सिलसिला बराबर जारी था। मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? उन्होंने कहा कि आगे चलिए। फिर हम आगे चल कर एक बदतरीन शक्ल के आदमी के पास पहुंचे उसके पास आग थी वह उसके गिर्द चक्कर लगा रहा था। मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि यह कौन है। उन्होंने कहा कि आगे चलिए। फिर हम एक सर सब्ज़ बाग़ में पहुंचे जिस में फस्ले बहार का हर फूल था और बाग़ में एक शख़्स इस क़द्र लम्बा था कि उसका सर आसमान से लगता था और उसके पास कुछ बच्चे थे जिनको मैंने कभी न देखा था। उन्होंने कहा कि आगे चलिए, तो हम एक अज़ीम बाग़ में पहुंचे कि उस से बड़ा बाग़ मैंने कभी न देखा था और न ही उस से ज़ाइद हसीन व जमील बाग़ कभी निगाह से गुज़रा था उन्होंने मुझ से कहा कि उसमें चलिए। हम उसके अन्दर दाख़िल हुए तो हम एक ऐसे शहर में पहुंच गये जो सोने और चांदी की ईंटों से बना हुआ था। हम ने शहर के दरवाज़े पर पहुंच कर उसको खुलवाया। जब अन्दर दाख़िल हुए तो वहां के लोग कुछ अजीब ही थे उनका कुछ जिस्म तो हसीन तरीन और कुछ बदतरीन। इन दो फरिश्तों ने उन से कहा कि जाओ और उस नहर में दाख़िल हो जाओ। सामने एक नहर थी जिसका पानी ख़ालिस सफेद था, वह उसमें दाख़िल हो गये। जब वापस आए तो उनकी बदसूरती, हुस्न में तब्दील हो चुकी थी। उन दो फरिश्तों ने कहा कि यह जिन्नाते अद्न है और यह आपका ठिकाना है। अब

जो मैंने नज़र उठा कर देखा तो एक महल सफेद बादल की मानिन्द था। मैंने उन से कहा कि बारकल्लाहु लकुमा अब मुझ को छोड़ो ताकि मैं अपने महल में दाख़िल हो जाऊं। तो उन्होंने कहा कि आप दाख़िल तो होंगे लेकिन अभी नहीं। मैंने उन से कहा कि वह तमाम चीज़ें जो रात देखी थीं उनकी तश्रीह करो। उन्होंने कहा कि पहला शख़्स जो तुमने देखा था, वह था जिसने कुरआन पढ़ कर छोड़ दिया था और फर्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाने का आदी था। उसके साथ यह बर्ताव क़्यामत तक होगा और दूसरा शख़्स झूठा था उसके साथ यह बर्ताव क़्यामत तक होगा। और नंगे मर्द और औरतें ज़ानी और ज़ानिया औरतें थीं और नहर में तैरने वाला सूद ख़ोर था और वह आग के पास घूमने वाला शख़्स मालिक है जो जहन्नम पर मुक़र्रर है और बाग़ में खड़ा होने वाला दराज़ क़द शख़्स इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं और उनके पास खड़े होने वाले बच्चे वह हैं जो फितरत पर मर गये। सहाबा ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या उनमें मुश्रेकीन के बच्चे भी शामिल हैं? आपने फरमाया कि हां। और वह लोग जो आधे ख़ूबसूरत और आधे बदसूरत थे वह अच्छे बुरे दोनों काम करने वाले थे। अल्लाह ने उन से दरगुज़र फरमाया। और मैं जिब्रील हूं और यह मेरे साथी मीकाईल हैं।

उलमा फरमाते हैं कि यह ख़्वाब अज़ाबे बरज़ख़ में नस्स है क्योंकि अंबिया का ख़्वाब वही होता है।

(९) ख़तीब और इब्ने असाकिर ने अबू मूसा अश्अरी से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने कुछ ऐसे अश्ख़ास देखे जिनकी ज़बानें आग की कैंचियों से काटी जा रही थीं। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? तो बताया गया, यह वह लोग हैं जो ऐसी चीज़ों से ज़ीनत हासिल करते थे जो उनके लिए जाइज़ न थीं। नीज़ मैंने एक गढ़ा देखा जिसमें चीख़ व पुकार की आवाज़ें आ रही थीं। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह क्या है तो मुझे बताया गया कि यह वह औरतें हैं जो नाजाइज़ अशिया से ज़ीनत हासिल करती थीं। और कुछ लोग ऐसे देखे जो आबे हयात में ग़ुस्ल कर रहे थे, यह वह लोग थे जिन्होंने अच्छे और बुरे दोनों क़िस्म के आमाल किए थे।

(१०) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में हज़रत अली से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने हम को एक दिन फज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद आप हमारी तरफ मुतवज्जह हुए और फरमाया कि रात मेरे पास दो फरिश्ते आए और मुझे आसमाने

दुनिया की तरफ ले गये। अल-आख़िर (इस हदीस में तक़रीबन इन्हीं अज़ाबों का ज़िक्र है जो गुज़िश्ता तवील हदीस में गुज़रा।)

(११) बैहक़ी ने दलाइल में अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत की कि नबी करीम अलैहिस्सलाम ने हदीसे असरा में बयान फरमाया कि फिर मेरा गुज़र ऐसे मक़ाम से हुआ जहां कुछ ख़्वान रखे थे, जिनमें बेहतरीन गोश्त था लेकिन उसके पास कोई न फटकता था और सामने ही दूसरे ख़्वानों में कुछ सड़ा हुआ गोश्त रखा था जिसको बहुत से लोग खा रहे थे। मैंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? तो उन्होंने बताया कि यह वह लोग हैं जो हलाल छोड़ कर हराम की तरफ आते हैं। फिर मैं आगे बढ़ा तो मैंने कुछ ऐसे लोग देखे जिनके पेट घड़े की मानिन्द बड़े थे। जब उनमें से कोई खड़ा होता तो फौरन गिर पड़ता और कहता कि ऐ मेरे रब! क़्यामत क़ाइम न कर। यह लोग क़ौमे फिरऔन की गुज़रगाह पर पड़े हुए हैं जब कोई क़ौम गुज़रती है तो उनको रौंद डालती है, वह ख़ुदा की बारगाह में आह व ज़ारी कर रहे हैं, मैंने दरयाफ़्त किया कि ऐ जिब्रील! यह कौन हैं? उन्होंने कहा कि यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के सूद ख़्वार हैं। फिर मैं आगे बढ़ा तो देखा कि कुछ लोग ऊंटों के से होंठ वाले हैं वह अपने मुंह खोल रहे हैं और आग खा रहे हैं फिर वह आग उनके नीचे से निकल रही है। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? कहा कि यह यतीमों का माल खाने वाले हैं। फिर कुछ आगे चल कर देखा कि कुछ औरतें हैं जिनके पिस्तान लटके हुए हैं। मैंने पूछा कि यह कौन हैं? उन्होंने कहा कि यह ज़ानिया औरतें हैं। फिर मैं आगे चला तो देखा कि कुछ लोग हैं जिनके पहलुओं पर से गोश्त काटा जा रहा है और कहा जा रहा है कि यह उसी तरह खा जिस तरह तू अपने भाई का गोश्त खाता था। मैंने कहा कि यह कौन हैं? तो उन्होंने बताया कि यह ग़ीबत करने वाले और ऐब जोई करने वाले हैं।

(२) इब्ने अदी और बैहक़ी ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेअ्राज की रात मैंने कुछ लोग देखे जिनके सर पत्थरों से कुचले जा रहे हैं, मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? उन्होंने बताया कि यह वह लोग हैं जिनके सर नमाज़ पढ़ने से बोझल होते थे। फिर मैंने ऐसे लोग देखे जिनके आगे और पीछे शर्मगाह पर कुछ चिथड़े लिपटे हुए, वह ज़क़ूम और कांटेदार दरख़्त इस तरह चर रहे हैं, जैसे ऊंट या गाय, बैल चरते हैं। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? उन्होंने बताया कि यह वह लोग हैं जो अपने

सदक़ात अदा नहीं करते हैं। फिर ऐसे लोगों के पास आया जिनके पास एक हांडी में कुछ पका हुआ गोश्त था और दूसरी हांडी में कच्चा गोश्त था तो उन्होंने पका हुआ गोश्त छोड़ दिया और कच्चा खाने लगे। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? उन्होंने कहा कि यह उन मर्दों और औरतों की मिसाल है जो पाक बीवियों और शैहरों के होते हुए ग़ैरों के पास रात गुज़ारते हैं। फिर एक शख़्स को देखा जो लकड़ियों का गट्ठा उठा रहा था लेकिन वह उस से उठ नहीं सकता था। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन है? तो उन्होंने कहा कि यह शख़्स वह है जिस के पास लोगों की अमानतें हों और वह उनके अदा करने की ताक़त नहीं रखता फिर भी मज़ीद अमानतें लिए जाता है। फिर ऐसे लोग देखे जिनकी ज़बानें लोहे की कैंचियों से काटी जा रही थीं। मैंने पूछा यह कौन लोग हैं तो उन्होंने कहा कि यह फित्ना परदार ख़तीब व मुक़र्रिर हैं।

(१३) अबू दाऊद ने अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शबे मेअ्राज में मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ, जिनके नाख़ून लोहे के थे। वह अपने मुंह और सीने नोच रहे थे। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन लोग हैं? जिब्रील ने कहा कि यह वह लोग हैं जो लोगों की आबरूरेज़ी करते थे।

(१४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने क़ुबूर में मरफूअन हसन से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो मेरे सहाबा में से किसी को गाली देता हुआ मरा, तो अल्लाह उस पर एक जानवर को मुसल्लत कर देगा जो उसके गोश्त को खाएगा और वह उसकी तक्लीफ क़्यामत तक पाएगा।

(१५) इब्ने ख़ुज़ैमा, इब्ने हिब्बान, हाकिम, तबरानी और इब्ने मरदवीया ने अपनी तफ़सीर में, बैहक़ी ने अबू उमामा से रिवायत की कि उन्होंने कहा, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक रोज़ नमाज़े फज्र के बाद फरमाया कि मैंने आज एक ख़्वाब देखा है और वह सच है तुम उसे ख़ूब अच्छी तरह समझ लो। आज रात को एक आने वाला मेरे पास आया और मेरा हाथ पकड़ कर एक लम्बे चौड़े पहाड़ के पास ले आया और मुझ से कहा कि इस पर चढ़िए। मैंने कहा कि मेरे बस की बात नहीं। उसने कहा कि आप चढ़िए तो, मैं आसान कर दूंगा। फिर मैं उस पर चढ़ने लगा यहां तक कि हम पहाड़ के दर्मियानी हिस्से पर पहुंच गये तो मैंने कुछ ऐसे मर्द और औरतें देखीं जिनके मुँह चिरे हुए थे। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि वह

वह हैं जो कहते थे और उसको करते न थे, फिर मैंने कुछ ऐसे लोग देखे जिनकी आंखें और कान कीलों से ठुके हुए थे। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि यह वह लोग हैं जो वह देखते हैं, तुम नहीं देखते और वह सुनते हैं, जो तुम नहीं सुनते। फिर मैंने कुछ ऐसी औरतें देखीं जिनके सुरीन लटके हुए और सर झुके हुए थे। उनके पिस्तानों को सांप डस रहे थे। मालूम करने से पता चला कि यह औरतें हैं जो अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती थीं। फिर मैंने कुछ ऐसे मर्द और औरतें मुलाहिज़ा कीं जिन की सुरीनें लटकी हुई थीं और सर झुके हुए थे और थोड़ा सा पानी चाट रहे थे दरयाफ़्त करने से मालूम हुआ कि वह लोग हैं जो रोज़ा वक़्त से पहले अफ़्तार कर लेते हैं। फिर मैंने कुछ लोग देखे जो बहुत बद सूरत बद लिबास और बेहद बदबूदार थे, दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि यह ज़ानी और ज़ानिया औरतें हैं। फिर मैंने कुछ मुर्दे देखे जो बहुत ही फूले हुए अैर बदबूदार थे, दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि यह काफिरों के मरे हुए लोग हैं। फिर मैंने देखा कि कुछ लोग दरख़्तों के साए तले हैं, दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि यह मुसलमानों के मुर्दे हैं। फिर हम आगे चले तो देखा कि कुछ लड़के और लड़कियां दो नहरों के दर्मियान खेलने में मसरूफ़ हैं। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? मालूम हुआ कि यह मुमिनीन की औलाद है फिर हम ने हसीन चेहरे, उम्दा कपड़े और बेहतर हसीन खुशबूदार वाले इंसान देखे। मैंने पूछा यह कौन हैं? मालूम हुआ कि यह सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालेहीन हैं।

(१६) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफ़ून मरवी है कि जो क़ौमे लूत का सा काम करता रहा और मर गया तो उस का हश्र उन्हीं के हमराह होगा।

(१७) तारीख़ इब्ने असाकिर में उनकी सनद से अमरु बिन असलम दमिश्क़ी से मरवी है कि हमारे यहां सरहद के पास एक शख़्स का इंतिक़ाल हो गया, उसको वहीं दफ़ना दिया गया। फिर तीसरे दिन खोदा गया तो मालूम हुआ कि क़ब्र की ईंटें इसी तरह लगी हुई हैं और वह शख़्स ग़ायब है तो वकीअ बिन जर्राह से इस सिलसिला में दरयाफ़्त किया गया तो उन्होंने कहा कि हम ने सुना है कि जो लूत की क़ौम का सा काम करता है उसको उसकी क़ब्र से मुन्तक़िल कर दिया जाता है और लूतियों के पास पहुंचा दिया जाता है ताकि उसका हश्र उन्हीं के साथ हो।

(१८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मसरूक़ से रिवायत की कि जो शख़्स

चोरी, शराब ख़ोरी और ज़ना में मुब्तला हो कर मरता है तो उस पर दो सांप मुक़र्रर कर दिए जाते हैं जो उसका गोश्त नोच-नोच कर खाते रहते हैं।

(१६) इब्ने असाकिर ने वासिला बिन अस्क़अ से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर फिरक़ा क़दरीया या मुर्जीया में से किसी मुर्दे की क़ब्र तीन रोज़ बाद खो दी जाए तो उसका मुंह क़िब्ला से फिरा हुआ मिलेगा।

(२०) अस्बहानी ने तरग़ीब में अवाम बिन जौशब से रिवायत की, उन्होंने कहा कि एक मरतबा मैं एक क़बीला में आया इस क़बीला के एक तरफ़ एक मक़्बरा था, अस्र के बाद इस मक़्बरे की एक क़ब्र फटती थी और उससे एक शख़्स नमूदार होता था जिसका सर गधे की तरह होता था और जिस्म इंसान की तरह। वह गधे की मानिन्द तीन दफ़ा गधे की सी आवाज़ निकाल कर फिर क़ब्र में ग़ायब हो जाता था। मैंने उसके बारे में लोगों से दरयाफ़्त किया। तो लोगों ने बताया कि यह शराब का आदी था जब यह शराब पीता था तो उसकी मां कहती कि ऐ मेरे बच्चे! अल्लाह से डर। तो वह जवाब देता कि तू गधे की तरह हींकती रहती है, तो वह अस्र के बाद मर गया तो हर रोज़ अस्र के बाद निकलता है और तीन मरतबा हींकता है और फिर ग़ायब हो जाता है।

(२१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुर्सिद बिन हौशब से रिवायत की कि मैं यूसुफ़ बिन अमरु के पास बैठा था और उनके पहलू में एक शख़्स बैठा था जिसके चेहरे का थोड़ा सा हिस्सा लोहे का बना हुआ था तो यूसुफ़ ने उस से कहा कि मुर्सिद को बताओ जो कुछ भी तुमने देखा है। उसने कहा कि मैंने एक शख़्स की क़बर खोदी रात के वक़्त, जब लोग उसको दफन करके चले गये तो दो फीसद रंग के परिन्दे आए जो शक्ल व शबाहत में ऊंट की मानिन्द थे। एक तो सर की जानिब गिर पड़ा और दूसरा पैर की जानिब फिर उसको खोद कर एक तो क़ब्र में दाख़िल हो गया और दूसरा किनारे पर खड़ा रहा। मैं क़ब्र के क़रीब आ गया ताकि माजरा देखूं। मैंने सुना कि वह परिन्दे साहबे क़ब्र से कह रहा है कि ऐ इंसान क्या तू वही नहीं जो क़ीमती बनावट के कपड़े पहन कर तकब्बुर से चलता हुआ अपनी ससुराल जाता था। उस ने कहा कि मैं उसको बर्दाश्त करने से क़ासिर हूँ। तो उसने एक ऐसी ज़र्ब लगाई कि क़ब्र का पानी और तेल तक निकल आया और इसी तरह तीन मरतबा मारा। फिर उसने सर उठा कर मेरी तरफ देखा और कहा कि देखो वह कहां बैठा हुआ है, खुदा उसे ज़लील करे। फिर

उस ने मेरे मुंह पर एक तरफ चोट मारी तो मैं रात भर बेहोश पड़ा रहा। अब जब सुबह उठा तो यह हश्र था जो आप देख रहे हैं।

(२२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू जरीस से और उन्होंने अपनी मां से रिवायत की कि जब अबू जाफर ने कूफा की ख़न्दक़ खोदी तो लोगों ने अपने मुर्दों को मुन्तक़िल करना शुरू किया तो एक नौजवान क़ब्र में इस हालत में था कि अपने एक हाथ पर काट रहा था।

(२३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू इस्हाक़ से रिवायत की। उन्होंने कहा कि मैंने एक मैयत को गुस्ल दिया। अब जो मैंने कपड़ा हटा कर देखा तो उसकी गर्दन में एक सांप लिपटा हुआ है तो लोगों ने बताया कि यह सहाब-ए-किराम को गालियां देता था। मआज़ल्लाह।

(२४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू इस्हाक़ फज़ारी से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैं क़ब्रें खोदने पर मामूर था। अब बाज़ क़बरें ऐसी देखीं कि जिन में मुर्दों के मुंह क़िब्ले से मुंहरिफ थे तो मैंने औज़ाई से दरयाफ़्त किया। तो उन्होंने जवाब दिया कि यह सुन्नत पर अमल न करने की वजह से इस अज़ाब में गिरफ़्तार हैं।

(२५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अब्दुल-मुमिन बिन अब्दुल्लाह बिन ईसा से रिवायत की कि एक कफ़न चोर ने तौबा कर ली तो उस से दरयाफ़्त किया कि तूने अपने उस ज़माने में जो अजीब तर चीज़ देखी हो, वह बयान कर। उसने कहा कि मैंने एक शख़्स की क़बर खो दी तो उसके तमाम जिस्म में कीलें लगी हुई थी और एक बड़ी कील सर में पैवस्त थी और दूसरी दोनों टांगों में दूसरे कफन चोर से दरयाफ़्त किया गया तो उसने बताया कि मैंने एक खोपड़ी देखी जिस में सीसा पिघला कर भरा गया था।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने फ़ज़ल बिन यूनिस से रिवायत की, उन्होंने कहा कि हमें मालूम हुआ है कि उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रहमा ने मुसलेमा बिन अब्दुल-मलिक से कहा कि ऐ मुस्लेमा! तेरे बाप को किस ने दफन किया? तो उसने कहा कि मेरे फलां गुलाम ने। फिर उन्होंने दरयाफ़्त किया कि वलीद को किस ने दफन किया? उसने कहा कि मेरे फलां गुलाम ने। तो आपने कहा कि अब मैं तुम को वह बताता हूं जो इस दफन करने वाले ने मुझे बताई। उसने मुझे बताया कि जब उसने तेरे बाप और वलीद को क़बर में रखा और उनकी गिरह खोलनी चाही तो देखा कि उनके मुंह गुद्दियों की तरफ़ फिर गये थे।

(२७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में अब्दुल-हुमैद बिन महमूद से रिवायत की कि मैं इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु

अन्हु के पास बैठा था तो उनके पास कुछ लोग आए और उन्होंने बताया कि हम हज को गये। हमारे साथ हमारा एक साथी भी था जब हम ज़ातुस्सिफ़ाह के मक़ाम पर पहुंचे तो उसका इंतिक़ाल हो गया तो हम ने उसके कफन व दफन का इंतिज़ाम किया। जब क़ब्र खोदी तो सांपों से भरी हुई थी। तो हमने वह क़ब्र छोड़ कर दूसरी क़बर खोदी तो वह भी इसी तरह भरी हुई थी। तो हम अब आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए हैं। तो इब्ने अब्बास ने फरमाया कि यह सब कुछ इस कीना की वजह है जो वह अपने दिल में रखता था। और बैहक़ी के अल्फ़ाज़ यह हैं कि यह उसके आमाल की सज़ा है। जाओ तुम उसे इन दोनों में से किसी एक में दफन कर दो, क्योंकि ख़ुदा की क़सम! अगर तुम उसके लिए तमाम ज़मीन भी खोद डालो तो भी वह इन्हीं क़बरों में मुन्तक़िल कर दिया जाएगा। तो हम ने उसको वहीं जा कर दफन कर दिया। वापस आकर हमने उसकी औरत से उसके आमाल के बारे में सवाल किया, तो उसने बताया कि यह खाना बेचता था और उसमें से अपने घर वालों के लिए कुछ निकाल लेता था और कमी को पूरा करने के लिए उसमें इतनी ही मिलावट कर देता था।

(२८) लालकाई ने सदक़ा में ख़ालिद से और उन्होंने अपने मशाइख़ से रिवायत की कि हम एक मरतबा हज को जा रहे थे कि रास्ते में एक साथी चल बसा। हम ने किसी से एक फावड़ा मांगा। क़ब्र खोदी और उसको उसमें दफन कर दिया और फावड़ा भी क़ब्र ही में रह गया। तो हमने क़ब्र खो दी ताकि फावड़ा निकाल लें। अब जो अन्दर देखा तो उस शख़्स के हाथ पैर फावड़े के हल्क़ा में दाख़िल हैं। हमने क़ब्र फौरन बन्द कर दी और फावड़े वाले को कुछ पैसे दे कर जान छुड़ाई फिर जब हम वापस आए तो उसकी बीवी से उसके आमाल के बारे में सवाल किया तो उसने बताया कि एक मरतबा उसके हमराह एक मालदार शख़्स ने सफर किया। रास्ते में उसने उसको मार डाला अब यह हज और जिहाद सब कुछ उसी के माल से करता रहा है।

(२९) इब्ने असाकिर ने आमश से रिवायत की कि एक शख़्स ने हसन बिन अली की क़ब्र पर पाख़ाना कर दिया तो वह दीवाना हो गया और कुत्तों की तरह भोंकता फिरता था। फिर वह मर गया लेकिन उसकी क़ब्र से भी इसी तरह की आवाज़ें आती रहती थीं।

(३०) इब्ने असाकिर ने यज़ीद इब्ने ज़ियाद और अम्मारह बिन उमैर से रिवायत की कि जब उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके साथी क़त्ल हो गये तो उनके सर लाए गये तो एक बहुत बड़ा सांप आया लोग

डर कर एक तरफ़ को हो गये। वह उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के नथुनों में दाख़िल हुआ और मुंह से निकला। इस तरह कई मरतबा किया। फिर पता न चला कि किधर से आया और किधर गया। उसको तिर्मिज़ी ने रिवायत किया और कहा कि सही है।

(३१) इब्ने असाकिर ने मुहम्मद बिन सईद से रिवायत की कि मुस्लिम बिन उक़्बा मरी मदीना आया और लोगों को यज़ीद की बैअत की दावत दी और कहा कि तुम सब अल्लाह की इताअत और नाफ़रमानी में गुलाम महज़ हो, तो लोग उसकी दावत की तरफ़ आए एक शख़्स जो कुरैशी था और उसकी मां उम्मे वल्द थी, उसने कहा कि सिर्फ़ अल्लाह की इताअत में। लेकिन मुस्लिम बिन उक़्बा ने उसकी बात न मानी और उसे क़त्ल कर दिया तो उसकी मां ने क़सम खा ली कि अगर मुस्लिम ज़िन्दा या मुर्दा मिल गया तो वह उसे जला देगी जब मुस्लिम मदीना से निकला तो उसकी बीमारी ज़ोर कर आई और वह मर गया, तो क़रशी ज़ादह की मां अपने गुलामों को साथ लेकर उसकी क़ब्र की तरफ़ गई और खोदने का हुक्म दिया, अब जो अन्दर देखा तो एक अज़्दहा उसकी गर्दन में लिपटा हुआ था और उसकी नाक को चूस रहा था। यह हाल देख कर लोग हट गये।

(३२) तमाम बिन मुहम्मद राज़ी ने किताबुर्रुहबान में ज़िक्र किया और इब्ने असाकिर ने भी रिवायत किया कि इस्मा बिन उबाद कहते हैं कि मैं किसी जंगल में घूम रहा था कि मैंने एक गिरजा देखा। गिरजा में एक मेहराब के अन्दर एक राहिब था। मैंने उस से कहा कि तुमने जिस मक़ाम पर सबसे ज़ाइद अजीब चीज़ देखी हो वह मुझ को बताओ! उसने कहा कि सुनो! मैं एक रोज़ यहां था कि मैंने एक परिन्द सफेद रंग का शुतुर मुर्ग़ के बराबर देखा। वह उस पत्थर पर बैठ गया। फिर उसने क़य की, उसमें एक सर निकला, वह इसी तरह क़य करता रहा और इंसानी आज़ा निकलते रहे और बिजली की सी सुरअत (तेज़ी) के साथ वह एक दूसरे से जुड़ते रहे यहां तक कि वह मुकम्मल आदमी बन गया। अब जब उसने उठने का इरादा किया तो परिन्द ने उसके ठोंग मारी और उसको टुकड़े-टुकड़े कर दिया और फिर निगल गया और वह कई रोज़ तक इस अमल में मस्रूफ़ रहा और मेरा यक़ीन खुदा की कुदरत पर बढ़ गया और मैं समझ गया कि अल्लाह तआला मार कर जिलाने पर क़ादिर है। एक दिन मैं उस परिन्द की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और उससे दरयाफ़्त किया कि ऐ परिन्द! मैं तुझे उस ज़ात की क़सम दे कर कहता हूं जिसने तुझको पैदा किया कि अब

जब वह इंसान मुकम्मल हो जाए तो उसको बाक़ी रहने देना ताकि मैं उस से उसके अमल के बारे में दरयाफ़्त कर सकूं? तो फरिश्ते ने बजुबाने फसीह अरबी में मुझको जवाब दिया कि मेरे रब के लिए ही बादशाहत और बक़ा है हर चीज़ फानी है और वही बाक़ी है मैं उसका एक फरिश्ता हूं मैं उस पर मुसल्लत किया गया हूं ताकि उसके गुनाह की सज़ा देता रहूं। मैं उस शख़्स की तरफ मुतवज्जह हुआ और दरयाफ़्त किया कि ऐ अपने नफ़्स पर जुल्म करने वाले इंसान तेरा क़िस्सा क्या है और तू कौन है? उसने जवाब दिया कि मैं अब्दुर्रहमान बिन मल्जम हूं हज़रत अली का क़ातिल। जब मैं मर चुका तो अल्लाह तआला के सामने मेरी रूह हाज़िर हुई उसने मेरा नाम-ए-आमाल मुझ को दिया जिसमें मेरी पैदाइश से लेकर क़त्ले अली तक हर नेकी और बदी लिखी हुई थी। फिर अल्लाह ने इस फरिश्ता को मेरे अज़ाब देने का क़्यामत तक हुक्म दिया, यह कह कर वह चुप हो गया और परिन्द ने उस पर ठोंगें मारीं और उसको निगल गया और चला गया। इस हिकायत को बहुत से अकाबिर ने बयान किया और उसमें क़ील व क़ाल की।

(३३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताब मन आश बअ्दल-मौत में अपनी सनद से अब्दुल्लाह नामी एक शख़्स से रिवायत की कि वह और उसकी क़ौम के चन्द और अफ़राद समुन्द्री सफर पर रवाना हुए इत्तिफ़ाक़न चन्द रोज़ तक समुन्द्री रास्ता उन पर तारीक रहा। चन्द दिन बाद रौशनी हुई तो एक बस्ती आ गई। अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैं पानी की तलाश में रवाना हुआ तो बस्ती के दरवाज़े बन्द थे। मैंने बहुत आवाज़ें दीं, कोई जवाब न आया। इसी अस्ना में दो शहसवार नमूदार हुए उन में से हर एक के नीचे एक सफेद चादर थी। उन्होंने कहा कि ऐ अब्दुल्लाह उस गली में दाख़िल हो जाओ तो तुम्हें पानी का एक हौज़ मिलेगा उसमें से पानी ले लेना और वहां के मंज़र को देख कर ख़ौफ़ज़दह न होना। तो मैं ने उन से उन बन्द दरवाज़ों के बारे में दरयाफ़्त किया जिन में हवाएं चल रही थीं। तो उन्होंने बताया कि यह मुर्दों की रूहें हैं। मैं हौज़ पर पहुंचा तो मैंने देखा कि एक शख़्स मुंह के बल पानी पर लटका हुआ है और अपने हाथ से पानी लेना चाहता है लेकिन नाकाम हो जाता है। मुझे देख कर पुकारने लगा कि ऐ अब्दुल्लाह! मुझे पानी पिलाओ। मैंने बर्तन लेकर डिबो दिया ताकि उसे पानी पिला सकूं। लेकिन किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने उससे दरयाफ़्त किया कि ऐ बन्द-ए-खुदा तूने देख लिया कि मैंने अपनी तरफ से कोशिश की थी कि तुझको पानी पिलाऊं, लेकिन मेरा हाथ पकड़ा गया, तो तू मुझे अपना वाक़या बता।

उसने कहा कि मैं आदम अलैहिस्सलाम का लड़का हूं, जिसने दुनिया में सबसे पहला ख़ून बहाया।

(३४) अबू नईम ने अपनी सनद से ज़ैद बिन असलम से रिवायत की कि एक शख़्स कश्ती में जा रहा था कि कश्ती टूट गई। तो वह एक तख़्ता से चिमट गया। तख़्ता ने उसको एक ऐसे मक़ाम पर जा फेंका जो जज़ीरह था। उसने देखा कि पानी एक वादी की तरफ जा रहा है, यह भी पानी की सिम्त पर चला आया। आख़िर में उसने देखा कि एक शख़्स को ज़ंजीरों से जकड़ कर पानी पर लटकाया हुआ है लेकिन उसका मुंह बावजूद सख़्त कोशिश के पानी तक नहीं पहुंचता। उसने मुझ से दर्ख़्वास्त की कि मैं उसे पानी पिलाऊं। मैंने कहा कि तेरी हालत यह क्यों है? उसने जवाब दिया कि मैं आदम अलैहिस्सलाम का लड़का हूं, सबसे पहले मैंने ही अपने भाई का ख़ून बहाया। अब जो कोई भी बहाता है मुझे ज़रूर सज़ा मिलती है।

(३५) इब्ने जौज़ी ने किताब उयूनुल-हिकायात में अपनी सनद से रिवायत की कि अबू सिनान कहते हैं कि मैं एक शख़्स के पास उसके भाई की ताज़ियत को गया तो देखा कि वह बहुत घबराया हुआ है। दरयाफ़्त करने पर बताया कि जब मैं उसे दफन करके फारिग़ हुआ तो मैंने क़ब्र से कराहने की आवाज़ सुनी। मैंने जल्दी से क़ब्र को खोला तो मुझे किसी ने आवाज़ दी कि ऐ बन्द-ए-खुदा क़ब्र न खोद। चुनांचे मैंने फिर मिट्टी इसी तरह डाल दी। अभी थोड़ी दूर ही जाने पाया था कि फिर वही आवाज़ आई। फिर मैंने आकर थोड़ी सी मिट्टी हटाई, लेकिन आवाज़ आई कि ऐ बन्द-ए-खुदा क़बर को न खोद। फिर जब वापस आने लगा तो वही आवाज़ आई। मैंने कहा कि बखुदा अब ज़रूर खोदूंगा। अब जो मैंने क़बर खोद कर देखी तो उसकी गर्दन में आग का हार था और तमाम क़बर आग से रौशन थी। तो मैंने चाहा कि यह हार उसकी गर्दन से दूर कर दूं। तो मैंने उस पर अपना हाथ मारा तो मेरी उंगलियां जल कर ख़ाकिस्तर हो गईं। उसने हमें अपना हाथ दिखाया तो उसकी चार उंगलियां ग़ायब थीं। तो मैंने औज़ाई से यह तमाम माजरा कहा और एतराज़ किया कि यहूदी, नसरानी और मजूसी मरते हैं तो उनका यह हाल नहीं देखा जाता और गुनहगार मुसलमान का यह हाल है। तो आप ने फरमाया कि उनके जह..मी होने में तो कोई शक नहीं, लेकिन अह्ले तौहीद में यह हालत दिखाई जाती है ताकि वह इबरत हासिल करें।

(३६) हाफ़िज़ अबू मुहम्मद ख़ल्लाल ने किताब करामातुल-औलिया

में अपनी सनद से रिवायत की, कि मुझ से अब्दुल्लाह बिन हाशिम ने कहा कि मैं एक मैयत को नहलाने गया। जब मैंने उसके जिस्म से कपड़ा खोला तो उसकी गर्दन में सांप लिपटे हुए थे। मैंने उन से कहा कि आपको इस पर मुसल्लत किया गया है और गुस्ल देना हमारे हां मस्नून है तो अगर आप इजाज़त दें तो हम उसको गुस्ल दे दें और फिर आप अपनी जगह वापस आए जाएं, तो वह सांप हट कर एक कोने में हो गये। और जब हम गुस्ल से फारिग़ हुए तो वह अपनी जगह वापस आ गये। यह शख़्स बे दीनी में मशहूर था।

(३७) इब्ने जौज़ी ने अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मदीनी से रिवायत की, वह अपने एक दोस्त से रिवायत करते हैं कि मैं एक मरतबा अपनी ज़मीन पर गया तो एक क़ब्रस्तान के पास मग़्रिब का वक़्त हो गया) मैंने वहां नमाज़े मग़्रिब अदा की। थोड़ी देर बाद एक तरफ़ से रोने की आवाज़ आई, मैं उस क़बर के पास गया जिससे आवाज़ आई थी, कोई कह रहा था कि हाए मैं नमाज़ पढ़ता था, और रोज़ा रखता था। मैं अपने साथी के क़रीब हुआ तो उसने भी वही आवाज़ सुनी। फिर मैं अपनी ज़मीन पर वापस आ गया और दूसरे रोज़ फ़िर उसी जगह जाकर नमाज़ पढ़ी जहां पहले रोज़ पढ़ी थी, और मग़्रिब का इंतिज़ार करने लगा और फिर वक़्ते मुक़र्ररह पर क़ब्र से वही आवाज़ आएगी। अब जब मैं घर वापस लौटा तो दो माह तक मैं बीमार पड़ा रहा।

(३८) हिशाम बिन अम्मार ने किताबुल-बेअ़स में अपनी सनद से रिवायत की कि एक शख़्स जिसका आधा सर और आधी दाढ़ी सफेद थी उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत उमर रज़ि० अल्लाहु अन्हु ने आने की वजह दरयाफ़्त की। उसने बताया कि मैं बनी फुलां के क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो मैंने देखा कि एक शख़्स आग का कोड़ा लिए हुए दूसरे शख़्स को पकड़ रहा है और जब वह उसको पकड़ लेता था तो मारता था, जब वह मारता था तो सर से लेकर पैर तक आग में वह इंसान डूब जाता था। वह शख़्स दौड़ कर मेरी पनाह में आया और कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दे मेरी फरियाद रसी कर, तो पकड़ने वाले ने कहा कि ऐ बन्द-ए-ख़ुदा! इसकी मदद न करना क्योंकि यह बहुत ही बुरा काफिर है, तो हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि इसी लिए तो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तन्हा सफर करने की मुमानेअत की है।

(३९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अमरु बिन दीनार से रिवायत की कि मदीना में एक शख़्स की बहन मर गई और वह उसको दफन कर आया।

जब घर पहुंचा तो घर वालों से कहा कि मेरे पास एक थैली थी जो मैं क़बर में भूल आया हूं। अब जो थोड़ी सी क़बर खोदी तो क़बर आग से भड़क रही थी। उसने क़बर को इसी तरह बन्द कर दिया और अपनी मां के पास आकर बहन के बारे में सवाल किया तो उसने बताया कि नमाज़ वक़्त पर न पढ़ती थी बल्कि मेरा गुमान है कि बिला वुज़ू पढ़ती थी और रात को लोगों के दरवाज़ों पर खड़े होकर उनकी बातें सुनती थी।

(४०) हाफ़िज़ इब्ने रजब और हसीम बिन अदी ने अपनी सनद से अब्दुल्लाह बिजली से रिवायत की कि हमारा एक पड़ोसी मर गया तो हम उसके कफ़न व दफ़न में शरीक हुए। जब क़बर खोदी गई तो उसमें बिल्ले की तरह कोई चीज़ थी। हमने उसको मारा तो वह न हटी, क़बर खोदने वाले ने एक ढेला उसके सर पर मारा तब भी न हटी, चुनांचे दूसरी क़बर खोदी गई तो उसमें भी वही बिल्ला मौजूद था उसके साथ भी वही किया गया जो पहले के साथ किया गया था। लेकिन वह अपनी जगह से न हिला। तो लोगों ने मशवरा दिया कि अब उसको उसी में दफ़न कर दो। जब उसको दफ़न कर दिया गया तो क़बर में बहुत ज़ोरदार आवाज़ सुनी गई तो हम उसकी बीवी के पास गये और उस से उसके अमल के बारे में दरयाफ़्त किया कि उसका अमल क्या था? उसने बताया कि वह अक्सर व बेश्तर गुस्ले जनाबत न करता था।

(४१) इब्ने फ़ार्सी ने अपनी तारीख़ में रिवायत की कि उन्होंने ५६० हिज. में बग़दाद के अन्दर एक सड़ा हुआ मुर्दा पाया। उसमें हड्डियों अलावा कुछ न था। उसके हाथ पैरों में लोहे की ज़ंजीरें थीं। एक कील उसकी नाफ़ में और एक उसकी पेशनी में पैवस्त थी वह निहायत ही बदसूरत और मोटी हड्डियों वाला था। उसके निकलने की वजह यह हुई कि तिल अहमर के पास पानी की ज़्यादती से वह लाश निकल आई।

(४२) इब्ने क़ैयिम ने किताबुर्रूह में अपनी सनद से रिवायत की कि एक शख़्स बग़दाद के लोहारी बाज़ार में आया और छोटी-छोटी कीलें फ़रोख़्त कीं। लोहार ने उनको पिघलाने की बेहद कोशिश की लेकिन नाकाम रहा। बिल-आख़िर उसने बेचने वाले को तलाश किया और दरयाफ़्त किया कि यह कीलें तुमको कहां से मिलीं। पहले तो उसने बताने में पस व पेश की और फिर बाद में उसने बताया कि मैंने एक क़बर खुली हुई देखी उसमें एक मुर्दे की हड्डियों के साथ यह कीलें लगी हुई थीं। मैंने निकालने की कोशिश की, लेकिन न निकलीं, बिल-आख़िर मैंने पत्थर से हड्डियों को तोड़ा और यह कीलें जमा कर लीं।

(४३) इब्ने कैयिम अलैहिर्रहमा ने अपनी सनद से अबू अब्दुल्लाह हरानी से रिवायत की कि वह अस्र के बाद अपने घर से (जो आमद में था) बुतान की तरफ़ निकले, मग़्रिब से कुछ पहले उनका गुज़र क़ब्रिस्तान में हुआ तो एक क़बर लोहार की भट्टी की मानिन्द सुर्ख़ थी और मुर्दा उसके दर्मियान था। मैंने साहिबे क़बर के बारे में लोगों से दरयाफ़्त किया तो मालूम हुआ कि वह मुक्कास था जो आज ही मरा है।

(४४) हाफिज अबू मुहम्मद क़ासिम ने अपनी सनद से अपनी तारीख़ में ज़िक्र किया कि अब्दुल-काफी ने बयान किया कि वह एक जनाज़े में शरीक हुए तो एक काले रंग का आदमी उनके हमराह जनाज़े में शरीक था। फिर जब हम ने नमाज़ पढ़ी तो उसने न पढ़ी और मेरी तरफ़ देख कर कहा कि मैं उसका अमल हूं। यह कह कर वह क़बर में दाख़िल हो गया और फिर मुझे कुछ नज़र न आया।

(४५) हाफ़िज़ शर्फ़ुद्दीन वसाती ने अबू इस्हाक़ इब्राहीम से रिवायत की। उन्होंने कहा कि हमारे पास एक अन्धा कफन चोर था। लोगों से भीख मांगता था और कहता था जो मुझे कुछ देगा मैं उसे एक अजीब बात सुनाऊंगा और जो ज़ाइद देगा उसे मैं अजीब चीज़ दिखाऊंगा। रावी कहते हैं कि किसी ने उसको कुछ दिया तो मैं पास खड़ा हो गया। उसने अपनी आंखें दिखाईं मैंने देखा तो वह गुद्दी तक धंसी हुई थीं, उसके मुंह से गुद्दी के पीछे का मंज़र नज़र आता था। फिर उसने बताया कि मैं अपने शहर का कफन चोर था और लोग मुझ से डरते थे। मैं किसी की परवाह न करता था। इत्तिफ़ाक़न क़ाज़ी शहर बीमार पड़ गया और उसको बचने की कोई उम्मीद न रही तो उसने सौ दीनार मेरे पास भेजे और कहला भेजा कि मैं अपनी पर्दा दरी तुझ से इन सौ दीनार के एवज़ ख़रीदना चाहता हूं। मैंने वह ले लिए। इत्तिफ़ाक़न वह तन्दरुस्त हो गया और फिर बीमार हो कर मर गया। मैंने कहा कि वह अतीया तो पहले मरज़ का था। इसलिए मैंने उसकी क़बर खो दी तो क़ब्र में अज़ाबे के से आसार थे और क़ाज़ी परागन्दा बाल सुर्ख़ आंखों से बैठा हुआ है, अचानक मैंने अपने घुटनों में दर्द महसूस किया और किसी ने मेरी आंखों में उंगलियां डाल कर मुझे अन्धा कर दिया और कहा कि ऐ अल्लाह के दुश्मन तू अल्लाह के भेदों पर क्यों मुत्तला होता है।

(४६) बैहक़ी ने किताब अज़ाबिल-क़ब्र में अपनी सनद से यज़ीद बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि एक शख़्स एक क़बर के पास पहुंचा तो उसने आह, आह की आवाज़ सुनी। जब उसने कान लगा कर सुना

तो आवाज़ आ रही थी कि तुझ को तेरे अमल ने रुस्वा किया।

तारीखे मुक़रेज़ी में है कि ६६६ हिज. में एक क़ासिद आया कि एक शख़्स जो साहली इलाक़ा में रहता था उसकी बीवी मर गई वह उसको दफन करके आया लेकिन एक रूमाल जिसमें कुछ दिरहम थे क़बर ही में भूल गया। चुनांचे उसने शहर के फ़क़ीह को अपने साथ लिया कि क़बर खोद कर रूमाल निकाले। फ़क़ीह किनारे पर खड़ा हो गया। अब जो क़बर खोद कर देखी तो औरत की टांगें उसके बालों से बंधी हुई हैं। अब उसने बेहद कोशिश की कि उसको खोल दे लेकिन नाकाम रहा जब बहुत ज़ाइद कोशिश की तो उसको और उसकी बीवी को ज़मीन में धंसा दिया गया और फ़क़ीह एक दिन और एक रात तक वहीं बेहोश पड़ा रहा। फिर बादशह ने इस हादसा की इत्तिला शैख़ तक़ीयुद्दीन बिन दक़ीकुल-अब्द को लिख भेजी तो वह आए और उन्होंने खुद भी देखा और लोगों को भी दिखाया।

फाइदा : उलमा ने फरमाया कि अज़ाबे क़ब्र दरअसल अज़ाबे बरज़ख़ ही को कहते हैं लेकिन क़ब्र की तरफ इज़ाफ़त इसलिए की गई है कि बिल-उमूम लोग क़ब्र ही में मदफून होते हैं, वरना ख़्वाह कोई शख़्स जल जाए या डूब जाए या उसे कीड़े मकोड़े खा जाएं, या हवाओं में उड़ा दिया जाए, सब पर अज़ाबे बरज़ख़ होगा। अह्ले सुन्नत का इत्तिफ़ाक़ है कि अज़ाब व सवाबे रूह और जिस्म दोनों के लिए हैं।

(४७) इब्ने क़ैयिम ने कहा कि अज़ाबे क़ब्र की दो क़िस्में हैं : दाइमी, जो काफिरों और बाज़ गुनाहगारों के लिए है। ग़ैर दाइमी, ख़त्म होने वाला यह कम गुनाह वालों के लिए उनके जराइम के मुताबिक़ होगा फिर ख़त्म हो जाएगा यह दुआ और सदक़ा वग़ैरह से भी उठ जाता है।

(४८) याफ़ई कहते हैं कि मुर्दों को जुमा के रोज़ अज़ाब नहीं होता क्योंकि यह उस दिन की शराफत का सदक़ा है लेकिन यह बात काफिरों के लिए नहीं है बल्कि गुनहगार मुसलमानों के लिए है। लेकिन नस्फ़ी ने उसे आम रखा और कहा कि जुमा के दिन और रात में नीज़ पूरे रमज़ान के महीना में काफिर से भी अज़ाब ख़त्म हो जाता है और गुनहगार मुसलमान से जुमा के दिन और रात में अज़ाब उठ जाता है। और फिर क़्यामत तक दोबारा नहीं होता और जो जुमा के दिन या रात में मरता है उसको थोड़ी देर अज़ाब होता है और फिर हमेशा के लिए मुन्क़तअ हो जाता है। इसी तरह थोड़ी देर के लिए ज़ग़त-ए-क़ब्र होता है और फिर ख़त्म हो जाता है। लेकिन यह तमाम चीज़ें मुहताजे दलील हैं।

(४६) इब्ने क़ैयिम ने बदएअ में कहा कि, मैंने अबू यअ्ला के ख़त

से नक़ल किया कि अज़ाबे क़ब्र मुन्क़ता होना ज़रूरी है क्योंकि यह अज़ाब भी दुनिया से मुतअल्लिक़ है और दुनिया व माफीहा मुन्क़ता होने वाली है लेकिन यह मालूम नहीं कि यह किस मुद्दत में मुन्क़ता होगा। उसकी ताईद हन्नाद बिन सिर्री की रिवायत से होती है उन्होंने कहा कि काफिरों को ओंघ आएगी जिस में वह क़यामत तक नींद का मज़ा महसूस करेंगे जब अह्ले क़बूर को पुकारा जाएगा तो काफिर कहेगा कि हाए अफ़सोस हमें हमारी ख़्वाबगाह से किस ने उठाया,? तो जो मोमिन उसके क़रीब होगा वह कहेगा कि यह वही वादा है जो रहमान ने किया था और रसूलों ने सच कहा।

फाइदा : बदाए में इब्ने क़ैयिम रहमतुल्लाहि अलैहि ने ज़िक्र किया कि जब कोई नस्रानिया मर जाए कि जिसके पेट में मुसलमान बच्चा हो तो उस क़ब्र में अज़ाब भी नाज़िल होता है और नेमत भी, अज़ाब मां के लिए और नेमत बच्चा के लिए। और उसमें कोई तअज्जुब नहीं, यह तो ऐसा ही है जैसे एक क़ब्र में मोमिन और काफिर इकट्ठे दफन कर दिए जाएं तो इस क़ब्र में अज़ाब और नेमत दोनों ही होंगे।

इन चीज़ों का बयान जो अज़ाबे क़ब्र से नजात देती हैं!

(१) तबरानी ने कबीर में हकीम तिर्मिज़ी ने नवादिर में और अस्बहानी ने तरग़ीब में अब्दुर्रहमान बिन समरा से रिवायत की कि एक दिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और फरमाया कि आज रात मैंने एक अजीब ख़्वाब देखा कि एक शख़्स की रूह क़ब्ज़ करने को मलकुल-मौत तशरीफ़ लाए। लेकिन उसका मां-बाप का इताअत करना सामने आ गया और वह बच गया, और एक शख़्स पर अज़ाब छा गया लेकिन उसके वुज़ू ने उसे बचा लिया, एक शख़्स को शयातीन ने घेर लिया लेकिन अल्लाह के ज़िक्र ने उसे बचा लिया, एक शख़्स को अज़ाब के फरिश्तों ने घेर लिया लेकिन उसे नमाज़ ने बचा लिया। एक शख़्स ने देखा कि प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले हुए था और एक हौज़ पर पानी पीने जाता था मगर लौटा दिया जाता था कि इतने में उसके रोज़े आ गये और उसको सैराब कर दिया। एक शख़्स को देखा कि अंबिया हल्क़े बनाए बैठे थे, वह उनके पास जाना चाहता था लेकिन धुतकार दिया जाता था कि इतने में उसका गुस्ले जनाबत आया और उसको मेरे पास बिठा दिया। एक शख़्स को देखा कि उसके हर तरफ तारीकी ही तारीकी थी तो उसका हज व उमरा आ गया और उसको

मुनव्वर कर दिया। एक शख़्स को देखा कि वह मुसलमानों से गुफ़्तगू करना चाहता है लेकिन कोई उसको मुंह नहीं लगाता, तो सिल-ए-रहमी आकर मुमिनीन से कहती है कि तुम इससे कलाम करो। एक शख़्स के जिस्म और चेहरे की तरफ आग बढ़ रही है और वह अपने हाथ से बचा रहा है तो उसका सदक़ा आ गया और उसको बचा लिया। एक शख़्स को ज़बानिया ने चारों तरफ से घेर लिया लेकिन उसका अम्र बिल-मारूफ़ और नह्ये अनिल मुंकर आया और उसे बचा लिया और रहमत के फरिश्तों के हवाले कर दिया, एक शख़्स को देखा जो घुटनों के बल बैठा है, लेकिन उसके और खुदा के दर्मियान हिजाब है मगर उसका हुस्ने ख़ल्क़ आया और बचा लिया और खुदा से मिला दिया। एक शख़्स को उसका सहीफ़ा बाएं तरफ से दिया गया तो उसका खुदा से डरना आ गया और उसका सहीफा सीधे हाथ में दे दिया गया। एक शख़्स का वज़न हल्का रहा, मगर उसका सख़ावत करना आ गया और नेकियों का वज़न बढ़ गया। एक शख़्स जहन्नम के किनारे पर खड़ा था, लेकिन अल्लाह से डरना आ गया और वह बच गया एक शख़्स जहन्नम में गिर गया, लेकिन उसके वह आंसू आ गये जो उस ने ख़शीयते इलाही में बहाए और वह बच गया। एक शख़्स पुल सिरात पर खड़ा था और टहनी की तरह लरज़ रहा था, लेकिन उसका अल्लाह तआला के साथ हुस्ने ज़न आया और उसे बचा लिया और वह पुल सिरात से गुज़र गया। एक शख़्स जन्नत के दरवाज़े तक पहुंच गया लेकिन जन्नत का दरवाज़ा बन्दा हो गया तो तौहीद की शहादत आई और दरवाज़ा खुल गया और वह जन्नत में दाख़िल हो गया। कुछ लोगों के होंठ काटे जा रहे थे मैंने जिब्रील से दरयाफ़्त किया कि यह कौन हैं? तो उन्होंने बताया कि यह लोगों के दर्मियान चुग़ल ख़ोरी करने वाले हैं। कुछ लोगों को उनकी ज़बानों से लटका दिया गया था। मैंने जिब्रील से उनके बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि यह लोगों पर बिला वजह इल्ज़ाम गुनाह लगाने वाले हैं। कुरतबी कहते हैं कि यह हदीस बहुत ही अज़ीम है इसमें ऐसे मख़्सूस आमाल का ज़िक्र किया गया है जो ख़ास आफ़ात से महफ़ूज़ रखेंगे।

(२) तिर्मिज़ी, इब्ने माजा ने मिक़्दाम बिन मअ्दी करब से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शहीद को खुदा के यहां छे: चीज़ें मिलेंगी, ख़ून के पहले ही क़तरा में उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी और अपना ठिकाना जन्नत में देख लेता है, अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ हो जाता है, फ़ज़्अ़े अक्बर से महफ़ूज़ हो जाता

है, उसके सर पर वक़ार का ताज रखा जाता है वह ताज ऐसा होता है कि उसका एक याकूत दुनिया व माफीहा से बेहतर होता है और बेहतर हूरे ऐन से शदी होती है और सत्तर रिश्तेदारों के हक़ में उसकी शफ़ाअत क़बूल की जाती है।

(३) तिर्मिज़ी और बैहक़ी ने सम्मान बिन सर्द और ख़ालिद बिन अरफ़िता से रिवायत की और उन दोनों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो पेट की बीमारी में मरा जन्नत में दाख़िल होगा, इब्ने माजा ने इसे हसन कहा।

(४) अबू नईम ने सलमान से रिवायत की कि उनको किसी यहूदी ने बताया कि नमाज़ में ज़्यादा देर क़्याम करने से पुल सिरात पर अम्न मिलती है और लम्बा सज्दा करने से अज़ाबे क़ब्र से हिफ़ाज़त होती है।

(५) अब्द ने अपनी मुसनद में इब्ने अब्बास से रिवायत की कि उन्होंने एक शख़्स से कहा, क्या मैं तुमको एक हदीस का तोहफ़ा दूं जिस से तुम खुश हो जाओ! उसने कहा कि क्यों नहीं। आपने फरमाया कि सूरः मुल्क खुद भी पढ़ो और अपने बीवी, बच्चों, और घर में रहने वाले बच्चों नीज़ पड़ोसियों को भी सिखाओ क्योंकि कि यह नजात दिलाने वाली है और रब से मुख़ासमा करके नजात दिलाएगी।

(६) ख़लफ़ बिन हिशाम ने फ़ज़ाइले कुरआन में और हाकिम व बैहक़ी ने इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की, सूरः मुल्क मानेआ है यानी अज़ाबे इलाही को रोकती है। जब अज़ाबे क़ब्र सर की जानिब से आता है तो उसे रोक दिया जाता है और कहा जाता है कि उसके पास न आ। क्योंकि उसने सूरः मुल्क याद की है। जब अज़ाब पैरों की तरफ़ से आता है तो कहती है कि ऐ अज़ाब तू लौट जा क्योंकि यह मुझ को उन पैरों पर खड़े हो कर पढ़ता था।

(७) निसई ने इब्ने मसऊद से रिवायत की कि जिस ने सूरः तबारक हर रात पढ़ी खुदा उसे अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखेगा। और हम इस सूरत को हुज़ूर अलैहिस्सलाम के अहदे मुबारक में मानेआ कहते थे।

(८) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में बसनदे ज़ईफ़ अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि एक शख़्स मर गया और उसे सूरः तबारक के अलावा कुछ कुरआन याद न था। अब फरिश्ता अज़ाब क़ब्र में आया तो वह सूरत नमूदार हुई। तो फरिश्त-ए-अज़ाब ने कहा कि चूंकि तू मौजूद है इसलिए मैं वापस जाता हूं। लेकिन मैं न तो तेरे लिए न अपने लिए और न उस शख़्स के लिए कुछ नफ़ा नुक़्सान का मालिक हूं अगर तू उसकी नजात

चाहती है तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में जा और उसकी शफ़ाअत कर। तो सूरत बारगाहे ईज़्दी में हाज़िर होती है और अर्ज़ परदाज़ होती है कि ऐ मेरे रब! उस शख़्स ने मुझ ही को तेरी किताब में से मुन्तख़ब कर लिया था, तो मुझ से सीखा और पढ़ा तो क्या तू इसको जहन्नम रसीद फ़रमाना चाहता है अगर तू उसके साथ ऐसा करने वाला है तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। तो ख़ुदा फ़रमाएगा कि तू शायद नाराज़ हो गया। कुरआन कहेगा कि मुझे नाराज़ होने का हक़ है। ख़ुदा फ़रमाएगा। जा मैंने उसके हक़ में तेरी शफ़ाअत क़बूल की, चुनांचे वह फ़रिश्ता को क़ब्र में आ कर यह इत्तिला देता है और फ़रिश्ता बिला अज़ाब दिए चला जाता है। वह सूरत आकर उस शख़्स के मुंह पर अपना मुंह रखती है और कहती है कि ऐ मुंह तुझे ख़ुशख़बरी हो क्योंकि तू मुझे बहुत पढ़ता था और सीने को ख़ुश ख़बरी हो कि यह मुझे याद रखता था और ख़ुशख़बरी उन क़दमों को कि यह मुझे खड़े हो कर पढ़ते थे और वह उसको क़ब्र में मानूस करने के लिए रहती है। जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह इरशाद फ़रमाया तो हर छोटे, बड़े, आज़ाद और गुलाम सब ही ने उसे याद कर लिया और हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस सूरत का नाम मुन्जीह (निजात वाली) रखा।

(९) अबू उबैदा ने फ़ज़ाइल में और बैहक़ी ने दलाइल में इब्ने मसऊद से रिवायत की कि जब कोई शख़्स मर जाता है तो उसके गिर्द आग जलाई जाती है तो आग के क़रीब जो हिस्सा होता है वह उसे जला देती है। और अगर कोई शख़्स मर जाए और उस ने सिर्फ़ सूरः तबारक पढ़ी हो, तो जब फ़रिश्ते सर की जानिब से आएंगे तो वह कहेगी कि यह तो मुझ को पढ़ता था, और पैरों की जानिब से आएगी तो वह कहेगी कि यह मुझे पढ़ते हुए खड़ा रहता था और पेट की तरफ आएगी तो वह कहेगा कि यह मुझे याद रखता था।

(१०) दारमी ने अपनी मुसनद में ख़ालिद बिन मेअ्दान से रिवायत की अलिफ़ लाम मीम तंज़ील क़ब्र में क़ब्र वाले की तरफ़ से झगड़ा करेगी कि ऐ अल्लाह! अगर मैं तेरी किताब से हूँ तो उसके बारे में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा। और अगर मैं तेरी किताब से नहीं तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। और वह परिन्द की मानिन्द हो कर अपने पर उस पर छा लेगी। और सूरः तबारक के बारे में भी यही रिवायत है और ख़ालिद उनको पढ़े बग़ैर न सोते थे।

(११) तिर्मिज़ी ने जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम अलिफ़ लाम तंज़ील और सूरः तबारक पढ़े बग़ैर न सोते थे।

(१२) रौज़र्रियाहीन में बाज़ यमनी सालेहीन से मरवी है कि वह एक मुर्दा को दफन करके वापस होने लगे तो उन्होंने क़ब्र में मारने और कूटने की आवाज़ सुनी। फिर क़ब्र से एक काला कुत्ता नमूदार हुआ, शैख़ ने कहा कि तेरी ख़राबी हो तू कौन है? उसने कहा कि मैं मैयत का अमल हूं। शैख़ ने कहा कि क्या तेरी पिटाई हो रही थी? या उस मुर्दे की? उसने कहा कि सूरः यासीन और दूसरी सूरतें उसके पास थीं वह मेरे और उसके दर्मियान हाइल हो गई और मुझ को मार भगाया।

(१३) अस्बहानी ने तरग़ीब में इब्ने अब्बास से रिवायत की कि जिसने जुमा के दिन मग़्रिब के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ी और हर रकअत में सूरः फातिहा और इज़ा ज़ुलज़िलत पन्द्रह मरतबा तो अल्लाह तआला उस पर सकरात और अज़ाबे क़ब्र आसान फरमाएगा और क़्यामत के रोज़ वह बआसानी पुल सिरात पर से गुज़र जाएगा।

(१४) अबू यअ्ला ने हज़रत अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जुमा के रोज़ मरने वाला अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगा।

(१५) बैहक़ी ने कहा कि इब्ने रजब ने बसनदे ज़ईफ़ अनस बिन मालिक से रिवायत की कि रमज़ानुल-मुबारक में अज़ाबे क़ब्र मुर्दों पर नहीं होता।

(१६) रौज़ुर्रियाहीन में किसी बुज़ुर्ग से मरवी है कि उन्होंने एक रोज़ खुदा तआला से दुआ की कि वह उन्हें अहले क़ुबूर के मक़ामात दिखा दे। तो एक रोज़ क्या देखता हूं कि क़ब्रें फट गईं, अब उन में कुछ मुर्दे तो रेशम पर सो रहे हैं और कुछ दीबा पर, कुछ फूलों की सेज पर और कुछ तख़्तों पर। कुछ हंस रहे हैं तो कुछ रो रहे हैं। तो मैंने अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहता तो इन सबको एक ही मक़ाम अता फरमा देता। तो क़ब्र वालों ही में से किसी ने पुकार कर कहा कि ऐ फलां! यह क़ब्रें आमाल की मनाज़िल हैं, जो सुन्दुस नशीं हैं वह खुश ख़ल्क़ थे जो हरीर व दीबानशीन हैं वह शुहदा हैं। जो फूलों की सेज पर सोने वाले हैं वह रोज़ादार हैं। और तख़्त वाले अल्लाह के बारे में मुहब्बत करने वाले हैं, रोने वाले गुनहगार हैं, हंसने वाले तौबा शिआर हैं।

मुर्दों के अहवाल का बयान

कि वह क़ब्र में मानूस होते हैं, नमाज़ पढ़ते, तिलावत करते, ज़्यारत करते खुश होते और लिबास पहनते हैं

(१) तबरानी, अबू यअ्ला और बैहक़ी ने शुअ़ब में और अस्बहानी ने तरग़ीब में इब्ने उमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कलिमा गो लोगों पर न मौत के वक़्त वहशत होगी न क़ब्र में न हश्र में।

(२) अबुल-क़ासेम जेली ने दीबाज में इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिब्रील ने मुझे ख़बर दी कि कलिम-ए-ला इलाहा इल्लल्लाह मुसलमान के लिए मौत के वक़्त क़ब्र में और क़ब्र से निकलने के वक़्त बाइसे उन्स है।

(३) अबू यअ्ला और बैहक़ी ने और इब्ने मुन्दह ने अनस से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम ज़िन्दा हैं औ र अपनी क़बरों में नमाज़ पढ़ते हैं।

(४) मुस्लिम ने अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेअ़राज की शब में मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी क़ब्र में नमाज़ पढ़ते हुए देखा। इस हदीस को बहुत से सहाबा ने रिवायत किया।

(५) इब्ने सअद ने तब्क़ात में और इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ़ में और इमाम अहमद ने ज़ुहद में अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि हम से हम्माद बिन सलमा ने कहा कि साबित बनानी ने दुआ की कि ऐ अल्लाह तआला! अगर तू किसी को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ दे तो मुझको दे।

(६) अबू नईम ने यूसुफ़ से उन्होंने अतीया से रिवायत की। उन्होंने कहा कि मैंने साबित को हुमैद तवील से कहते हुए सुना कि ऐ हुमैद! क्या तुम्हें कोई ऐसी हदीस मालूम है जिससे पता चलता हो कि अंबिया अलैहिस्सलाम के अलावा दीगर लोग भी अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं? उन्होंने कहा कि नहीं। उन्होंने कहा कि फिर साबित ने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! अगर तू किसी को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दे तो साबित को ज़रूर देना। जबीर कहते हैं कि मैं खुदाए वहदहू ला शरीक की क़सम खा कर कहता हूं कि मैंने साबित बनानी को क़ब्र में उतारा मेरे साथ हुमैद भी थे। जब हम ईंटें रख चुके तो अचानक एक ईंट गिर पड़ी और मैंने साबित को देखा कि वह अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे। खुदा तआला ने उनकी दुआ को रद न फरमाया।

(७) इब्ने जरीर ने तहज़ीबुल-आसार में और अबू नईम ने इब्राहीम बिन सम्मा मुहलबी से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मुझे सुब्ह के वक़्त क़िला के क़रीब से गुज़रने वालों ने बताया कि जब हम साबित बनानी

की क़ब्र के पास से गुज़रते हैं तो कुरआन पढ़ने की आवाज़ आती है।

(८) इब्ने मुन्दह ने अपनी सनद से बयान किया कि अबू हम्माद जो एक मुत्तक़ी गोरकुन थे उन्होंने बताया कि जुमा के रोज़ दोपहर को मैं क़ब्रिस्तान में गया तो जिस क़ब्र से गुज़रा कुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनी।

(६) तिर्मिज़ी और बैहक़ी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि एक सहाबी ने किसी क़ब्र पर अपना ख़ेमा लगा लिया और उनको पता न था कि यह क़ब्र है, तो उन्होंने सुना कि अन्दर कोई शख़्स सूरः मुल्क पढ़ रहा है, जब वह पूरी सूरः मुल्क पढ़ चुका। तो वह सहाबी हुज़ूर की ख़िदमत में आए और वाक़या बयान किया तो आपने फरमाया कि यह अज़ाब से नजात दिलाने वाली और अज़ाब को रोकने वाली है।

अबू क़ासिम सअदी कहते हैं, इस से मालूम हुआ कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस अम्र पर मुहरे तस्दीक़ सबत फ़रमा दी कि मैयत क़ब्र में कुरआन पढ़ती है, क्योंकि आपने इस सहाबी की तरदीद न फरमाई।

(१०) इमाम कमालुद्दीन बिन जमलकानी ने किताबुल-अमल अल-मक़्बूल फ़ी ज़ियारतुर्रसूल में फरमाया कि यह हदीस इस सिलसिला में कि मैयत क़ब्र में कुरआन की तिलावत करती है और इस रिवायत में बाज़ औलिया अलैहिर्रहमा का क़बरों में तिलावते कुरआन करना और नमाज़ पढ़ना वारिद है, तो जब औलिया अल्लाह का यह हाल है तो अंबिया का क्या मक़ाम होगा।

(११) हाफ़िज़ ज़ैनुद्दीन बिन रजब ने किताब अह्लुल-कुबूर में लिखा कि बाज़ औक़ात अल्लाह तआला अपने बाज़ नेक बन्दों को क़बरों में आमाले सालेहा की तौफ़ीक़ देता है लेकिन इस पर सवाब मुरत्तब नहीं होता लेकिन दारुल-अमल मुन्क़ता हो चुका है। यह इसलिए होता है कि वह अल्लाह की याद और उसकी इताअत से लज़्ज़त हासिल करे जैसा कि मलाइका किराम अलैहिमुस्सलाम और अह्ले जन्नत, जन्नत में हासिल करेंगे, क्योंकि ज़िक्रे इलाही अह्ले जन्नत के लिए अज़ीम तर नेमतों में से है।

(१२) अबुल-हसन बिन बरा ने किताबुर्रौज़ा में अपनी सनद से रिवायत की कि इब्राहीम गौरकुन ने मुझे इत्तिला दी कि मुझे क़ब्र खोदते वक़्त एक ईंट मिली, अब जो मैंने उसे सूंघा तो उस में मुश्क की खुशबू महक रही थी। मैंने क़ब्र के अन्दर देखा तो एक बूढ़ा बैठा हुआ कुरआन पढ़ रहा था।

(१३) इब्ने रजब ने अपनी सनद से बयान किया कि अबुल-हसन सामरी जो एक मुत्तक़ी आदमी थे और सामरा के ख़तीब थे। उन्होंने सामरा के क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र दिखाते हुए कहा कि हम यहां से मुसलसल सूरः तबारक और सूरः मुल्क पढ़ने की आवाज़ सुनते थे।

(१४) हाफ़िज़, अबू बकर ख़तीब ने अपनी सनद से रिवायत किया कि ईसा बिन मुहम्मद ने कहा मैंने एक रोज़ अबू बकर बिन मुजाहिद को ख़्वाब में देखा कि वह पढ़ रहे हैं, मैंने कहा कि आप तो मुर्दा हैं, कैसे पढ़ रहे हैं? तो उन्होंने कहा कि मैं हर नमाज़ के बाद और ख़त्मे कुरआन के बाद दुआ करता था कि ऐ अल्लाह! तू मुझे क़बर में तिलावते कुरआन की तौफ़ीक़ देना, इसलिए मैं पढ़ता हूं।

(१५) ख़लाल ने किताबुस्सुन्नह में अपनी सनद से इब्ने अब्बास का क़ौल नक़ल किया कि उन्होंने फरमाया कि मोमिन को क़ब्र में एक मुस्हफ़ दिया जाता है जिसमें देख कर वह पढ़ता है।

(१६) हाफ़िज़ अबुल-उला हम्दानी को उनकी वफ़ात के बाद किसी ने एक ऐसे शहर में देखा कि जिसके दरो दीवार सब किताबों के बने हुए हैं। तो उन से इसका सबब पूछा गया तो उन्होंने बताया कि मैंने अल्लाह तआला से दुआ की थी कि जिस तरह मैं दुनिया में इल्म में मसरूफ़ हूं इसी तरह आख़िरत में भी मस्रूफ़ रखना। तो अब यह मसरूफ़ियत यहां भी मुझ को मिल गई है।

(१७) इब्ने मुन्दह, अबू अहमद और हाकिम ने कुना में बसनद ज़ईफ़ रिवायत की कि तलहा बिन उबैदुल्लाह ने कि मेरा कुछ माल जंगल में था चुनांचे मैं वहां गया, इत्तिफ़ाक़न रात हो गई तो मैं अब्दुल्लाह बिन अमरु बिन हज़ाम की क़ब्र के पास लेट गया तो मैंने बेनज़ीर तिलावते कलाम पाक की आवाज़ सुनी। मैंने यह वाक़या हुज़ूर अलैहिस्सलाम से अर्ज़ कर दिया। तो आपने फरमाया कि यह अब्दुल्लाह की आवाज़ थी, क्या तुम को मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने इन लोगों की रूहें क़ब्ज़ फरमा कर याक़ूत व ज़बरजद की क़िन्दीलों में लेकर जन्नत के बीच में लटका दी हैं। जब रात होती तो उनकी रूहें वापस कर दी जाती हैं और फिर सुबह को उनको उनके मक़ाम पर वापस कर दिया जाता है।

(१८) निसई, हाकिम और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में हज़रत आइशा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं सो गया तो अपने आपको जन्नत में पाया, तो मैंने एक क़ारी को कुरआन पढ़ते हुए सुना। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन है तो

मुझे बताया गया कि यह हारेसा बिन नौमान हैं। तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने तीन मरतबा फरमाया कज़ालिकल-बर्रु। और वह अपनी मां के पेट ही फरमांबरदार थे।

(१६) बैहक़ी ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि एक मरतबा ख़्वाब में अपने आपको मैंने जन्नत में देखा। मैं जन्नत ही में था कि मैंने कुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनी। पूछा कि यह कौन हैं? तो मुझे बताया गया कि यह हारेसा बिन नौमान हैं और इसी तरह फरमांबरदार शख़्स को जज़ा मिलती है।

(२०) इब्ने अबी अद्दुनिया ने यज़ीद रक़ाशी से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि जब मोमिन मर जाता है और कुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ने से बाक़ी रह जाता है, तो अल्लाह तआला फरिश्ते उस पर मुक़र्रर फरमा देता है कि वह क़यामत तक कुरआन याद कराएं ताकि वह क़यामत के दिन मआ अपने अहल व अयाल के उठे। इस क़िस्म की दीगर रिवायात भी दर्ज हैं।

(२१) इब्ने मुन्दह ने आसिम सक़्ती से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि हम ने बल्ख़ में एक क़बर खोदी तो उसमें एक सूराख़ था, उसमें से जब देखा तो एक शैख़ जो सब्ज़ा से ढका हुआ था तिलावते कुरआन में मसरूफ़ था।

(२२) इब्ने मुन्दह ने अबुन्नस्र नीश पूरी से रिवायत की। यह एक गौरकुन थे और मुत्तक़ी आदमी थे कि मैंने एक क़बर खोदी, लेकिन उस में दूसरी क़बर की तरफ़ रास्ता निकल आया तो मैंने देखा कि हसीन व जमील उम्दा कपड़े और बेहतरीन ख़ुश्बू वाला जवान उसमें पालती मारे बैठा है और कुरआन पढ़ रहा है। नौजवान ने मेरी तरफ़ देख कर कहा कि क्या क़यामत बरपा हो गई? मैंने कहा नहीं, तो उसने कहा कि जहां से मिट्टी हटाई थी वहीं रख दो। तो मैंने मिट्टी वहीं रख दी। मैं कहता हूं कि उसको इब्ने नज्जार ने तारीख़े बग़दाद में ज़िक्र किया।

(२३) अबू नईम ने मुजाहिद अलैहिर्रहमा से फ़ला नफ़्सहुम युम्हिदून। की तफ़्सीर यह बयान की कि वह अपने ही नफ़्सों के लिए क़ब्र में बिछाते हैं।

(२४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने कुबूर में अपनी सनद से रिवायत की कि जिस ने अल्लाह तआला की इताअत की, क़ब्र उसके लिए बेहतरीन ठिकाना है।

(२५) हारिस बिन उसामा ने अपनी सनद से हज़रत जाबिर से

रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अपने मुर्दों को अच्छा कफन दो कि वह क़बरों में एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं और एक दूसरे पर फख़्र करते हैं। सहीह मुस्लिम में भी इस क़िस्म की रिवायत है। उलमा फरमाते हैं कि अच्छे कफन से मुराद यह है कि वह सफेद, पाक व साफ हो, क़ीमती न हो। क्योंकि हदीस शरीफ़ में ज़ाइद क़ीमती कफन की मुमानेअत फरमाई है। ख़तीब तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, वग़ैरहुम ने भी इस क़िस्म की रिवायात बयान कीं। बैहक़ी ने यह हदीस बयान करने के बाद फरमाया कि अबू बकर का यह फरमान कि कफन तो पीप वग़ैरह के लिए है, अहादीस से मुतआरिज़ नहीं, क्योंकि हमारी नज़र में तो ऐसा ही है लेकिन अल्लाह तआला उसको जैसा चाहेगा अपने इल्म के मुताबिक़ फरमा देगा। जैसे कि शुहदा का मुआमला है कि हमारी निगाहे ज़ाहिरबीन में वह कुछ ही क्यों न हों मगर इल्मे इलाही में वह इस तरह हैं जैसे कि अल्लाह ने उनके मुतअल्लिक़ ख़बर दी और अगर उनका बातनी हाल हम पर मुंकशिफ़ हो जाता तो ईमान बिल-ग़ैब ही ख़त्म हो जाता।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-मुनाजात में अपनी सनद से राशिद बिन सअद से रिवायत की कि एक शख़्स की बीवी का इंतिक़ाल हो गया तो उसने ख़्वाब में बहुत सी औरतें देखीं लेकिन उसकी बीवी उन में न थी उस ने उस औरत के न आने का सबब दरयाफ़्त किया। तो उन्होंने कहा कि तुमने उस के कफन में कोताही की इसलिए वह अब आने में शर्म महसूस करती है। वह शख़्स हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और वाक़या अर्ज़ किया तो आपने फरमाया कि किसी सिक़्ह आदमी का ख़्याल रखना। इत्तिफ़ाक़न एक अंसारी की मौत का वक़्त आ गया उसने अंसारी से कहा कि मैं अपनी बीवी का कफन देना चाहता हूं। अंसारी ने कहा कि अगर मुर्दा मुर्दे को पहचान सकता है तो मैं पहुंचा दूंगा। चुनांचे यह शख़्स दो ज़ाफरानी रंग के कपड़े लाया और अंसारी के कफन में रख दिए। अब जो रात को ख़्वाब में देखा तो वह औरत वह कपड़े पहने खड़ी है यह हदीस अगरचे मुरसल है लेकिन उसकी अस्नाद में कुछ हरज नहीं।

(२७) इब्ने अबी शैबा ने उमैर बिन असवद से रिवायत की कि मआज़ बिन जबल रज़ि अल्लाहु अन्हु अपनी बीवी के लिए वसीयत करके चले गये, वह मर गईं। लोगों ने उनको दो कपड़ों में कफ़ना कर दफन कर दिया अब जब वह आए तो उन्होंने दरयाफ़्त किया कि क्या कफन पहनाया? कहा कि पुराने दो कपड़े कफ़न में दिए। तो उन्होंने निकाल

कर उनको अच्छा कफन दिया और कहा कि अपने मुर्दों को अच्छा कफन दो क्योंकि यह उसी कफन में उठेंगे।

(२८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने शअ़बी से रिवायत की कि जब मैयत को उसकी क़बर में रख दिया जाता है तो उसके मरे हुए रिश्तेदार उस से पूछते हैं कि फलां व फलां को किस हाल में छोड़ा?

(२६) मुजाहिद से मरवी है कि जब किसी मुर्दे का बच्चा सालेह होता है तो क़ब्र में मुर्दे को उसकी बशारत दे दी जाती है। सुदी अलैहिर्रहमा ने अल्लाह तआला के फरमान व यस्तब्शिरूना बिल्लज़ीना लम यल्हक़ू बेहिम मिन ख़ल्फ़ेहिम। की तफ़सीर फरमाते हुए इरशाद फरमाया कि शहीद के पास एक किताब लाई जाएगी जिस में उन लोगों के नाम दर्ज होंगे जो उस से मुलाक़ात करने के लिए जल्द ही आने वाले होंगे। वह यह देख कर खुश होगा बिल्कुल इसी तरह जैसे दुनिया वाले अपने किसी मुसाफिर की आमद से खुश होते हैं।

(३०) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने अबु हुरैरा से रिवायत की कि मोमिन से क़ब्र में कहा जाएगा कि तू मुत्तक़ीन की तरह सो जा।

(३१) इब्ने असाकिर ने सईद बिन ज़ुबैर से रिवायत की कि हज़रत इब्ने अब्बास ताइफ़ में इंतिक़ाल फरमा गये तो मैं उनके जनाज़े में जा कर शरीक हुआ तो मैंने एक सफेद परिन्द देखा जो उनके हम्राह क़ब्र में दाख़िल हो गया और फिर मैंने उसे निकलते हुए न देखा। जब वह मदफून हो गये तो किसी ने यह आयत पढ़ी कि : या ऐयतुहन्नफ़्सुल-मुतमइन्नहः इरजिई इला रब्बिका राज़ियतन मर्ज़ीया। और पढ़ने वाला नज़र न आया। आम तौर पर इस क़िस्म के परिन्द को मुर्दे के अमल की मिसाली सूरत समझा जाता था।

(३२) इब्ने असाकिर ने अपनी सनद से इब्ने अब्बास से रिवायत की कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की कि मैंने देखा कि आप दहिया कलबी से कलाम फरमा रहे हैं तो मैंने मुनासिब न समझा कि आपकी गुफ़्तगू को क़तअ कर दूं। तो आपने फरमाया कि तुम्हारी निगाह जाती रहेगी और मौत के क़रीब अल्लाह तआला वापस कर देगा। चुनांचे जब उनको गुस्ल के तख़्ता पर रखा गया तो एक परिन्द बेहद सफेद आया और कफन में दाख़िल हो गया तो इकरमा ने हैरत से कहा यह क्या है? जब उनको दफन कर दिया गया तो यह आयत सुनी गई कि या ऐयतुहन्नफ़्सुल-मुत्मइन्नहः इसी हदीस की दीगर रिवायात में है कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास की निगाह उनकी आख़िर उम्र में ठीक हो गई।

(३३) इब्ने अबी अद्दुनिया, इब्ने अबी शैबा और हाकिम ने रिवायत की कि हुज़ैफ़ः बिन यमान रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपनी वफात के वक़्त वसीयत की कि कफन के लिए दो कपड़े ख़रीद लेना ज़्यादा महंगे न हों, अगर मैं नेक हूंगा तो उस से अच्छे पहना दिए जाएंगे वरना वह भी जल्द ही छीन लिए जाएंगे।

(३४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने यह्या बिन राशिद से रिवायत की कि उमर बिन ख़त्ताब ने वसीयत की कि मेरे मरने के बाद मेरा कफ़न दर्मियाना दरजा का रखना। क्योंकि अगर मैं इन्दल्लाह नेक हूंगा, तो मुझे इससे अच्छा दे दिया जाएगा वरना यह भी जल्द छीन लिया जाएगा। और क़ब्र खोदने में ज़्यादती न करना क्योंकि अगर अल्लाह ने मेरे लिए भलाई लिखी है तो उसे हद्दे निगाह तक वसीअ कर दिया जाएगा वरना इतना तंग किया जाएगा कि मेरी पिस्लियां एक तरफ़ से दूसरी तरफ निकल जाएंगी।

(३५) अब्दुल्लाह इब्ने अहमद ने ज़वाइदुज़्ज़ुहद में उबादा बिन सामित से रिवायत की कि जब हज़रत अबू बकर की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने हज़रत आइश रज़ि अल्लाहु अन्हु को वसीयत की कि मेरे इन दोनों कपड़ों को धो लेना और उन्हीं में कफ़ना देना क्योंकि तुम्हारे बाप को या तो इस से अच्छे कपड़े दे दिए जाएंगे या यह भी छीन लिए जाएंगे।

(३६) सईद बिन मन्सूर ने आइशा बिन्ते अहबान बिन ग़फ़्फ़ारी से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि मेरे बाप ने वसीयत की थी कि हम उन को क़मीस में दफन न करें। लेकिन जब उन की वफ़ात हो गई तो हम ने उनको क़मीस ही में दफन कर दिया। अब जो सुबह को देखा तो वह क़मीस खूंटी पर लटकी हुई है। तबरानी में भी यह रिवायत मौजूद है मगर इसमें बजाए आयशा के अदीश बिन्ते अहबान है।

(३७) इब्ने नज्जार ने अपनी तारीख़ में ख़लफ़ बरवानी से रिवायत की कि एक शख़्स का इंतिक़ाल हो गया। जब कफ़नों में से एक कफन उसके लिए मुन्तख़ब किया गया तो वह कुछ बढ़ा हुआ था, लोगों ने इतनी मिक़्दार में काट दिया। तो उसे किसी ने ख़्वाब में देखा वह कह रहा था कि तुम ने कफन में बुख़्ल किया। लेकिन मेरे रब ने मुझे लम्बा कफन दे दिया। यह कह कर उसने कफन वापस कर दिया। अब सुबह को जब देखा गया तो दूसरे कफ़नों में वह कफन भी पाया गया जो उसको पहनाया गया था।

(३८) [illegible] की कि उन्होंने कहा कि

ताउफस ने अपने बेटे को वसीयत की कि जब तुम मुझ को दफन कर दो तो थोड़ी देर बाद मुझ को क़बर में देखना। अगर उसमें न पाओ तो अल्लाह तआला की तारीफ़ करना। वरना *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।* पढ़ देना। तो उनके साहबज़ादे ने बताया कि मैंने हस्बे वसीयत उनको देखा तो उनको न पाया और लड़के के चेहरे पर ख़ुशी के आसार थे। इब्ने अबी अद्दुनिया ने क़ुबूर में इसको रिवायत किया।

(३९) बैहक़ी ने दलाइल में अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने एक लश्कर तैयार किया और उस पर उला बिन ख़ज़रमी को कमांडर मुक़र्रर किया। मैं भी इस जंग में शरीक था। जब हम वापस हुए तो उनका इंतिक़ाल हो गया। हमने उनको दफन कर दिया। जब दफन से फारिग़ हुए तो एक शख़्स आया और उसने कहा कि यह ज़मीन मुर्दों को क़बूल नहीं करती है फेंक देती है, एक दो मील के फासिला पर दफन कर दो तो अच्छा है। चुनांचे हम ने उनको निकालना शुरू किया, अब जब लहद तक पहुंचे तो वह वहां न थे और क़ब्र हद्दे निगाह तक वसीअ थी नीज़ नूर से मामूर थी। हम ने मिट्टी इसी तरह डाल दी और हमने कूच किया। अबू हुरैरह की रिवायत से भी यही वाक़या मरवी है।

(४०) अबुल-हसन बिन बुशरान ने अपनी सनद से अब्दुल-अज़ीज़ बिन अबी विराद से हिकायत की कि मक्का में एक औरत हर रोज़ बारह हज़ार मरतबा तस्बीह पढ़ती थी। जब वह मर गई तो लोग उसको क़बर तक ले गये। जब क़बर के पास पहुंचे तो वह लोगों के हाथों पर से ग़ायब हो गई।

(४१) अबू नईम ने रिवायत की कि जब कुरज़ बिन वबरह का इंतिक़ाल हो गया तो एक शख़्स ने देखा कि मुर्दे क़बरों पर नए कपड़े पहने हुए बैठे हैं तो उसने दरयाफ़्त किया कि क्या मुआमला है तो उन्होंने जवाब दिया कि क़बर वालों को कुरज़ की आमद की ख़ुशी में नए कपड़े पहनाए गये हैं।

(४२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुर्रुक़ा वल-बुक़ा में मिस्कीन बिन बकर से रिवायत की कि मदाद अजली को जब दफन करने के वास्ते ले गये तो तमाम क़ब्र में फूल ही फूल बिछे हुए थे। कुछ लोगों ने उस में से फूल उठा लिए तो वह सत्तर रोज़ तक तरोताज़ा रहे और लोग उनको देखते रहे जब यह मुआमला उन तक पहुंचा तो उसने लोगों को मुंतशिर कर दिया और फूल अपने क़ब्ज़ा में ले लिए लेकिन उसके पास से वह ग़ायब हो गये और पता न चला कि कहां गये और कैसे गये :

(४३) हाफ़िज़ अबू बकर ख़तीब ने मुहम्मद बिन मुख़्लिद से रिवायत की कि मेरी वालिदा का इंतिक़ाल हो गया तो मैं उनको क़बर में उतारने के लिए उतरा तो मैंने देखा कि पास वाली क़बर से कुछ हिस्सा खुल गया है तो मुझे एक शख़्स नज़र आया जो नए कफ़न में मल्बूस था और उसके सीना पर चमेली के फूलों का एक गुल्दस्ता रखा था, तो मैंने उसे उठाया तो वह बिल्कुल तरोताज़ा थे मेरे साथ दूसरे हज़रात ने भी सूंघा। फिर हम ने उसको वहीं रख दिया और उस सूराख़ को बन्द कर दिया।

(४४) हाफ़िज़ अबुल-फ़रज़ बिन अल-जौज़ी ने अपनी सनद से रिवायत की कि इमाम अहमद की क़बर के पास एक क़बर खो दी तो एक मुर्दे के सीने पर फूल रखे हुए थे और वह हिल रहे थे। उन्होंने अपनी तारीख़ में रिवायत की कि बसरा में एक टीला गिर गया, उस में हौज़ की तरह एक जगह थी उस में सात आदमी मदफ़ून थे उन में से हर एक का कफन और बदन दुरुस्त था और मुश्क की खुशबू महक रही थी, उनमें से एक नौजवान था जिसके सर पर बाल थे और उसके होंठ तर थे गोया कि उसने अभी पानी पिया है। उसकी आंखों में सुर्मा लगा हुआ था। उसकी कोख में तल्वार का एक निशान था। तो बाज़ लोगों ने उसका बाल लेना चाहा तो वह बाल ज़िन्दा इंसान के बाल की तरह मज़्बूत था।

(४५) इब्ने सअद ने तब्क़ात में अबू सईद खुदरी से रिवायत की, उन्होंने फरमाया कि मैंने हज़रत सअद की क़बर खोदने में शिर्कत की। जब हम क़बर खोदते थे तो मुश्क की खुशबू महकती थी।

(४६) इब्ने सअद ने मुहम्मद बिन शरहबील बिन हसना से रिवायत की कि एक शख़्स ने हज़रत सअद रज़ि अल्लाहु अन्हु की क़ब्र से एक मुट्ठी मिट्टी ली और क़ब्र में उसको ग़ौर से देखा तो वह मुश्क थी।

(४७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुग़ीरह बिन हबीब से रिवायत की। एक शख़्स को ख़्वाब में किसी ने देखा। उस शख़्स की क़ब्र से खुश्बुएं आती थीं। उस से दरयाफ़्त किया गया कि यह खुशबू कैसी हैं, उसने कहा कि यह तिलावते कुरआन और रोज़ों की खुशबुएं हैं।

(४८) इमाम अहमद ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हम्राह जा रहे थे कि एक आराबी आया और उसने कहा कि मुझे इस्लाम की तालीम दीजिए। इसी रिवायत में है कि अभी यह बातें हो ही रही थीं कि वह अपनी सवारी पर गिर पड़ा और मर गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ने फरमाया कि थका कम और नेमतें ज़ाइद हासिल कीं, मेरा ख़्याल है कि यह भूखा मर गया। बेशक मैंने उसकी दोनों बीवियों को जन्नत में देखा जो कि हूरें थी वह उसके मुंह में जन्नत के फल रख रही थीं।

(४६) तिर्मिज़ी व हाकिम ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने जाफर को जन्नत में फ़रिश्तों के हमराह उड़ते देखा।

(५०) हाकिम ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आज रात मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो देखा कि जाफर फरिश्तों के साथ उड़ा रहे हैं और हम्ज़ा टेक लगाए बैठे हैं और चन्द सहाबा का मज़ीद तज़्किरा किया।

(५१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्ने उमर से रिवायत की कि वह एक क़ब्रिस्तान गये तो देखा कि एक खोपड़ी ज़ाहिर है तो आपने हुक्म दिया कि उसको छुपा दिया जाए। फिर आपने फरमाया कि इन अबदान को कोई चीज़ मुज़िर नहीं, यह तो अरवाह ही हैं जिनको अज़ाब व सवाब होता है।

(५२) इब्ने अबी शैबा ने और इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-कुर्रा में सफ़ीया बिन्ते शैबा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की मैं अस्मा बिन्ते अबी बकर के पास थी जब कि हज्जाज ने मेरे बेटे अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हु को फांसी दी तो उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ आए और ताज़ियत के तौर पर कहा कि तुम सब्र करो क्योंकि यह जिस्म कुछ भी नहीं, बेशक रूहें अल्लाह के पास हैं, तो मैंने कहा कि मैं सब्र क्यों न करूं, यह्या बिन ज़करिया अलैहिस्सलाम का सर एक ज़ानिया को बतौर तोहफ़ा पेश किया गया।

(५३) इब्ने सअद ने ख़ालिद बिन मेअ्दान से रिवायत की कि जंगे अज्नादैन के मौक़ा पर जब रूमी शिकस्त ख़ूरदह हो कर ऐसी मंज़िल पर पहुंच गये जहां उबूर करना मुम्किन न था तो हिशम बिन आस रज़ि अल्लाहु अन्हु उस जगह पहुंच गये और उन से जिहाद किया और उस तरफ से उनके हमले बन्द कर दिए लेकिन कुछ देर बाद खुद शहीद हो गये। जब मुसलमान इस मक़ाम पर पहुंचे जहां उनकी लाश थी तो मुसलमानों को इस बात का ख़तरा हुआ कि कहीं उनकी लाश को घोड़े न रौंद डालें, तो अमरु बिन आस ने कहा कि अल्लाह ने उनको शहीद कर दिया है और उनकी रूह को उठा लिया है और अब यह जुस्सा कुछ नहीं है इसलिए अगर उसको घोड़े रौंद डालें तो कुछ हरज नहीं। फिर खुद उन्होंने और उनके बाद दूसरे सिपाहियों ने उनकी लाश

को रौंद डाला और पुल को उबूर कर लिया। इब्ने रजब ने कहा कि इन आसार का मक़सद यह नहीं कि रूह अज्साम से जुदा होने के बाद कभी उन से मिलती ही नहीं। बल्कि उनका मक़सद तो सिर्फ़ यह है कि मरने के बाद जिस्म को इंसानों या कीड़े मकोड़ों के तक्लीफ़ पहुंचाने से कोई तक्लीफ़ नहीं होती। क्योंकि अज़ाबे क़ब्र दुनिया के अज़ाब की तरह नहीं वह तो अल्लाह की मशीयत के मुताबिक़ और उसकी कुदरत से मैयत तक पहुंचता है।

बाब

(१) इब्ने माजा ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अभी शहीद का ख़ून ज़मीन पर गिरने के बाद खुश्क होने नहीं पाता कि उसकी जन्नती बीबियां उसका इस्तिक़्बाल करती हैं। उन में से हर एक के हाथ में जन्नती हुल्ले होते हैं जो दुनिया व माफीहा से बेहतर होते हैं।

(२) तबरानी, बज़ार और बैहक़ी ने बअ्स में यज़ीद बिन शजरा से रिवायत की कि ख़ूने शहीद का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही उसके तमाम गुनाह मआफ हो जाते हैं। फिर उसकी दो बीबियां हूरें आकर उसके चेहरे की मिट्टी साफ करती हैं फिर उसको सो हुल्ले जन्नती घास से बुने हुए पहनाए जाते हैं वह इतने लतीफ़ होते हैं कि अगर दो उंगलियों में रखे जाएं तो उन में समा जाएं।

(३) हाकिम ने बरिवायते सहीहा अनस से रिवायत की कि एक सियाह फाम शख़्स हुज़ूरे अकरम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में आया और दरयाफ़्त किया कि अगर मैं जंग करूं हत्ता कि मारा जाऊं तो बताइए कि मेरा मक़ाम क्या होगा? तो आपने ने फरमाया कि जन्नत में। तो उसने जंग की हत्ता कि शहीद हो गया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम उसके पास आए और कहा कि खुदा तआला ने तेरे चेहरे को मुनव्वर कर दिया और तेरे अन्दर खुशबू पैदा फरमा दी। फिर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उस शख़्स के बारे में (या किसी दूसरे के बारे में) फरमाया कि मैंने उसे जन्नत में देखा कि उसकी हूर बीवी उसके उफनी जुब्बा के बारे में उस से दिल्लगी कर रही थी और कभी वह उसके जुब्बा में छुप जाती थी।

(४) बैहक़ी ने बसनदे हसन इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि एक आराबी हुज़ूर अलैहिस्सलाम के सामने शहीद हो गये तो आप उसके सरहाने खुश हो कर बैठ गये और मुस्कुराने लगे फिर उस

से मुंह फेर लिया गया, तो आप से इस सिलसिले में सवाल किया गया। आप ने फरमाया कि खुश होना तो इसलिए था कि मैंने देखा कि अल्लाह तआला ने उसका मरतबा किस क़दर बुलन्द फरमाया और मेरा मुंह फेरना इसलिए हुआ कि उसकी बीवी हूर उसके पास है।

(५) बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में अपनी सनद से क़ासिम बिन उस्मान बिन जदई से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैंने एक शख़्स को तवाफ करते देखा, मैं उसके पास आया तो उसे यह लफ़्ज़ कहते हुए पाया कि अल्लाहुम्मा क़ज़ैता हाजतुल-मुहताजीन व हाजती लम तक़्ज़े। वह तो यही दुआ मांगता था उससे ज़ाइद न करता था। मैंने उस से दरयाफ़्त किया कि भाई इस से ज़ाइद दुआ क्यों नहीं मानते? उसने कहा कि जनाब उसके पस मंज़र में भी एक वाक़या मुज़्मर है और वह यह कि हम मुख़्तलिफ़ शहरों के रहने वाले सात दोस्त थे। हम ने दुश्मन की ज़मीन में पहुंच कर जंग की तो उन्होंने हम को क़ैद कर लिया और हम को इलाहिदा इलाहिदा कर दिया, ताकि मार डाला जाए तो मैंने आसमान की तरफ निगाह उठाई तो क्या देखता हूं कि सात जन्नतों के दरवाज़े खुले हुए हैं और हर दरवाज़े पर एक हूर है। ग़र्ज़कि हमारे एक साथी की गर्दन मार दी गई तो मैंने देखा कि एक हूर उतरी जिसके हाथ में एक रूमाल था। हत्ता कि मेरे छेः साथी शहीद हुए। मैं भी बच रहा और मेरा दरवाज़ा भी। अब जब मुझे गर्दन मारने के लिए पेश किया गया तो मुझ को बादशाह से किसी ने मांग लिया। तो मैंने हूर को कहते हुए सुना कि ऐ महरूम इंसान! तुझ से बहुत बड़ी चीज़ फौत हो गई। यह कह कर उस ने दरवाज़ा बन्द कर लिया। तो ऐ भाईयो! उसी की हसरत में अपने दिल में रखता हूं। क़ासिम बिन उस्मान कहते हैं। कि मेरे नज़्दीक यह शख़्स उन सबसे अफ़ज़ल था कि उस ने वह कुछ देखा जो उन्होंने न देखा और शौक़ व मुहब्बत से सर गरम अमले सालेह हो गया।

क़ब्रों की ज़्यारत का बयान

और मुर्दों का अपनी ज़्यारत करने वालों को पहचानना और देखना

(१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-क़ुबूर में हज़रत आइशा से रिवायत की उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब कोई मुसलमान अपने किसी मुसलमान की ज़्यारत पर पहुंचता है तो वह उस से उन्स हासिल करता है और उसकी बातों का जवाब देता है।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअब में अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब कोई मुसलमान अपने मुतआरिफ़ तशख़्खुश की क़बर से गुज़रता है और उसको सलाम करता है तो क़ब्र वाला उसको जवाब देता है नीज़ उसे पहचान कर सलाम करता है। नीज़ इब्ने अबी अद्दुनिया से कुबूर में यह रिवायत की और इब्ने अब्दुलबर ने किताबुल-अज़्कार में और तम्हीद में इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से यही रिवायत की।

(३) अक़ील ने अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की, उन्होंने ने कहा। रज़ीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की कि मैं क़ब्रिस्तान से गुज़रता हूं तो क्या कोई कलाम है जो मैं मुर्दों से करूं? तो आपने फरमाया कि तुम यह कह दिया करो कि -

तर्जमा : ऐ क़ब्र वालों मुसलमानों और मोमिनो तुम पर सलाम हो तुम हमारे पेश्तर और हम तुम्हारे ताबेअ। और बेशक हम तुमसे मिलने वाले हैं। अबू रज़ीन ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या वह सुनते हैं? आपने फरमाया कि सुनते हैं, मगर जवाब नहीं दे सकते। फिर आपने फरमाया कि ऐ अबू रज़ीन क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि उनके बजाए उन्हीं की तादाद में फरिश्ते तुम को जवाब दें। और जवाब नहीं दे सकने से मुराद ऐसा जवाब है जिसको इंसान और जिन्नात न सुनें, वरना वह जवाब ज़रूर देते हैं।

(४) अहमद और हाकिम ने हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत की कि मैं अपने हुजरे में कपड़ा उतार कर दाख़िल हो जाती और कहती कि उन में एक मेरे शौहर हैं और दूसरे बाप लेकिन जब हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु मदफून हुए तो मैं एहतियात से कपड़ा ओढ़ कर दाख़िल होने लगी और यह हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से शर्म करने की बिना पर था।

(५) तबरानी ने औसत में इब्ने उमर से रिवायत कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उहुद से वापसी पर हज़रत मुसअब बिन उमैर और उनके साथियों की क़बरों पर ठहरे और फरमाया कि मैं गवाही देता हूं कि तुम अल्लाह तआला के नज़्दीक ज़िन्दा हो। तो ऐ लोगो! उन से मुलाक़ात करो और उन्हें सलाम करो, क्योंकि यह क़्यामत तक जवाब देते हैं।

(६) अरबईन ताइया में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मरवी है कि आपने फरमाया कि मैयत को सबसे ज़्यादा उन्स उस शख़्स के आने से होता है जो उसका दुनिया में बेहतरीन दो .I हो।

(७) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअ़ब में मुहम्मद बिन वासे से रिवायत की कि मुझे हदीस पहुंची है कि मैयत को अपने ज़्यारत करने वालों का इल्म जुमा के दिन और उस से एक दिन क़ब्ल एक दिन बाद तक होता है।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने ज़ह्हाक अलैहिर्रहमा से रिवायत की, जिसने सनीचर के रोज़ तुलूअ़ आफताब से पहले किसी की ज़्यारत की, तो मैयत को उसका इल्म होता है। उन से दरयाफ़्त किया गया तो उन्होंने फरमाया कि यह इसलिए कि अभी तक जुमा के असरात बाक़ी रहते हैं।

(६) तंबीह : अल्लामा सुबकी ने फरमाया कि मरने के बाद क़बर में रूह का अपने जिस्म में वापस आना हर मुर्दे के लिए बेरिवायते सहीहा साबित है और शुहदा का तो क्या ही कहना। लेकिन गुफ़्तगू इस अम्र में है कि आया वह अरवाह जिस्म में बाक़ी रहती हैं या न, और फिर यह ज़िन्दगी दुनिया की ज़िन्दगी की तरह होती है या इससे मुख़्तलिफ़, क्योंकि ज़िन्दगी के लिए रूह का होना यह एक अम्र आदी है अम्र अक़्ली नहीं। अब अगर इस बात पर कोई दलील क़तई क़ायम हो जाए कि जिस्म को दुनियावी ज़िन्दगी जैसी ज़िन्दगी मिल जाती है तो उसको मान लिया जाएगा। चुनांचे उलमा की एक जमाअत ने इसी क़ौल को लिया है। नीज़ मूसा अलैहिस्सलाम का क़ब्र में नमाज़ पढ़ना इस पर दलील है। क्योंकि नमाज़ पढ़ना एक ज़िन्दा जिस्म ही की सिफत है। फिर इसी तरह अंबिया अलैहिमुस्सलाम के बारे में शबे मेअ़राज में जिन सिफात का तज़्किरा है उनका तक़ाज़ा भी यही है कि लेकिन इस जिस्मानी ज़िन्दगी से जिस्मानी अवारिज़, मसलन खाने पीने वग़ैरह का पाया जाना ज़रूरी नहीं, बल्कि उनके अहकाम बदल जाते हैं। अल्बत्ता इदराकात मसलन इल्म और सुनना तो यह बिला शुबह शुहदा और ग़ैर शुहदा सबके लिए साबित हैं। बाज़ हज़रात कहते हैं कि शुहदा की जिस्मानी ज़िन्दगी के मानी यह हैं कि उन पर गलना और सड़ना नहीं आता।

बैहक़ी ने किताबुल-एतक़ाद में कहा कि वफ़ात के बाद अंबिया की अरवाह को वापस कर दिया गया है और वह शुहदा की मानिन्द अपने रब के पास ज़िन्दा हैं। इब्ने क़ैयिम ने अरवाह की बाहमी मुलाक़ात का मस्अला ज़िक्र करते हुए कहा अरवाह की दो क़िस्में हैं। कुछ अरवाह तो वह हैं जिन पर अज़ाब हो रहा है उनको तो मुलाक़ात की इजाज़त नहीं। और कुछ वह हैं जो इंआमात व इकरामाते इलाहिया में हैं तो वह आज़ाद हैं एक दूसरे से मुलाक़ात करती हैं और दुनिया में जो कुछ

हो चुका उस से बहस करती हैं और जो दुनिया वाले करते हैं उसके बारे में भी गुफ़्तगू करती हैं और हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह रफ़ीक़े आला में है। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया कि जो अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत करेगा वह अल्लाह के इंआम याफ़्ता हज़रात अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालेहीन के हम्राह होंगे और यह हज़रात बहुत ही अच्छे साथी हैं यह साथ दुनिया में भी है बरज़ख़ में भी और आख़िरत में भी। इंसान इन तीनों अदवार में इसी के हमराह होगा, जिस से उसको मुहब्बत होगी।

शैदला ने किताबुल-बुरहान में कहा कि अगर कोई शख़्स कहे कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि जो लोग अल्लाह तआला की राह में क़त्ल किये गये उन्हें तुम हरगिज़ मुर्दा न समझो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं। तो यह क्योंकर मुम्किन है कि वह मुर्दा भी हों और ज़िन्दा भी? तो उसका जवाब यह है कि यह ऐन मुम्किन है कि अल्लाह तआला उनके जिस्म के किसी हिस्सा में रूह डाल दे, जिस से वह अज़ाब और लज़्ज़त दोनों को महसूस करें। यह बिल्कुल इसी तरह है, जिस्म के किसी हिस्से में अगर गर्मी या सर्दी का असर हो तो उसका पूरे जिस्म पर असर होता है। बाज़ हज़रात का कहना है कि उनकी हयात से मुराद यह है कि उनके जिस्म के जोड़ नहीं खुलेंगे और न ही उनका जिस्म गलेगा या सड़ेगा तो गोया वह अपनी कुबूर में ज़िन्दा की तरह हैं। अबू हयान ने कहा कि हयाते शुहदा के बारे में उलमा ने इख़्तिलाफ़ किया। बाज़ तो कहते हैं कि उनकी रूहें बाक़ी रहती हैं और अज्साम फना हो जाते हैं। चुनांचे यह बात हमारे मुशाहिदा में आती है और बाज़ हज़रात फरमाते हैं कि शहीद का जिस्म और रूह दोनों ज़िन्दा होता है और हमारा आम शुउफर इस सिलसिला में कुछ हक़ीक़त नहीं रखता यह तो बिल्कुल ऐसा ही है जैसे हक़ तआला ने इरशाद फरमाया कि तमु पहाड़ों को जमा हुआ देखोगे हालांकि वह बादल की तरह चल रहे होंगे या जिस तरह सोने वाले को हम एक ही हालत पर देखते हैं हालांकि वह आराम और तक्लीफ़ हर चीज़ को महसूस करता है और कहां-कहां जाता है। और मैं कहता हूं कि इसी लिए हयाते शुहदा में अल्लाह तआला ने क़ैद लगा दी कि वला किन ला तशउरून। गोया अल्लाह तआला ने तंबीह फरमा दी कि उन शुहदा की हयात और ग़ैर शुहदा की हयात में यही फ़र्क़ है। फिर अगर शहीद की ज़िन्दगी से मुराद उसकी रूहानी ज़िन्दगी होती तो उसमें और दूसरों में मा बेहिल-इम्तियाज़ क्या रह जाता? नीज़

वला किन ला तशऊन की कै़द लगाने का कुछ फाइदा न रहता और कभी अल्लाह तआला अपने औलिया को बज़रिया कश्फ़ उनकी ज़िन्दगी मुशहिदा करा देता है।

सुहैली ने दलाइलुन्नुबूव्वह में बाज़ सहाबा से रिवायत की कि एक शख़्स ने एक क़बर खोदी, उसमें एक रोशनदान दूसरी क़बर की तरफ खुल गया। अब जो उन्होंने देखा तो एक बुजुर्ग तख़्त पर बैठे हुए हैं और उनके सामने कुरआने हकीम रखा हुआ है और उसके सामने ही सब्ज़ रंग रौज़ा है। यह सर ज़मीने उहुद का वाक़या है और यह शख़्स शहीद था क्योंकि उसके चेहरे पर ज़ख़्म थे। अबू हयान और याफ़ई ने भी इसी क़िस्म का वाक़या नक़ल किया।

(१०) शैख़ नज्मुद्दीन अस्बहानी ने कहा कि मैं एक शख़्स की तदफीन के वक़्त हाज़िर था मैयत को कलिमा की तल्क़ीन के लिए एक शख़्स बैठा और उसे तल्क़ीन करने लगा तो मैयत कहने लगा: कि ऐ लोगो! तअज्जुब है इस बात पर कि एक मुर्दा ज़िन्दा को तल्क़ीन कर रहा है।

(११) इब्ने रजब ने अपनी सनद से मुआफ़ी बिन इमरान के बारे में नक़ल किया कि एक शख़्स उनकी क़बर पर तल्क़ीन के लिए कलिमा पढ़ने लगा तो क़बर से भी कलिमा की आवाज़ आने लगी।

(१२) याफई ने मुहिब तबरी (कि शवाफ़े के अइम्मा में से हैं) से रिवायत की कि मैं शैख़ इस्माईल हज़रमी के साथ जुबैदा के क़ब्रिस्तान में था तो मुझ से शैख़ ने कहा कि ऐ मुहिब्ब! तुम मुर्दों के कलाम करने पर ईमान रखते हो? मैंने कहा कि हां। तो उन्होंने कहा कि यह क़ब्र वाला कहता है कि मैं अहले जन्नत से हूं।

(१३) उन्हें शैख़ इस्माईल ख़ज़रमी से रिवायत की कि वह क़ब्रिस्तान से गुज़रे और एक क़बर पर खड़े हो कर बहुत रोए और थोड़ी देर बाद बेसाख़्ता हंसने लगे। तो उन से उसका सबब दरयाफ़्त किया तो आपने फरमाया कि मुझे इस क़ब्रिस्तान वालों का हाल मालूम हुआ तो पता चला कि इन लोगों पर अज़ाब हो रहा है, तो मैंने इनके बारे में अल्लाह तआला से आह व ज़ारी की, तो मुझ से कहा गया कि जाओ हम ने उन लोगों के बारे में तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल कर ली। तो इस कबर वाली औरत बोली कि ऐ फ़क़ीह इस्माईल! मैं एक गाने बजाने वाली औरत थी क्या मेरी भी मग़्फ़िरत हुई? तो मैंने कहा कि हां और तू भी इन्हीं में है। यही चीज़ मेरी हंसी का बाइस हुई।

(१४) शैख़ अब्दुल-ग़फ़्फ़ार ने तौहीद में लिखा कि मुझे क़ाज़ी बहाउद्दीन ने ख़बर दी कि शैख़ अमीनुद्दीन जिब्रील उनके हम्राह थे वह

क़ाहिरा में दाख़िल होने से पहले फौत हो गये। अब जब उनकी मैयत को लेकर क़ाहिरा में दाख़िल होने का इरादा किया तो शहर वालों ने दाख़िल होने की इजाज़त न दी कि हम मुर्दों को दाख़िल नहीं होने देते, तो शैख़ ने अपना हाथ उठा कर उंगली उठा दी और हम शहर में दाख़िल हो गये।

(१५) याफ़ई ने एक शख़्स से रिवायत की कि उसने कहा कि कुराफ़ा के मक़ाम पर मैंने एक नौजवान के साथ बद फेअ़ली का इरादा किया तो उसने कहा कि मैं यहां हरगिज़ कोई गुनाह न करूंगा। क्योंकि मैंने एक मरतबा ऐसा किया था तो एक क़बर फट पड़ी थी और मुर्दे ने कहा कि क्या खुदा से भी हया नहीं करते?

(१६) याफ़ाई ने हिकायत की कि अब्दुर्रहमान नवेदी फरमाते हैं कि जब वह मन्सूरह में थे और दुश्मनों ने मुसलमानों को गिरफ़तार कर लिया तो अब्दुर्रहमान ने एक रोज़ यह आयत पढ़ी ला तहसबन्नल्लज़ीना कुतिलू फिर आप शहीद हो गये। जब शहीद हो गये तो एक अंग्रेज़ आया और उसके पास एक छोटा नेज़ा था वह उसने आपके जिस्म पर मारा और कहा कि ऐ मुसलमानो! के आलिम तू कहता था कि शुहदा ज़िन्दा हैं और उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है? तो अब्दुर्रहमान ने अपना सर उठा कर कहा कि हां काबा के रब की क़सम शुहदा ज़िन्दा हैं। तो अंग्रेज़ अपने घोड़े से उतरा और शैख़ का मुंह चूमा और अपने साथी से कहा कि उनकी मैयत को वतन ले चलो।

(१७) रिसाल-ए-कुशैरी में उनकी सनद से शैख़ अबू सईद अज़ से मरवी है कि मैंने बाबे बनी शैबा के पास एक नौजवान को मुर्दा हालत पर पाया। जब मैंने उसे देखा, तो वह मेरी तरफ़ देख कर मुस्कुराने लगा और कहने लगा कि ऐ अबू सईद! शुहदा ज़िन्दा हैं वह तो एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होते हैं।

(१८) इसी रिसाला में शैख़ अली रूद बारी से मरवी है कि उन्होंने एक फ़कीर को दफ़न किया तो उन्होंने उसके सर से कफ़न हटाया और उसका सर मिट्टी पर रखा ताकि अल्लाह तआला उसकी गुर्बत पर रहम करे तो उसने आंखें खोल कर मुझको देखा और कहा कि जनाब मुझ को उसके सामने ज़लील न कीजिए जिसने मुझको राह दिखाई है। तो मैंने कहा कि ऐ मेरे सरदार! क्या मरने के बाद ज़िन्दगी? तो उसने कहा कि मैं भी ज़िन्दा हूं और अल्लाह तआला का हर मुहिब्ब ज़िन्दा है और कल मैं तुम्हारी मदद करूंगा।

(१६) और इसी रिसाल-ए-कुशैरी में है कि एक कफ़न चोर था।

एक औरत का इंतिक़ाल हो गया, वह उसके जनाज़ा की नमाज़ में शामिल हुआ ताकि साथ जा कर उसकी क़बर का पता लगाए। जब रात हो गई तो उसने बुढ़िया की क़ब्र को खोदना शुरू किया, तो वह औरत बोल उठी कि सुब्हानल्लाह! एक मग़फ़ूर शख़्स मग़फ़ूर औरत का कफ़न चुराता है, क्योंकि अल्लाह तआला ने मेरी भी मग़्फ़िरत कर दी और इन तमाम लोगों की जिन्होंने मेरे जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और तू भी उनमें शरीक था। यह सुन कर उस ने क़बर पर फ़ौरन मिट्टी डाल दी और सच्चे दिल से ताइब हो गया।

(२०) इसी रिसाला में है कि इब्राहीम बिन शैबान ने फरमाया कि एक अच्छा नौजवान मेरा साथी बना और जल्द ही उसका इंतिक़ाल हो गया तो मुझे बहुत रंज हुआ और उसके गुस्ल देने का बनफ़्से नफ़ीस इरादा कर लिया तो मैंने दहशत की वजह से उसके उलटी तरफ़ से नहलाना शुरू किया तो उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे दायां हिस्सा दियां मैंने कहा कि ऐ बेटे! तू हक़ पर है और ग़लती पर मैं ही था।

(२१) इसी रिसाला में अबू याक़ूब सोसी से मरवी है कि मैंने एक मुर्दा को गुस्ल दिया। तो उसने मेरा अंगूठा पकड़ लिया तो मैंने कहा कि ऐ बेटे! मेरा अंगूठा छोड़ दो क्योंकि मैं जानता हूं कि यह मरना नहीं है बल्कि एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होना है।

(२२) और इसी रिसाला में इसी रावी से है कि मेरा एक मुरीद मक्का से आया, और मुझ से कहा कि ऐ उस्ताद! मैं कल ज़ुहर के वक़्त मर जाऊंगा तो यह दीनार लो, आधे में क़ब्र और आधे में मेरे कफ़न का इंतिज़ाम करना। जब दूसरे रोज़ ज़ुहर का वक़्त आया तो उस ने आ कर तवाफ़ किया और फिर दूर खड़ा हो गया और थोड़ी देर बाद मर गया। जब मैंने उसे क़ब्र में रख दिया तो उसने आंखें खोल दीं, तो मैंने उस से कहा कि मरने के बाद भी ज़िन्दगी होती है? तो उसने कहा कि मैं अल्लाह तआला का मुहिब्ब हूं और अल्लाह का हर मुहिब्ब हमेशा के लिए ज़िन्दा है।

(२३) क़ुशैरी कहते हैं कि मैंने उस्ताद अली दक़्क़ाक़ को कहते हुए सुना कि अबू उमर बेकुन्दी एक गली से गुज़र रहे थे तो उन्होंने देखा कि कुछ लोग एक नौजवान को उसके बद चलन होने की वजह से घर से घसीट कर निकाल रहे हैं और उसकी मां रो रही है और उन से सिफ़ारिश कर रही है। तो आपने कहा कि उस शख़्स को मेरी तरफ़ से इस औरत को हिबा कर दो। कुछ दिन बाद आपने उसकी मां को देखा तो उस नौजवान का हाल दरयाफ़्त किया। तो उसने बताया कि

वह तो मर गया और उसने मुझे वसीयत की थी कि मैं उसके मरने की इत्तिला पड़ोसियों को न दूं ताकि वह मेरे मर जाने से खुश न हों और जब मैं मर जाऊं तो मेरे हक़ में रब से सिफ़ारिश करना। चुनांचे मैंने ऐसा ही किया। जब मैं उसकी क़ब्र से चलने लगी तो मैंने उसकी आवाज़ सुनी कि वह कह रहा है कि मां! अब तू चली जा क्योंकि मैं करम करने वाले रब के पास आ गया हूं।

(२४) याफई ने किफायतुल-मोतक़िद में लिखा कि एक नेक शख़्स ने मुझे बताया कि मैं कभी अपने वालिद की क़बर पर जाता हूं तो उन से गुफ़्तगू करता हूं।

(२५) याफई ने कहा कि यह बहुत मशहूर बात है कि फ़क़ीह अहमद बिन मूसा बिन अजील को उन के बाज़ शगिर्दों ने क़बर में सूरः नूर पढ़ते हुए सुना।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया किताबुल-कुबूर में अपनी सनद से उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि एक क़ब्रिस्तान पर गुज़रे तो कहा *अस्सलामु अलैकुम या अहलल-कुबूर*। नई ख़बरें यह हैं कि तुम्हारी औरतों ने नई शदियां रचा ली हैं। तुम्हारे घरों में दूसरे लोग बस चुके हैं और तुम्हारे माल तक़्सीम हो चुके हैं तो एक हातिफ़ ने आवाज़ दी कि ऐ उमर! हमारी नई ख़बरें यह हैं कि हमने जो नेक आमाल किए उनका बदला यहां मिला और जो खुदा की राह में ख़र्च कर दिया उसका नफ़ा मिला और जो छोड़ आए उसमें नुक़सान उठाया।

(२७) हाकिम ने तारीख़ नीशपुर में बैहक़ी ने और इब्ने असाकिर ने तारीख़े दमिश्क़ में अपनी सनद से सईद बिन मुसैयिब से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि हम अली इब्ने अबी तालिब के हम्राह मदीना के क़ब्रिस्तान में गये तो आपने कहा कि अस्सलामु अलैकुम या अहलल-कुबूर व रहमतुल्लाहि। क्या तुम हम को अपनी ख़बरें सुनाते हो। या हम तुम को अपनी ख़बरें सुना दें। रावी कहते हैं कि हम ने एक क़बर के अन्दर से आवाज़ सुनी : *व अलैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू!* या अमीरुल-मुमिनीन आप हमें बताइए कि हमारे बाद क्या हुआ? तो आपने फरमाया कि तुम्हारी बीवियां नई शादियां कर चुकी हैं, तुम्हारे माल बट चुके हैं और औलाद यतीमों के जुमरा में शामिल है। वह घर जो तुम ने फख़्ता बनाए थे, अब इनमें तुम्हारे दुश्मन रहते हैं। अब तुम अपना हाल सुनाओ। तो एक क़बर से आवाज़ आई कि कफन फट चुके, बाल बिखर गये, खालें टुकड़े-टुकड़े हो गईं और आंखें रुख़्सारों पर बह गईं और नथनों का पीप बन गया, जैसा किया वैसा

पाया और जो छोड़ कर आए उसमें नुक़्सान उठाया और आमाल के बदले रहन हैं।

(२८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने कुबूर में यूनुस बिन अबी फुरात से रिवायत की कि एक शख़्स क़ब्र खोद कर उसके साए में बैठ गया कि इतने में तेज़ हवा चली वह लेट गया। उसने क़रीब ही देखा कि एक छोटा सा सूराख़ है। उसने अपनी उंगली से उसको वसी किया तो उसमें एक क़ब्र थी और हद्दे निगाह तक फराख़ थी और उसमें एक बूढ़ा ख़िज़ाब लगाए बैठा था। ऐसा मालूम होता था कि कंघी करने वालियों ने अभी उस से अपने हाथ उठाए हैं।

(२६) इब्ने जरीर ने तहज़ीबुल-आसार में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताब मन आश बादल-मौत में और बैहक़ी ने दलाइल में अताफ़ बिन ख़ालिद से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मेरी ख़ाला ने मुझको बताया कि एक रोज़ मैं शुहदा के क़ब्रिस्तान में गई और यह मेरा मामूल था। मैं सैयदना हज़रत हम्ज़ा की क़ब्र के पास जा कर ठहरी और उसके पास नमाज़ पढ़ी, वहां न कोई पुकारने वाला था न जवाब देने वाला। जब मैं नमाज़ से फारिग़ हुई तो मैंने कहा कि अस्सलामु अलैकुम! तो मैंने सलाम के जवाब की आवाज़ सुनी। और मुझ को इतना यक़ीन है जितना कि इस बात का कि अल्लाह ने मुझ को पैदा किया या रात और दिन के वजूद का। यह हाल देख कर मेरे जिस्म का बाल-बाल कांपने लगा।

(३०) हाकिम ने बरिवायते सहीहा बयान किया, और बैहक़ी ने दलाइल में अपनी सनद से रिवायत की कि अब्दुल्लाह ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शुहदा-ए-उहुद की ज़्यारत की और कहा कि ऐ अल्लाह! तेरा बन्दा और नबी गवाही देता है कि यह शुहदा हैं और जिसने उनकी ज़्यारत की या उनको सलामुन अलैका की तो यह क़्यामत तक उसका जवाब देते रहेंगे।

(३१) बैहक़ी ने वाक़ेदी से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर साल शुहदा-ए-उहुद की क़ुबूर की ज़्यारत को तशरीफ़ ले जाते थे। जब घाटी पर पहुंचते थे तो बआवाज़ बुलन्द फरमाते सलामुन अलैकुम बेमा सबरतुम फ़नेअ़मा उक़्बद्दार। और यही मामूल अबू बकर व उमर व उस्मान रज़ि० अल्लाहु तआला अन्हुम का रहा। और हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हु भी आकर दुआ करती थीं और हज़रत सअद बिन अबी वक़ास भी आ कर सलाम करते और अपने साथियों की तरफ मुतवज्जह हो कर फरमाते कि उन हज़रात को सलाम

करो जो तुम्हारे सवाल का जवाब देते हैं।

(३२) फातिमा ख़ज़ाइया ने कहा कि मैं और मेरी बहन गुरूबे आफताब के वक़्त एक क़ब्रिस्तान में थे तो मैंने कहा कि ऐ मेरी बहन आकर हमज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु की क़बर पर सलाम करें। तो उसने कहा कि अच्छा। तो हमने उनकी क़ब्र पर खड़े हो कर कहा कि अस्सलामु अलैका या अम्मे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो हम ने क़बर से जवाब सुना कि व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातहू।

(३३) बैहक़ी ने अपनी सनद से रिवायत की कि हाशिम बिन मुहम्मद उमरी ने कहा कि मुझे मेरे वालिद जुमा के रोज़ फज्र के वक़्त क़ुबूरे शुहदा की ज़्यारत के लिए ले गये। जब हम क़ब्रिस्तान में पहुंचे तो उन्होंने बआवाज़ बुलन्द कहा कि : *सलामुन अलैकुम बेमा सबरतुम फ़नेअ्मा उक़्बद्दार।* तो जवाब आया कि *व अलैकुमुस्सलाम या अबा अब्दल्लाह* तो मेरे बाप ने मेरी तरफ़ मुतवज्जह हो कर कहा कि तुमने जवाब दिया? मैंने कहा कि नहीं। फिर मेरे बाप ने मेरा हाथ पकड़ कर अपनी दाएं तरफ कर लिया और फिर दोबारा सलाम किया, तो दोबारा जवाब दिया। आपने तीन मरतबा ऐसा ही किया और तीनों मरतबा जवाब मिला। यह सुन कर मेरे वालिद सज्द-ए-शुक्र बजा लाए।

(३४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अब्दुल-वाहिद बिन ज़्याद से रिवायत की कि हम एक जिहाद में शरीक थे। जब वापस हुए तो हमारे साथियों में से एक साथी कम था जब हम ने तलाश किया तो वह दरख़्तों के झण्डों में मक़्तूल पड़े हुए हैं और उनके सर पर कुछ लड़कियां खड़ी हो कर दफ बजा रही हैं जब हम क़रीब पहुंचे तो वह ग़ायब हो गईं और हमने उनको फिर न देखा।

(३५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सईद बिन मुसैयिब से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि हुर्रा की जंग के मौक़ा पर मैं रौज़-ए-नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ही हाज़िर था तो जब भी नमाज़ का वक़्त होता तो आपकी क़बरे अनवर से अज़ान की आवाज़ आती थी। जुबैर बिन बुकार ने अख़्बारुल-मदीना में भी यही रिवायत की, इसमें इतना ज़ाइद है कि जब लोग वापस आ गये और मुअज़्ज़िन भी वापस हो गये, लेकिन फिर अज़ान न सुनी गई।

(३६) लालकाई ने सुन्नत में यहया बिन मुईन से रिवायत की कि एक ने मुझ को बताया कि क़ब्रों में सबसे अजब चीज़ जो देखी वह यह थी कि एक क़ब्र से ऐसी आवाज़ आती थी जैसे किसी मरीज़ के कराहने की होती है नीज़ एक क़ब्र से मुअज़्ज़िन की अज़ान के जवाब

की आवाज़ आती और साफ सुनी जाती थी।

(३७) लालकाई ने हर्स बिन असद मुहासबी से रिवायत की। उन्होंने कहा कि मैं एक क़ब्रिस्तान में था कि एक क़बर से आवाज़ सुनी कि मैं पनाह मांगता हूं अल्लाह के अज़ाब से।

(३८) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में अपनी सनद से रिवायत की कि मिन्हाल बिन अमरु ने कहा कि मैं दमिश्क़ में था तो बखुदा मैंने हुसैन के सर को ले जाते हुए देखा। सर के सामने एक शख़्स सूरः कहफ़ की तिलावत कर रहा था। जब वह इस आयत पर पहुंचा कि *अह हसिब्ता अन अस्हाबल-कहफ़े वर्रक़ीमे कानू मिन आयातिना अजबन।*

तर्जमा : यानी असहाब कहफ के वाक़िये से अजीब तर मेरा क़त्ल और उठाया जाना है। तो अल्लाह तआला ने सर को कुव्वते गोयाई अता फरमाई, वह बज़बाने फसीह बोला।

अअ़जबा मन असहाबिल कहफ़े कतली व हमली।

(३९) ज़हबी ने तारीख़ में बयान किया कि अहमद बिन नस्र खुज़ाई जो फ़न्ने हदीस के इमाम गुज़रे हैं उनको ख़लीफ़ा वासिक़ बिल्लाह ने ख़ल्क़े कुरआन का क़ौल करने पर मजबूर किया। लेकिन आपने इंकार कर दिया। ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया कि उनको क़त्ल करके सूली पर लटकाया जाए और एक शख़्स को मुक़र्रर किया जो उनके मुंह को क़िब्ला से मुनहरिफ़ करता रहे तो जो शख़्स इस काम पर मुऐयन था उसने बयान किया कि वह सर हर रात को क़िब्ला की तरफ़ फिर जाता था और बज़बाने फसीह सूरः यासीन पढ़ता था। यह हिकायत मुतअद्दद वजूह से मरवी है।

(४०) इब्ने असाकिर ने अपनी सनद से अबू अय्यूब खुज़ाई से रिवायत की कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के ज़माना में एक इबादत गुज़ार नौजवान था जो हमा वक़्त मस्जिद में मसरूफ़े इबादत था और हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु को वह बहुत ही पसन्द था। उसका एक बूढ़ा बाप था। रात को वह अपने बाप के पास चला जाता था। रास्ता में एक फाहिश औरत का घर था। वह उस पर आशिक़ हो गई। चुनांचे वह रोज़ाना उसके रास्ता में खड़ी हो जाती थी। हत्ता कि एक रोज़ वह उसको अपने दरवाज़े पर ले गई जब वह दाख़िल होने लगा तो उसको खुदा की याद आई और उसकी ज़बान से बेसाख़्ता यह आयत निकल गई कि *इन्नल्लज़ीना इत्तक़ू इज़ा मस्सहुम ताइफुन मिनशैताने तज़्किरू फ़इज़ा हुम मुब्सिरून।* यह आयत पढ़ते ही नौजवान बेहोश हो कर गिर गया। इस औरत ने अपनी बांदी को बुलाया और दोनों

घसीट कर उसको उसके दरवाज़े पर फेंक आए। अब जब बाप उसकी तलाश में निकला तो देखा कि वह दरवाज़ा पर बेहोश पड़ा है तो वह उसको उठवा कर अन्दर ले गया। रात गये उसको होश आया। बाप ने दरयाफ़्त किया कि ऐ बेटे क्या बात है? उसने कहा कि ख़ैरियत है। बाप ने कहा कि मैं तुझ को खुदा का वास्ता देकर पूछता हूं बता कि क्या मुआमला है? उसने सब वाक़या बताया। बाप ने दरयाफ़्त किया कि कौन सी आयत पढ़ी थी? उसने वही आयत दोबारा पढ़ी। और अब वह पढ़ते ही फिर बेहोश हो गया लोगों ने उसे हिलाया, जलाया तो मालूम हुआ कि वह मर गया है चुनांचे लोगों ने उसे रातों रात दफ्न कर दिया। सुबह को यह वाक़या हज़रत उमर को बताया गया। आप उसके बाप के पास ताज़ियत को गये और फरमाया कि तूने मुझ को इत्तिला क्यों न दी? उसने कहा कि ऐ अमीरुल-मुमिनीन! रात का वक़्त था आपको तक्लीफ़ होती। आपने फरमाया कि उसकी क़बर पर ले चलो। चुनांचे आप अपने साथियों समेत उसकी क़बर पर आए और कहा कि : जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उसके लिए दो जन्नतें है। तो नौजवान ने क़बर के अन्दर से जवाब दिया। या उमर मेरे रब ने दोनों जन्नतें मुझे अता फरमा दीं।

(४१) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने दलाइलुन्नुबुव्वह में अपनी सनद से इब्ने मीसा से रिवायत की कि मैं एक रोज़ क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुआ और दो रकअत पढ़ कर लेट गया। अभी मैं जाग ही रहा था तो मैंने सुना कि क़ब्र में से कोई कह रहा है कि उठो तुमने मुझको तक्लीफ़ पहुंचाई। तुम लोग काम करते हो और जानते नहीं, हम जानते हैं लेकिन अमल नहीं कर सकते। बखुदा अगर मैं तेरी तरह नमाज़ पढ़ता तो यह मेरे लिए दुनिया व माफीहा से बेहतर और अच्छा होता।

(४२) अबू नईम ने अपनी सनद से हुलिया में यूनुस बिन जलीस से रिवायत की कि मैं दमिश्क़ के क़ब्रिस्तान से जुमा के दिन सुबह के वक़्त गुज़र रहा था तो कोई क़ब्र से कह रहा था कि यह यूनुस बिन जलीस हैं जो हिजरत करके आए हैं। हम हर माह हज व उमरा करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। तुम अमल करते हो और जानते नहीं, हम जानते हैं, अमल नहीं कर सकते। तो यूनुस मुतवज्जह हुए और सलाम किया, लेकिन जवाब न आया तो यूनुस ने कहा कि सुब्हानल्लाह, मैं तुम्हारी बात चीत सुनता हूं मगर तुम सलाम का जवाब नहीं देते। तो उन्होंने जवाब दिया कि हम ने तुम्हारा सलाम सुना मगर जवाब देना एक नेकी है और अब नेकी बदी हम से रोक दी गई है।

(४३) इब्ने असाकिर ने औज़ाई से रिवायत की कि मैसरह बिन जलीस बाब तोमा के क़ब्रिस्तान से गुज़रे चूंकि आप नाबीना थे इसलिए एक शख़्स आपके हम्राह था तो उन्होंने कहा कि अस्सलामु अलैकुम या अहलल-कुबूर अन्तुम लना सलफुन व नहनु तबउन फरहमनल्लाहु व इयाकुम व ग़फ़र लना व लकुम तो क़ब्रिस्तान में से एक मुर्दा बोल उठा कि ऐ अह्ले दुनिया तुम को खुशख़बरी हो कि तुम एक माह में चार मरतबा हज करते हो। मैंने कहा कि वह कैसे? कहा कि क्या तुम को पता नहीं कि हर जुमा पर तुम को हज्जे मबरूर का सवाब मिलता है। मैंने दरयाफ़्त किया कि तुम्हारा सबसे उम्दा अमल कौन सा था? उसने जवाब दिया कि इस्तिग़फ़ार। लेकिन अब न तो हमारी कोई नेकी ज़ाइद होती है और न ही कोई बुराई कम होती है।

(४४) इब्ने असाकिर ने अपनी सनद से उमैर बिन हबाब सलमा से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैं और मेरे आठ साथियों को बनू उमैया के ज़माने में रूमियों ने क़ैद कर लिया। बादशाहे रूम ने मेरे आठ साथियों के सर क़लम करा दिए फिर मुझे क़त्ल किए जाने के लिए पेश किया गया तो एक रूमी सरदार उठा और उसने बादशाह के हाथ पैर चूम कर मुझे मआफ़ करा दिया और मुझे अपने घर ले गया वहां जा कर उसने मुझे अपनी हसीना जमीला लड़की दिखाई और अपना बेहतरीन मकान दिखाया और कहा कि तुम जानते हो कि बादशह के यहां मेरी क्या क़द्र है? अगर तुम मेरे दीन में दाख़िल हो जाओ तो मैं अपनी लड़की की शादी तुम्हारे साथ कर दूंगा और यह सब नेमतें तुम्हारे लिए हो जाएंगी। मैंने कहा कि मैं अपना दीन, बीवी इस दुनिया के वास्ते नहीं छोड़ सकता। वह शख़्स कई रोज़ तक मुझे अपना दीन पेश करता रहा। एक रात उसकी बेटी ने मुझे तन्हाई में अपने बाग़ के अन्दर बुलाया और दरयाफ़्त किया कि क्या वजह है कि तुम मेरे बाप की पेश करदह शराइत को क़बूल नहीं करते मैंने वही जवाब दिया कि एक औरत की ख़ातिर मैं अपना दीन नहीं छोड़ सकता। तो उसने पूछा कि अब तुम क्या चाहते हो आया हमारे पास ठहरना चाहते हो या अपने वतन जाना चाहते हो? मैंने कहा अपने वतन जाना चाहता हूं। तो उसने मुझे आसमान का एक सितारा दिखा कर कहा कि तुम इस सितारा को देख कर रात को चलते रहो और दिन को छुपते रहो, अपने मुल्क पहुंच जाओगे। फिर उसने मुझे कुछ जादे राह दिया और मैं चल दिया। मैं तीन रातें उसकी हस्बे हिदायत चलता रहा, चौथे रोज़ मैं छुपा बैठा था कि घोड़ों के आने की आवाज़ मालूम

हुई। बस मैंने समझ लिया कि अब तो पकड़ा गया, अब जो ग़ौर से देखा तो मेरे शहीद साथी और उनके हमराह सफ़ेद घोड़ों पर कुछ और लोग भी थे उन्होंने पास आकर कहा। क्या तुम उमैर हो? मैंने कहा कि हां मैं तो उमैर हूं, तुम बताओ तुम तो क़त्ल हो चुके थे? उन्होंने कहा कि बेशक हम क़त्ल हो चुके थे लेकिन अल्लाह तआला ने शुहदा को उठाया और उनको हुक्म दिया कि वह उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रहमा के जनाज़े में शिर्कत करें। उन में से एक शख़्स ने कहा कि ऐ उमैर! ज़रा अपना हाथ मुझे पकड़ाओ। मैंने अपना हाथ उसके हाथ में दिया और उसने मुझे अपने पीछे बिठा लिया। थोड़ी देर चल कर उसने मुझे फेंक दिया। मेरे चोट न लगी। अब जो देखा तो मेरा घर बिल्कुल क़रीब था।

(४५) इब्ने जौज़ी ने उयूनुल-हिकायात में अपनी सनद से अबू अली अज़्ज़रीर से रिवायत की तीन शमी भाई रूमियों से जिहाद करते थे। एक मरतबा रूमी बादशह उन्हें गिरफ़्तार करने में कामयाब हो गया। बादशाह ने कहा कि मैं अपनी हुकूमत में तुम को हिस्सेदार कर दूंगा और अपनी लड़कियां तुम्हारे निकाह में दूंगा लेकिन शर्त यह है कि तुम ईसाई बन जाओ। मगर इन तीनों ने साफ इंकार कर दिया। फिर बादशाह ने तीन देगें तेल की तीन रोज़ तक आग पर चढ़ाए रखीं, और उनको डराने के लिए रोज़ाना वह देगें दिखलाईं लेकिन वह अपनी बात पर डटे रहे, बिल-आख़िर बड़े को इस तेल में डाल दिया गया। फिर दूसरे को भी इसी तरह, अब तीसरे की बारी थी बादशाह ने उस वक़्त भी वरग़लाने की पूरी कोशिश की मगर उसके पाए सबात में लग़्ज़िश न आई एक रूमी सरदार खड़ा हुआ और कहा कि ऐ बादशाह! मैं इसको इसके दीन से तौबा करा सकता हूं, यह अरब वाले औरतों को बहुत पसन्द करते हैं, मैं अपनी बेटी के सुपुर्द उसको कर दूंगा वह खुद उसको बहका लेगी। चुनांचे बादशाह ने उसको सरदार के हवाले किया। सरदार सब मुआमला बेटी को बता कर इस मुजाहिद को बेटी के सुपुर्द कर गया। कई दिन बाद बाप ने बेटी से दरयाफ़्त किया कि क्या तूने अपने इरादा में कामयाब हुई? उसने कहा कि नहीं मेरा ख़्याल है कि चूंकि उसके दोनों भाई उस शहर में क़त्ल किए गये हैं इसलिए यहां उसका दिल नहीं लगता। इसलिए हम दोनों को किसी दूसरे शहर में मुन्तक़िल किया जाए और हमें मज़ीद मोहलत दी जाए चुनांचे उनको दूसरे शहर में मुन्तक़िल कर दिया। लेकिन वह जवान दिन भर रोज़े से और रात भर नमाज़ में मश्गूल रहता और उसकी

तवज्जोह क़तअन लड़की की तरफ न होती। लड़की ने जब उसकी इस दयानत को देखा तो वह मुशर्रफ़ बइस्लाम हो गई। चुनांचे वह दोनों एक घोड़े पर बैठ कर वहां से भाग खड़े हुए, दिन में छुपते और रात को चलते, एक दिन इन दोनों ने अचानक घोड़ों की टापों की आवाज सुनी। अब जो ग़ौर से देखा तो मुजाहिद के दोनो शहीद भाई मलाइका की जमाअत के साथ जा रहे हैं। उस शख़्स ने सलाम करके उन से हाल दरयाफ़्त किया। उन्होंने कहा कि बस थोड़ी देर की तक्लीफ़ हुई जो तुमने देखी फिर हम को फ़िर्दौस में भेज दिया गया और अब हमें इसलिए भेजा गया है कि तुम्हारी शादी उस लड़की से कर दें। चुनांचे वह लोग शादी करके चले गये और यह नौजवान शम पहुंचा और उनके साथ यह वाक़्या मशहूर था।

(४६) इब्ने असाकिर ने अपनी सनद से मुआविया बिन यह्या से रिवायत की कि हमस का एक बूढ़ा शख़्स मस्जिद को चला उसका ख़्याल था कि सुबह हो गई लेकिन दर हक़ीक़त अभी रात ही थी। जब वह कुब्बा के नीचे पहुंचा तो उसने घोड़ों के घुंघरुओं की आवाज़ें सुनीं। अब जो उसने देखा तो कुछ सवार हैं जो आपस में मुलाक़ात कर रहे हैं। उन में से बाज़ से पूछा गया कि आप लोग कहाँ से आए? तो उन्होंने जवाब दिया कि क्या तुम हमारे साथ न थे? उन्होंने कहा कि नहीं, उन्होंने जवाब दिया कि हम बदील ख़ालिद बिन मेअ्दान के जनाज़े में शिर्कत करके वापस आ रहे हैं। उन्होंने हैरानी से कहा। वह इंतिक़ाल कर गये? हम को उनकी मौत की इत्तिला न हुई? सुबह को शैख़ ने लोगों को यह वाक़्या बताया और दोपहर के वक़्त एक क़ासिद आया कि बदील का इंतिक़ाल हो गया।

(४७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने क़ुबूर और इब्ने असाकिर ने शअ्बी से रिवायत की कि सफ़्वान बिन उमैया सहाबी एक क़ब्रिस्तान में बैठे थे कि एक जनाज़ा आया तो उन्होंने क़ब्र से एक ग़मगीन शख़्स की आवाज़ सुनी जो कह रहा था :

जब लोगों को इत्तिला दी गई तो वह इस क़द्र रोए कि उनकी दाढ़िया आंसुओं से तर हो गईं फिर उन्होंने कहा कि यह अमीना कौन है तो मालूम हुआ कि अमीना वही औरत है कि जिसका जनाज़ा आ रहा है। सफ़्वान कहते हैं कि मैं समझता था कि मैयत नहीं बोलती, मगर यह आवाज़ कहां से आई।

(४८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सईद बिन हाशिम सलमा से रिवायत की कि क़बीला के एक आदमी ने अपने लड़के की शादी की और इस

सिलसिला में एक महफिल लह्व व लइब क़ाइम की। उन लोगों के मकानात क़बरों के क़रीब थे। जब रात को यह लोग लहव व लइब में मसरूफ़ थे तो उन्होंने एक मुहीब आवाज़ सुनी कि : रावी कहते हैं कि बख़ुदा चन्द ही रोज़ बाद दुल्हा का इन्तेक़ाल हो गया।

(४६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सालेह मुरी से रिवायत की कि एक रोज़ सख़्त गर्मी के मौसम में मैं क़ब्रिस्तान में गया तो मैंने कहा सुब्हानल्लाह, तुम्हारी रूहों और जिस्मों को मुंतशिर करने के बाद कौन जमा करेगा और इस तरह गलने सड़ने के बाद तुम को क्यों कर ज़िन्दा किया जा सकेगा, तो एक गढ़े से आवाज़ आई कि ऐ सालेह! खुदा तआला की निशानियों में से है कि आसमान व ज़मीन अपनी जगह पर उसी के हुक्म से क़ाइम हैं। फिर जब वह तुम को ज़मीन से बुलाएगा तो तुम उसकी तरफ़ जमा कर दिए जाओगे।' तो बख़ुदा मैं बेहोश हो कर अपने मुंह के बल गिर गया।

(५०) इब्ने अबी अद्दुनिया ने साबित बनानी से रिवायत की कि वह क़ब्रिस्तान में बैठे हुए दिल ही दिल में बातें कर रहे थे कि अचानक उन्होंने आवाज़ सुनी कि कोई कह रहा है कि ऐ साबित तुम उनको ख़ामोश देखते हो हालांकि उन में बहुत से मग़्मूम हैं। फिर उन्होंने मुतवज्जह हो कर इधर उधर देखा तो किसी को न पाया।

(५१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने बशर बिन मन्सूर से रिवायत की कि मुझ से अता अरज़ुक़ ने कहा कि जब तुम क़ब्रिस्तान में जाओ तो तुम अपने क़ल्ब को मुर्दा करके जाओ। रावी कहते हैं कि मैं क़ब्रिस्तान में था कि अचानक मैंने आवाज़ सुनी कि कोई कह रहा था कि ऐ नेमतों और नाज़ व अंदाज़ में ग़ाफ़िल हो जाने वाले इंसान।

(५२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सवार बिन मुस्अब हम्दानी से रिवायत की और उन्होंने अपने वालिद से, कि हमारे पड़ोस में दो भाई थे और वह आपस में शदीद मुहब्बत रखते थे। इत्तिफ़ाक़न बड़ा अस्फ़हान चला गया। उसके पीछे छोटे का इंतिक़ाल हो गया। जब बड़ा वापस आया। और उसकी क़ब्र पर पहुंच कर रोया तो सात माह तक उसको यह अशआर क़ब्र से सुनने में आए।

फिर उन्होंने देखना चाहा तो कोई न था। उस शख़्स पर कपकपी तारी हुई और तीन रोज़ बाद मर गया और उसको उसके भाई के पास दफ़न किया गया।

(५३) इमाम अहमद अलैहिर्रहमा ने ज़ुहद में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से रिवायत की, कि यज़ीद बिन शुरैह हैसमी ने क़बर

से यह आवाज़ सुनी कि कोई कहता है कि ऐ लोगो! आज तुम हम जैसों की ज़्यारत को आए, हम भी तुम्हारी ही तरह थे और ज़िन्दगी में तुम्हारी शक्ल थे, अब इस जंगल में हमारी शक्लें हवा के साथ उड़ रही हैं और हम एक कोठनी में हैं तुम्हारे पास नहीं आ सकते। अब हम में का कोई लौट नहीं सकता। अब यही घर तुम्हारा ठिकाना बनने वाला है।

(५४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सुलेमान बिन यसार हज़रमी से रिवायत की कि कुछ लोग क़ब्रिस्तान के पास से गुज़र रहे थे। उन्होंने क़ब्रिस्तान से यह शेअर सुने कि :

तर्जमा : एक सवार चलो पहले इसके कि तुम पर ऐसा ज़माना आये कि तुम न चल सको। यह घर हक़ है इसमें तुम हमारे पास आओगे, हर शख़्स की नेमत ज़माना छीन लेगा। और कुछ लोग अज़ाबगाह में होंगे और बेशक वह बहुत ही बड़ा ठिकाना है।

पस जैसे तुम हो ऐसे ही हम थे, अब जैसे हम हैं ऐसे ही तुम हो जाओगे।

(५५) इब्ने जौज़ी ने किताब उयूनुल-हिकायात में अपनी सनद से मुहम्मद बिन अब्बास वर्राक़ से रिवायत की कि एक शख़्स अपने बेटे के हम्राह गया। रास्ता में बाप का इंतिक़ाल हो गया। बेटे ने एक दरख़्त के नीचे बाप को दफन कर दिया और अपने सफर पर चल दिया। फिर वापसी में उसी जगह से रात के वक़्त उसका गुज़र हुआ तो वह अपने बाप की क़ब्र पर न उतरा, तो किसी हातिफ़ ने कहा कि :

तर्जमा : मैंने देखा कि तू रात के वक़्त दोम दरख़्त के पास से गुजर रहा है और देख नहीं रहा है तेरे लिये जरूरी है कि दोम वाले से बात करे दोम में एक शख़्स ही काश तू उसकी जगह वहां मुकीम होता। दोम वाले पर ठहकर गुज़र और उसे सलाम कर।

(५६) अबू नईम और इब्ने असाकिर ने सलमा से रिवायत की कि ख़ालिद बिन मेअ्दान हर दिन चालीस हज़ार मरतबा तस्बीह पढ़ते थे और तिलावते कुरआन उसके अलावा जब उनको तख़्ते पर नहलाने को रखा गया तो वह अपनी उंगली इसी तरह हिलाने लगे जैसे तस्बीह में हिलाई जाती है।

(५७) इब्ने असाकिर ने अबू अब्दुल्लाह से रिवायत की, उन्होंने कहा कि हमारे वालिद का इंतिक़ाल हो गया तो हम ने उनको तख़्ते पर रखा और उनका चेहरा खोला तो वह मुस्कुरा रहे थे तो लोग शक में पड़ गये कि कहीं ज़िन्दा तो नहीं। लोगों ने डॉक्टर को बुलाया और हमने उनका चेहरा ढक दिया जब डॉक्टर आया और उसने नब्ज़ देखी तो कहा कि उनका इंतिक़ाल हो चुका है। फिर हम ने चेहरा देखा तो

वह हंस रहे थे, डॉक्टर ने कहा कि मैं हैरान हूं कि उनको ज़िन्दा कहूं या मुर्दा। जब भी कोई उनको गुस्ल देने के लिए आगे बढ़ता, डॉक्टर पीछे हट जाता। हत्ता कि फ़ज़ल बिन हुसैन जो बड़े आरिफ़ थे आए और उन्होंने गुस्ल दिया और नमाज़ पढ़ कर दफ़न कर दिया।

(५८) बैहक़ी ने दलाइलुन्नुबुव्वह में सईद बिन मुसैयिब से रिवायत की कि ज़ैद बिन ख़ारजा का हज़रत उस्मान ग़नी के ज़माने में वेसाल हो गया। चुनांचे उनको कफ़न पहना दिया गया। फिर उनके सीने में कुछ आवाज़ सुनी गई, वह कह रहे थे कि अहमद अहमद। पहली किताबों में लिखा है। सिद्दीक़ ने सच कहा, वह अपने नफ़्स के लिहाज़ से कमज़ोर हैं, लेकिन अल्लाह के मुआमले में क़वी हैं, यह भी पहली किताबों में है। उमर बिन ख़त्ताब ने सच कहा, वह पहली किताबों में कुव्वत व अमानत के साथ मुत्तसिफ़ हैं। उस्मान बिन अफ़्फ़ान ने सच कहा, यह पहले लोगों के नक़्शे क़दम पर चले, चार साल गुज़र गये, और दो बाक़ी हैं। फ़ित्ने बरपा हो गये, ताक़तवर ने कमज़ोर को खा लिया और क़यामत आ गई, तुम्हारे लश्कर से अरीस के कुएं की ख़बर आएगी, और बेरारेस क्या है? सईद बिन मुसैयिब कहते हैं कि फिर ख़त्मा का एक शख़्स मर गया और उस से भी ऐसी ही आवाज़ सुनने में आई और उसने कहा कि बनू अल-हारिस बिन ख़ज़रज के भाई ने सच कहा। बैहक़ी ने कहा कि यह अस्नाद सही है और उसके दीगर शवाहिद भी हैं।

इब्ने अबी अद्दुनिया ने और इब्ने नज्जार ने अपनी तारीख़ में नौमान बिन बशीर व अबी कूफ़ा का वह ख़त नक़ल किया जिस में उन्होंने उम्मे अब्दुल्लाह बिन्ते अबी हाशिम को मुख़ातब किया है। इस ख़त में ज़ैद बिन ख़ारजा का तमाम वाक़्या मन्क़ूल है।

बैहक़ी ने दूसरी सनद से रिवायत किया कि यह वाक़्या हज़रत उस्मान की ख़िलाफ़त के दो साल मुकम्मल होने के बाद वाक़े हुआ और बाक़ी चार साल में बहुत फ़ित्ने हुए, मसलन अहले इराक़ का फ़ित्ना, और बैरारेस में हज़रत के हाथ में में जो अंगूठी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की थी, गुम हो गई और फिर न मिली और उसी दिन से ख़िलाफ़ते उस्मान पर ज़वाल शुरू हो गया।

(५९) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने और इब्ने असाकिर ने अपनी सनद से रिवायत किया कि जिनको मुसैलमा कज़्ज़ाब ने क़त्ल किया उनमें से एक शख़्स मक़्तूल होने के बाद कहने लगा कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, अबू बकर सिद्दीक़, उमर शहीद, उस्मान रहमी। फिर ख़ामोश हो गया।

(६०) बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में और इब्ने मुन्दह ने अपनी सनद से अब्दुल्लाह बिन उबैदुल्लाह अंसारी से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि हज़रत साबित बिन क़ैस शमास जंगे यमामा में शहीद हो गये तो उनके दफ़न करने वालों में मैं भी शरीक था। जब हम ने उनको उनकी क़बर में दाख़िल कर दिया तो वह फरमाने लगे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह है, और अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु सिद्दीक़ हैं, उमर शहीद हैं, उस्मान रहीम हैं। तो हमने उनको ग़ौर से देखा। लेकिन वह मर चुके थे।

(६१) तबरानी ने कबीर में अपनी सनद से अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद से रिवायत की कि नौमान बिन बशीर ने उनको बताया कि हम में का एक शख़्स जिसका नाम ख़ारजा बिन ज़ैद था, हम ने उसको कफन वग़ैरह पहना दिया। अब मैं नमाज़ पढ़ने खड़ा हो गया तो मैंने आवाज़ सुनी तो पीछे मुड़ कर देखा तो मालूम हुआ कि उन में हरकत पाई गई है, वह फरमा रहे थे कि क़ौम में सबसे ज़ाइद ताक़तवर और बेहतर उमर हैं जो जिस्म और ईमान दोनों के फख़्ता हैं और उस्मान अमीरुल-मुमिनीन पाक दामन और मुआफ़ करने वाले हैं। दो रातें गुज़र चुकी हैं और चार बाक़ी हैं। लोगों में इख़्तिला़फ़ हो गया और अब उनका कोई निज़ाम नहीं रहा। ऐ लोगो! अपने इमाम की बात सुनो! और उसकी इताअत करो, यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (के जानशीन और ख़लीफ़ा) हैं। और रवाहा का बेटा। फिर उसने कहा कि ज़ैद बिन खारजा का क्या हाल है? (यानी अपने बाप का)। फिर वह कहते हैं कि मैं बैरारस के पीछे हो गया तो आवाज़ ख़त्म हो गई।

(६२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से अबू अब्दुल्लाह शामी से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि हम रूमियों से जंग के लिए निकले तो हमारी जमाअत के लोग दुश्मन के तआकुब में चल दिए इत्तिफ़ाक़न दो आदमी जमाअत से बिछड़ गये। उन में से एक ने बताया कि हम को रूमियों का एक सरदार मिला, और उसने हम को दावते जंग दी। थोड़ी देर हम लड़े तो एक साथी क़त्ल हो गया और मैं भाग खड़ा हुआ और अपनी जमाअत की तलाश शुरू कर दी। रास्ता में मुझ को मेरे नफ़्स ने मलामत शुरू कर दी कि तेरा साथी तुझ से पहले ही जन्नत में चला गया और तू भागता फिरता है। चुनांचे मैं वापस आया और उस शख़्स से दोबारा लड़ने लगा। उसने मुझ को ऐसी चोट मारी कि मैं गिर गया। वह सीना पर चढ़ कर बैठ गया और कोई चीज़ ले कर मुझ को क़त्ल करने लगा। इतने में मेरा साथी शहीद आ गया और उसने उस शख़्स को बालों से पकड़ कर घसीट लिया और उसके क़त्ल

पर मेरी एआनत की और हमने मिल कर उसको क़त्ल कर दिया। फिर वह मेरे साथ दरख़्त तक चलता रहा था और वहां पहुंच कर गिर पड़ा और हस्बे मामूल मक़्तूल हो गया। फिर मैंने अपने साथियों में वापस आया और उनको इत्तिला दी।

(६३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन अस्लम से रिवायत की कि कुछ लोग रूमियों से जंग करते रहते थे। इत्तिफ़ाक़न वह गिरफ़्तार कर लिए गये। उनका बादशाह आया और उसने उनको हुक्म दिया कि वह ईसाइयत क़बूल करें। मगर उन्होंने इंकार कर दिया। बादशह ने उनको क़त्ल कर देने का हुक्म दिया। बादशाह एक टीला पर नहर के किनारे बैठ गया और एक शख़्स को क़त्ल करा दिया और उसका सर नहर में डलवा दिया। लेकिन उसका सर नहर में खड़ा हो गया और उनकी तरफ़ मुतवज्जह हो कर कहने लगा।

तर्जमा : ऐ मुतमईन नफ़्स तू अपने रब की तरफ राज़ी खुश लौट जा और मेरे बंदों में दाखिल हो और मेरी जन्नत में दाखिल हो।

(६४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सईद अमी से रिवायत की, कुछ लोग समुन्द्र में जिहाद के लिए निकले तो एक नौजवान आया और उसने दर्ख़्वास्त की कि उसको भी सवार कर लिया जाए। लेकिन उन्होंने मना कर दिया। लेकिन जब उसने बहुत इसरार किया तो उन्होंने उसको बिठा लिया। अब जब दुश्मन से मुडभेड़ हुई तो उसने अपनी जवां मर्दी के जौहर दिखाए और शहीद हो गया। शहीद होने के बाद उसका सर खड़ा हो गया और कश्ती वालों की तरफ मुतवज्जह हो कर कहने लगा कि-

तर्जमा : यह आख़िरत का घर उन लोगों को हम देंगे जो जमीन में सरकशी और फसाद का इरादा नहीं रखते और अंजामे कार परहेज़गारों के लिये है। फिर वह सर डूब कर ग़ायब हो गया।

(६५) हाफ़िज़ अबू मुहम्मद ख़लाल ने किताब करामातुल-औलिया में अपनी सनद से रिवायत की कि अबू यूसुफ़ ग़सूली अलैहिर्रहमा ने कहा कि एक रोज़ इब्राहीम बिन अदहम अलैहिर्रहमा शाम में मेरे पास आए और कहा कि आज मैंने एक अजीब तर चीज़ देखी है। मैंने कहा कि वह क्या है? उन्होंने कहा कि मैं एक क़ब्र के पास खड़ा था कि अचानक वह फट गई और उस में से ख़िज़ाब लगाए हुए एक बुजुर्ग बरामद हुए और मुझ से कहा कि मांगो क्योंकि मैं तुम्हारे लिए ही निकला हूं। मैंने कहा कि बताओ खुदा ने तुम्हारे साथ क्या मुआमला किया? उन्होंने जवाब दिया कि मैं खुदा की बारगाह में बुरे आमाल के साथ गया था। लेकिन अल्लाह तआला ने तीन कामों की वजह से मुझ को बख़्श दिया :

एक तो यह कि जो खुदा से मुहब्बत रखता था मैंने उस से मुहब्बत रखी। दोम : यह कि नाजाइज़ चीज़ कभी न पी। सोम : यह कि तू मेरे पास इस हाल में आया कि तेरी दाढ़ी में खि़ज़ाब था और मुझे खि़ज़ाब वाले से हया आती है कि मैं उसको जहन्नम में दाखि़ल करूं। रावी कहते हैं कि फिर क़ब्र हस्बे मामूल बन्द हो गई। फिर इब्राहीम ने कहा कि ऐ ग़सूली तअज्जुब है कि खुदा तुम को अजाइब दिखाता है।

(६६) बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में अपनी सनद से क़ाज़ी नीशापुर इब्राहीम से रिवायत की कि उनके पास एक शख़्स आया जिसके बारे में बताया गया कि यह शख़्स उनको कोई अजीब बात बताना चाहता है। उस शख़्स ने कहा कि पहले मैं कफन चुराता था। एक दिन एक औरत का इंतिक़ाल हो गया तो मैं उसके कफन चुराने की ग़रज़ से गया। जब क़ब्र खोद कर मैंने उसके कफन पर हाथ डाला तो उस ने कहा कि सुब्हानल्लाह! एक जन्नती आदमी एक जन्नती औरत का कफन छीन रहा है। मैंने कहा वह कैसे? तो उसने कहा कि क्या तूने मेरे जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी थी? मैंने कहा कि हां, औरत कहने लगी कि अल्लाह तआला ने मुझ से वादा फरमाया था कि जो भी मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेगा उसकी मग्फ़िरत हो जाएगी।

(६७) महामली ने अपनी अमाली में अब्दुल-अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि एक शख़्स अपनी बीवी के हम्राह शम में था उनका एक लड़का शहीद हो चुका था। एक दिन उस शख़्स ने अचानक एक सवार को आते देखा। उस शख़्स ने आकर अपनी बीवी से कहा कि ऐ फुलाना मेरा और तेरा बेटा तो औरत ने कहा कि तू अपने से शैतान को दूर रख। मेरा बेटा तो एक अरसा हुआ शहीद हो चुका। तेरे दिमाग़ में कुछ ख़राबी है चल अपना काम कर। वह शख़्स इस्तिग़फ़ार करते हुए अपने काम में मश्ग़ूल हो गया लेकिन थोड़ी देर बाद सवार क़रीब आ चुका था। अब जो ग़ौर से देखा तो शुबह दूर हुआ वाक़ई वह उनका शहीद बेटा था। बाप नें कहा कि ऐ बेटे! क्या तू शहीद नहीं हुआ था? उसने कहा कि जी हां, मगर उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रहमा का विसाल हो गया है। शुहदा ने अल्लाह तआला से इजाज़त चाही है कि वह उनके जनाज़े में शिर्कत करें। मैंने अपने रब से आपको सलाम करने की इजाज़त हासिल कर ली है फिर वह उनको दुआ दे कर चला गया। बाद में मालूम हुआ कि वाक़ई हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रहमा का विसाल उसी वक़्त हुआ था।

यह वह रिवायात हैं जो अइम्म-ए-हदीस ने अपनी कुतुब में नक़ल फरमाई हैं। मैंने उनको यहां इसलिए लिखा है कि अल्लामा याफ़ई ने अपनी किताब में जो फरमाया है उसकी ताईद हो जाए।

(६८) याफ़ई ने फरमाया कि मर्दों का अच्छी या बुरी हालत में देखना एक क़िस्म का कश्फ़ है जिस से कभी बशरत अम्र कभी नसीहत मुराद होती है या कभी उस में मैयत के फाइदे की तरफ इशरा होता है कि उसको ईसाले सवाब किया जाए या उसका क़र्ज़ उतारा जाए या उसके अलावा कुछ और फिर मुर्दों का देखना बिल-उमूम बहालते ख़्वाब होता है और कभी कभी जागते में भी होता है और यह करामते औलिया अल्लाह को होता है नीज़ दूसरे मक़ाम पर फरमाया कि बाज़ औक़ात रूहें इल्लीयीन या सिज्जीन से आकर अपने जिस्मों के साथ क़बर में मुतअल्लिक़ हो जाती हैं, बिल-खुसूस जुमा की रात को और रूहें आपस में बैठती और कलाम करती हैं। अहले नेमत पर इन्आम होता है और अज़ाब के मुस्तहक़ीन पर अज़ाब होता है।

(६९) याफ़ई ने कहा कि जब अरवाह इल्लीयीन या सिज्जीन में होती हैं तो अज़ाब व सवाब सिर्फ़ अरवाह को होता है। लेकिन जब तक अरवाह क़ुबूर में होती हैं तो अज़ाब व सवाब जिस्म मआ अरवाह को होता है।

(७०) इब्ने क़ैयिम कहते हैं कि अहादीस व आसार इस बात पर दलालत करते हैं कि जब कोई शख़्स किसी क़बर पर आता है तो साहिबे क़बर को उसकी आमद का इल्म होता है और वह उसका कलाम सुनता है नीज़ उन्स हासिल करता है और उसके सलाम का जवाब देता है और यह बात शुहदा और ग़ैर शुहदा को आम है फिर उसमें किसी वक़्त की भी तख़्सीस नहीं और यह क़ौल ज़हहाक के इस क़ौल से असह है जिसमें वक़्त की क़ैद है, फिर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहले क़ब्र को सुनने और देखने वालों का सा सलाम करने का हुक्म दिया है।

(७१) मुस्लिम ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ब्रिस्तान की तरफ निकले और फरमाया कि-

(७२) निसई और इब्ने माजा ने बरीदह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम को यह तालीम देते थे कि हम जब क़ब्रिस्तानों में जाएं तो यूं कहें कि -

(७३) मुस्लिम ने आइशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की कि वह फरमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

से दरयाफ़्त किया कि मैं क़ब्रिस्तान में जा कर क्या कहूं तो आपने फ़रमाया कि तुम यह कहा करो कि -

(७४) तिर्मिज़ी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना के क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाया कि :

(७५) तबरानी ने अली बिन अबी तालिब से रिवायत की कि वह क़बरों के क़रीब गये और फ़रमाया कि :

(७६) इब्ने अबी शैबा ने सअद बिन अबी वक़ास रज़ि० से रिवायत की कि जब वह अपनी ज़मीन से वापस होते तो शुहदा की क़ुबूर पर गुज़र होता तो फ़रमाते : अस्सलामु अलैकुम व इन्ना इन श अल्लाहु बेकुम लाहिकून। और अपने साथियों से भी फ़रमाते कि तुम शुहदा को सलाम क्यों नहीं करते इनको सलाम करो, क्योंकि यह तुम्हारे सलाम का जवाब देते हैं।

(७७) इब्ने अबी शैबा ने रिवायत की कि हज़रत उमर जब भी क़बरों से गुज़रते ख़्वाह दिन हो या रात हो सलाम करते।

(७८) इब्ने अबी शैबा ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि जब तुम जान पहचान के लोगों की क़बरों पर से गुज़रो तो यूं कहो कि : अस्सलामु अलैकुम या अहलल-क़ुबूर और जब अंजान लोगों की क़ुबूर पर गुज़रो तो कहो कि : अस्सलामु अलल-मुस्लेमीन।

(७९) इब्ने अबी शैबा ने हसन अलैहिर्रहमा से रिवायत की कि जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर यह कहे :

तो आदम अलैहिस्सलाम से लेकर उस वक़्त तक जितने मोमिन मरे हैं सब उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करेंगे।

(८०) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू हुरैरह से रिवायत की कि जिसने क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर अहले क़ुबूर के लिए दुआए मग़्फ़िरत की और उन पर रहम की दर्ख़्वास्त की तो गोया वह शख़्स उनके जनाज़ों में शरीक हुआ और उन पर नमाज़ पढ़ी।

(८१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अज़हर बिन मरवान से रिवायत की कि बशर बिन मन्सूर का एक कमरा जिस में वह नमाज़ पढ़ते वक़्त दाख़िल हो जाते और उसका दरवाज़ा क़बरों की तरफ़ खोल देते और वहां से क़बरों को देखते।

(८२) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअब में इब्ने उमर से रिवायत की जब वह किसी जनाज़े की नमाज़ पढ़ने को क़ब्रिस्तान में आते तो क़ब्रिस्तान वालों के लिए दुआए मग़्फ़िरत करते और दुआए

रहम करते।

(८३) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने आसिम हजदरी के ख़ानदान के एक शख़्स से रिवायत की कि उन्होंने आसिम की मौत के कई साल बाद उनको ख़्वाब में देखा तो उन्होंने पूछा, क्या आप मर नहीं चुके? उन्होंने जवाब दिया कि हां। उन्होंने कहा कि अब कहां क़याम पज़ीर हो? तो उन्होंने जवाब दिया कि बखुदा मैं जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में हूँ और मैं मेरे साथी हर जुमा की रात को और सुबह को बकर बिन अब्दुल्लाह मुज़नी के पास जमा होते हैं और तुम लोगों की चीज़ें मालूम करते हैं। उन्होंने पूछा कि तुम्हारे जिस्म आते हैं या अरवाह? तो उन्होंने जवाब दिया, कि नहीं सिर्फ़ रूह ही जमा होती है जिस्म तो सड़ गल गया। उन्होंने दरयाफ़्त किया कि जब हम तुम्हारे पास ज़्यारत को आते हैं तो क्या हमको पहचानते हो? उन्होंने जवाब दिया कि उस चीज़ का पता जुमा के तमाम दिन और रात को होता है और सनीचर को तुलूअे आफताब के वक़्त तक। उन्होंने दरयाफ़्त किया कि सिर्फ़ इन अय्याम की तख़्सीस की क्या वजह है? तो उन्होंने जवाब दिया कि यह जुमा की फ़ज़ीलत है।

(८४) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने बशर बिन मन्सूर से रिवायत की कि एक शख़्स का मामूल था कि वह क़ब्रिस्तान में आकर बैठ जाता और जब भी कोई जनाज़ा आता उसकी नमाज़ पढ़ता और शाम के वक़्त क़ब्रिस्तान के दरवाज़े पर खड़ा हो कर कहता कि खुदा तुम को उन्स अता करे और तुम्हारी गुर्बत पर रहम करे, तुम्हारे गुनाह मआफ़ करे और नेकियां क़बूल करे। पस यही कलिमात कहता था। वही शख़्स रिवायत करता है कि एक शाम को मैं अपना मामूल पूरा न कर सका और घर आ गया। मैं सो रहा था कि एक कसीर मख़्लूक़ आ गई। मैंने दरयाफ़्त किया कि आप लोग कौन हैं और क्यों आए हैं? उन्होंने कहा कि हम क़ब्रिस्तान वाले हैं, आपने आदत कर ली थी कि घर आते वक़्त हम को हदिया देते थे और आज न दिया। मैंने कहा कि वह हदिया क्या था? तो उन्होंने कहा कि वह हदिया दुआओं का था। मैंने कहा कि अच्छा अब यह हदिया में तुम को फिर दूंगा। फिर मैंने अपने इस मामूल को कभी तर्क न किया।

(८५) इब्ने अबी शैबा और बैहक़ी ने रिवायत की कि मतरफ़ का कूड़ा जुमा की रात को रौशन हो जाता था तो वह रात को क़ब्रिस्तान में आते और अपने घोड़े पर बैठे-बैठे ओंघने लगते तो उनको ऐसा मालूम होता कि सब क़ब्र वाले अपनी-अपनी क़बरों पर बैठे हैं। क़बर वाले

कहते हैं कि देखो यह मतरफ़ है जो जुमा के रोज़ तुम्हारे पास आए हैं। तो वह कहते कि क्या तुम भी जानते हो कि जुमा भी कोई दिन है वह कहते कि हां हम यह भी जानते हैं कि परिन्द उस रोज़ क्या कहते हैं? परिन्द उस रोज़ कहते हैं। सलामुन यौमुन सालेहुन।

(८६) इब्ने अबी शैबा और बैहक़ी ने अपनी सनद से सुफ़ियान बिन उऐना से रिवायत की, वह कहते हैं जब मेरे वालिद का इंतिक़ाल हो गया तो मैंने बहुत आह व बुका की और मैं उनकी क़बर पर रोज़ाना आता था फिर कुछ कमी कर दी तो एक रोज़ ख़्वाब में देखा कि वह फरमा रहे हैं कि ऐ बेटे! तुमने क्यों ताख़ीर की? मैंने दरयाफ़्त किया कि क्या आप को मेरे आने का इल्म हो जाता है? उन्होंने फरमाया कि मैं हर मरतबा तुम्हारे आने को मालूम कर लेता था और जब भी तुम आते थे तो मैं तुम को देख कर खुश होता था और मेरी आस पास वाले भी तुम्हारी दुआ से खुश होते थे। चुनांचे मैंने पाबन्दी से जाना शुरू कर दिया।

(८७) बैहक़ी ने अबू दर्दा से रिवायत की, वह कहते हैं कि एक आलिम ने मुझे बताया कि मैं अपने बाप की क़बर पर जाने का आदी था। फिर कुछ रोज़ बाद मेरे दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि यह मिट्टी है इस पर जाने का क्या फाइदा। चुनांचे मैंने जाना तर्क कर दिया तो एक रोज़ वालिद साहब को ख़्वाब में देखा। वह फरमाते थे कि ऐ बेटे! तुमने आना क्यों छोड़ दिया? मैंने कहा कि मिट्टी के ढेर पर आकर क्या करूं? उन्होंने फरमाया कि ऐ बेटे! ऐसा न कहो जब तुम आते थे तो मेरे पड़ोसी मुझ को बशारत देते थे और जब तुम वापस होते थे तो मैं तुम को देखता रहता था हत्ता कि तुम कूफ़ा में दाख़िल हो जाते हो।

(८८) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने उस्मान बिन सूरः से रिवायत की (उनकी मां को कसरते इबादत की वजह से राहिबा कहते थे) कि जब मेरी मां का इंति़क़ाल हो गया तो मैं हर जुमा की रात को उनके पास आता था और उनके नीज़ तमाम अहले क़ुबूर के लिए दुआए मग़्फ़िरत करता था। एक रात मैंने उनको ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि आपके मिज़ाज कैसे हैं? तो उन्होंने कहा कि बेटे मौत की तक्लीफ़ सख़्त है और बेहम्दुलिल्लाह बेतहरीन बरज़ख़ में हूं। उसमें फूलों का बिस्तर बिछाती हूं और सुन्दुस व इस्तबरक़ का तकिया लगाती हूं। मैंने कहा कि क्या तुम को कुछ हाजत है उन्होंने कहा कि हां मैंने कहा क्या? कहा कि तुम मेरी ज़्यारत करन न छोड़ो, क्योंकि तुम्हारे

आने से मुझे उन्स हासिल होता है और जब तुम आते हो तो दूसरे मुर्दे मुझे बशारत देते हैं कि तुम्हारे घर से ज़्यारत करने वाला आ रहा है, और वह खुद भी खुश होते हैं।

(८६) सलफी कहते हैं कि मैंने अबुल-बरकात अब्दुर्रहमान को इस्कन्दरीया में कहते हुए सुना कि वह फरमाते थे कि मैंने अपनी वालिदा को कहते हुए सुना कि वह फरमाती हैं कि मैंने अपनी वालिदा को ख़्वाब में देखा कि वह फरमा रही हैं कि ऐ मेरे बेटे! जब तू मेरी क़बर पर आना तो मेरे क़रीब बैठना ताकि मुझे उन्स हासिल हो और मेरे लिए दुआए रहमत करना।

(६०) हाफ़िज़ इब्ने रजब फरमाते हैं कि मुझे अली इब्ने अब्दुस्समद ने अपनी सनद से असद बिन मूसा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मेरे एक दोस्त का इंतिक़ाल हो गया तो मैंने उसको एक दिन ख़्वाब में देखा कि वह मुझ से कह रहा है कि सुब्हानल्लाह! तुम फुलां शख़्स की क़बर पर गये, वहां बैठे, उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत की और मेरे पास न आए? मैंने कहा तुम को कैसे पता चला? उसने कहा कि जब तुम अपने फलां दोस्त की क़ब्र के पास आए तो मैंने तुम को देखा। मैंने कहा कि इतने मन मिट्टी के नीचे दब जाने के बाद क्यों कर देख लिया? तो उसने कहा कि क्या तुम नहीं जानते कि जब पानी शीशा में हो, तो कैसे नज़र आता है।

(६१) तंबीह : अबू दाऊद, तिर्मिज़ी ने बरिवायते सहीहा बयान किया कि अबू जरी हजीमी कहते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि अलैकस्सलामु या रसूलुल्लाह। तो आपने फरमाया कि ऐसा न कहो क्योंकि यह मुर्दों का सलाम है। इससे मालूम हुआ कि मुर्दों के सलाम में लफ़्ज़ अला मुक़द्दम है। लेकिन दूसरी हदीस सही से मालूम होता है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने खुद क़ब्रिस्तान जा कर फरमाया कि अस्सलामु अलैकुम या अहलल-कुबूर। तो इन दोनों हदीसों में तत्बीक़ देते हुए बाज़ हज़रात ने फरमाया कि जिस हदीस में लफ़्ज़ सलाम मुक़द्दम है वह ज़ाइद सही है। और बाज़ ने फरमाया कि सुन्नत यही है कि लफ़्ज़ अलैकुम पहले कहा जाए। लेकिन अल्लामा इब्ने क़ैयिम ने बदाए में कहा कि दोनों फरीक़ों ने हदीस के मक़्सूद को न समझने की वजह से यह बात कही। दरअस्ल बात यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाना कि अलैकस्सलामु मुर्दों का सलाम है यह कोई तशरीई हुक्म के बयान के लिए न था बल्कि आप जमान-ए-जाहलीयत के तरज़े सलाम का

तज़्किरा फरमा रहे थे क्योंकि ज़माने-ए-जाहलीयत में लोग लफ़्ज़ सलाम को मैयत के नाम से पहले लाते थे। जैसे एक शायर ने कहा है :

अलैका सलामुल्लाहि क़ैस बिन आसिम

तर्जमा : आप पर सलाम हो ऐ क़ैस बिन आसिम।

और एक शख़्स ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु के मरसीया में कहा कि :

तर्जमा : ऐ अमीर आप पर सलाम हो और अल्लाह तआला फटी हुई खाल में बरकत अता फरमाये।

नीज़ यह तरज़ अहले अरब के कलाम में उमूमन था। मगर किसी अम्र वाक़ई की ख़बर देना उसके जवाज़ को भी साबित नहीं करता तो इस्तिहबाब क्यों कर साबित होने लगा। इसलिए मालूम हुआ कि सुन्नत तरीक़ा यही है मुर्दों को सलाम हो या ज़िन्दों को लफ़्ज़ सलाम बहरहाल मुक़द्दम है।

इब्ने क़ैयिम ने कहा कि अगर कोई शख़्स यह कहे कि ज़िन्दा इंसानों को सलाम करते वक़्त लफ़्ज़ सलाम इसलिए मुक़द्दम करते हैं कि उन से जवाब की तवक़्क़ो है इसलिए दुआ को मदऊफ लहू पर मुक़द्दम कर दिया गया लेकिन मुर्दे से यह तवक़्क़ो नहीं है। तो इसका जवाब यह है कि मुर्दे में भी जवाब की तवक़्क़ो है, जैसा कि अहादीस से मालूम हुआ।

नुक्त-ए-अजीबा : दुआए ख़ैर में दुआ के अल्फ़ाज़ को उस शख़्स के ज़िक्र पर मुक़द्दम किया जाता है जिसके लिए दुआ की जाती है। जैसे सलामुन अला नूहिन, सलामुन अला इब्राहीमा सलामन अलैकुम बिमा सबरतुम और यह दुआ में उस शख़्स का ज़िक्र पहले करते हैं कि जिसके वास्ते बद दुआ हो, जैसे - व इन्ना अलैका लानती। व उलैहिम दायरतु सिसूए वअलेर्दिम ग़दब।

रूहों के ठहरने का बयान

अल्लाह तआला ने इरशद फरमाया कि खुदा वह है जिसने तुम को एक ही जान से पैदा फरमाया, पस कुछ ठहरे हुए हैं और कुछ अमानत के तौर पर रखे हुए हैं। और अल्लाह तआला उनके ठहरने की जगह और उनकी अमानत की जगह जानता है। यानी जब वह अपने वालिद की पीठ में होते हैं या जब वह मरने के बाद अमानत हो जाते हैं।

(१) मुस्लिम ने इब्ने मसऊद से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शुहदा की अरवाह अल्लाह

तआला के पास सब्ज़ परिन्दों के पोटों में जन्नत की नहरों में जहां चाहती हैं सैर करती हैं, फिर उन क़िन्दीलों में बसेरा करती हैं जो अर्श के नीचे लटक रही हैं।

(२) अहमद, अबू दाऊद, हाकिम और बैहक़ी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हारे साथी जंगे उहुद में शहीद हुए तो अल्लाह तआला ने उनकी अरवाह को सब्ज़ परिन्दों के पोटों में रख दिया कि वह जन्नत की नहरों पर आएं और वहां फल खाएं। फिर वह ऐसे क़िन्दीलों में बसेरा करते हैं जो अर्श के नीचे लटके हुए हैं इब्ने अब्बास, अबू सईद खुदरी वग़ैरहुम से भी यही मरवी है। अबू सईद की रिवायत में यह भी है कि अल्लाह तआला फरमाएगा क्या इन नेमतों से भी ज़ाइद कोई नेमत अच्छी है? तो शहीद कहेगा हां, मौला तआला मैं पसन्द करता हूं कि मेरे जिस्म में मेरी रूह वापस कर दी जाए और फिर मैं तेरी राह में क़त्ल किया जाऊं।

इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि बच्चों की रूहें जन्नत की चिड़ियों के पोटों में होती और सैर करती हैं।

(३) हिन्नाद ने किताबुज़्ज़ुहद में और इब्ने अबी शैबा ने उबय बिन कअब से रिवायत की शुहदा जन्नत के बाग़ में बने हुए क़ुब्बों में होंगे। फिर उनके पास मछली और बैल भेजा जाएगा यह दोनों आकर आपस में लड़ेंगे तो अहले जन्नत उनको देख कर खुश होंगे। और जब उनको किसी चीज़ के खाने की ज़रूरत होगी। तो उनमें से एक दूसरे को मार डालेगा और वह जब उन में से किसी चीज़ को खाएंगे तो जन्नत की हर चीज़ का मज़ा उसमें पाएंगे।

(४) बुख़ारी ने अनस से रिवायत की जब हारिसा शहीद हुए तो उनकी मां ने कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपको मालूम है कि मुझ को हारेसा रज़ि अल्लाहु अन्हु से कितनी मुहब्बत थी, तो अगर वह जन्नत में हों तो बता दीजिए कि मैं सब्र कर लूं और अगर वह वहां न हों तो फिर बताइए कि मैं क्या करूं तो आपने इरशाद फरमाया कि जन्नतें बहुत हैं, वह सबसे बुलन्द मरतबा जन्नतुल-फिर्दौस में हैं।

(५) मालिक ने मुअत्ता में। अहमद और निसई ने बसनद सही कअब बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मोमिन की जान जन्नत के परिन्द के पोटे में हो कर दरख़्त से लटक जाती है। फिर क़्यामत के दिन उसके जिस्म में वापस कर दी जाएगी।

(६) अहमद व तबरानी ने बसनदे हसन हज़रत उम्मे हानी से

रिवायत की कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि क्या हम मरने के बाद एक दूसरे को देख सकेंगे? तो आपने फरमाया कि मरने के बाद जान परिन्द के पोटे में हो कर दरख़्त से लटक जाती है और क़यामत के रोज़ फिर वह अपने जिस्म में दाख़िल हो जाएगी।

(७) इब्ने सअद ने अपनी सनद से रिवायत की कि बिश्र बिन बरा रज़ि अल्लाहु अन्हु की मां ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि यह ताइए कि मरने के बाद एक दूसरे को पहचानते हैं या नहीं? तो आपने फरमाया कि मुत्मइन अरवाह जन्नत में सब्ज़ रंग के परिन्दों के पोटों में होती हैं और यह परिन्द जन्नती दरख़्तों की शख़ों पर होते हैं, तो जिस तरह परिन्द एक दूसरे को पहचानते हैं इसी तरह यह अरवाह भी एक दूसरे को पहचानती हैं।

(८) इब्ने माजा, तबरानी और बैहक़ी ने बेअस में बसनदे हसन रिवायत की कि जब कअब रज़ि अल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो बिश्र की मां उनके पास आई और कहा कि ऐ अबू अब्दुर्रहमान अगर तुम्हारी मुलाक़ात फलां से हो तो उसको सलाम कह देना। तो उन्होंने फरमाया कि ऐ उम्मे बिश्र! खुदा तुम पर रहम करे, हमें इस काम की फुर्सत नहीं। तो उन्होंने कहा कि क्या तुम ने यह हदीस नहीं सुनी कि मोमिन की रूह जन्नत में जहां चाहती है फिरती है और काफिर की रूह सिज्जीन में होती है।

(९) इब्ने मुन्दह, तबरानी और अबू शैख़ ने रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोमिन की अरवाह के बारे में पूछा गया तो आपने फरमाया कि वह सब्ज़ रंग के परिन्दों के पोटों में रहती हैं। जन्नत में जहां चाहती हैं सैर करती हैं। और कुफ़्फ़ार की रूहें मुक़ैयद हैं।

(१०) तबरानी और बैहक़ी ने शुअब में अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत की कि सूरज की किरनों में जन्नत तय करके रखी हुई है। हर साल दो मरतबा उसे खोला जाता है और मुमिनीन की अरवाह एक मख़्सूस क़िस्म के परिन्दों के पोटों में हैं।

(११) अहमद व हाकिम ने और बैहक़ी व अबू दाऊद ने बइफ़ाइद-ए-सेहत बेअस में और इब्ने अबी अद्दुनिया ने इज़्ज़ा में अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुमिनीन के बच्चों की रूहें जन्नत के एक पहाड़ पर हैं जिनकी किफ़ालत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत सारह करते हैं और वह

क़यामत के दिन उनको उनके वालिदैन के सुपर्द फरमा देंगे।

(१२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-ग़ुरा में इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो बच्चा इस्लाम की फितरत पर पैदा हो कर मर जाए तो वह जन्नत में शिकमे सैर और सैराब रहता है और वह दुआ करता है कि अल्लाह! मेरे वालिदैन को मेरे पास भेज दे।

(१३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-ग़ुरा में ख़ालिद बिन मेअ्दान से रिवायत की कि जन्नत में एक दरख़्त है जिसे तूबा कहते हैं, जिस में थन हैं, तो जो बच्चा मर जाता है उसको उन थनों से दूध मिलता है और उसकी परवरिश करने वाले इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं।

(१४) सईद बिन मन्सूर ने मक्हूल से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुमिनीन के बच्चों की अरवाह सब्ज़ रंग की चिड़ियों के पोटों में हैं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनकी परवरिश करते हैं।

(१५) इब्ने अबी हातिम ने ख़ालिद बिन मेअ्दान की मज़्कूरा रिवायत में यह भी बयान किया कि अगर कोई बच्चा साक़ित हो जाए तो वह जन्नत की नहरों में तैरता रहता है और क़यामत तक [illegible] ही होता है, हत्ता कि क़यामत के दिन वह चालीस साला हो कर [illegible]एगा।

(१६) हिन्नाद बिन सिर्री ने जुहद में रिवायत की। [illegible]ाले फिरऔन की रूहें सियाह रंग की परिन्दों के पोटों में हैं, वह आग पर आते जाते हैं और यही मुराद है उनके सुब्ह व शम जहन्नम पर [illegible]श किए जाने से, और शुहदा की रूहें सब्ज़ रंग परिन्दों के पोटों में हैं, और मुसलमानों के बच्चों की रूहें जन्नती चिड़ियों के पोटों में हैं, जहां चाहती हैं वह घूमती फिरती हैं।

(१७) इब्ने अबी शैबा ने इकरमा अलैहिर्रहमा से अल्लाह तआला के क़ौल वला तक़ूलू लेमन युक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाहे अम्वाता की तफ़्सीर में बयान करते हुए कहा कि शुहदा की रूहें चमक्दार सफेद परिन्द हैं।

(१८) अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने क़तादा से रिवायत की कि हमें मालूम हुआ है कि शुहदा की अरवाह सफेद रंग के परिन्दों के पोटों में अर्शे इलाही के नीचे हैं।

(१९) इब्ने मुबारक ने इब्ने अमरु से रिवायत की कि काफिरों की अरवाह सातवें ज़मीन में हैं।

(२०) इब्ने मुन्दह ने उम्मे कबश बिन्ते मारूर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हम ने सवाल किया कि

यह अरवाह कहां जाती हैं? तो आपने ऐसा बयान किया कि घर वाले रोने लगे। आपने फरमाया कि मुमिनीन की रूहें जन्नत में सब्ज़ परिन्दों के पोटों में दाख़िल हो कर खाती पीती रहती हैं और अर्शे इलाही के नीचे लटके हुए क़िन्दीलों में बसेरा करती हैं और दुआ करती हैं कि ऐ अल्लाह! हमारे भाईयों को हम से मिला दे और जो तूने वादा फरमाया है, वह अता फरमा दे। और काफिरों की अरवाह सियाह रंग के परिन्दों के पोटों में जहन्नम से खाती पीती रहती हैं और जहन्नम ही की एक कोठरी में बसेरा करती हैं और कहती हैं कि ऐ हमारे रब! हमारे भाईयों को हम से न मिलाना और जिस चीज़ से तूने डराया है वह हम को न देना।

(२१) बैहक़ी ने दलाइल में और इब्ने मरदवीया और इब्ने अबी हातिम ने अपनी तफ़सीरों में अबू सईद खुदरी से रिवायत की कि मेअ्राज की रात मेरे पास एक हसीन व जमील सीढ़ी लाई गई, यह वह ही सीढ़ी है जिसको देख कर मैयत की आंखें फटी रह जाती हैं, और यह उसके हुस्न की वजह से है। फिर मैं और जिब्रील ऊपर चढ़ कर पहले आसमान पर गये, दरवाज़ा खुलवाया तो आदम अलैहिस्सलाम पर उनकी मोमिन औलाद की अरवाह पेश की जा रही थीं और वह फरमा रहे थे कि यह पाक अरवाह और पाक नफ़्स है इसको इल्लीयीन में पहुंचा दो। फिर उनकी फाजिर जुर्रियत की अरवाह पेश की गईं। आपने तुर्श रूई का इज़्हार करते हुए कहा कि यह ख़बीस रूह और ख़बीस नफ़्स है, इसको सिज्जीन में डाल दो।

(२२) अबू नईम ने बसनदे ज़ईफ़ रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुमिनों की अरवाह सातवें आसमान पर हैं। और अपने जन्नती ठिकाने देखती हैं।

(२३) अबू नईम ने हिलया में वहब बिन मुनब्बा से रिवायत की कि सातवें आसमान पर एक घर है जिसका नाम दारे बैज़ा (सफेद घर) है। इसमें मुमिनीन की रूहें जमा होती हैं। और जब कोई नई रूह आती है तो यह उसका इस्तिक़्बाल करती हैं और इससे दुनिया वालों के हालात इस तरह दरयाफ़्त करती हैं जिस तरह दुनिया में मुसाफिर से किए जाते हैं।

(२४) मरुज़ी ने जनाइज़ में अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब से रिवायत की कि मुमिनीन की अरवाह जिब्रील के पास हैं और उन से कह दिया जाता है कि तुम क़्यामत तक उनके ज़िम्मेदार और मुहाफ़िज़ हो।

(२५) सईद बिन मन्सूर ने अपनी सुनन में जरीर ने किताबुल-अदब में मुग़ीरह बिन शुअ्बा से रिवायत की कि हज़रत सलमान फारसी की मुलाक़ात हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम से हुई तो उन्होंने उन से कहा

कि अगर तुम पहले मरो हो तो मुझे ख़बर देना कि तुम्हारे साथ क्या मुआमला हुआ और अगर मैं पहले मरूंगा तो तुमको इत्तिला दूंगा। तो उन्होंने दरयाफ़्त किया कि मगर मरने के बाद हम एक दूसरे को ख़बर कैसे दे सकते हैं? तो उन्होंने कहा कि रूह जिस्म से जुदा होने के बाद ज़मीन आसमान के दर्मियान रहती है हत्ता कि क़्यामत के दिन अपने असली जिस्म में वापस होती है। तो इत्तिफ़ाक़ यह हुआ कि सलमान का इंतिक़ाल हो गया तो अब्दुल्लाह बिन सलाम ने उनको ख़्वाब में देखा तो उन से दरयाफ़्त किया कि यहां तुमने सबसे बेहतर किस चीज़ का सिला पाया? तो उन्होंने कहा कि तवक्कुल का।

(२६) इब्ने मुबारक अलैहिर्रहमा ने जुहद में और हकीम ने नवादिर में और इब्ने अबी अद्दुनिया व इब्ने मुन्दह ने सईद बिन मुसैयिब से, उन्होंने सलमान से रिवायत की कि मुमिनीन की अरवाह ज़मीन के बरज़ख़ में हैं जहां चाहती हैं आती जाती हैं। और काफ़िरों की अरवाह सिज्जीन में हैं।

इब्ने क़ैयिम कहते हैं कि बरज़ख़ के मानी दुनिया और आख़िरत के दर्मियान हिजाब के हैं।

(२७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मालिक बिन अनस से रिवायत की कि मुझे हदीस पहुंची है कि मुमिनीन की अरवाह आज़ाद हैं जहां चाहती हैं जाती हैं।

(२८) मरुज़ी और इब्ने मुन्दह ने जनाइज़ में और इब्ने असाकिर ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत की, काफ़िरों की अरवाह बरहूत सबख़ा में हज़रे मौत के इलाक़े में जमा होती हैं और मुमिनीन की अरवाह जाबिया बरहूत में।

(२९) इब्ने असाकिर ने उरवह बिन रदीम से रिवायत की कि जाबिया में हर पाक रूह आती है।

(३०) अबू बकर नज्जार ने अपनी मशहूर हिज़्ब में अली बिन अबी तालिब से रिवायत की कि लोगों की सबसे बेहतर वादी, वादीए मक्का है और बदतरीन वादी अहक़ाफ़ है जो हज़रे मौत के क़रीब है, और उसे बरहूत कहते हैं।

(३१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हज़रत अली से रिवायत की कि मुमिनीन की अरवाह ज़मज़म के कुएं में हैं।

(३३) हाकिम ने मुस्तदरक में और इब्ने मुन्दह ने अख़्नस बिन ख़लीफ़ा जिन्सी से रिवायत की कि कअब अहबार ने एक क़ासिद इब्ने उमर के पास भेजा ताकि पूछ कर आए कि मुसलमानों की रूहें कहां रहती हैं और

मुश्रेकीन की कहां रहती हैं। तो इब्ने उमर ने फरमाया कि मुमिनीन की अरवाह अरीहा में रहती हैं और मुश्रेकीन की अरवाह सनआ में रहती हैं, तो कअब रज़ि अल्लाहु अन्हु ने उनकी तस्दीक़ की।

(३३) इब्ने जरीर ने अपनी तफ़सीर में अपनी सनद से रिवायत की कि सफ़वान ने आमिर बिन अब्दुल्लाह से यमन में दरयाफ़्त किया कि क्या मुमिनीन की अरवाह कहीं जमा होती हैं? तो उन्होंने कहा कि ज़मीन में जमा होती हैं। क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है कि : वलक़द कतबना फ़िज़्ज़बूरे मिन बअ्दिज़्ज़िक्रे इन्नल-अरज़ा यरिसुहा इबादिस्सालेहून। क़यामत तक मुमिनीन की अरवाह यहां जमा रहेंगी।

(३४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने वहब बिन मंबा से रिवायत की कि मुमिनीन की अरवाह एक फरिश्ते को सुपर्द कर दी जाती हैं, जिसका नाम रमयाईल और वह अरवाहे मुमिनीन का ख़ाज़िन है।

(३५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबान बिन सअ्लब से रिवायत की कि जिस फरिश्ते के सुपर्द काफ़िरों की रूहें की जाती हैं उसका नाम दोमा है।

(३६) अक़ीली ने बसनदे ज़ईफ़ ख़ालिद बिन मेअ्दान से और उन्होंने कअब से रिवायत की ख़िज़्र बहरे आला और बहरे अस्फ़ल के दर्मियान एक नूरानी नहर पर हैं और समुन्द्री जानवरों को हुक्म दिया गया है कि वह उनकी इताअत करें और सुबह व शम उन पर अरवाह पेश की जाती हैं।

(३७) इब्ने क़ैयिम कहते हैं कि अरवाह के जमा होने का मस्अला बहुत ही अज़ीम है इसमें अक़्ल को दख़ल नहीं, उसका इल्म तो शरई नुसूस से ही हो सकता है। एक क़ौल यह है कि तमाम मुमिनीन की अरवाह ख़्वाह वह शहीद हों या ग़ैर शहीद, जन्नत में हैं। हां अगर उस से कोई बड़ा गुनाह सरज़द न हो जाए जो इस नेमत से महरूम कर दे तो उनका मुस्तक़िर्र जन्नत नहीं रहता जैसा कि कअब और उम्मे हानी वग़ैरह की अहादीस से ज़ाहिर होता है। और खुद कुरआन में है कि-

और दूसरे मक़ाम पर है -

अल्लाह तआला ने अरवाह की बदन से जुदा होने के बाद तीन क़िस्में बयान फरमाई हैं :

१. मुक़र्रबीन वह जन्नत में हैं।

२. दाएं बाज़ू वाले वह अज़ाब से मामून व महफ़ूज़ रहेंगे।

३. झुठलाने और गुम्राह करने वाले उनको जहन्नम की दावत मिलेगी, और दाख़िले जहन्नम होंगे।

नीज़ क़ुरआने हकीम में है। मोमिने आले फ़िरऔन से कहा गया कि : उदख़ुलिल-जन्नते तो जन्नत में दाख़िल हो जा। तो उसने कहा कि या लैता क़ौमी यालमूना। यानी ऐ काश कि मेरी क़ौम को इस इंआम व इकराम का पता चल जाता। और बाज़ हज़रात कहते हैं कि यह अहादीसे शुहदा के साथ मख़्सूस है जैसा कि दूसरी रिवायत से साबित है।

इब्ने हज़्म कहते हैं कि यह रूहें इसी जगह वापस चली जाएंगी, जहां यह बदन से मुतअल्लिक़ होने से पहले थीं, यानी आदम अलैहिस्सलाम के दाएं तरफ़ या बाएं तरफ़ इस क़ौल पर भी क़ुरआन से इस्तिदलाल किया गया है, मसलन : *व इज़ अख़ज़ रब्बका मिन बनी आदम मिन ज़ुहूरेहिम ज़ुर्रीयतेहिम* और याद करो कि जब तुम्हारे रब ने बनी आदम की पीठों से उनकी ज़ुर्रियत को निकाला। दूसरे मक़ाम पर है *वलक़द ख़लक़्नाकुम सुम्मा सव्वरनाकुम*। और हम ने तुमको पैदा किया फिर तुमको सूरत अता की तो मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने तमाम अरवाह को एक दम पैदा फ़रमा दिया। इसी लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रूहों का लश्कर है जो आपस में एक दूसरे को जानती हैं वह मिल जाती हैं और जो नहीं जानतीं वह जुदा हो जाती हैं। नीज़ अल्लाह तआला ने अरवाह से अहदे रबूबियत लिया है और उनको गवाह बनाया है, हालांकि अभी उनको क़ालिबे जिस्मानी भी अता न किया गया था। यह भी इस अम्र की दलील है कि उनको यक्दम पैदा कर दिया गया था और वह आक़िल थीं। फिर अल्लाह तआला ने उनको बरज़ख़ में जगह अता की। और अज्साम से जुदा होने के बाद फिर वह बरज़ख़ ही की तरफ़ लौटा दी जाएंगी। अब रूहें आलमे बरज़ख़ से रफ़्ता-रफ़्ता इन अज्साम की तरफ़ आ जाती हैं जो तौलीदी माद्दों से पैदा होते हैं। तो मालूम हुआ कि अरवाह जिस्म से मुतअल्लिक़ होने से क़ब्ल भी इल्म व अक़्ल की मालिक हैं। मरने के बाद फिर उनको बरज़ख़ ही में वापस कर दिया जाएगा। जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शबे मेअ्राज में अरवाह को आलमे बरज़ख़ में मुलाहिज़ा फ़रमाया। नेक बख़्तों की रूहें आदम अलैहिस्सलाम के दाएं तरफ़ और बदबख़्तों की रूहें बाईं तरफ़ और यह मक़ाम आलमे अनासिर से वरा-उल-वरा था मोमिन बलन्दी की जानिब थे और काफ़िर पस्ती की जानिब, इसलिए दोनों में बराबरी का ख़्याल न किया जाए। लेकिन अंबिया व शुहदा की रूहें जन्नत में होती हैं। मुहम्मद बिन नस्र मरुज़ी ने इस्हाक़ बिन राहवैह से रिवायत की। यही हमारा क़ौल है और उस पर अहले इल्म ने इत्तिफ़ाक़ किया।

और इब्ने हज़्म ने कहा कि इसी पर अह्ले इस्लाम के अइम्मा का इज्मा है। और यह अल्लाह तआला के फरमान के ऐन मुताबिक़ है। इरशाद होता है कि :

तरजमा : दाएं तरफ़ वाले कौन हैं, दाएं तरफ़ वाले और बाएं तरफ़ वाले कौन हैं। बाएं तरफ़ वाले सब्क़त ले जाने वाले, आगे बढ़ जाने वाले वही मुक़र्रब हैं नेमत वाली जन्नतों में हैं।

तो फ़इम्मा इन काना मिनल मुक़र्रबीन से साबित होता है कि अरवाह यहां ठहरी रहेंगी और थोड़ी-थोड़ी अज्साम की तरफ मुन्तक़िल होती रहेंगी, हत्ता कि जब सबकी तादाद पूरी हो जाएगी तो क़्यामत क़ायम हो जाएगी। और फिर अल्लाह तआला उनको दोबारा अजुराम व अज्साम की तरफ़ लौटा देगा। और यही हयाते सानिया है। यहां तक इब्ने हज़म का कलाम था। और बाज़ हज़रात कहते हैं कि यह अरवाह अपनी-अपनी क़बरों के किनारों पर होती हैं। इब्ने अब्दुल-बर्र ने इस क़ौल को असह तरीन क़रार दिया और उसकी दलील सवाले क़ब्र, अज़ाबे क़ब्र, जन्नत व जहन्नम वग़ैरह का अह्ले क़ुबूर पर पेश किया जाना और क़ुबूर की ज़ियारत का इस्तिहबाब और उनको सलाम करना और हाज़िर व आक़िल की तरह उनको ख़िताब करना, यह सब उमूर इस पर दलालत करते हैं कि अरवाह क़ुबूर ही से मुतअल्लिक़ रहती हैं। इब्ने क़ैयिम ने कहा कि अगर इस क़ौल से मुराद आप की यह है कि अरवाह हमेश क़बरों से मुतअल्लिक़ रहती हैं। तो यह बात किताब व सुन्नत के मुख़ालिफ़ है और ग़लत है। रहा यह कि क़्यामगाह का पेश किया जाना, तो यह इस पर दलालत नहीं करता कि रूह क़बर में है या उसके क़रीब है। बल्कि यह तो उस वक़्त भी मुम्किन है जबकि रूह को एक ख़ास क़िस्म का तअल्लुक़ बदन से हो जाए क्योंकि यह हो सकता है कि रूह रफ़ीक़े आला में होने के बावजूद बदन से भी मुतअल्लिक़ हो सकती है। मसलन जब मुसलमान सलाम करते हैं तो साहिबे क़ब्र उनके सलाम का जवाब देता है हालांकि वह अपने मक़ाम पर रफ़ीक़े आला में रहती है। और जिब्रील अलैहिस्सलाम को नबी अलैहिस्सलाम ने इस तरह देखा कि उनके छेः सौ पर थे जिनमें दो बाजुओं ने तवाफ़ुक़ को पाट दिया था। फिर वह आपसे इतने क़रीब हो गये कि उन्होंने अपने घुटने हुज़ूर अलैहिस्सलाम के घुटनों पर रख दिए और अपने हाथ उनकी रानों पर। और मुमिनीन मुख़्लिसीन के दिल उस चीज़ पर ईमान रखते हैं कि हज़रत जिब्रील बईं हम्मी क़ुर्ब व नज़्दीकी अपने ही मक़ाम पर थे और हदीस शरीफ़ में है कि जब

मैंने नज़र उठाई तो देखा कि जिब्रील अलैहिस्लाम आसमान व ज़मीन के दर्मियान खड़े हैं और कह रहे हैं कि या मुहम्मद! *अन्ता रसूलुल्लाह व अना जिब्रील*। ऐ मुहम्मद! आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और मैं जिब्रील हूं। अब मैं जिस तरफ़ निगाह उठाता था जिब्रील ही जिब्रील नज़र आते थे। और यही तावील अल्लाह तआला के आसमाने दुनिया पर नुज़ूल की है या इसी क़िस्म की दीगर नुसूस की। क्योंकि अल्लाह तआला हरकत व इंतिक़ाल से पाक है। इस सिलसिला में वह लोग ग़लती पर हैं जो ग़ायब (अल्लाह) को हाज़िर (दुनिया) पर क़्यास करते हैं। मसलन रूह को भी जिस्म की तरह समझते हैं कि अगर वह एक जगह होगी तो दूसरी जगह से ग़ायब होगी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शबे मेअ्राज में मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी क़बर में देखा कि नमाज़ पढ़ रहे हैं और फिर छठे आसमान पर भी देखा। उसकी वजह यही थी कि आपकी रूह जिस्म मिसाली में क़ब्र के अन्दर मौजूद थी और उसे एक ख़ास क़िस्म के जिस्म से इत्तिसाल हासिल है कि वह नमाज़ भी अदा करें और सलाम करने वालों को जवाब भी दें सकें, और दोनों बातों में कोई मुनाफ़ात नहीं।

बाज़ हज़रात ने इस मसअला की वज़ाहत के लिए आफताब और उसकी शुआओं को मिसाल के तौर पर पेश किया है कि आफताब आसमान पर होता है और उसकी शुआएं ज़मीन पर लेकिन यह मिसाल कुछ चस्पां नहीं होती। क्योंकि शुआएं आफताब के लिए अर्ज़ हैं लेकिन रूह तो खुद ज़मीन पर उतरती है।

इसी तरह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शबे मेअ्राज में अंबिया को देखना अज्सामे मिसालिया के साथ था। नीज़ अहादीस में अंबिया का क़ब्र में ज़िन्दा होना और नमाज़ पढ़ना साबित है, नीज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने मेरी क़ब्र के पास दरूद शरीफ़ पढ़ा तो मैं उसका दरूद खुद बखुद सुन लेता हूं और जो दूर रह कर दरूद पढ़ता है, उसका दरूद मेरे पास पहुंचा दिया जाता है।

बैहक़ी ने शुअब में अबू हुरैरह से रिवायत की कि अल्लाह तआला ने मेरी क़ब्र पर एक फरिश्ता मुक़र्रर किया है जो तमाम दुनिया की कुव्वते समाअत रखता है। क़्यामत तक जितने लोग मुझ पर दरूद भेजेंगे, वह फरिश्ता उस दरूद को उसके और उसके बाप के नाम से मुझ तक पहुंचा देता है। एक तरफ़ तो यह अहादीस जो इस अम्र पर दलालत करती हैं कि आपकी रूह क़ब्र मुबारक में है और दूसरी तरफ़

यह भी क़तई है कि आपकी रूह आला इल्लीयीन में रफ़ीक़े आला में है। तो पता चला कि रूह का जन्नत में या आला इल्लीयीन में होना और उसके साथ क़बर में होना, सलाम सुनना और जवाब देना, इन उमूर में कोई मुनाफ़ात नहीं, इन तमाम चीज़ों में जो कुछ बुअद है वह इस लिए है कि आलमे मुशाहिदात में कोई चीज़ मिसाल के तौर पर नहीं। यह इब्ने क़ैयिम अलैहिर्रहमा की गुफ़्तगू थी।

एक दूसरे मक़ाम पर आपने कहा कि रूह का तअल्लुक़ जिस्म से पाँच क़िस्म का है। मां के पेट में, विलादत के बाद, सोने की हालत में, बरज़ख़ में, यहां एक क़िस्म का तअल्लुक़ है, क़्यामत के रोज़, वह तअल्लुक़ अकमल तरीन तअल्लुक़ होगा। इसलिए कि इस तअल्लुक़ के बाद जिस्म न तो नींद को और न मौत को और न फसाद को क़बूल करता है। एक दूसरे मक़ाम पर फरमाते है। कि रूह बहुत ही सरीअ़ हरकत रखती इसलिए एक ही लम्हा में आसमान से ज़मीन पर आकर अपने जिस्म से मुतअल्लिक़ हो जाती है और मिसाल सोने वाले की रूह को समझना चाहिए कि सोने में इंसान की रूह सातों आसमानों से पार हो कर अर्शे इलाही के नीचे सज्दा रेज़ होती है और फिर थोड़ी देर में वापस आ जाती है। फिर इब्ने क़ैयिम ने यह हिकायत नक़्ल की। एक शख़्स ने रात वादी बरहूत में गुज़ारी तो उसने यह यह शोर सुना कि या दूमा या दूमा यानी ऐ दूमा। सुफियान कहते हैं कि हम ने हज़रमीन से दरयात किया तो उन्होंने बताया कि इस मक़ाम पर कोई शख़्स रात को नहीं सो सकता।

(३८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-कुबूर में अमरु बिन सुलेमान से रिवायत की। एक यहूदी जिसके पास मुसलमान की अमानत थी, मर गया। यहूदी का लड़का मुसलमान था उसे पता न चला कि अमानत कहां रखी है तो उसने शुऐब जबाई को आकर इत्तिला दी। उसने कहा कि बरहूत के चश्मा पर जाओ और सनीचर के दिन वहां पहुंच कर अपने बाप से जो कुछ मालूम करना चाहो मालूम कर लेना। चुनांचे वह शख़्स चश्म-ए-बरहूत पर आया और दो या तीन मरतबा उसने बाप को पुकारा और कहा कि फलां की अमानत कहां रखी है? तो अन्दर से जवाब आया कि दरवाज़े की चौखट के नीचे है, उसकी अमानत दे डालो और तुम जिस दीन पर हो उस पर क़ायम रहो।

इब्ने क़ैयिम कहते हैं कि इन अक़्वाल को न तो क़तई तौर पर सही कहा जा सकता है और न ही उनकी तग़लीत की जा सकती है। सही बात यह है कि अरवाह अपने मक़ामात के लिहाज़ से बरज़ख़ में मुख़्तलिफ़

मक़ामात पर रहती हैं। इसलिए दलाइल में कोई तआरुज़ नहीं। क्योंकि जहां इख़्तिलाफ़ है वह इसलिए है कि इसमें फ़र्क़े मरातिब के लिहाज़ से अरवाह की क़यामगाह का पता दिया गया है मसलन अंबिया अलैहिमुस्सलाम की अरवाह मलए आला में इल्लीयीन में हैं और फिर वह भी फ़र्क़े मरातिब रखते हैं जैसा कि हदीसे असरा से ज़ाहिर है। और कुछ सब्ज़ रंग के जन्नती परिन्दों के पोटों में हैं और यह बाज़ शुहदा की अरवाह हैं क्योंकि बाज़ शुहदा जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिए जाते हैं, क़र्ज़ वग़ैरह की वजह से। जैसे कि अब्दुल्लाह बिन हजश से मरवी है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और दरयाफ़्त किया कि अगर मैं अल्लाह तआला की राह में शहीद हो जाऊं तो मुझको क्या अज्र मिलेगा? तो आपने फरमाया कि जन्नत। जब वह जाने लगा तो आपने फरमाया, सिवाए क़र्ज़ के कि जिब्रील ने मुझे अभी बताया कि मक़रूज़ को जन्नत में जाने से रोक दिया जाएगा। और बाज़ जन्नत के दरवाज़े पर होंगे, जैसे कि हदीस इब्ने अब्बास में है। और बाज़ जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिए जाएंगे, जैसे कि हदीस शिमला में है कि उस पर क़ब्र में आग रौशन कराई जाती है और बाज़ वह हैं जिनको ज़मीन ही में मुक़ैयद कर लिया जाता है और उसकी रूह मलए आला की तरफ़ नहीं जाती। क्योंकि वह सिफ़्ली रूह है और वह हमारी रूह के पास नहीं जा सकती क्योंकि रूह जिस्म से जुदा होने के बाद अपने हम अमल से मिल जाती है। कुछ रूहें ज़ानियों के तन्नूरों में होती हैं और कुछ रूहें ख़ून की नहर में होती हैं। तो तमाम रूहों का एक ही मुस्तक़िर्र (ठहरने की जगह) नहीं है। लेकिन अपने मक़ामात के जुदा होने के बावजूद एक क़िस्म का तअल्लुक़ अपने अज्साम से रखती हैं ताकि अज़ाब व सवाब को हासिल कर सकें। यहां तक इब्ने क़ैयिम की गुफ़्तगू ख़त्म हुई।

इब्ने क़ैयिम के इस क़ौल की ताईद कि अरवाह का तअल्लुक़ अज्साम से होता है, इमाम अहमद अलैहिर्रहमा की इस रिवायत से होता है कि : वहब बिन मंबा ने कहा कि जनाब ख़रक़ील अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि मेरे पास एक फरिश्ता आया। और उसने मुझ को एक चटयल ज़मीन पर ले जाकर बिठा दिया। वहां दस हज़ार मक़्तूलीन इस तरह पड़े थे कि उनका जोड़-जोड़ अलग था तो मैंने उनको पुकारा, मेरे पुकारते ही हर जोड़ा अपने साथी से मिल गया। फिर उन पर गोश्त उग आया। और उस गोश्त पर खाल आ गई। फिर मुझ से कहा गया कि उनकी रूहों को आवाज़ दूं, मैंने आवाज़ दी तो हर रूह अपने जिस्म

की तरफ़ वापस आ गई। जब वह बैठ गये तो मैंने दरयाफ़्त किया कि आप लोग किस हाल में थे? उन्होंने कहा कि जब हम मर गये और हमारी रूहें जिस्मों से जुदा हो गईं तो हमारे पास एक फ़रिश्ता आया जिसका नाम मीकाईल था। उसने कहा कि अपने आमाल लाओ और उनका बदला लो, क्योंकि हमारे यहां का उसूल यही तुमसे पहले लोगों में था और यही तुम में है और यही तुम्हारे बाद वालों में होगा। तो हमारे आमाल देखने मालूम हुआ कि हम ने बुत परस्ती की, इसलिए हम पर कीड़ों को मुसल्लत कर दिया गया, और इस तरह हमारी रूह को तक्लीफ़ पहुंचाई गई। और रूहों पर ग़म मुसल्लत किया गया जिसकी वजह से जिस्म तक्लीफ़ महसूस करने लगे। अभी हम पर यही अज़ाब हो रहा था कि आपने हम को पुकारा। कुरतबी कहते हैं कि अहादीस से मालूम होता है कि बिल-खुसूस शुहदा की अरवाह ही जन्नत में हैं और हदीसे कअब वग़ैरा भी इसी पर महमूल है और दूसरे लोगों की अरवाह तो कभी वह आसमान पर होती हैं, कभी क़बर पर, और यह भी क़ौल है कि वह हर जुमा को हमेश अपनी क़बरों में आती हैं। इब्ने अरबी कहते हैं कि हदीस बुरीदह से मालूम होता है कि अरवाहे कुबूर में सवाब व अज़ाब में मुब्तला हैं।

क़ुरतबी कहते हैं कि बाज़ शुहदा की अरवाह जन्नत से ख़ारिज भी हैं और यह इसलिए होता है कि उन पर हुकूकुल-इबाद में से कोई हक़ रह जाता है।

अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सब गुनाहों से बड़ा गुनाहे कबाइर के बाद यह है कि इंसान मक़रूज़ मर जाए और अदाइगी के लिए माल न छोड़े।

कुरतबी कहते हैं कि बाज़ उलमा कहते हैं कि तमाम मुमिनीन की अरवाह जन्नतुल-मावा में हैं इसी लिए इस जन्नत को जन्नतुल-मावा कहते हैं। यह जन्नत अर्श के नीचे है, उसके रहने वाले उसकी लज़्ज़तों और हवाओं से मुस्तफ़ीद होते रहते हैं। कुरतबी कहते हैं कि पहली बात ही सही है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर ने अपने फतावा में कहा कि मुमिनीन की अरवाह इल्लीयीन में हैं और काफिरीन की सिज्जीन में हैं और हर रूह को जिस्म से एक क़िस्म का तअल्लुक़ है जो दुनियावी तअल्लुक़ से मुख़्तलिफ़ है। इसकी मिसाल सोने वाला है कि रूह का इत्तिसाल उसके जिस्म से बाक़ी रहता है, बल्कि साहिबे क़ब्र से जो इत्तिसाल है वह इस इत्तिसाल

से ज़्यादा क़वी है। इस तक़रीर से तमाम अहादीस का तआरुज़ रफ़ा हो जाता है कि अरवाह ख़्वाह इल्लीयीन में हों या सिज्जीन या क़बरों के पास, लेकिन उनको इस अम्र की इजाज़त है कि वह अपने अज्साम से मुतअल्लिक़ हो सकती हैं, अब अगर मैयत को एक क़बर से दूसरी क़बर में मुन्तक़िल करें या उसके अज्ज़ा मुन्तशिर हो जाएं, तब भी यह इत्तिसाल बाक़ी रहता है। अरवाह के इल्लीयीन में रहने की ताईद इब्ने असाकिर अलैहिर्रहमा की इस रिवायत से होती है जो इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जाफर के शहीद होने के बाद फरमाया कि आज रात मेरे पास जाफर गुज़रे, वह मलाइका की एक जमाअत के पीछे उड़ रहे थे। उनके दो बाज़ू थे जिनका अगला हिस्सा ख़ून से रंगीन था। यह लोग यमन के शहर बेशा की तरफ परवाज़ कर रहे थे।

(३६) इब्ने अदी ने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने जाफर को मलाइका की जमाअत में देख लिया, वह बेश वालों के पास बारिश की बशारत लेकर जा रहे थे।

(४०) हाकिम ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फरमा थे और उनके नज़्दीक अस्मा बिन्ते उमैस थीं, आपने अचानक सलाम का जवाब दिया और फरमाया कि ऐ अस्मा! यह जाफर हैं, जिब्रील और मीकाईल के हमराह जा रहे थे, तो हम को सलाम किया और मुश्रेकीन के साथ जंग का हाल बताया। उन्होंने बताया कि मैं फलां-फलां दिन मुश्रेकीन से बरसरे पैकार हुआ तो मेरे जिस्म में तिहत्तर नेज़े और तलवार की चोटें आईं, झण्डा मेरे दाएं हाथ में था जब वह कट गया तो मैंने झण्डा बाएं हाथ में लिया, वह भी कट गया तो अल्लाह़ तआला ने उन दोनों के एवज मुझे दो बाज़ू दिए कि मैं जिब्रील व मीकाईल के साथ परवाज़ कर सकूं और जन्नत से जहां चाहूं उतर सकूं और जन्नत के फलों में से जो चाहूं खा सकूं तो हज़रत अस्मा ने कहा, मुबारक हो जाफर को। लेकिन मुझ को ख़तरा है कि लोग उसकी तस्दीक़ न करेंगे। तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिंबर पर चढ़ कर इस वाक़्या को बयान किया।

(४१) कुरतबी ने हदीस कअब में कहा कि : नस्मतुल-मुमिनीन ताइरुन यह बात साबित होती है कि मोमिन की रूह बज़ाते ख़ुद परिन्द बन जाती है यह नहीं कि वह किसी परिन्द में दाख़िल हो जाती है,

अगरचे इस सिलसिला में रिवायात के अल्फ़ाज़ मुख़्तलिफ़ हैं। मसलन इब्ने माजा में है कि : शेहदा की अरवाह अल्लाह के नज़्दीक मिस्ल सब्ज़ परिन्द के हैं। और इब्ने अब्बास की रिवायत में है अरवाह मोमिनीन सब्ज़ परिन्दों में घूमती हैं। और इब्ने उमर रज़ि० की रिवायत में है कि अरवाहे मोमिनीन सफ़ेद परिन्दों में घूमती हैं। और कअब रज़ि० के लफ़्ज़ यह हैं कि अरवाहे शेहदा सब्ज़ परिन्द हैं। कुरतबी के नज़्दीक यह जो बताती हैं कि अरवाह बज़ाते ख़ुद परिन्द बन जाती हैं, इन रिवायात से असह हैं जिन में यह है कि अरवाह परिन्दों के पोटों में होती हैं।

(४२) क़ा कहते हैं कि उलमा ने फी अज्वाफ़े तुयूरे ख़ुज़रुन की रिवायत का इंकार किया है, क्योंकि इससे लाज़िम आता है कि वह क़ैद बन्द में हों और तंगी में हों, लेकिन उसकी तरदीद इस तौर पर की गई है कि यह रिवायत सही हो सकती है और वह इस तरह की फी को बमानी अला करके तक़्दीरे इबारत की जाए अला अज्वाफ़े तुयूरे ख़ुज़रुन और यह तावील सही है क्योंकि फ़ी कुरआन में बमाना अली मुस्तामल है, जैसे वला सल्लेबन्नकुम फ़ी जुज्इन्नख़्ले यानी अला जुज़ूइन्नख़्ले। और यह भी सही है कि ख़ुद परिन्द को जौफ कह दिया जाए क्योंकि वह जौफ पर मुश्तमिल है। यह तावील अब्दुल-हक़ ने की। और बाज़ हज़रात कहते हैं कि यह मुम्किन है कि बावजूद इसके कि अरवाह परिन्दों के पोटों में हैं, अल्लाह तआला परिन्दों के पोटों को फ़ज़ा से कहीं ज़ाइद वसी फरमा दे।

(४३) इब्ने दहिया ने अत्तन्वीर में फरमाया कि वह रिवायत जिसमें लफ़्ज़ फ़ी है मुंकर है क्योंकि एक जिस्म में दो रूहें नहीं हो सकतीं। यह कहने वाले मुतकल्लेमीन हैं लेकिन यह उनकी हक़ाइक़ से नावाक़फ़ीयत की अलामत है और अह्ले सुन्नत व जमाअत पर एतराज़ है। इस हदीस के मानी तो बिल्कुल वाज़ेह हैं कि अल्लाह तआला शहीद की रूह को जो उसके जिस्म के जौफ़ में थी दूसरे जौफ में रख देगा और वह जिस जिस्म का होगा वह परिन्द की सी शक्ल का होगा और बरज़ख़ के ज़माने तक होगा। हत्ता कि क़्यामत के दिन उसको उसके असल जिस्म में लौटा दिया जाएगा। और इस तक़रीर पर कोई इस्तेहाला नहीं, क्योंकि मुहाल तो यह है कि दो ज़िन्दगियां एक ही जौहर के साथ क़ायम हों और इस जौहर को इन से हयात हासिल हो, लेकिन मुतलक़ दो रूहों का एक जिस्म में होना कुछ मुहाल नहीं, यह तो ऐसा ही है कि बच्चा मां के पेट में होता है। अब एक जिस्म में दो रूहें यक़ीनन

हैं लेकिन जिस रूह से मां ज़िन्दा है वह और है और जिस से बच्चा की ज़िन्दगी है वह और है। हदीस में तो फी अज्वाफिन तैरिन खुज़्रिन है जिस के मानी हैं कि वह रूहें परिन्दों की सूरत वाले जानवरों के पोटों में होंगी जैसे कहते हैं कि मैंने फरिश्ता इंसान की शक्ल में देखा। इस सिलसिला में इंतिहाई गुफ़्तगू यह थी।

(४४) शैख़ इज़्ज़ुद्दीन इब्ने अब्दुस्सलाम ने अपनी अमाली में ज़ेर तश्रीह वला तहसबन्नल्लज़ीना कुतिलू फरमाया कि अगर कोई शख़्स यह कहे कि यह हाल तो तमाम मुर्दों का है तो इसमें शुहदा की क्या तख़्सीस हुई? तो जवाब यह है कि सबका हाल यक्सां नहीं, क्योंकि मौत के मानी तो हैं रूह का जिस्म से निकाल लेना अल्लाह तआला ने फरमाया कि अल्लाह मौत के वक़्त रूह को पूरे तौर पर ले लेता है। और मुजाहिद शहीद की रूह उसके जिस्म से दूसरे जिस्म की तरफ मुन्तक़िल हो जाती है। रही हदीस कअब रज़ि अल्लाहु अन्हु तो वह मुजाहिदीन पर महमूल की जाएगी। क्योंकि रिवायात में आता है कि मुर्दे पर क़बर में उसकी क़्यामगाह पेश की जाती है ख़्वाह वह जन्नत हो या जहन्नम। फिर अह्ले कुबूर पर सलाम का हुक्म दिया गया है। तो अगर रूह को इद्राक न होता तो सलाम का क्या फाइदा होता। तो गोया शैख़ के नज़्दीक पसन्दीदा क़ौल यही है। तो वह रूहें परिन्दों के पोटों में होती हैं, यह नहीं कि वह खुद परिन्द बन जाती हैं। इसकी ताईद असर इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से होती है जो मौक़ूफ़ होने के बावजूद हुक्म में मरफ़ूअ के है। क्योंकि यह ऐसा मुआमला है जिसमें राय को कोई दख़ल नहीं। लेकिन मैंने इस सिलसिला में एक मरफ़ूअ शहिद देखा है।

(४५) हन्नाद बिन सिर्री ने किताबुज़्ज़ुहद में अपनी सनद से बाज़ अहले इल्म से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शुहदा तीन क़िस्म के हैं : कम से कम मरतबा वाला वह शख़्स है कि जो बादले नाख़्वास्ता निकला, उसका इरादा न तो क़त्ल करने का था न क़त्ल होने का, कि अचानक एक तीर आकर लगा तो उसके जिस्म के पहले क़तरा के टपकते ही उसके अगले पिछले गुनाह मआफ़ हो जाएंगे। फिर अल्लाह तआला एक आसमानी जिस्म उतारेगा और उसकी रूह उस जिस्म में अमानत रखी जाएगी। फिर वह जिस्म आसमान पर से गुज़रेगा। जिस आसमान पर पहुंचेगा फरिश्ते उसका पीछा करेंगे, हत्ता कि वह खुदा तआला की बारगाह में हाज़िर हो जाएगा और वहां पहुंच कर सज्दा रेज़ हो जाएगा। फिर उसको सत्तर

जन्नती लिबास पहनाए जाएंगे। फिर कहा जाएगा कि उसको उसके जन्नती भाईयों की तरफ़ ले जाओ और उनके साथ उसको भी छोड़ दो। जब यह उनके पास पहुंचेगा तो वह जन्नत के दरवाज़े के पास सब क़ुबों में होंगे और उनकी गिज़ा जन्नत से आ रही होगी। जब यह उनके पास पहुंचेगा तो वह उस से बिल्कुल इसी तरह सवालात करेंगे जैसे घर लौटने वाले मुसाफिर से सवालात होते हैं। मसलन यह दरयाफ़्त करेंगे कि फलां किस हाल में है? तो यह जवाब देगा कि वह तो मुफ़्लिस हो गया। वह पूछेंगे कि उसने अपने माल का क्या किया वह तो बहुत ही होशियार ताजिर था और रुपया पैसा जोड़ने वाला था। फिर वह कहेंगे कि मुफ़्लिस हमारे नज़्दीक वह नहीं कि जिसके पास रुपया पैसा न हो, मुफ़्लिस तो वह है जिसका दामन आमाल से ख़ाली हो। वह पूछेंगे कि फलां शख़्स ने अपनी बीवी के साथ क्या बर्ताव किया? वह कहेगा कि उस ने तलाक़ दे दी। वह पूछेंगे कि उसको तो अपनी बीवी से बहुत मुहब्बत थी तो फिर तलाक़ क्यों दी? फिर पूछेंगे कि और फलां शख़्स ने क्या किया? वह कहेगा कि वह तो मुझ से बहुत पहले मर चुका है। तो वह कहेंगे कि बख़ुदा वह तो हमारी तरफ से न गुज़रा क्योंकि राहें दो हैं, जब कोई अच्छा शख़्स मरता है तो वह हमारी तरफ़ से गुज़रता है वरना उसे दूसरे रास्ते से ले जाते हैं।

(४६) इब्ने मुन्दह ने अपनी सनद से हयान बिन जबला से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मुझे हदीस पहुंची कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शहीद जब शहीद होता है तो फौरन ही एक आसमानी जिस्म नाज़िल होता है और उसकी रूह से कहा जाता है कि उसमें दाख़िल हो जा, तो वह अपने पहले जिस्म की तरफ देखती है कि उसके साथ क्या हुआ और गुफ़्तगू करती है, वह यह समझता है कि लोग उसकी गुफ़्तगू को सुन रहे हैं और वह उनकी तरफ़ देखती है और समझती है कि लोग उसको देख रहे हैं, इतने में हूरें आकर उसको ले जाती हैं।

(४७) साहिबे इफ़साह कहते हैं कि नेमत वाली रूहें मुख़्तलिफ़ हालात में हैं। कुछ तो जन्नत में परिन्द हैं और कुछ सब्ज़ परिन्दों के पोटों में हैं, और कुछ अर्श के नीचे क़िन्दीलों में हैं, और कुछ सफेद परिन्दों के पोटों में हैं, और कुछ चिड़ियों के पोटों में हैं और कुछ रौशन जन्नती सूरतों वाले अश्ख़ास में हैं, और अपने आमाले सालेहा की सूरतों में हैं, और कुछ अपने जिस्मों में आती जाती रहती हैं, और कुछ मुर्दों की रूहों से मुलाक़ात करती हैं, कुछ मीकाईल की किफ़ालत में हैं, कुछ

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की किफ़ालत में हैं कुरतवी कहते हैं कि यह क़ौल अच्छा है कि इस से तमाम अहादीस में तत्वीक़ हो जाती है। मैं कहता हूं कि उसकी ताईद हदीसे इसरा से भी है जिसको बैहक़ी ने दलाइल में और इब्ने मरदवीया ने अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि फिर मैं दूसरे आसमान पर पहुंचा, तो यह्या व ईसा अलैहिमुस्सलाम से मुलाक़ात की। उनके साथ उनकी उम्मत के कुछ लोग थे। तीसरे पर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात की। उनके हमराह उनकी उम्मत के कुछ लोग थे। चौथे पर इद्रीस अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, उनके हमराह उनकी उम्मत के कुछ अफ़राद थे। पांचवें पर हारून अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, उनके हमराह उनकी उम्मत के कुछ अफ़्राद थे। छठे पर मूसा और उनकी उम्मत के कुछ अफ़्राद थे और सातवें पर इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे और उनके साथ उनकी उम्मत के कुछ अफ़राद थे। फिर मुझ से कहा गया कि यह आपका और आपकी उम्मत का मक़ाम है। फिर आपने यह आयत पढ़ी कि:

तरजमा : बेशक इब्राहीम ज़ाइद मुस्तहिक़ हैं वह लोग हिन्होंने उनकी इत्तिबा की और यह नबी नीज़ ईमान वाले।

मेरी उम्मत के दो हिस्से थे, कुछ तो कागज़ की मानिन्द सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे और कुछ पर मिट्टी के कपड़े थे। तो हदीसे अरवाह के मक़ामात का मुख़्तलिफ़ होना वाज़ेह है। नीज़ यह कि हर आसमान पर एक क़ौम है।

हकीम तिर्मिज़ी कहते हैं कि तमाम अरवाह बरज़ख़ में घूमती फिरती हैं और दुनिया के हालात का मुशहिदा करती हैं नीज़ फरिश्तों के अहवाल का भी मुशहिदा करती हैं। कुछ रूहें अर्श के नीचे हैं और कुछ जन्नत में फिरती रहती हैं। बैहक़ी ने इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु की हदीस जो शुहदा के मुतअल्लिक़ है उसे ज़िक्र करते हुए बयान किया कि बुख़ारी ने बरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहबज़ादे इब्राहीम का जब इंतिक़ाल हुआ तो आपने फरमाया कि उनको जन्नत में दूध पिलाने के लिए एक दाया मिलेगी तो उस से मालूम हुआ कि इब्राहीम अलैहिर्रहमा जो जन्नतुल-बक़ीअ में मदफ़ून हैं, वह जन्नत में दूध पिएंगे।

(४८) इब्ने कैयिम कहते हैं कि इस हदीस में कि रूह परिन्द बन कर जन्नत के दरख़्त पर बैठ जाती है और इस हदीस में कि क़ब्र में मुर्दे की क़्यामगाह को पेश किया जाता है, बल्कि रूह जन्नत की नहरों पर होती है और फल को खाती है, कुछ तआरुज़ नहीं क्योंकि वह जन्नत

में यौमुल-जज़ा से पहले दाख़िल न होगी। इसकी दलील यह है कि यौमे जज़ा में जो अरवाह की क़्यामगाह होगी, आज बरज़ख़ में वह उनको हासिल नहीं है। जन्नत में दाख़िल मुकम्मल इंसान का होगा और यह अरवाह का दाख़िल होना एक इलाहिदा चीज़ है।

(४६) नस्फ़ी की बह्रुल-कलाम में है कि अरवाह चार क़िस्म पर हैं :

१. अंबिया अलैहिमुस्सलाम की अरवाह कि उनके जिस्म से निकल कर, उन्हीं के जिस्म के मिस्ल बन जाती हैं, जैसे मुश्क व काफ़ूर, और जन्नत में जाकर खाती पीती हैं और रात को ऐसे क़िन्दीलों में आराम करती हैं जो अर्श के नीचे मुअल्लक़ हैं।

२. फरमां बरदार मुमिनीन की अरवाह, यह जन्नत के सेहन में होती हैं मगर खाती पीती नहीं मगर जन्नत में देखती भालती हैं।

३. नाफरमान मुमिनीन की अरवाह यह आसमान व ज़मीन में हवा के अन्दर मुअल्लक़ रहती हैं।

४. कुफ़्फ़ार की अरवाह, यह सिज्जीन में रहती हैं। उनको सातवें ज़मीन के नीचे सियाह रंग के परिन्दों के पोटों में कर दिया जाता है। लेकिन उनका एक गोना तअल्लुक़ जिस्म के साथ रहता है ताकि यह तक्लीफ़ व अज़ाब का एहसास कर सकें। यह तअल्लुक़ ऐसा ही है जैसा कि आसमान पर सूरज होता है मगर उसकी शुआएं ज़मीन पर होती हैं।

हाफिज़ इब्ने रजब ने अहवाले कुबूर में नवीं बाब में (जहां अरवाह की बरज़ख़ी क़्यामगाह का ज़िक्र किया है) फरमाया कि उसमें कुछ शक नहीं कि अंबिया की अरवाह अल्लाह के पास आला इल्लीयीन में हैं। इसलिए सही बुख़ारी में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आख़िरी बात यही फरमाई कि ऐ अल्लाह! मुझ को रफ़ीक़े आला अता फरमाना।

एक शख़्स ने इब्ने मसऊद से दरयात किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह वफ़ात के बाद कहां गई? तो आपने फरमाया कि जन्नत में।

शोहदा के बारे में अक्सर उलमा का क़ौल है कि वह जन्नत में हैं। और इस सिलसिला में बकसरत अहादीस वारिद हैं : मसलन हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अच्छा ख़्वाब बहुत अच्छा मालूम होता था। आप लोगों से दरयात फरमाते थे कि क्या तुमने आज कोई ख़्वाब देखा है? चुनांचे एक दिन एक औरत हाज़िर हुई और उसने अर्ज़ की कि मैंने ख़्वाब देखा है कि मैं जन्नत में दाख़िल हुई तो वहां मैंने एक आवाज़ सुनी जिस से जन्नत लरज़

उठी, हत्ता कि मेरे पास बारह अफ़राद आए। और वाक़या यह था कि इस ख़्वाब से पहले हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने काफिरों से जिहाद के लिए एक जमाअत रवाना फरमाई थी। चुनांचे उस औरत ने बताया कि उन बारह आदमियों को जन्नत में लाया गया। उन पर अतलस के कपड़े थे और उनकी गर्दन की रगें फड़क रही थीं। हुक्म दिया गया कि उनको नहरे बेदख़ में डिबो दो। चुनांचे उन्हें डिबो दिया गया। अब जो निकाला गया तो उनके चेहरे चौदहवीं के चांद की मानिन्द चमक्दार हो गये। फिर उनके लिए सोने की कुर्सियां लाई गईं और उन पर वह लोग बैठे। फिर सुनहरी तब्बाक़ में खजूरें पेश की गईं जो उन्होंने खाईं और मैंने भी उनक साथ खाई। इतने में उस जमाअत की तरफ़ से क़ासिद आया और उसने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंग में फलां-फलां मुआमला दर पेश आया और बारह सहाबी शहीद हुए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उसी औरत को लाओ। जब वह आई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ख़्वाब बयान करो। तो जब उस शख़्स ने ख़्वाब सुना तो कहा कि यह औरत सच कहती है।

हज़रत मुजाहिद कहते हैं कि शुहदा जन्नत में नहीं हैं लेकिन जन्नत के रिज़्क़ से उन्हें मिलता है।

(५०) आदम बिन अयास ने मुजाहिद से अल्लाह के क़ौल वला तहसबन्नल्लज़ीना कुतिलू फ़ी सबीलिल्लाह की तफ़सीर में रिवायत की कि वह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं। जन्नत के मेवों से उनको फल दिए जाते हैं, उनको जन्नत की खुशबुएं पहुंचती हैं। इस सिलसिला में हदीस इब्ने अब्बास से भी इस्तिदलाल किया जाता है कि -

तर्जमा : कि शोहदा नहर बारक़ के किनारे पर होंगे और यह नहर जन्नत के दरवाज़े पर वाक़ेय है।

लेकिन यह मुमिकन है कि यह आम शुहदा के बारे में हो और ख़ास शोहदाए अर्श के नीचे क़िन्दीलों में हों। और यह भी मुमिकन है कि यहां शोहदा से मुराद हक़ीक़ी शहीद न हो, बल्कि वह शहीद हों जो हुक्मन शहीद हैं, मसलन ताऊन से मरने वाला या पेट की बीमारी से मरने वाला, डूब कर मरने वाला वग़ैरहुम, या आम मोमिन क्योंकि सच्चे मोमिन को शहीद कह सकते हैं क्योंकि उसके ईमान की सेहत की शहादत दी गई है। जैसे कि हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि हर मोमिन सिद्दीक़ और शहीद है। लोगों ने अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से दरयाफ्त किया कि ऐ अबू हुरैरा क्या कहते हो? तो आपने फरमाया कि इस आयत

को पढ़ो कि -

तरजमा : वह लोग जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये वही सिद्दीक़ और शोहदा हैं अपने रब के पास।

नीज़ हज़रत अबू हुरैरा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत की कि आपने फरमाया कि मेरी उम्मत के मोमिन शोहदा हैं। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यही आयत पढ़ी। शुहदा के अलावा बाक़ी मुमिनीन, जैसे मुमिनीन के बच्चे। तो जम्हूर के नज़्दीक यह जन्नत में हैं।

इमाम अहमद ने इसी क़ौल पर इज्मा नक़ल किया। इसी तरह इमाम शाफ़ई ने फरमाया कि इस क़ौल पर इज्मा है और यही सरीह तौर पर साबित है। बाज़ हज़रात कहते हैं कि इस में शक नहीं कि मुमिनीन के बच्चे जन्नत में जाएंगे लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि कोई मख़्सूस बच्चा जन्नत में जाएगा और न उसकी शहादत दी जा सकती है। इसकी वजह ग़ालिबन यह है कि उस बच्चे की ईमान की शहादत नहीं मिलती क्योंकि उसका ईमान बाप के ईमान के ताबे है और बाप मां के ईमान की भी शहादत नहीं दी जा सकती तो उनके ईमान में तवक्क़ुफ़, उनके वालिदैन में तवक्क़ुफ़ की बिना पर है। अइम्मा में यह क़ौल सराहतन किसी के कलाम में नहीं पाया गया। ग़ालिबन इस से उनकी मुराद मुश्रेकीन के बच्चे हैं। शोहदा के अलावा दूसरे मुकल्लफ़ मोमिन की अरवाह के बारे में शुरू से ही इख़्तिलाफ़ है। चुनांचे इमाम अहमद ने तस्रीह की है कि मुमिनीन की अरवाह जन्नत में हैं और कुफ़्फ़ार की दोज़ख़ में। इस सिलसिला में उन्होंने कई अहादीस से इस्तिदलाल किया है। इनमें से एक यह है कि इब्ने अब्बास ने कअब से दरयाफ्त किया कि इल्लीयीन और सिज्जीन क्या है तो उन्होंने फरमाया कि इल्लीयीन सातवें आसमान पर है इसमें मुमिनीन की अरवाह हैं, और सिज्जीन सातवें ज़मीन पर शैतान के रुख़्सार के नीचे है इसमें काफिरों की अरवाह हैं। दलाइल से यह बात साबित हो चुकी है कि जन्नत सातवें आसमान के उफपर है जबकि जहन्नम सातवें ज़मीन के नीचे। इस सिलसिला में इस हदीस से भी इस्तिदलाल किया जाता है कि तबरानी में जाबिर से मरवी है कि नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से हज़रत ख़दीजा के बारे में दरयाफ्त किया तो आपने फरमाया कि मैंने उनको जन्नत के एक महल में देखा चुनांचे तबरानी में बसनदे मुन्क़तअ हज़रत फातिमा के बारे में रिवायत की कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ्त किया कि हमारी मां ख़दीजा किस हाल में हैं तो

आपने फरमाया कि वह मोतियों और हीरों के घर में आसिया और फिरऔन की बीवी के साथ हैं। नीज़ अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और अबू दाऊद ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उस अस्लमी शख़्स को संगसार किया जिसने खुद ज़िना का एतराफ़ किया था। तो आपने फरमाया कि क़सम है मुझको उस ज़ात की कि जिसके क़ब्ज़ा में मेरी जान है कि वह जन्नत की नहरों में ग़ोते खा रहे हैं। नीज़ अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने बरिवायत सौबान नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से रिवायत की कि जो शख़्स तीन चीज़ों से बचता रहा वह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा, तकब्बुर से, ख़्यानत से और क़र्ज़ से। और बाज़ लोग कहते हैं कि अरवाह ज़मीन में हैं। इन में से बाज़ ने कहा कि वह क़बरों के सहनों में होती हैं। जैसा कि वज़्ज़ाह और इब्ने हज़्म ने उसे अस्हाबे हदीस का मज़्हब कहा। लेकिन इब्ने अब्दुल-बर ने इस क़ौल को तरजीह दी कि शुहदा की अरवाह जन्नत में हैं और आम मुमिनीन की क़बरों के सेहनों में, वह जहां चाहती हैं आती जाती हैं और इस सिलसिला में कई अहादीस से इस्तिदलाल किया है। और वह अहादीस जिनमें मुर्दे पर उसकी क़्यामगाह पेश किए जाने का ज़िक्र है। उसका मक़्सद यह है कि मुर्दे के जिस्म पर उसकी क़्यामगाह पेश की जाती है अगरचे रूह जन्नत में होती है ताहम उसे एक गुना तअल्लुक़ जिस्म से होता है। इसी तरह क़ुबूर पर सलाम करना इस अम्र की दलील नहीं कि सब रूहें मुस्तक़िल क़बर ही में रहती हैं क्योंकि सलाम तो अंबिया व शेहदा की क़ुबूर पर भी होता है, हालांकि उनकी अरवाह आला इल्लीयीन में होती हैं। तो उसकी असल वजह यह है कि जब कोई सलाम करता तो रूह फौरन जिस्म से मुत्तसिल हो जाती है और यह इत्तिसाल इस सुरअत से होता है कि उसकी हक़ीक़त अल्लाह तआला ही को मालूम है और बस।

इस मस्अला पर इन अहादीस से रौशनी पड़ती है, जिनमें मज़्कूर है कि सोने वाले की रूह को अर्श पर ले जाया जाता है, लेकिन जब इसको बेदार किया जाता है तो चश्मे ज़दन में वह जिस्म से मुतअल्लिक़ हो जाती है। तो जब अरवाहे मुत्तसिला बिल-जिस्म की यह कुव्वत है तो अरवाहे मुजर्रदह अनिल-जिस्म बतरीक़ औला यह कुव्वत रखती हैं, वह आसमान पर जा सकती हैं और इस सुरअत से वापस आ सकती हैं। एक गरोह का कहना है कि अरवाह ज़मीन के एक हिस्सा में जमा हो जाती हैं। मुमिनीन की अरवाह जाबिया में और कुफ़्फ़ार की अरवाह

बरहूत के कुएं में क़ाज़ी अबू याला हंबली ने इसी क़ौल को तरजीह दी है अगरचे उनका क़ौल इमाम अहमद अलैहिर्रहमा की तस्रीह के मुख़ालिफ़ है कि अरवाहे कुफ़्फ़ार आग में चली जाती हैं। बहुत मुमकिन है कि बरहूत के कुएं को जहन्नम के गढ़े से कुछ इत्तिसाल हो, और इस तरह तत्बीक़ हो जाएगी। अहमद बिन मुहम्मद नीशापूरी की किताबुल-हिकायात में उनकी सनद से यह्या बिन सलीम से मरवी है कि वह कहते हैं कि मक्का में हमारे पास एक खुरासानी था वह लोगों की अमानतें अपने पास रखता था और फिर अदा कर देता था। तो एक शख़्स ने उसके पास दस हज़ार दीनार रखवाए और ग़ायब हो गया। इत्तिफ़ाक़ी बात कि खुरासानी की मौत का वक़्त क़रीब आ गया। उसने अपनी औलाद में से किसी को अहल न समझा कि यह अमानत उसके पास रखवाए। उसने वह अमानत कहीं दफन कर दी, अब वह शख़्स आया और उसने उसकी औलाद से वह अमानत मांगी, उन्होंने ला इल्मी का इज़्हार किया। उसने इस सिलसिला में बहुत से उलमाए मक्का से रुजूअ किया। तो उन्होंने बताया कि वह शख़्स जन्नती है और जन्नती लोगों की रूहें चाहे ज़मज़म में होती हैं, तो जब तिहाई या आधी रात गुज़र जाए तो तुम उस शख़्स को कुएं के किनारे पर खड़े हो कर आवाज़ देना, वह तुमको जवाब देगा। चुनांचे वह तीन रातों तक जाता रहा, जवाब न मिला, उसने उलमा को मुआमला की नौइयत बताई। तो उन्होंने फरमाया कि इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारा साथी जहन्नमियों में है, तुम यमन में बरहूत के कुएं पर जाओ उसमें जहन्नमियों की अरवाह हैं, वहां उसी वक़्त जाकर आवाज़ देना जिस तरह ज़मज़म पर दी थी। चुनांचे उसने हस्बे हिदायत आवाज़ दी। उसने पहली ही आवाज़ में जवाब दे दिया। फिर क्या हुआ? असल किताब में उसका तज़्किरा नहीं।

(५१) सफ़वान बिन अमरु कहते हैं कि आमिर बिन अब्दुल्लाह ने अबू अलीमान से दरयाफ़्त किया कि क्या मुमिनीन की अरवाह कहीं जमा होती हैं? तो उन्होंने कहा कि मुमिनीन की अरवाह इसी ज़मीन में जमा होती हैं जिसके मुतअल्लिक़ अल्लाह तआला ने फरमाया कि : इन्नल-अरज़ा यरिसुहा इबादियस्सालेहून। बेशक मेरी ज़मीन के नेक बन्दे वारिस होंगे, हत्ता कि क़्यामत आ जाएगी।

(५२) इब्ने मुन्दह ने अपनी सनद से रिवायत किया कि अब्दुल्लाह बिन उमर ने इब्ने कअब को ख़त लिखा कि यह बताइए कि अहले जन्नत और अहले नार की अरवाह कहां मिलती हैं? तो उन्होंने कहा

कि अहले जन्नत की अरवाह जाबिया में हैं और अहले नार की हज़रे मौत में। और बाज़ सहाबा ने फरमाया कि अरवाह अल्लाह तआला के पास हैं। और यह हज़रत उमर से बसनदे सही मरवी है।

(५३) इब्ने मुन्दह ने अपनी सनद से हुज़ैफ़ा से रिवायत की कि अरवाह अल्लाह के पास हैं और अपने वादे के दिन की मुंतज़िर हैं। इस क़ौल में और गुज़िश्ता अक़्वाल में कुछ तनाकुज़ नहीं।

बाज़ लोगों का कहना है कि अरवाह अपने बाप आदम के दाएं बाए हैं जैसा कि सहीहैन की हदीस में है कि जब हम ऊपर को गये तो देखा। एक शख़्स बैठा है जिसके दाएं जानिब कुछ सियाह जुर्रियत है और बाएं जानिब भी कुछ सियाह जुर्रियत है जब वह दाएं तरफ़ देखता है तो हंसता है और जब बाएं जानिब देखता है तो रोता है, दाएं जानिब वाले अहले जन्नत थे।

इस हदीस से बज़ाहिर मालूम होता है कि कुफ़्फ़ार की अरवाह भी आसमान पर हैं। लेकिन कुरआन के ख़िलाफ़ है नीज़ दीगर अहादीस से भी मआरिज़ है, मसलन यह हदीस कि आसमान कुफ़्फ़ार की अरवाह के लिए न खोला जाएगा। बाज़ अहादीस में इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ हैं जिस से यह तआरुज़ खुद बखुद उठ जाता है, मसलन यह कि आदम अलैहिस्सलाम पर जब मोमिन की रूह पेश की जाती थी तो आप फरमाते थे कि यह पाक रूह है उसको इल्लीयीन में दाख़िल कर दो। और जब काफ़िर की रूह पेश की जाती, तो फरमाते कि ख़बीस रूह है उसे सिज्जीन में दाख़िल कर दो। तो इससे पता चला कि आदम अलैहिस्सलाम पर आसमान में अरवाह को पेश किया जाता है। वह अरवाह के रहने की जगह नहीं रहने की जगह आदम अलैहिस्सलाम मुतऐयन करते हैं।

इब्ने हज़्म का गुमान है कि अल्लाह तआला ने अज्साम को पैदा करने से क़ब्ल अरवाह को आलमे बरज़ख़ में पैदा फरमा दिया और यह बरज़ख़ वहां से शुरू होता है जहां से आलमे अनासिर मुन्क़तअ होता है। फिर जब अज्साम पैदा हुए तो यह अरवाह उनमें दाख़िल होने लगीं। और जब अज्साम ख़त्म हो जाएंगे तो यह अपनी पहली जगह बरज़ख़ में वापस चली जाएंगी। अल्बत्ता अंबिया व शोहदा की अरवाह को जन्नत में भेज दिया जाता है, यह क़ौल किसी और मुस्लिम फ़िरक़ा ने नहीं किया यह महज़ फलसफ़ियाना बात है।

(५४) बाज़ हज़रात से मन्कूल है कि अरवाह अज्साम ही के साथ मर जाती हैं। यह क़ौल मोतज़िला की तरफ़ मन्सूब है और उन्दुलुस

के फुक़्हा का भी यही क़ौल है मसलन अब्दुल-आला बिन वहब, सहेली, अबू बकर बिन अरबी, लेकिन उलमा ने इस क़ौल की बड़ी शिद्दत से तरदीद की हत्ता कि सहनून वग़ैरह ने कहा कि यह बिदअतियों का क़ौल है। नीज़ वह सरीह अहादीस और नुसूस जिनमें बक़ाए अरवाह का बयान है, उसकी तरदीद को काफी है। शोहदा और दीगर जन्नती मुमिनीन की हयात में फ़र्क़ यह है कि अरवाह शोहदा के लिए सब्ज़ परिन्दों के अज्साम पैदा कर दिए जाते हैं जिनके पोटों में रह कर वह पूरी तरह लज़्ज़तें हासिल करती हैं और तलज़्ज़ुज़े अरवाह मुजर्रदे अरवाह फिल-बदन के तलज़्ज़ुज़ से ज़ाइद होता है। इसका सबब यह है कि शुहदा ने अपने अज्साम को अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया। तो उनको उसके बदले में यहां यह अज्साम दे दिए गये दूसरी बात यह कि शोहदा को जन्नत का रिज़्क़ दिया जाता है और यह बातें दीगर मुमिनीन के लिए साबित नहीं।

अब रही वह रिवायत जो इब्ने सनी ने इब्ने मसऊद से बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब क़ब्रिस्तान में दाख़िल होते तो फरमाते कि :

तरजमा : ऐ फानी रूहो और घने हुए जिस्मों और परा गन्दा हड्डियो जो दुनिया से बहालते ईमान गई हो तुम पर सलाम हो ऐ अल्लाह! तू उन पर अपनी रहमत को दाख़िल फरमा और हमारा सलाम उनको पहुंचा।

तो यह ज़ईफ़ है और फिर इसमें यह तावील हो सकती है कि फना के मानी जिस्म से ग़ायब हो जाना है।

(५५) फ़ाइदा : इब्ने क़ैयिम कहते हैं कि नफ़्स के चार अदवार हैं, हर दूसरा दौर पहले दौर से बढ़ कर है, मां के पेट में, यह क़ैद व बन्द, ग़म और तीन तारीकियों का ज़माना है। यह दुनिया का दौर है जिसमें नफ़्स या जिस से नफ़्स ने मुहब्बत की और ख़ैर व शर को हासिल किया। बरज़ख़ यह ज़ाइद वसीअ और फराख़ है और उसकी निस्बत दुनिया से वही है जो दुनिया को मां के पेट से थी। दारुल-कुरा, उसके बाद न कोई दौर है न दार है, नफ़्स के अहकाम हर दार की निस्बत बदलते रहते हैं। चुनांचे इस सिलसिला में इस हदीस से रौशनी मिलती है जो इब्ने अबी अद्दुनिया वग़ैरह ने रिवायत की, कि मोमिन का हाल दुनिया में ऐसा है जैसे जनीं का। अपनी मां के पेट में जब वह अपनी मां के पेट से निकलता है तो रोता है लेकिन जब रोशनी को देखता है तो इतना खुश होता है कि दुनिया से जाने पर राज़ी नहीं

होता और जब दुनिया से रुख़्सत हो कर दारे आख़िरत में पहुंचता है तो वहां से वापस आना नहीं चाहता जैसे जनीन अपनी मां के पेट में वापस नहीं जाना चाहता।

(५६) इब्ने क़ैयिम ने यह भी बयान किया कि एक शख़्स का इंतिक़ाल हो गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि यह शख़्स दुनिया से रुख़्सत हुआ तो अगर उससे अल्लाह राज़ी होगा तो यह दुनिया की तरफ़ लौटना पसन्द न करेगा जैसे तुम में से कोई अपने मां के पेट में लौटना नहीं चाहता।

(५७) हकीम तिर्मिज़ी ने नवादिर में अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मोमिन के दुनिया से रुख़्सत होने की मिसाल ऐसी है जैसे कि कोई शख़्स अपनी मां के पेट से फारिग़ हो कर दुनिया की रौशनी और वुस्अतों में आ जाए।

(५८) याफई ने किफ़ायतुल-मोतक़िद में शैख़ उमर बिन फारिज़ से रिवायत की कि एक वली का जनाज़ा आया। जब हम ने उन पर नमाज़ पढ़ ली तो तमाम फ़ज़ाए आसमानी सब्ज़ परिन्दों से फिर गई और एक बड़ा परिन्द आया और उनको निगल गया। मुझे यह देख कर बहुत तअज्जुब हुआ तो मुझे एक शख़्स ने बताया (यह शख़्स हवा में से आकर नामज़ में शरीक हुआ था।) आप तअज्जुब न करें क्योंकि शोहदा की अरवाह सब्ज़ परिन्दों के पोटों में होती हैं और जन्नत में खाती फिरती हैं यह तल्वार के शहीदों का हाल है, लेकिन शहीदाने मुहब्बत के जिस्म भी रूह बन जाते हैं।

इसी के मुशाबेह वाक़या है जो इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से रिवायत की कि बनी इस्राईल का एक शख़्स ग़ार नशीन हो गया। उस ज़माने के लोगों पर जब कभी क़हत आता था तो वह उसके वसीला से दुआ करते थे तो अल्लाह तआला उनको सैराब फरमा देता था। जब उसका इंतिक़ाल हो गया तो लोग उसको तज्हीज़ व तक्फीन की तैयारी में मस्रूफ़ थे। अभी वह तैयारी ही कर रहे थे कि एक तख़्त रफ़-रफ़ का आसमान से आया और एक शख़्स ने उनको उठा कर उस तख़्त पर रख दिया और देखते ही देखते तख़्त निगाहों से ओझल हो गया। उसकी ताईद बैहक़ी व अबू नईम की हदीस से होती है कि आमिर बिन फहीरह रज़ि० बीरे मऊना के वाक़या में शहीद हो गये और उमरू बिन उमैया ज़िमरी को क़ैद कर लिया गया। आमिर बिन तुफ़ैल ने उन से कहा कि क्या आपने अपने साथियों को पहचान सकते हैं?

उन्होंने कहा कि हां, चुनांचे आप शुहदा को देखने के लिए चल दिए। आमिर बिन तुफ़ैल आप से उन के नसब के बारे में पूछता रहा। फिर उसने दरयाफ्त किया कि क्या आप अपने साथियों में से किसी को कम पाते हो? उन्होंने कहा कि जी हां। अबू बकर के गुलाम आमिर बिन फहीरह लापता हैं उसने पूछा कि उनको तुम्हारे दर्मियान क्या हैसियत थी उन्होंने कहा कि वह हमारे दर्मियान अफ़ज़ल तरीन थे। तो आमिर बोला कि मैं आप को उनका वाक़्या बताता हूं। उनको उस शख़्स ने अपने नेज़े से मारा और मार कर अपना नेज़ह खींच लिया, जूंही नेज़ह निकाला वह आसमान की तरफ़ बुलन्द हो कर ग़ायब हो गये। उनका क़त्ल करने वाला शख़्स जब्बार बिन सलमा था। फिर वह ज़हहाक बिन सुफ़ियान के पास आया और मुशर्रफ़ बाइस्लाम हो कर कहने लगा कि मेरे इस्लाम की वजह आमिर बिन फहीरह की शहादत का वाक़्या है, चुनांचे ज़हहाक ने जब्बार के इस्लाम लाने का पूरा वाक़्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लिख कर भेज दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मलाइका ने उनको छुपा लिया और जन्नत में दाख़िल कर दिया। उसको बुख़ारी में भी ज़िक्र किया गया, एक रिवायत में है कि फिर उनको दुनिया में लौटा दिया गया। रिवायात से मालूम होता है कि उनके जिस्म को मलाइका ने छुपा लिया, चुनांचे अहमद व अबू नईम व बैहक़ी ने अमर बिन ज़मरा रज़ि० से जो रिवायत की है उससे उसकी ताईद होती है अमरु बिन ज़मरा रज़ि० फरमाते हैं कि मुझ को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुबैब के जिस्म को सूली पर से उतारने के लिए भेजा। चुनांचे वह फरमाते हैं कि मैं डरते-डरते खुबैब के जिस्म तक पहुंचा और सूली पर से उनको खोल दिया। जूंही वह ज़मीन पर गिरे उनका जिस्म ज़मीन में दाख़िल हो गया और मैं थोड़ी देर ठहरा लेकिन ज़मीन उनको निगल चुकी थी।

अब दो ही सूरतें हैं या तो वह ज़मीन में चले गये या उनको आसमान पर उठा लिया गया जैसा कि अबू नईम का ख़्याल है, चुनांचे जहां उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोजज़ात और दीगर अंबिया के मोजज़ाते तक़ाबुल किया है, वहां उन्होंने ज़िक्र किया है कि अगर ईसा अला नबीयेना व अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया गया तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कई गुलामों को उठाया गया। फिर उन्होंने आमिर बिन फहीरह, खुबैब बिन अदी और उला बिन अल-हज़रमी के वाक़ेआत ज़िक्र किए रफ़ा समावी के वाक़्या की

ताईद में निसई, बैहक़ी, तबरानी वग़ैरहुम की जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि तलहा ने कहा कि उहुद में मेरी उंगलियां कट गईं तो मैंने कहा अच्छा हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम बिस्मिल्लाह कह देते तो तुमको फ़रिश्ते उठा कर आसमान में दाख़िल कर देते, और लोग देखते रह जाते, इसी रफ़अ समावी की मुनासिबत से इब्ने असाकिर की रिवायत बयान कर दी जाए तो बेजा नहीं कि अवैस क़रनी को किसी सफर में पेट की बीमारी हुई और वह वफ़ात पा गये, जब उनके तोशदान को देखा गया तो उसमें दो कपड़े थे जो दुनिया के कपड़ों की जिन्स से न थे। दो आदमी दौड़ कर क़बर खोदने को गये लेकिन फ़ौरन ही वापस आए और कहा कि हम को एक क़बर खोदी हुई मिल गई है। चुनांचे लोगों ने उनको कफ़्ना कर दफन कर दिया। थोड़ी देर बाद जब लोगों ने देखा तो वहां कुछ भी न था। इमाम अहमद ने भी उसको ज़ुहद में रिवायत किया।

परिन्दों के क़िस्से से मुशबेह यह क़िस्सा है जिसको इब्ने असाकिर ने अबू बकर बिन दयान से रिवायत किया। वह कहते हैं कि एक रोज़ मैं मिस्र में ग़ल्ला के हम्माम के पास खड़ा था कि इतने में ज़ुन्नून अलैहिर्रहमा के जनाज़े को लाया गया तो मैंने देखा कि सब्ज़ परिन्द उन पर मंडला रहे हैं, हत्ता कि उनको क़ब्र में ले जाकर दफन कर दिया गया, तो वह परिन्द ग़ायब हो गये।

ताहिर बिन मुहम्मद ने अपनी तस्नीफ़ में सलामा कनानी के हालात के बारे में लिखा कि उन्होंने अपनी वफ़ात के साल, दिन और रात तक का पता बता दिया और वह उसी मुक़र्ररह वक़्त पर इंतिक़ाल कर गये और उनके जनाज़े पर सुपेद परिन्द मंडलाने लगे। हत्ता कि उनके साथ उनकी क़बर में दाख़िल हुए। इन रिवायात से पता चलता है कि इस क़िस्म की करामतें सालेहीन की क़बरों पर और उनके जनाज़ों पर कुछ नई चीज़ें नहीं हैं बल्कि यह चीज़ हमेशा से चली आ रही है।

मालिक बिन अली क़लांसी के तज़्किरा में है कि जब उन का इंतिक़ाल हो गया और उनको तख़्त पर रखा गया कि उनकी नमाज़ अदा की जाए तो हद्दे निगाह तक जंगलात, पहाड़ वग़ैरह ऐसे लोगों से पुर हो गये जो बहुत ही सपेद कपड़ों में मल्बूस थे, उन्होंने भी उनकी नमाज़े जनाज़ा अदा की।

(५६) अबू ख़ालिद से मरवी है कि जब अमरु बिन क़ैस का इंतिक़ाल हुआ तो जंगल को इंसानों से भरपूर देखा गया। यह लोग सपेद पोश थे, जब उनकी नमाज़े जनाज़ा हो चुकी, तो वह सब ग़ायब हो गये।

(६०) इब्ने जौज़ी ने किताब उयूनुल-हिकायात में अपनी सनद से अब्दुल्लाह बिनुल-मुबारक से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि एक रोज़ मैं क़ब्रिस्तान में था कि मैंने एक ग़मज़दह इंसान की आवाज़ सुनी जो अपने रब को पुकार रहा था कि ऐ मेरे मौला! तेरे बन्दे की रूह का इरादा तेरी तरफ़ है और उसकी बाग डोर तेरे हाथ में है और उसका शैक़ तेरी तरफ़ है, रात भर तेरा बन्दा बेदार रहता है और दिन भर मुज़्तरिब और बेचैन, उसकी आंतें जल रही हैं और आंसू बेसाख़्ता बह रहे हैं वह तेरे दीदार का मुश्ताक़ है, तेरे बिन उसको कुछ राहत नहीं और तेरे अलावा उसकी कोई उम्मीद नहीं। फिर वह सर आसमान की जानिब उठा कर रोने लगा और एक चीख़ मारी। मैंने उसको हिला कर देखा मगर अफ़सोस कि वह तो मर चुका था। मैं अभी उसकी निगरानी ही कर रहा था कि अचानक कुछ लोग नमूदार हुए। उन्होंने उसको गुस्ल दिया कफन दिया और फिर नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर उसको दफ़्ना दिया, फिर वह हज़रात आसमान की तरफ़ चले गये।

(६१) इब्ने जौज़ी ने अपनी सनद से हसन बसरी अलैहिर्रहमा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि एक सुबह मैं एक ग़ार पर पहुंचा, देखा तो एक नौजवान मसरूफ़े इबादत है, एक दरिन्दह ग़ार के मुंह पर चौकीदारी कर रहा है। मैंने कहा कि ऐ नौजवान तू इस दरिन्दे से नहीं डरता? तो उसने जवाब दिया कि ऐ शख़्स! क्या ही अच्छा होता कि तू उसके बजाए उसके ख़ालिक़ से डरता। फिर वह उस दरिन्दे की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहा कि ऐ दरिन्दे तू अल्लाह के कुत्तों में से एक कुत्ता है अगर अल्लाह ने रिज़्क़ के बारे में कुछ हुक्म दिया है तो मैं मना नहीं करता, वरना तू चला जा, तो वह दुम दबा कर भाग गया। फिर उस नौजवान ने चीख़ कर कहा कि ऐ मेरे मौला! मैं तेरी इज़्ज़त का वास्ता दे कर तुझ से सवाल करता हूं कि अगर मेरे लिए-

तेरे पास ख़ैर है तो मुझे अपने पास बुला ले। अभी वह शख़्स अपनी बात भी पूरी न करने पाया था कि उसकी रूह परवाज़ कर गई। मैंने अपने नेक दोस्तों को जमा किया ताकि उसकी तजहीज़ व तक्फ़ीन की जाए। जब हम ग़ार के पास पहुंचे तो उसमें कोई न था, अल्बत्ता एक ग़ैबी आवाज़ आ रही थी कि ऐ अबू सईद! लोगों को वापस कर दो क्योंकि नौजवान को उठा कर ले जाया जा चुका है।

(६२) फाइदा : अबू सईद ने शर्फुल-मुस्तफ़ा में अपनी सनद से रिवायत किया कि हसन बैठे हुए थे और उनके इर्द गिर्द दूसरे लोग थे कि अचानक एक शख़्स आया जिसकी निगाहें सब्ज़ थी। तो हसन

ने दरयात किया कि तुम क्या पैदाईशी तौर पर ऐसे ही हो या यह कोई बीमारी है? तो उसने कहा कि ऐ अबू सईद! क्या तमु मुझ को नहीं जानते? उन्होंने कहा कि आप अपना तआरुफ़ करा दीजिए जब उन्होंने अपना तआरुफ़ कराया तो अहले मज्लिस में से हर एक ने उनको पहचान लिया। लोगों ने कहा! कि तुम्हारा क़िस्सा क्या है? उसने बताया कि एक रोज़ मैंने अपना तमाम माल जमा करके एक कश्ती पर लाद दिया और यमन की तरफ रवाना हुआ। इतने में तेज़ आंधी चली और कश्ती डूब गई। मैं एक तख़्ता पर बैठ कर किसी साहिल पर पहुंच गया और मेरे पास खाने को सिवाए पत्तों और घास के कुछ न था इसी तरह चार माह बीत गये। मैंने कहा कि चाहे कुछ भी हो मैं अपना सफर जारी रखूंगा ख़्वाह हलाक हो जाऊं या ज़िन्दा बच जाउफं, थोड़ी देर के बाद मैं एक महल पर पहुंच गया जो चांदी से बना हुआ था। मैंने उसका दरवाज़ा खोला और अन्दर दाख़िल हुआ तो देखा कि उसकी हर अल्मारी में एक मोतियों का सन्दूक़ रखा है और उन अल्मारियों में ताले पड़े हैं मगर हर एक की चाबी सामने ही है। अब जो मैंने अल्मारियां खोल कर उनमें रखे हुए सन्दूक़ों को देखा तो उनमें से अजब ख़ुशबू महकने लगी और हर सन्दूक़ में कुछ लोग रेशमी कपड़ों में लिपटे हुए थे। मैंने उन में से बाज़ को हिला कर देखा तो वह मुर्दा थे। अगरचे बज़ाहिर ज़िन्दा मालूम होते थे। मैं सन्दूक़ को इसी तरह रख कर महल का दरवाज़ा बन्द करके चल दिया, अभी कुछ ही दूर जाने पाया था कि मुझे दो सवार बेहद हसीन व जमील पिच कल्याण घोड़ों पर सवार नज़र आए उन्होंने मुझ से मेरा वाक़या दरयाफ़्त फरमाया तो मैंने उनको बता दिया। उन्होंने मुझ से कहा कि चलते रहो आगे तुम को एक दरख़्त मिलेगा उसके नीचे एक बाग़ होगा उसमें एक ख़ूबसूरत शैख़ मसरूफ़े नमाज़ मिलेंगे उने से अपना माजरा कह सुनाना वह तुम को रास्ता बता देंगे। मैं शैख़ के पास पहुंचा और उनको सलाम किया और अपना महल वाला क़िस्सा उन से बयान किया, वह सुन कर घबरा गये और मुझ से दरयाफ्त फरमाने लगे कि तुमने वहां क्या किया? मैंने कहा कि सन्दूक़ों को हस्बे साबिक़ बन्द करके और महल का दरवाज़ा बन्द करके आया हूं। तो उन्होंने इत्मीनान का सांस लिया और मुझ से कहा कि बैठ जाओ। मैं बैठ गया। थोड़ी देर बाद एक बादल गुज़रा और उसने कहा कि ऐ वली अल्लाह! तुम पर अल्लाह का सलाम हो। उन बुजुर्ग ने कहा कि ऐ बादल तू कहां जा रहा है? उसने जवाब दिया कि फलां जगह जा रहा हूं। हत्ता कि यके बाद दीगरे बहुत बादल आए

और हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ किया। हत्ता कि एक बादल आया और उसने सलाम किया उन्होंने दरयाफ़्त किया कि तू कहां जा रहा है? उसने कहा कि बसरा जा रहा हूं। उन्होंने फरमाया कि उतर जाओ! वह उतर कर उनके सामने खड़ा हो गया। उन्होंने फरमाया कि उस शख़्स को उठा कर बसरा में उसके घर पहुंचा दो। जब मैं बादल की फश्त पर बैठ गया तो मैंने उससे दरयाफ्त किया कि मैं तुझको खुदा की क़सम देकर पूछता हूं कि तू मुझ को इस महल का हाल बता दे, और दो शहसवारों को जो मुझको रास्ते में मिले थे। तो उन्होंने फरमाया कि यह महल समुन्द्री शहीदों के वास्ते मख़्सूस है, कुछ फरिश्तों के सुपुर्द यह काम है कि वह शोहदा को उठा कर लाते हैं और रेशमी कफन देकर उन सन्दूक़ों में बन्द कर देते हैं। और वह दोनों सवार अल्लाह तआला की तरफ़ से इस काम पर मामूर हैं कि सुबह व शाम उन पर अल्लाह की तरफ़ से सलाम पेश करते हैं। और यह वाक़या सुन कर उस शख़्स ने कहा कि रहा मेरा मुआमला तो मैं ख़िज़्र हूं, मैंने रब से दुआ की है कि वह मेरा हश्र तुम्हारे नबी की उम्मत के हमराह करे। उस शख़्स ने कहा कि जब मैं बादल पर बैठा तो मुझ पर सख़्त डर बैठा, हत्ता कि मेरा यह हाल हो गया।

इस वाक़्या को अल्लामा इब्ने हजर ने अपनी किताब अस्हाबुहू फ़ी मारिफ़तिस्सहाबते में ज़िक्र किया हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के वाक़्या में।

मैयत पर हर रोज़ उसके ठिकाने का पेश किया जाना

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया कि वह सुबह व शाम उसके पास लाए जाते हैं।

(१) इब्ने अबी शैबा ने हज़ील से रिवायत की कि आले फिरऔन की अरवाह सियाह परिन्दों के पोटों में सुब्ह व शाम आग पर पेश की जाती हैं। लालकाई और इस्माईली और इब्ने अबी हातिम ने भी यही रिवायत की।

(२) शैख़ैन ने इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से कोई मरता है तो उसकी असल क़्यामगाह सुबह व शाम क़्यामत तक उस पर पेश की जाती है। अगर वह अह्ले जन्नत से है तो जन्नत और अगर अह्ले जहन्नम से है तो जहन्नम। कुरतबी कहते हैं कि जन्नत उसको दिखाई जाएगी जिसको अज़ाब क़तअन न होगा और वह जिसको अज़ाब होगा वह जन्नत और जहन्नम दोनों का

मुशाहिदा करेगा ख़्वाह बयक वक़्त हो या दो वक़्तों में। फिर यह पेश किया जाना या तो सिर्फ़ रूह पर होगा, या रूह पर और जिस्म के बाज़ हिस्से पर या रूह मअ़ल-जिस्म पर।

(३) हन्नाद ने ज़ुह्द में अपनी सनद से इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इंसान पर क़ब्र में सुबह व शाम उसकी क़्यामगाह पेश की जाती है।

(४) बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान में अबू हुरैरह से रिवायत की कि अबू हुरैरह रह रोज़ सुबह व शाम दो मरतबा बआवाज़ बुलन्द फरमाते। सुबह के वक़्त फरमाते : रात गई और दिन आ गया आले फिरऔन को जहन्नम पर पेश किया जा रहा है और रात के इब्तिदाई हिस्सा में फरमाते थे कि दिन गया और रात आ गई और आले फिरऔन को जहन्नम पर पेश किया जा रहा है। पस जो भी उनकी आवाज़ सुन पाता वह अज़ाब से पनाह मांगता।

(५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताब मन आश बअ़दल-मौत में औज़ाई से ज़िक्र किया कि उन से अस्क़लान के साहिल पर एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया कि अबू अमरु व हम कुछ सियाह परिन्दों को समुन्द्र से निकलते देखते हैं और जब शाम होती है तो सफेद निकलते हैं तो आपने फरमाया कि उन परिन्दों के पोटों में आले फिरऔन की अरवाह हैं, उनको आग पर पेश किया जाता है और आग उनके परों को सियाह कर देती है। फिर यह उन परों को गिरा देते हैं, और क़्यामत तक इसी तरह होता रहेगा। फिर क़्यामत के रोज़ कहा जाएगा कि :

तरजमा : यानी आले फिरऔन को शदीद तरीन अज़ाब में डाल दो जब आले फ़िरऔन को डाला जायेगा तो फ़िरऔन को बतरीक़ ओल डाला जायेगा।

ज़िन्दा लोगों के आमाल का मुर्दों के पास पेश किया जाना

(१) अहमद व हकीम ने नवादिरुल-उसूल में और इब्ने मुन्दह ने अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम्हारे आमाल तुम्हारे मुर्दा अज़ीज़ व अक़ारिब पर पेश किए जाते हैं। अगर अच्छा अमल होता है तो वह खुश होते हैं वरना वह दुआ करते हैं कि : अल्लाहुम्मा तम्तुम हत्ता तहदीहिम कमा हदैतना। इसी तरह तयालसी और इब्ने मुबारक ने रिवायत किया।

(२) इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ़ में और हकीम तिर्मिज़ी ने और इब्ने

अबी अद्दुनिया ने इब्राहीम बिन मैसरह से रिवायत की कि हज़रत अबू अय्यूब ने कुस्तुनतुनिया में जंग की तो वह क़ास पर गुज़रे तो वह कह रहे थे कि जब कोई शख़्स सुबह को अमल करता है तो उसके जान पहचान के मुर्दों पर पेश किया जाता है, इसी तरह शाम का अमल पेश किया जाता है। तो अबू अय्यूब रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कहा कि ग़ौर करो कि क्या कहते हो? तो उन्होंने कहा कि मैं बिल्कुल सही अर्ज़ कर रहा हूं। तो अबू अय्यूब ने फरमाया कि ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं तू मुझ को उबादा बिन सामित रज़ि अल्लाहु अन्हु और सअद बिन उबादा के सामने ज़लील न करना। तो क़ास ने कहा कि अल्लाह तआला ने जब किसी बन्दे को उमूर की विलायत सुपुर्द फरमाता है तो उसकी पर्दा पोशी फरमाता है और उसके आमाले हसना की सना बयान फरमाता है।

(३) हकीम तिर्मिज़ी ने अपनी नवादिर में अपनी सनद से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि पीर और जुमेरात को आमाल अल्लाह की बारगाह में पेश किए जाते हैं और जुमा के रोज़ मां-बाप पर। जब मुर्दों को अपने रिश्तेदारों से किसी नेक अमल की इत्तिला मिलती है तो उनके चेहरे खुशी से खिल जाते हैं। तो ऐ बन्दगाने खुदा! अपने रिश्तेदारों को तक्लीफ़ और ईज़ा न दो। इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने मुबारक वग़ैरहुमा से भी इस क़िस्म की रिवायात मरवी हैं।

(४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से रिवायत की कि एक क़ब्र खोदने वाले ने बताया कि मैं बनी असद से के क़ब्रिस्तान में था कि एक शख़्स के पुकारने की आवाज़ आई, कोई क़ब्रिस्तान से कह रहा था कि या अब्दुल्लाह, एक शख़्स दूसरी क़ब्र से कहने लगा, फिर कहने लगा कि ऐ जाबिर कल तू हमारे पास आएगा। थोड़ी देर बाद मेरे पास एक शख़्स आया और उसने कहा कि ऐ शख़्स! मेरे लिए इस क़ब्र के पास क़ब्र खोदो, जिस से आवाज़ आ रही थी। मैंने आने वाले से दरयाफ्त किया कि क्या इस क़ब्र वाले का नाम अब्दुल्लाह और उसका जाबिर है उसने कहा कि हां। फिर उस शख़्स ने कहा कि मैंने क़सम खा ली थी कि मैं उस पर नमाज़ न पढूंगा। मगर अब मैं उस पर नमाज़ पढूंगा और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करूंगा।

(५) अबू नईम ने इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया कि तुम उन लोगों के साथ सिलह रहमी करो जिन से तुम्हारे वालिद सिलह रहमी करते थे।

(६) इब्ने हिब्बान ने इब्ने उमर से नक़ल किया कि जो शख़्स अपने वालिद के साथ सिलह रहमी करना चाहता है तो उसे चाहिए कि अपने वालिद के दोस्तों और भाईयों के साथ सिलह रहमी करे।

(७) अबू दाऊद ने अपनी सनद से रिवायत की कि एक शख़्स हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर आए और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं अपने वालिदैन की वफ़ात के बाद उनके साथ क्या सिला और नेकी कर सकता हूं? तो आपने फ़रमाया कि चार चीज़ें हैं जो वालिदैन के हुक़ूक़ से तुम पर बाक़ी हैं। उनके हक़ में दुआ करना, और उनके वादों को पूरा करना, और उनके दोस्तों की ताज़ीम व तक्रीम करना और उनके रिश्तेदारों से सिलह रहमी करना।

उन चीज़ों का बयान जो रूह को उनके अच्छे मक़ाम से रोकती हैं

(१) तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और बैहक़ी ने अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि नफ़्से मोमिन उसके क़र्ज़ की वजह से मुअल्लक़ रहता है हत्ता कि वह इस क़र्ज़ को अदा न कर दे।

(२) तबरानी ने अनस से रिवायत की, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक शख़्स का जनाज़ा लाया गया, ताकि आप उस पर नमाज़ पढ़ें। तो आपने दरयाफ्त फरमाया कि क्या इस पर दैन (क़र्ज़) है? तो लोगों ने कहा कि हां तो आपने फरमाया कि ऐसे शख़्स पर मैं नमाज़ पढ़ कर क्या करूं जिसकी रूह क़ब्र में उसके दैन के बदले रेहन है, और आसमान पर नहीं जाती, तो अगर कोई शख़्स उसके दैन का ज़िम्मेदार हो जाए, तब मेरा उस पर नमाज़ पढ़ना मुफ़ीद होगा।

(३) तबरानी ने औसत में, बैहक़ी और अस्बहानी ने तरग़ीब में समरह से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की नमाज़ अदा फरमा कर दरयाफ़्त फरमाया कि क्या यहां बनू फलां के लोगों में से कोई है अगर हो तो उसे मालूम होना चाहिए कि उसके ख़ानदान के एक शख़्स को जन्नत के दरवाज़े पर इसलिए रोक लिया गया है कि उस पर दैन था। तो अगर तुम चाहो तो उसको फिदया दे कर छुड़ा लो, और अगर चाहो तो अज़ाब में गिरफ़्तार रहने दो।

(४) अहमद व बैहक़ी ने जाबिर से रिवायत की कि एक शख़्स का इंतिक़ाल हो गया और उस पर दो दीनार का क़र्ज़ था। तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी नमाज़ पढ़ाने से इंकार कर

दिया, तो अबू क़तादा ने उनकी ज़िम्मेदारी ली, तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। फिर एक दिन बाद दरयाफ़्त किया तो मालूम हुआ कि वह दो दीनार अदा कर दिए गये हैं तब आपने फरमाया कि अब उसको क़बर में ठण्डक हासिल हुई।

(५) अहमद ने सईद अतवल से रिवायत की वह कहते हैं कि हमारे वालिद का इंतिक़ाल हुआ और उन्होंने तरका में तीन सौ दिरहम छोड़े। तो मैंने सोचा कि यह उनके अहलो अयाल पर ख़र्च कर दूं तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि तुम्हारे बाप अपने दैन की वजह से मुक़ैयद हैं उनका दैन अदा करो।

(६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताब मन आश बअ़दल-मौत में शीबान बिन हसन से रिवायत की। वह कहते हैं कि मेरे बाप और अब्दुल-वाहिद बिन ज़ैद एक जिहाद में गये तो उन्होंने एक कुवां देखा जिस में से आवाज़ें आ रही थीं। अन्दर देखा तो एक शख़्स कुछ तख़्तों पर बैठा है और उसके नीचे पानी है, तो उन्होंने दरयाफ़्त किया कि जिन्न हो या इंसान? तो उसने कहा कि इंसान। फिर उन्होंने दरयाफ़्त किया कि कहां के रहने वाले हो? तो उसने कहा कि मैं इंताकिया का रहने वाला हूं, मेरे रब ने मुझे वफ़ात दे दी और अब मुझ को इस कुएं में क़र्ज़ अदा न करने की वजह से बन्द कर दिया है और इंताकिया के कुछ लोग हैं जो मेरा ज़िक्र करते हैं मगर मेरा दैन नहीं चुकाते। चुनांचे यह लोग इंताकिया गये और उसका दैन चुका कर वापस आए तो वह शख़्स ग़ायब हो चुका था और खुद कुवां भी वहां से ग़ायब था। चुनांचे यह लोग फिर कुएं के मक़ाम पर सो रहे। रात को ख़्वाब में वही शख़्स आया। और उसने कहा कि : जज़ाकुमुल्लाहु खैरन। मेरे रब ने मेरा क़र्ज़ अदा होने के बाद मुझ को जन्नत के फलां हिस्सा में मुन्तक़िल फरमा दिया है।

वसीयत का बयान

(१) अबू शैख़ और इब्ने हिब्बान ने किताबुल-वसाया में अपनी सनद से रिवायत की (मरफूई) जिसने वसीयत न की, उसको मुर्दों के साथ हम कलाम होने की इजाज़त न होगी लोगों ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या मुर्दे भी कलाम करते हैं? तो आपने फरमाया कि हां बल्कि वह मुलाक़ात भी करते हैं।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से रिवायत की कि एक शख़्स बसरह में क़ब्रें खोदने का काम करता था तो उसने बताया कि

एक रोज़ मैंने क़ब्र खोदी और उसी के क़रीब सो गया तो ख़्वाब में दो औरतें आईं। उनमें से एक ने कहा कि ऐ अब्दुल्लाह! मैं तुझे खुदा का वास्ता देती हूं कि तू इस औरत का मुझ से दूर कर दे। मैं वेदार हुआ तो देखा कि एक औरत का जनाज़ा लाया जा रहा है। मैंने लोगों से कहा तुम दूसरी क़बर पर चले जाओ। वह चले गये और जब रात हुई तो फिर वही औरतें आईं और उन्होंने कहा कि जज़ाकल्लाह तुमने हम से बहुत लम्बी बुराई को दूर कर दिया। मैंने उस औरत से दरयाफ़्त किया कि तू मुझ से कलाम करती है मगर तेरे साथ वाली औरत कलाम नहीं करती, इसका सबब क्या है? तो उसने कहा कि यह बिला वसीयत किए मर गई थी और जो बिला वसीयत के मरे तो वह क़्यामत तक कलाम नहीं कर सकता।

(३) दैलमी ने अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने ख़्वाब में दो औरतों को देखा, उन में से एक कलाम करती है और दूसरी ख़ामोश है हालांकि दोनों जन्नती हैं। मैंने दरयाफ़्त किया तो बताया कि एक बिला वसीयत मरी थी इसलिए कलाम नहीं करती और क़्यामत तक नहीं करेगी।

ज़िन्दा और मुर्दा लोगों की अरवाह का नींद की हालत में मुलाक़ात करना

(१) पहली दलील तो इस सिलसिला में मुशहिदा एहसास है, और शरई दलील इस से ज़ाइद क्या होगी कि अल्लाह तआला ने इरशद फरमाया कि -

तरजमा : अल्लाह तआला जानों को मौत देता है। उनके मरने के वक़्त और उनको जो अपनी नींद मरते हैं तो जिस नफस के लिए मौत का फैसला हो चुका है उसे रोक लेता है। और दूसरी को एक मुद्दते मुकर्ररह तक के लिए छोड़ देता है।

(२) बक़ी बिन मुजल्लिद और इब्ने मुन्दह ने किताबुर्रूह और तबरानी ने औसत में इब्ने अब्बास से रिवायत की तफ़सीर करते हुए बताया कि मुझे मालूम हुआ है कि ज़िन्दा और मुर्दा लोगों की नींद में एक दूसरे से मुलाक़ात करती हैं और एक दूसरे से पूछगछ करती हैं। तो मुर्दों की अरवाह को अल्लाह रोक लेता है और ज़िन्दा लोगों की अरवाह उनके अज्साम की तरफ वापस फरमा देता है।

(३) जुवैबिर ने इब्ने अब्बास से इस आयत की तफ़सीर बयान करते हुए कहा कि एक रस्सी मश्रिक़ से लेकर मग़्रिब तक तनी हुई है ज़िन्दा

और मुर्दा लोगों की अरवाह उस रस्सी की तरफ़ जाती हैं और ज़िन्दा की रूह मुर्दा की रूह से मिल जाती है। फिर ज़िन्दा को अपने जिस्म की तरफ़ जाने का हुक्म दिया जाता है कि वह अपना रिज़्क़ मुकम्मल कर ले और मुर्दा को रोक लिया जाता है।

(४) फ़िर्दौस में है कि जब कोई मर जाता है तो उसकी रूह को एक माह तक उसके घर के गिर्द घुमाया जाता है और एक साल तक उसकी क़ब्र के गिर्द घुमाया जाता है फिर उसको उस रस्सी पर पहुंचा दिया जाता है जहां अरवाहे अम्वात व अहया की मुलाक़ात होती है।

(५) इब्ने क़ैयिम कहते हैं कि मुर्दा लोगों से मुलाक़ात पर एक दलील यह है कि ज़िन्दा मुर्दा को ख़्वाब में देखता है और वह मुर्दा उस ज़िन्दा को उमूरे ग़ैबिया की ख़बर देता है और वह बात इसी तरह होती है जैसी कि उसने ख़बर दी होती है। मैं कहता हूँ कि इब्ने सय्यदैन ने फरमाया कि जो बात मुर्दा बताए वह हक़ होती है क्योंकि वह हक़ के घर में है।

(६) इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने जौज़ी ने किताब उयूनुल-हिकायात में अपनी सनद से रिवायत की कि सअब बिन जसामा और औफ़ बिन मालिक आपस में एक दूसरे के मुंह बोले भाई थे तो सअब ने औफ़ से कहा कि ऐ भाई! हम में जो भी पहले इंतिक़ाल कर जाए तो वह दूसरे को ख़्वाब में देखे। औफ़ ने कहा, क्या ऐसा भी हो सकता है? सअब ने कहा कि हां यह हो सकता है चुनांचे सअब का इंतिक़ाल हो गया और उनको औफ़ ने ख़्वाब में देखा तो दरयात किया कि क्या मुआमला हुआ? उन्होंने कहा कि बाद तक्लीफ़ मेरे रब ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी। लेकिन औफ़ कहते हैं कि मैंने उनकी गर्दन में एक सियाह चमकदार पट्टी देखी तो दरयाफ़्त किया कि यह क्या है? उन्होंने कहा कि यह वह दस दीनार हैं जो मैंने एक यहूदी से क़र्ज़ लिए थे, वह आज मेरे गले में तौक़ बना कर डाल दिए गये हैं, अगर तुम उनको अदा कर दो तो अच्छा है। मेरे घर वालों के जितने वाक़ेआत हुए और होते हैं वह सब मुझको बताए जाते हैं हत्ता कि चन्द दिन हुए कि हमारी बिल्ली मरी, तो उसकी भी इत्तिला मिल गई और यह भी तुमको मालूम होना चाहिए कि मेरी बेटी छेः रोज़ बाद मर जाएगी, तुम उसको अच्छी तरह रखो और अच्छा बर्ताव करो। औफ़ कहते हैं कि सुबह को मैं सअब के घर आया तो एक बर्तन में दस दीनार पाए और वह लेकर यहूदी के पास पहुंचा और उस से कहा कि क्या सअब पर तुम्हारा कुछ क़र्ज़ है? उसने कहा कि हां दस दीनार थे और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेहतरीन सहाबी थे अल्लाह उन पर रहम करे।

मैंने दीनार उसकी तरफ़ बढ़ाए। वह कहने लगा कि वल्लाह, यह तो वही दीनार हैं जो मैंने दिए थे। मैंने घर वालों से दरयाफ़्त किया कि क्या सअब की वफ़ात के बाद आप लोगों के यहां कोई नई चीज़ पैदा हुई है? तो उन्होंने वाक़ेआत शुमार कराने शुरू किए, हत्ता कि बिल्ली के मरने का वाक़्या बताया। फिर मैंने दरयाफ़्त किया कि मेरी भतीजी कहां है? उन्होंने कहा कि खेल रही है। मैंने उसको छू कर देखा तो वह बुख़ार में मुब्तला थी। मैंने उन लोगों से कहा कि उसकी अच्छी तरह से देख भाल करना। फिर वह छेः रोज़ बाद मर गई।

(७) इब्ने मुबारक ने जुह्द में अतीया से रिवायत की कि औफ़ बिन मालिक अश्जई ने एक साहब से भाई चारगी की हुई थी, उनका नाम मुहलिम था। जब मुहलिम की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया। तो औफ़ उनके पास आए और कहा कि जब तुम्हारा इंतिक़ाल हो जाए तो तुम मुझको ख़बर देना कि तुम्हारे साथ क्या हुआ? तो उन्होंने कहा कि अगर मुझ जैसे शख़्स के लिए यह मुम्किन होगा तो आऊंगा। चुनांचे मुहलिम का इंतिक़ाल हो गया और एक साल बाद औफ़ ने उनको ख़्वाब में देखा तो दरयात किया कि तुम्हारे साथ क्या मुआमला हुआ? तो उन्होंने कहा कि हम को हमारे आमाल की पूरी-पूरी जज़ा दे दी गई। उन्होंने पूछा क्या सब को जज़ा दे दी गई? तो उन्होंने जवाब दिया कि हां मगर एहराज़ कि माना हुआ बदकार था। फिर उन्होंने कहा कि बखुदा मैंने उस बिल्ली के अज को भी पाया जो मेरे मरने से एक रात क़ब्ल गुम हो गई थी। सुबह को औफ़ मुहलिम के घर गये तो उनकी बीवी ने औफ़ को खुश आमदीद कहा। उन्होंने दरयात किया कि क्या तुमने कभी ख़्वाब में मुहलिम को देखा है उन्होंने कहा कि हां, आज रात देखा है वह मुझ से अपनी बेटी के ले जाने के बारे में झगड़ा कर रहे थे। फिर औफ़ ने अपना ख़्वाब बयान किया तो उनकी बीवी ने अपने ख़ादिमों को बुला कर दरयाफ़्त किया। तो उन्होंने बताया कि मुहलिम की वफ़ात से एक रोज़ क़ब्ल बिल्ली खो गई थी।

(८) अबू शैख़ इब्ने हिब्बान ने किताबुल-वसाया में और हाकिम ने मुस्तदरक में और बैहक़ी ने दलाइल में अता खुरासानी से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मुझे साबित बिन क़ैस बिन शमास की बेटी ने बताया कि जंगे यमामा में साबित शहीद हो गये उन पर एक नफीस चादर थी एक मुसलमान ने वह उठा ली, एक मुसलमान सो रहा था, साबित ख़्वाब में उसको नज़र आए और चादर का हाल बताया और बताया कि जो शख़्स चादर ले गया है उसका ख़ेमा बिल्कुल आख़िर

में है और उसके ख़ेमा के पास एक घोड़ा बंध हुआ है। उस शख़्स ने चादर पर हांडी ढक दी है और हांडी पर कजावा रख दिया है। तो तुम ख़ालिद बिन वलीद के पास जाओ और उनको हुक्म दो कि वह मेरी चादर ले लें और जब तुम मदीना में सिद्दीक़े अकबर के पास आओ तो उन से कहना कि मुझ पर इतना क़र्ज़ है फलां हज़रात का। चुनांचे उस शख़्स ने ख़ालिद बिन वलीद से तमाम वाक़या कह सुनाया और उन्होंने वापसी पर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु से तमाम माजरा कह दिया और हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने उनकी वसीयत पूरी की हमारे इल्म में साबित बिन क़ैस बिन शमास ही की एक ऐसी हस्ती है जिसने मरने के बाद वसीयत की और उसकी वसीयत पूरी की गई।

(९) हाकिम ने मुस्तदरक में और बैहक़ी ने दलाइल में कसीर बिन सलत से रिवायत की कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान पर शहादत की रात को गुनूदगी तारी हुई तो ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत हुई, आप फरमा रहे थे कि तुम हमारे साथ नमाज़े जुमा अदा करोगे। और इब्ने उमर की रिवायत में है कि आपने यह ख़्वाब देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे हैं कि तुम हमारे साथ रोज़ा अफ़्तार करोगे चुनांचे आप जुमा के रोज़ बहालते रोज़ा शहीद कर दिए गये और आपका ख़्वाब शर्मिंद-ए-ताबीर हुआ।

(१०) हाकिम ने हुसैन बिन खारजा से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि फित्न-ए-ऊला (क़त्ले उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हु) के वक़्त में बहुत ही सख़्त परेशान हो गया और अल्लाह तआला से दुआ की कि ऐ खुदावन्द मुझे ऐसी राह दिखा जिस में सलामती हो। चुनांचे मुझ को ख़्वाब में दुनिया व आख़िरत दिखाई दी और उनके दर्मियान दीवार थी लेकिन वह कुछ लम्बी न थी। मैंने इरादा किया कि मैं इस दीवार को उबूर करके उस पर जाऊं और अशजअ के मक़्तूलीन को देखूं और उन से दरयाफ़्त करूं कि उनका क्या हाल है। चुनांचे मैं दीवार के पार गया तो देखा कि कुछ हज़रात सायादार दरख़्त के पीछे बैठे हैं। मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि क्या आप शेहदा हैं? उन्होंने कहा नहीं हम तो फरिश्ते हैं, शेहदा तो बुलन्द दरजात पर पहुंच चुके हैं दरजा बदरजा बुलन्द होता गया हत्ता कि एक बहुत ही बुलन्द दरजा पर पहुंच गया। उसकी अज़्मत व वुस्अत की ख़बर अल्लाह ही को है। वहां मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फरमा थे और उनके क़रीब ही इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे। आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कह रहे थे कि मेरी उम्मत के वास्ते दुआए मग़्फ़िरत कीजिए। उन्होंने

कहा कि आप को पता नहीं कि आपके बाद आपकी उम्मत ने क्या किया है? उन्होंने अपने ख़ून बहाए हैं। और अपने इमाम को शहीद कर दिया, काश कि वह भी ऐसा ही तरीक़ा अख़्तियार करते, जैसे कि मेरे दोस्त सअद ने अख़्तियार किया। पस यह ख़्वाब देखना था कि मैं खुश हुआ और दिल में कहा कि अब मैं सअद को देखूंगा और उनके साथ हो जाऊंगा क्योंकि इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने उनको अपना ख़लील बताया है चुनांचे मैं सअद के पास आया और उनको ख़्वाब कह सुनाया तो वह बहुत खुश हुए और फरमाया कि जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख़लील न बना उसने नुक़्सान उठाया। मैंने सअद से दरयात किया कि आप कौन सी पार्टी के साथ हैं? उन्होंने कहा कि किसी के साथ नहीं। मैंने कहा कि अब आप मुझ को क्या हुक्म देते हैं? तो उन्होंने फरमाया क्या तुम्हारे पास भेड़ बकरियां हैं, मैंने कहा कि नहीं, उन्होंने फरमाया कि कुछ बकरियां ख़रीद लो और वह लेकर कहीं चले जाओ।

(११) हाकिम व बैहक़ी ने दलाइल में सलमा से रिवायत की कि मैं उम्मे सलमा के पास हाज़िर हुई तो उनको रोता हुआ पाया। मैंने दरयाफ़्त किया कि क्यों रोती हो? उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि आप रो रहे हैं और सरे अक़्दस और दाढ़ी गर्द आलूद हैं। मैंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह क्या मुआमला है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं मक़तले हुसैन से आ रहा हूं।

(१२) हाकिम ने मुअम्मर से रिवायत की कि मुझ से एक शैख़ ने रिवायत की कि एक औरत जिसका हाथ शल था हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अज़्वाजे मुतह्हरात में से किसी एक बीवी के पास आई और कहा कि अल्लाह से दुआ कर दीजिए कि वह मेरे इस हाथ को दुरुस्त कर दे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरयाफ़्त किया तुम्हारा हाथ शल क्यों कर हो गया? उसने अपना वाक़या बताया कि मेरा वालिद एक मालदार मुख़ैयर आदमी था और मेरी मां के पास कुछ न था, उसने कभी कुछ सदक़ा न किया अल्बत्ता एक मरतबा हमारे हां एक गाय ज़बह हुई तो उसकी थोड़ी चर्बी उसने एक मिस्कीन को दी और एक चिथड़ा उसको पहना दिया। फिर मेरे बाप और मां दोनों का इंतिक़ाल हो गया। मैंने अपने बाप को ख़्वाब में देखा कि वह एक नहर पर हैं और लोगों को सैराब कर रहे हैं, मैंने दरयाफ़्त किया कि ऐ बाप! क्या आपने मेरी मां को भी देखा है? उसने जवाब दिया कि तुम्हारी मां को नहीं देखा। बड़ी तलाश के बाद मिली, वह तंगी में थी

उसके जिस्म पर वह फटा हुआ कपड़ा था जो उस ने सदक़ा किया था और उसके एक हाथ में चर्बी का वह टुक्ड़ा था जो उसने सदक़ा किया था वह उसको अपने एक हाथ में लेकर दूसरे हाथ पर मारती थी और उसका जो असर दूसरे हाथ पर होता था उसको चूस कर अपनी प्यास को तस्कीन देती थी और पुकार रही थी कि प्यास, प्यास! मैंने अपनी मां को इस हालत में देख कर कहा कि ऐ मां क्या मैं तुझ को सैराब न करूं? उसने कहा कि हां। चुनांचे मैंने एक बर्तन बाप से लिया और उसको पिलाया। इतने में जो लोग उस पर मुक़र्रर थे उन में से एक ने कहा कि जिसने उस औरत को पानी पिलाया है खुदा उसके हाथ को शल कर दे, सो मेरा हाथ शल हो गया।

फसल

इस फसल में यह बताया जाएगा कि बहालते नींद रूह निकल कर जहां अल्लाह तआला चाहता है जाती है और दूसरी रूहों से मिलती है।

(१) हाकिम ने मुस्तदरक में, तबरानी ने औसत में और अक़ीली ने इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु की मुलाक़ात हज़रत अली से हुई तो आपने दरयाफ़्त किया कि अबुल-हसन क्या बात है? कि आदमी ख़्वाब देखता है कुछ इन में सच्चे निकलते हैं और कुछ झूटे। तो उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि आप फरमाते थे कि जब भी कोई मर्द या औरत सोता है तो उसकी रूह को अर्श की तरफ ले जाया जाता है तो अब जो अर्श पर पहुंच कर जा सकता है, उसका ख़्वाब सच्चा होता है और जो अपनी रूह के अर्श तक पहुंचने से क़ब्ल ही बेदार हो जाता है उसका ख़्वाब झूठा होता है।

(२) बैहक़ी ने शुअब में अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस से रिवायत की कि ख़्वाब में अरवाह को आसमान पर ले जाया जाता है और अर्श के पास सर बसुजूद होने का हुक्म दिया जाता है तो जो पाक रूह होती है वह अर्श के पास सज्दा करती है और जो पाक नहीं होती वह अर्श से दूर सज्दा करती है। और एक रिवायत में है कि जो पाक नहीं होती, उसे सज्दा की इजाज़त नहीं होती।

(३) हकीम ने बसनदे ज़ईफ़ उबादा बिन सामित से रिवायत की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मोमिन ख़्वाब में अपने रब से हम कलाम होता है।

(४) निसई ने खुज़ैमा से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशानी पर सज्दा कर रहा हूं। चुनांचे मैंने इस चीज़ की इत्तिला आपको दे दी, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बेशक एक रूह दूसरी रूह से मुलाक़ात करती है।

शैख़ अज़्ज़ुद्दीन बिन सलाम ने कहा कि रूहे यक़्ज़ा एक रूह है कि जब वह जिस्म में होती है तो जिस्म जागता है और जब जिस्म से ख़ारिज होती है तो जिस्म सो जाता है और यह सब कुछ बतौर आदत है। फिर यह रूह ख़्वाब देखती है और जब आसमान पर पहुंच कर यह मुशाहिदा करती है तो वह ख़्वाब सच्चा हो जाता है क्योंकि आसमान पर शैतान का तसर्रुफ़ मुम्किन नहीं। और अगर आसमान के नीचे रह कर ख़्वाब देखती है। तो शैतान की मुदाख़लत की बिना पर वह ख़्वाब सच्चा नहीं होता और इकरमा अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि जब इंसान सो जाता है कि उसकी रूह एक रस्सी के जरिया चढ़ती रहती है हत्ता कि जब वह बेदार होता है तो रस्सी का सिलसिला मुन्क़ता हो जाता है। इस रस्सी का सर चश्मा बदने इंसान होता है बिल्कुल इस तरह जैसे कि आफताब की शुआएं कि वह हर चीज़ पर गिरती हैं लेकिन उसका सर चश्मा क़ुर्से आफताब है।

इब्ने मुन्दह ने बाज़ उलमा से नक़ल किया कि रूह सोने वाले इंसान के नथुनों से निकल कर आसमान की तरफ़ चली जाती है लेकिन उसकी जड़ बदन है। अगर वह बदन से बिल्कुल मुन्क़ता हो जाए तो इंसान मर जाता है, जैसे चिराग़ की बत्ती अगर उस में से बिल्कुल निकाल दी जाए तो चिराग़ बुझ जाता है, जिस तरह चिराग़ की बत्ती चिराग़ में रहती है लेकिन उसकी रोशनी से तमाम कमरा मुनव्वर हो जाता है। इसी तरह इंसान की रूह का तअल्लुक़ बदन से रहता है लेकिन उसके बावजूद तमाम चीज़ों का इद्राक करती है। और उसको एक फरिश्ता जो अरवाह पर मुवक्किल है तमाम चीज़ें दिखाता है। फिर वह अपने बदन की तरफ लौट आती है।

(५) अबू शैख़ ने किताबुल-अज़मत में इकरमा से रिवायत की कि उन से दरयाफ़्त किया गया कि उसका सबब क्या है कि एक शख़्स अन देखे मक़ामात की सैर करता है। तो उन्होंने फरमाया कि यह रूह है जो हर जगह आती जाती रहती है।

बाज़ हज़रात के ख़्वाब में मुर्दा लोगों से मुलाक़ात और उनके हालात दरयाफ़्त करने के वाक़ेआत

(१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-मनामात और इब्ने सअद ने तब्क़ात में मुहम्मद बिन ज़्याद हानी से रिवायत की, अस्फ़ बिन हारिस ने अब्दुल्लाह बिन आइद सहाबी से वफ़ात के वक़्त कहा कि अगर आप वफात के बाद हम को अपने हालात पर मुत्तला कर सकें तो ज़रूर करें चुनांचे वह एक ज़माने के बाद उन से ख़्वाब में मिले और कहा कि हम को नजात मिल गई अगरचे उम्मीद बहुत ही कम थी। हमारा रब बहुत ही मग़्फ़िरत और रहम करने वाला है। अल्बत्ता एहराज़ की मग़्फ़िरत न हुई। मैंने अर्ज़ किया कि यह एहराज़ कौन हैं? तो उन्होंने कहा कि एहराज़ वह लोग हैं जो गुनाह में इतने मशहूर हैं कि हर तरफ़ से उन पर अंगिश्त नुमाई की जाती है।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू अज़्ज़ाहरीया से रिवायत की कि अब्दुल-आला बिन अदी इब्ने अबी बिलाल खुज़ाई के पास अयादत को आए और कहा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करना और अगर हो सके तो हम को अपने हालात मुत्तला फरमा दें, इत्तिफ़ाक़न उनका इंतिक़ाल हो गया तो उनके ख़ानदान की एक औरत ने उनको ख़्वाब में देखा तो उन्होंने उस औरत से कहा कि मेरी बेटी जल्द ही मेरे पास आने वाली है और तुम अब्दुल-आला से कह दो कि मैंने उनका सलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में पेश कर दिया।

(३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने यह्या बिन अय्यूब से रिवायत की कि दो अश्ख़ास ने आपस में मुआहदा कर लिया कि हम में जो पहले मर जाएगा वह दूसरे को अपने हालात से मुत्तला करेगा चुनांचे उन में से एक का इंतिक़ाल हो गया तो वह हस्बे वादा ख़्वाब में नज़र आया तो ज़िन्दा ने पूछा कि हसन का क्या हाल है? तो उन्होंने बताया कि वह जन्नत में बादशाह हैं कोई उनकी नाफरमानी नहीं करता। फिर उन से पूछा कि इब्ने सीरीन का क्या हाल है? तो उन्होंने बताया कि उन्हें हस्बे मन्शा सब नेमतें हासिल हैं लेकिन फिर भी दोनों के मरातिब में बहुत फ़र्क़ है। ज़िन्दा ने पूछा कि यह फ़र्क़ क्यों है तो उसने बताया कि हसन पर शिद्दते ख़ौफ़ का ग़लबा था।

(४) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में अपनी सनद से रिवायत किया कि अस्बह ने सलमा बिन कुहैल से कहा कि हम में से जो पहले

मर जाए वह ख़्वाब में दूसरे को अपने हालात से मुत्तला कर दे। तो सलमा अस्बह से पहले इंतिक़ाल कर गये और अस्बह को ख़्वाब में नज़र आए तो अस्बह ने उन से कहा कि तुमने अपने रब को कैसा पाया। उन्होंने कहा कि बहुत ही मेहरबान पाया। अस्बह ने पूछा कि सबसे अच्छा अमल कौन सा पाया? उन्होंने कहा कि नमाज़े तहज्जुद से बेहतर कोई अमल न पाया। अस्बह ने पूछा कि मुआमला कैसा रहा? उन्होंने फरमाया कि आसान पाया मगर भरोसे पर न रहे।

(५) अहमद ने जुहद में और इब्ने सअद ने तब्क़ात में अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मेरे दोस्त थे जब उनका इंतिक़ाल हो गया तो एक साल तक मैं दुआ करता रहा कि मुझे उनकी ज़ियारत हो जाए। आख़िर एक साल पूरा होने के बाद उनकी ज़ियारत नसीब हुई तो देखा कि आप पेशानी से पसीना साफ फरमा रहे हैं। मैंने उनसे दरयाफ़्त किया कि आपके रब ने आपके साथ क्या बर्ताव किया? तो आपने फरमाया कि हिसाब व किताब से अब फारिग़ हुआ हूं। और अगर मेरा रब रऊफ़ व रहीम न होता तो मेरी बेइज़्ज़ती हो जाती।

(६) इब्ने सअद ने अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मुझे बेहद शौक़ था कि मैं हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मुआमला पर मुत्तला हूँ। एक रोज़ ख़्वाब में मैंने एक महल देखा। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह किस का है? अभी मैं दरयाफ़्त ही कर रहा था कि हज़रत उमर उस में से निकले आप एक चादर ओढ़े थे और ऐसा मालूम होता था कि गुस्ल फरमा कर आ रहे हैं। मैंने दरयाफ़्त किया कि मुआमला कैसा रहा? तो आपने बताया कि अगर मेरा रब रऊफ़फुर्रहीम न होता तो मेरी बेइज़्ज़ती हो जाती। बारह साल तुम से जुदा हुए हो गये हैं और आज हिसाब से फारिग़ हुआ हूँ।

(७) इब्ने असाकिर ने मतरफ से रिवायत की कि उन्होंने उस्मान बिन अफ़्फ़ान को ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि ऐ अमीरुल-मुमिनीन! अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या मुआमला किया? तो उन्होंने फरमाया कि अल्लाह तआला ने मेरे साथ भलाई की। उन्होंने दरयाफ़्त किया कि कौन सा दीन बेहतर है? कहा दीने क़ैयिम।

(८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुहम्मद बिन नज़्र हारसी से रिवायत की कि मुस्लमा बिन अब्दुल-मलिक ने उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रहमा को ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि ऐ अमीरुल-मुमिनीन! मुझे शौक़ है कि किसी तरह मुझे मालूम हो कि मरने के बाद अल्लाह

ने आपके साथ क्या किया। तो आपने फरमाया कि ऐ मुस्लमा! मैं अभी हिसाब किताब से फारिग़ हुआ हूं। मुस्लमा ने पूछा कि आप कहां हैं तो आपने जवाब दिया कि जन्नते अद्न में दीगर अइम्मा हुदा के साथ हूँ।

(९) इब्ने अबी अद्दुनिया और इब्ने अबी शैबा ने मुहम्मद बिन सीरीन से नक़ल किया कि वह कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में अफ़्लह को देखा या यह कि कसीर बिन अफ़्लह को देखा। यह जंग हुर्रह में शहीद हो चुके थे। मैंने दरयाफ़्त किया कि क्या आप शहीद न हुए? उन्होंने कहा हां शहीद नहीं हुए। उन्होंने कहा कि खुदा ने कैसा मुआमला किया? मैंने कहा कि शोहदा आप ही के ज़ुमरे में हैं? तो उन्होंने कहा नहीं क्योंकि जब आपस में मुसलमान लड़ते हैं और उन में कोई मक़्तूल हो जाता है तो वह शोहदा नहीं बल्कि नुदमा हैं।

(१०) इब्ने सअद ने अबू मैसरह अमरु बिन शुरहबील से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं जन्नत में दाख़िल हो रहा हूं, वहां कुछ कुब्बे थे, मैंने पूछा कि यह किस के हैं? तो जवाब मिला कि ज़ी कुलाअ़ और हौशब के, यह दोनों हज़रात, हज़रत मुआविया के साथियों में थे और क़त्ल हुए थे। मैंने पूछा अम्मार और उनके साथी कहां हैं? तो जवाब मिला कि वह भी तुम्हारे सामने हैं। मैंने कहा कि यह कैसे हो सकता है हालांकि उन्होंने एक दूसरे को क़त्ल कर दिया तो जवाब मिला कि यह खुदा तआला की बारगाह में आए तो उसे बहुत ही ज़ाइद मग्फ़िरत करने वाला पाया। मैंने पूछा कि ख़ार्जियों का क्या हुआ? तो जवाब मिला कि उन्होंने ग़म और हुज़्न को पाया।

(११) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-मनामात में अबू बकर ख़यात से नक़ल किया कि एक रात पहले ख़्वाब में देखा कि मैं क़ब्रिस्तान में हूं और क़बर वाले निकले हुए अपनी क़बरों के ऊपर बैठे हैं, उनके सामने फूल हैं, इतने में मैंने देखा कि महफ़ूज़ (शायद किसी शख़्स का नाम है) उनके दर्मियान आ जा रहे हैं। मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि क्या आपका इंतिक़ाल नहीं हुआ तो उन्होंने यह शेअर पढ़े।

तरजमा : परहेज़गारी की मौत एक ऐसी ज़िन्दगी है जिसको फना नहीं, कुछ लोग अगरचे मर चुके हैं मगर दरहक़ीक़त वह ज़िन्दा हैं।

(१२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सलमा बसरी से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैंने एक रात बज़ीअ बिन मुसव्विर आबिद को ख़्वाब में देखा, आप खुदा और मौत को बहुत याद करने वाले थे, मैंने दरयाफ़्त किया कि आपको क्या मक़ाम मिला? तो जवाब में उन्होंने यह शेअर पढ़ दिया :

तरजमा : क़ब्र का हाल कोई नहीं जानता, या खुदा जानता है या फिर मुर्दा।

(१३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैंने ख़्वाब में बिश्र बिन मन्सूर को देखा तो दरयाफ़्त किया कि अबू मुहम्मद! तुम्हारे रब ने तुम्हारे साथ बर्ताव किया? तो उन्होंने जवाब दिया कि मैं जो सोचता था मुआमला उस से आसान पाया।

(१४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने हफ़्स मौहबी से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैंने ख़्वाब में दाऊद ताई को देखा तो दरयाफ़्त किया कि ऐ अबू सुलेमान! तुमने आख़िरत की भलाई को कैसा पाया? तो उन्होंने फरमाया कि मैंने उसे कसीर पाया। फिर मैंने पूछा कि तुम्हारे साथ क्या मुआमला हुआ तो उन्होंने फरमाया कि बेहम्दुलिल्लाह, मेरे साथ भलाई का मुआमला हुआ। मैंने उन से दरयाफ़्त किया, कि क्या आपको सुफ़ियान बिन सईद का कुछ इल्म है क्योंकि वह ख़ैर और अहले ख़ैर को बहुत पसन्द करते थे। तो उन्होंने जवाब दिया कि उनकी ख़ैर पसन्दी ने उनको अह्ले ख़ैर के मरतबा पर पहुंचा दिया।

(१५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने ज़मरा से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि ख़्वाब में मेरी मुलाक़ात मेरी फूफ़ी से हुई तो दरयाफ़्त किया कि आपका क्या हाल है? तो उन्होंने कहा। मैं ख़ैर से हूं और अपने आमाल का पूरा-पूरा बदला लिया हत्ता कि मुझ को इस मालीदह का सवाब भी मिला जो एक रोज़ मैंने ग़रीब को खिलाया था।

(१६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अब्दुल-मलिक लैसी से रिवायत की। वह फरमाते हैं कि मैंने अब्दुल-क़ैस को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि तुमने क्या पाया? तो उन्होंने कहा कि भलाई पाई। मैंने दरयाफ़्त किया कि सबसे बेहतर कौन सा अमल पाया? तो उन्होंने कहा कि सबसे बेहतर वह अमल था जो महज़ अल्लाह तआला की रज़ा जोई के लिए किया गया।

(१७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू अब्दुल्लाह अल-हेजरी से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैंने अपने चचा को ख़्वाब में देखा तो वह फरमा रहे थे कि दुनिया धोखा है और आख़िरत जहानों के लिए सुरूर है और यक़ीन से बेहतर कोई चीज़ नहीं खुदा और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही बहुत अच्छी चीज़ है किसी नेकी को हक़ीर न समझो, जब कोई नेक काम करो तो समझो कि हक़ अदा न हुआ।

(१८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अस्मई से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैंने एक बसरी शैख़ को देखा वह यूनुस बिन उबैद के साथियों में थे, उनका इंतिक़ाल हो चुका था। मैंने ख़्वाब में उन से

दरयाफ़्त किया कि आप कहां से आ रहे हैं तो फरमाने लगे कि यूनुसे तैयब के पास से मैंने कहा कि यूनुस तैयब कौन हैं? उन्होंने कहा कि वह फ़क़ीदुल-बैत हैं। मैंने कहा कि क्या वह इब्ने उबैद हैं? उन्होंने कहा कि हां। मैंने कहा कि उनका मक़ाम क्या है? उन्होंने कहा कि वह जन्नती हूरों के साथ हैं।

(१९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मैमून कुरदी से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैंने उरवा बिन बज़्ज़ार को ख़्वाब में देखा तो वह फ़रमाने लगे कि फलां पानी भरने वाले का एक दिरहम मुझ पर है और वह दिरहम घर के फलां ताक़ में रखा हे उसको दे दो। सुबह उठ कर मैंने बहिश्ती से दरयाफ़्त किया कि आया उसका कुछ उरवा के ज़िम्मा है? तो उसने कहा कि हां एक दिरहम। चुनांचे वह दिरहम मैंने उनके घर से लाकर उसको दे दिया।

(२०) इब्ने अबी अद्दुनिया ने एक शख़्स से रिवायत की, उसने कहा कि मैंने सुवेद बिन अमर कल्बी को ख़्वाब में देखा। वह बहुत अच्छी हालत में थे। मैंने उसका सबब दरयाफ़्त किया, तो उन्होंने फरमाया कि मैं कलिमा की कसरत करता था तुम भी उसकी कसरत करो। फिर कहा कि दाऊद ताई और मुहम्मद बिन नज़्र हारसी अपने मुआमले में कामयाब हुए।

(२१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्राहीम बिन मुंज़िर हरानी से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैंने ज़ह्हाक बिन उस्मान को ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या सुलूक किया तो उन्होंने कहा कि आसमान में कुछ कुंडे हैं, जिसने कलिम-ए-तैयबा पढ़ा वह उन में लटक गया और जिसने पढ़ा वह गिर गया।

(२२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी से रिवायत की, उन्होंने फरमाया कि एक शख़्स ने इब्ने आइशा तमीमी को ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि खुदा ने तेरे साथ क्या मुआमला किया? तो उसने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने मुझे अपने से मुहब्बत के सिला में बख़्श दिया।

(२३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से एक क़ज़्वीनी सालेह से रिवायत की कि एक चाँदनी रात में मुझे शौक़े इबादत पैदा हुआ तो मैं मस्जिद में गया, नमाज़ पढ़ी दुआ मांगी और फिर मुझे अचानक नींद आ गई तो मैंने देखा कि एक जमाअत जो इंसानों की न थी अपने हाथों में तब्बाक़ लिए है और हर तब्बाक़ में बर्फ़ की मानिन्द सफेद चपातियां हैं और हर चपाती पर मक्खन रखा है। उन्होंने मुझ से कहा

कि खाओ। मैंने कहा कि मेरा इरादा तो रोज़ा का है। उन्होंने कहा कि उस घर वाले का हुक्म है कि तुम यह खाओ। चुनांचे मैंने खा लीं। फिर मैंने वह मोती उठाना चाहा तो मुझ से कहा गया कि उसे हम बो देंगे ताकि इससे बेहतर मोती तुम्हारे लिए निकल आएं।मैंने कहा। उसका दरख़्त कहां लगाओगे? उन्होंने कहा ऐसे घर में जो कभी वीराना न होगा और जिसके फल कभी खराब न होंगे, ग़रज़ कि उन्होंने कहा कि हम उसको जन्नत में लगा देंगे रावी कहते हैं कि दो जुमों के बाद उस शख़्स का इंतिक़ाल हो गया। सिद्दी कहते हैं, उसके मरने के बाद मैंने उसको ख़्वाब में देखा वह कह रहा था कि क्या तुम उस दरख़्त से तअज्जुब नहीं करते जो मैंने लगाया था अब उसमें नाक़ाबिले बयान फल लग रहे हैं।

(२४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने इस्माईल बिन अब्दुल्लाह बिन मैमून से रिवायत की कि मैंने अली बिन मुहम्मद बिन इमरान को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि कौन सा अमल बेहतर पाया तो उन्होंने फरमाया कि मारिफ़त। मैंने पूछा कि आपका ऐसे शख़्स के बारे में क्या ख़्याल है जो कहता है। हदसना या अख़्बरना तो आपने फरमाया कि मैं फ़ख़्र को बुरा समझता हूं।

(२५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मालिक बिन दीनार के बाज़ साथियों से रिवायत की कि उन्होंने ख़्वाब में मालिक को देखा तो दरयाफ़्त किया कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या बर्ताव किया तो उन्होंने जवाब दिया कि बहुत अच्छा। हम ने अमले सालेह, सहाबा, सल्फ़े सालेहीन और सालेहीन की मजालिस से बेहतर किसी चीज़ को न पाया।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अब्दुल-वहाब बिन यज़ीद कुन्दी से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में अबू उमर ज़रीर को देखा तो दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे साथ क्या मुआमला किया गया। तो उन्होंने फरमाया कि अच्छा मुआमला हुआ और मेरी मग़्फ़िरत हुई। मैंने पूछा कि सबसे अच्छी कौन सी चीज़ पाई तो उन्होंने कहा कि सुन्नत और इल्म जिस पर तुम अमल पैरा हो। मैंने दरयाफ़्त किया कि आमाल में बेहतर कौन सा अमल बुरा पाया? तो उन्होंने फरमाया कि अस्मा से बचो। मैंने कहा कि इसका क्या मतलब तो उन्होंने फरमाया कि क़दरीया, मोतज़िला, मुर्जीया और फिर उन्होंने अहले बिदअत के अस्मा गिनाना शुरू कर दिए।

(२७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू बकर सैरफ़ी से रिवायत की कि एक शख़्स जो अबू बकर व उमर को गालियां देता था, मर गया और

फ़िरक़-ए-जहमीया के अक़ाइद रखता था उसे एक शख़्स ने इस हाल में देखा कि मादर ज़ाद नंगा है और सर पर एक चिथड़ा है और एक चिथड़ा शर्मगाह पर है। उन्होंने दरयाफ़्त किया कि ख़ुदा ने तेरे साथ क्या मुआमला किया तो उसने जवाब दिया कि उस ने मुझे बकर क़ैस और फ़िरऔन बिन आअद के साथ कर दिया, यह दोनों ईसाई थे।

(२८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने एक शैख़ से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मेरा एक पड़ोसी जो इन मसाइल में बहुत उलझता था जो अहले बिदअत ने निकाले हैं, मर गया। मैंने उसे ख़्वाब में देखा कि काना है। मैंने पूछा कि भई यह क्या मुआमला है तो उसने कहा कि मैंने अस्हाबे मुहम्मद की शान में ऐब निकाले। अल्लाह ने मुझ को ऐबदार कर दिया और उसने अपनी फूटी हुई आंख पर हाथ रख लिया।

(२६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू जाफर मदीनी से रिवायत की, वह फरमाते हैं, मैंने महमूद बिन हमीद को अपने ख़्वाब में देखा। वह बहुत मुत्तक़ी आदमी थे। वह दो सब्ज़ कपड़े पहने हुए थे। मैंने पूछा कि मौत के बाद क्या हाल हुआ? तो वह मेरी तरफ़ देख कर फरमाने लगे कि :

तरजमा : मुत्तक़ीन जन्नत में नाहिदा पिस्तान बाकरा औरतों के कुरब में बहुत ही अच्छे हैं और यह बात हक़ है।

अबू जाफर कहते हैं कि बख़ुदा शेअर पहले मैंने किसी से न सुना था।

(३०) इब्ने अबी अद्दुनिया और बैहक़ी ने शुअब में मुतरफ़ बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की वह कहते हैं कि मैंने क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र के पास दो रकअत नमाज़ जल्दी-जल्दी पढ़ी। फिर मुझे ओंघ आ गई तो मैंने देखा कि साहिबे क़ब्र मुझ से बात कर रहे है। और कह रहे हैं कि तुमने नमाज़ तो पढ़ी मगर अच्छी तरह न पढ़ी। मैंने कहा कि आपने सच फरमाया ऐसा ही हुआ। तो उन्होंने फरमाया कि तुम लोग अमल करते हो मगर जानते नहीं और हम जानते हैं मगर अमल नहीं कर सकते। फिर कहा कि काश कि यह दो रकअत तुम्हारे बजाए मैं अदा करता। तो यह मेरे नज़्दीक दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर होतीं मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि यहां कौन लोग मदफ़ून हैं? उन्होंने कहा कि सब मुसलमान हैं और सब को ख़ैर मिली है। मैंने कहा कि उन में सबसे अफ़ज़ल कौन है? तो उन्होंने एक क़ब्र की तरफ़ इशारा किया। मैंने ख़ुदा से दुआ की ऐ अल्लाह उनको तू मेरे लिए निकाल दे ताकि मैं उन से हम कलाम हो सकूं। तो क़ब्र से एक नौजवान निकला। मैंने पूछा कि तुमने यह मरतबा किस सबब से पाया। तो उसने जवाब

दिया कि हज व उमरा की ज़्यादती से, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह से और अमले सालेह से, मैं मुसीबतों में घिर गया मगर मुझ को सब्र की तौफ़ीक़ हुई, और इस तरह यह मक़ाम पाया।

(३१) इब्ने अबी अद्दुनिया, अयास बिन ज़ाफ़ल से रिवायत करते हैं कि मैंने अबुल-उला यज़ीद बिन अब्दुल्लाह को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि मौत का मज़ा कैसा पाया तो कहने लगे कि कड़वा। मैंने पूछा कि मौत के बाद क्या हाल हुआ? तो कहा कि मियाँ मुझ को खुशबू और फूल और रज़ा सब मिला। मैंने पूछा कि तुम्हारे भाई मुतरफ़ का क्या हुआ? तो कहा कि वह अपने यक़ीन के बाइस मुझ पर फ़ौक़ियत ले गये।

(३२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अपनी सनद से रिवायत की कि एक शख़्स ने अपने भाई को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि जब तुम को क़ब्र में रख दिया गया तो फिर क्या हुआ। उसने कहा कि एक शख़्स आग का कूड़ा लेकर मेरी तरफ़ दौड़ा। अगर दुआ करने वाले मेरे लिए दुआ न करते तो वह मेरे मार ही देता।

(३३) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मुंकदिर बिन मुहम्मद बिन मुंकदिर से रिवायत की, वह कहते हैं कि एक रात मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं मस्जिदे नबवी शरीफ़ में दाख़िल हो रहा हूं। एक रौज़ा पर लोगों का जमघट लगा हुआ है, वह एक आदमी है मैंने लोगों से दरयाफ़्त किया कि यह कौन है? तो मालूम हुआ कि यह एक शख़्स है जो आख़िरत से हो कर आ रहा है और लोगों को उनके मुर्दों के हालात बता रहा है। अब मैंने ग़ौर से देखा तो वह शख़्स सफ़वान बिन सलीम था। लोग उस से सवालात कर रहे थे और वह जवाब दे रहा था। फिर उन्होंने दरयाफ़्त किया कि यहां मुहम्मद बिन मन्सूर की ख़ैरियत दरयाफ़्त करने वाला कोई नहीं। लोगों ने मेरी तरफ इशारा करके कहा कि यहां उनके बेटे मौजूद हैं। लोगों ने मुझे राह दी, मैं क़रीब हुआ और दरयाफ़्त की तो फरमाया कि ऐ बेटे अल्लाह तआला ने उनको ऐसी ऐसी जन्नत अता फरमाई है और अब उनको मुस्तक़िल जन्नती बना दिया है अब उन पर मौत नहीं आएगी।

(३४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू करीमा से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि एक शख़्स उनके पास आया और उसने कहा कि मैंने अपने आपको आज जन्नत में दाख़िल होते हुए देखा है जब मैं जन्नत में पहुंचा तो उस में एक जगह रौज़ा था जिसमें अय्यूब, यूनुस, इब्ने औफ़ और तमीमी थे। मैंने कहा सुफियान सूरी कहां हैं? तो कहने लगे कि हम

उनका दीदार इस तरह करते हैं कि गोया कि हम सितारा को देख रहे हैं।

(३५) इब्ने अबी अद्दुनिया ने मालिक बिन दीनार से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने मुहम्मद बिन वासे को जन्नत में देखा और मुहम्मद बिन सीरीन को तो पूछा कि हसन (बसरी) तो जवाब दिया कि सिदरतुल-मुन्तहा के पास हैं।

(३६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने यज़ीद बिन हारून से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि मैंने मुहम्मद बिन यज़ीद वास्ती को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि खुदा ने आपके साथ क्या बर्ताव किया? तो उन्होंने फरमाया कि मग़्फ़िरत कर दी। मैंने पूछा मग़्फ़िरत क्यों हुई? तो फ़रमाया कि एक मरतबा अबू अमरु व बसरी जुमा के दिन हमारे पास बैठे और दुआ की तो हमने आमीन कहा। बस इसलिए मग़्फ़िरत हो गई।

(३७) ख़तीब बग़दादी ने तारीख़ बग़दाद में मुहम्मद बिन सालिम से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैंने ख़्वाब में काज़ी यह्या बिन अक्सम को देखा तो पूछा कि खुदा ने आपके साथ क्या सुलूक किया? तो उन्होंने बताया कि खुदा ने मुझ को अपने रूबरू बुला कर डांटा और कहा कि ऐ बद अमल बुड्ढे अगर तेरी दाढ़ी सफेद न होती, तो मैं तुझ को आग में जलाता। बस फिर क्या था मेरा वही हाल हुआ जो एक गुलाम बेदाम का अपने आक़ा के हुज़ूर होता है। मैं बेहोश हो गया, तो फिर मुझे इसी तरह ख़िताब किया। तीन मरतबा ऐसा ही हुआ। जब मुझ को होश आया तो मैंने अर्ज़ की कि ऐ मौला तेरा फरमान जो मुझ तक पहुंचा है उसमें तो ऐसा नहीं। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया कि वह फरमान क्या है? (हालांकि वह सब कुछ जानता है) मैंने अर्ज़ की कि मुझ से अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम ने बयान किया, उन्होंने मुअम्मर बिन राशिद से, उन्होंने इब्ने शिहाब ज़हरी से उन्होंने अनस बिन मालिक से, उन्होंने तेरे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से, उन्होंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से, उन्होंने तुझ से कि तूने फरमाया कि जो शख़्स हालते इस्लाम में बूढ़ा हुआ, मैं उसको अज़ाब देने से हया फरमाता हूं (यानी उसे अज़ाब नहीं देता) तो अल्लाह तआला ने फरमाया अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने सच कहा, मुअम्मर ने सच कहा, ज़हरी ने सच कहा, अनस ने सच कहा, मेरे नबी ने सच कहा, जिब्रील अलैहिस्सलाम ने सच कहा, मैंने ही यह वादा फरमाया है। जाओ ऐ फरिश्तो मेरे इस बन्दे को जन्नत की तरफ़ ले जाओ।

(३८) इब्ने असाकिर ने तारीख़े दमिश्क़ में अबू बकर फ़ज़्ज़ारी से रिवायत की, वह कहते हैं कि अहमद बिन हंबल के भाईयों में से किसी ने उनको ख़्वाब में देखा तो पूछा कि क्या हाल है? तो उन्होंने फरमाया कि खुदा ने मुझको अपने हुज़ूर में बुला कर खड़ा किया और फरमाया कि ऐ अहमद! तूने कोड़े खाए और सब्र का दामन न छोड़ा और यही कहत.I रहा कि मेरे रब का नाज़िल करदह कलाम मख़्लूक़ नहीं। मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम है कि उसके बदले में क़्यामत तक तुझ को अपना कलाम सुनाता रहूंगा। तो अब मैं मुसलसल अपने रब का कलाम सुनता हूं।

(३९) इब्ने असाकिर ने मुहम्मद बिन मुफज़्ज़ल से रिवायत की, उन्होंने फरमाया कि मैंने मन्सूर बिन अम्मार को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा तो पूछा कि खुदा ने आपके साथ क्या सुलूक किया? तो उन्होंने फरमाया कि उसने मुझे अपने हुज़ूर खड़ा किया और फरमाया कि तू अगरचे बुरे अमल भी करता था लेकिन चूंकि तेरे दिल में मेरी मुहब्बत थी इसलिए मैं तेरी मग़्फ़िरत करता हूं अब तू खड़ा हो और फरिश्तों के झुरमुट में मेरी बुजुर्गी बयान कर। चुनांचे मेरे लिए कुर्सी रखी गई और मैंने मलाइका की जमाअत के साथ खुदा की बड़ाई बयान की।

(४०) इब्ने असाकिर ने मुहम्मद निब औफ़ से रिवायत की, उन्होंने कहा कि मैंने मुहम्मद बिन हम्सी को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि क्या हाल है? उन्होंने जवाब दिया कि बहुत अच्छा हूं मैं दिन में एक या दो मरतबा अपने रब की ज़ियारत करता हूं। मैंने कहा कि अबू अब्दुल्लाह तुम दुनिया में भी मुत्तबा सुन्नत थे और आख़िरत में भी साहिबे सुन्नत हो। तो मुस्कुराने लगे।

(४१) इब्ने असाकिर ने अबुल-हसन शेअ्रानी से रिवायत की कि, मैंने मन्सूर बिन अम्मार को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि खुदा ने आपके साथ क्या मुआमला किया? तो उन्होंने फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुझ से दरयाफ़्त फरमाया कि क्या तुम ही मन्सूर बिन अम्मार हो? मैंने कहा कि हां ऐ मौला! फिर उसने दरयाफ़्त फरमाया कि क्या तुम ही थे जो लोगों को दुनिया में ज़ुहद की रग़बत और आख़िरत की मुहब्बत दिलाते थे, मैंने अर्ज़ की मौला ऐसा ही था और जब भी मैं किसी मज्लिस में बैठता तो उसको तेरे ज़िक्र से शुरू करता, फिर तेरे नबी पर दुरूद भेजता, फिर तेरे बन्दों को नसीहत करता। अल्लाह तआला ने फरमाया कि मेरे बन्दे ने सच कहा उसके लिए आसमान में कुर्सी बिछाओ ताकि जिस तरह यह दुनिया में मेरी पाकी

और बड़ाई बयान करता था इसी तरह आसमानों में भी बयान करे।

(४२) इब्ने असाकिर ने मुस्लिम बिन मन्सूर बिन अम्मार से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि मैंने अपने बाप को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि क्या हाल है? उन्होंने फरमाया कि मुझ को मेरे रब ने क़रीब बुलाया और फरमाया कि ऐ बद अमल बूढ़े मैं तुझ को मआफ़ करता हूं मगर तू जानता है कि क्यों मआफ़ करता हूं? मैंने अर्ज़ की कि नहीं। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया कि एक रोज़ तूने लोगों को जमा किया और मेरा ज़िक्र किया तो वह रोए और उनमें एक ऐसा आदमी भी रोया जो मेरे डर से आज के अलावा कभी न रोया था। मैंने उसे बख़्श दिया और उसके सदक़ा में तमाम अहले मज्लिस को बख़्श दिया।

(४३) इब्ने असाकिर ने सलमा बिन अफ़्फ़ान से रिवायत की। उन्होंने कहा कि मैंने वकीअ़ को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा तो पूछा कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया। उन्होंने जवाब दिया कि जन्नत में दाख़िल कर दिया। पूछा क्यों? तो जवाब दिया कि इल्मे दीन की वजह से।

(४४) इब्ने असाकिर ने अबू यह्या मुस्तली से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने अपने बाप हम्माम को ख़्वाब में इस हाल में देखा कि उनके सर से क़िन्दीलें लटकी हुई हैं तो दरयाफ़्त किया कि ऐ अबू हम्माम! इन क़िन्दीलों को तुमने कैसे पाया? तो कहा कि यह क़िन्दील हदीस हौज़ के सबब मिली और यह हदीस शफ़ाअत के सबब और यह फलां हदीस के सबब, और इसी तरह चन्द हदीसें शुमार फरमाएं।

(४५) इब्ने असाकिर ने सुफ़ियान बिन उययना से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने सूरी को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा तो कहा मुझे कुछ वसीयत फरमा दीजिए! तो फरमाया कि लोगों से मेल जोल कम कर दो। मैंने कहा कुछ और फरमाइए तो फरमाया कि जब आओगे तो खुद पता चल जाएगा।

(४६) इब्ने असाकिर ने अबू अज़्ज़बी अज़्ज़हरानी से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मेरे एक पड़ोसी ने बताया कि मैंने आज ख़्वाब में इब्ने औन को देखा तो पूछा कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या मुआमला किया। तो फरमाया कि पीर का आफताब गुरूब न होने पाया था कि मेरा नाम-ए-आमाल मेरे सामने पेश किया गया। और अल्लाह तआला ने मुझ पर रहम फरमा कर मेरी मग्फ़िरत फरमा दी। आपकी वफ़ात पीर के दिन हुई थी।

(४७) इब्ने असाकिर ने अबू अमर बिन ख़फ़ाफ़ से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने ख़्वाब में मुहम्मद बिन यह्या ज़ेली को देखा तो पूछा कि आपके रब ने आपके साथ क्या मुआमला फरमाया तो जवाब दिया कि मेरी बख़्शिश फरमा दी। मैंने पूछा कि आपके आमाल का क्या हुआ? तो फरमाया कि सुनहरे पानी से लिख कर उनको इल्लीयीन में उठा लिया गया।

(४८) इब्ने असाकिर ने उस्ताद इब्ने अबी वलीद से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने अबुल-अब्बास असम को ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि आपके रब ने आपके साथ क्या मुआमला किया? तो उन्होंने फरमाया कि मैं अबू याकूब बुवेती और रबी बिन सुलेमान और अबू अब्दुल्लाह शाफ़ई के पड़ोस में रहता हूं। हम हर दिन दावत में जमा होते हैं।

(४९) इब्ने असाकिर ने सुहैल से रिवायत की वह फरमाते हैं कि मैंने मालिक बिन दीनार को उनकी वफ़ात के बाद देखा तो पूछा कि आप खुदा के पास क्या लेकर पहुंचे? उन्होंने जवाब दिया कि पहुंचा तो बहुत से गुनाह लेकर था, लेकिन मेरे खुदा के साथ हुस्ने ज़न ने उनको मिटा दिया।

(५०) इब्ने असाकिर ने यमन की एक औरत से रिवायत की, उसने बयान किया कि मैंने ख़्वाब में रजा बिन हयात को देखा तो पूछा क्या आपका इंतिक़ाल नहीं हुआ है? तो उन्होंने कहा कि क्यों नहीं लेकिन अह्ले जन्नत से कहा गया कि जर्राह बिन अब्दुल्लाह का इस्तिक़्बाल करें। चुनांचे उस दिन को याद रखा गया चन्द रोज़ बाद जर्राह बिन अब्दुल्लाह के आज़र बाईजान में शहीद होने की इत्तिला मिली।

(५१) इब्ने असाकिर ने उत्बा बिन हकीम से रिवायत की, वह बैतुल-मुक़द्दस की एक ख़ातून से रिवायत करते हैं कि वह ख़ातून कहती हैं कि रजा बिन हयात हमारे जलीस थे और बहुत अच्छे आदमी थे। उनके इंतिक़ाल के बाद मुझे उनकी ज़ियारत हुई तो दरयाफ़्त किया कि क्या हाल है? तो उन्होंने कहा कि ख़ैरियत से हूं अल्बत्ता एक मरतबा हम ने घबरा देने वाली आवाज़ और शोर व गुल सुना तो समझे कि क़्यामत खड़ी हो गई। फिर मालूम हुआ कि यह शोर व गुल इसलिए है कि जर्राह और उनके साथी मआ अपने सामान और बोझ के जन्नत में दाख़िल हो रहे हैं।

(५२) इब्ने असाकिर ने अस्मई से रिवायत की, वह अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमाया कि एक शख़्स ने ख़्वाब में जर

हस्फ़ी को देखा तो पूछा कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे साथ क्या मुआमला किया? तो उन्होंने कहा, उसने मेरी मग़्फ़िरत इस नार-ए-तक्बीर के बदले कर दी जो मैंने फलां जगह पर लगाया था तो मैंने पूछा कि तुम्हारा साथी फ़रज़ूक़ कहां गया तो उन्होंने कहा कि अफ़्सोस पाक दामन औरतों पर इत्तिहाम लगाने के बाइस वह हलाकत में गिरफ़्तार हुआ।

(५३) इब्ने असाकिर ने सौर बिन यज़ीद शमी से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने कमीयत बिन यज़ीद को ख़्वाब में देखा तो मालूम किया, कैसा हाल है? तो उन्होंने फरमाया कि उसने मुझको बख़्श दिया। और मेरे लिए एक कुर्सी बिछाई गई और हुक्म हुआ कि मैं ग़ज़ल सरा हूं। चुनांचे मैंने पढ़ना शुरू की, जब मैं उस मक़ाम पर पहुंचा कि : ऐ लोगों के रब! मुझ पर रहम फरमा और मुझे ज़िन्दगी के शराबे साफी के धोखे से बचा, जैसे कि दूसरे लोग इस धोखे में मुब्तला हुए। तो अल्लाह तआला ने फरमाया कमीयत ने सच कहा। जिस तरह दूसरे लोग धोखे में पड़ गये कमीयत बचा रहा। ऐ कमीयत! मैंने तुझ को बख़्श दिया क्योंकि तूने मेरी मख़्लूक़ के बेहतरीन लोगों से मुहब्बत की। जिस ने तेरे इन अश्आर को पढ़ा जो तूने आले मुहम्मद की तारीफ़ में कहे हैं मैं उसके हर शेअर के बदले एक रुतबा दूंगा जो ता क़्यामत बुलन्द होता रहेगा।

(५४) इब्ने असाकिर ने अबू अशअश मिसरी से रिवायत की कि मैंने अबू बकर नाजी अलैहिर्रहमा को उनके मक़्तूल होने के एक साल बाद देखा कि बहुत ही अच्छी सूरत में हैं तो मैंने दरयाफ़्त किया कि आपके रब ने आपके साथ क्या मुआमला किया तो उन्होंने इन अश्आर में जवाब दिया कि मेरे रब ने मुझे दाइमी इज़्ज़त अता फरमाई और क़रीबी मदद का वादा किया, मुझे कुर्बत व नज़्दीकी अता फरमाई और फरमाया कि मेरे पड़ोस में मज़े से रहो।

(५५) इब्ने असाकिर ने अब्दुर्रहमान बिन महदी से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में सुफ़ियान सूरी को देखा तो पूछा कि अल्लाह ने आपके साथ क्या बर्ताव किया? तो आपने फरमाया कि क़ब्र में पहुंचते ही मुझे खुदा की बारगाह में हाज़िर किया गया। उसने मुझ से बहुत ही आसान हिसाब लिया और मुझे जन्नत में जाने की इजाज़त दी। मैं जन्नत के फूलों और बाग़ों में निहायत ही पुर सुकून माहौल में था कि अचानक आवाज़ आई कि ऐ सुफ़ियान बिन सईद क्या तुझे पता है कि तूने खुदा को अपनी जान पर तरजीह दी। मैंने अर्ज़ की हां बखुदा ऐसा ही हुआ।

(५६) इब्ने असाकिर ने अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत की वह फरमाते हैं कि मैंने इमाम शफ़ई को उनकी वफ़ात के बाद देखा तो पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या बर्ताव किया। तो उन्होंने फरमाया कि उसने मेरी मग़्फ़िरत फरमा कर मुझे ताज पहनाया और मेरी शादी कर दी और उस ने फरमाया कि यह सब कुछ इस वजह से है कि जो नेमतें मैंने तुमको दीं उन पर तुम ने फ़ख़्र व तकब्बुर न किया।

(५७) इब्ने असाकिर ने रबीअ़ बिन सुलेमान से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने इमाम शफ़ई अलैहिर्रहमा को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि ख़ुदा ने आपके साथ क्या बर्ताव किया। तो फरमाया कि उसने मुझ को सोने की कुर्सी पर बिठाया और मुझ पर मोतियों की बारिश कर दी।

(५८) इब्ने असाकिर ने इस्माईल बिन इब्राहीम फ़क़ीह से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में हाफ़िज़ अबू अहमद हाकिम को देखा तो पूछा कि कौन सा फ़िरक़ा तुम्हारे नज़्दीक ज़ाइद नजात पाने वाला है? उन्होंने फरमाया कि अहले सुन्नत।

(५९) इब्ने असाकिर ने ख़सीमा बिन सुलेमान से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने आसिम तराबुलसी को ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि ऐ अबू अली! क्या हाल है? तो कहने लगे कि मौत के बाद हम कुन्नियत नहीं रखते। मैंने पूछा क्या हाल है? तो कहा कि जन्नते आलिया और रहमते वासेआ में हूं। मैंने पूछा कि किस सबब से? तो कहा कि समुन्द्र में बकसरत जिहाद करने से।

(६०) इब्ने असाकिर ने मालिक बिन दीनार से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने मुस्लिम बिन यसार को ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि मौत के बाद क्या हाल हुआ तो जवाब दिया कि मौत के बाद शदीद ज़लज़लों और हौलनाकियों को देखा। मैंने पूछा कि उसके बाद क्या देखा, तो जवाब दिया कि करीम से क्या तवक़्क़ो हो सकती है? उसने हमारी नेकियां क़बूल कीं, और बुराइयां मुआफ़ कीं और जराइम को बख़्श दिया।

(६१) इब्ने असाकिर ने हसन इब्ने अब्दुल-अज़ीज़ हाशमी अब्बासी से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि मैंने अबू जाफर मुहम्मद बिन जरीर को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि मौत को कैसा पाया। तो उन्होंने कहा कि ख़ैर ही ख़ैर पाई। मैंने पूछा कि क़ब्र में क्या पाया? कहा ख़ैर पाई। मैंने पूछा कि मुंकर नकीर को कैसा पाया जवाब दिया कि बेहतर पाया। मैंने कहा कि ऐ अबू अली! तेरा रब तुझ पर बहुत मेहरबान

है, उसकी बारगाह में मेरा ज़िक्र कर देना। तो उन्होंने फरमाया कि तुम हम से कहते हो कि हम तुम्हारा ज़िक्रे खुदा की बारगाह में करें हालांकि हम खुद तुम्हारे जरिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में कुर्ब हासिल करते हैं।

(६२) इब्ने असाकिर ने जैश बिन मुबश्शिर से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि मैंने यहया बिन मईन को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया? तो उन्होंने फरमाया कि खुदा ने मुझ को कुर्ब अता किया और इनआमात फरमाइए। नीज़ तीन सौ रूहों से निकाह करा दिया और दो मरतबा अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ किया। मैंने पूछा कि यह सब किस सबब से हुआ? तो कहा कि उसके सबब से और आस्तीन में से हदीस शरीफ़ की किताब निकाल कर दिखाई।

(६३) इब्ने असाकिर ने सुलेमान उमरी से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने अबू जाफर क़ारी को ख़्वाब में देखा तो वह कहने लगे कि मेरे भाईयों को मेरा सलाम पहुंचा देना और कह देना कि मेरे रब ने मुझ को मक़ामे शुहदा अता फरमाया है और अपनी तरफ़ से रिज़्क़ अता किया है। और अबू हाज़िम को सलाम कह देना और कहना कि होश कर और समझदारी से काम कर क्योंकि खुदा और उसके फरिश्ते तेरी रात की मज्लिसों को देखते हैं।

(६४) इब्ने असाकिर ने ज़करिया बिन अदी से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने इब्ने मुबारक को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया। तो फरमाया कि उसने मेरे सफर की वजह से मेरी मग्फ़िरत कर दी।

(६५) इब्ने असाकिर ने मुहम्मद बिन फुज़ेल बिन अयाज़ से रिवायत की कि वह कहते हैं कि ख़्वाब में इब्ने मुबारक को देखा तो पूछा कि कौन सा अमल सबसे बेहतर पाया। तो कहा कि जिहाद फी सबीलिल्लाह और उसकी तैयारी।

(६६) इब्ने असाकिर ने यज़ीद बिन मज़्ऊर से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने औज़ाई को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि ऐ अबू अमरु कोई ऐसा अमल बताइए कि जिस से खुदा तआला के हां दरज़ा बुलन्द हो। तो फरमाया कि यहां या तो उलमा का दरजा बुलन्द है या ग़म्ज़दह लोगों का।

(६७) इब्ने असाकिर ने अब्दुल-अज़ीज़ बिन उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ से रिवायत की, वह कहते हैं कि ख़्वाब में मैंने अपने वालिद को देखा तो दरयाफ़्त किया कि ऐ अब्बा जान सबसे बेहतर अमल कौन सा पाया।

तो फरमाया कि इस्तिग़फ़ार।

(६८) इब्ने असाकिर ने अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने ख़लीफ़ा मुतवक्किल बिल्लाह को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि ख़ुदा ने आपके साथ क्या मुआमला किया। तो जवाब दिया कि उसने मेरी मग़्फ़िरत कर दी। मैंने दरयाफ़्त किया कि किस सबब से तो कहा कि अगरचे मेरे पास अमले सालेह का कोई ज़ख़ीरह न था। अल्बत्ता जो कुछ सुन्नते नबवी की ख़िदमत मैंने की, उसके एवज़ मग़्फ़िरत हुई।

(६९) इब्ने असाकिर ने हुज्जाज बिन से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैं हसन और फ़रज़ूक़ के हम्राह एक क़ब्र पर गया तो हसन ने कहा कि ऐ फरज़ूक़! उस दिन के लिए तूने क्या तैयारियां की हैं? तो उसने क्या जवाब दिया कि तौहीद व रिसालत की गवाही सत्तर साल से तैयार रखी है। तो हसन ख़ामोश हो गये। लब्ता बिन फरज़ूक़ कहते हैं कि मैंने अपने बाप को मरने के बाद देखा तो मेरे बाप कह रहे थे कि ऐ बेटे! वह बात जो मैंने उस रोज़ हसन से कही थी आज काम आ गई।

(७०) इब्ने असाकिर ने अब्दुल्लाह बिन सालेह सूफी से रिवायत की कि एक मुहद्दिस को किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा क्या हाल है? तो उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी। क्योंकि मैं अपनी किताबों में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम के बाद दरूद लिखने पर पाबन्दी करता था।

(७१) इब्ने असाकिर ने यज़ीद बिन मुआविया से रिवायत की, एक ज़िन्दा ने एक मुर्दह पड़ा हुआ देखा तो वह मुर्दा बोल उठा और कहने लगा कि लोगों से कह देना कि आमिर बिन कैस का चेहरा क़यामत के रोज़ चौदहवीं रात के चांद की मानिन्द रौशन होगा।

(७२) इब्ने असाकिर ने अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन अस्लम से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में अपने वालिद को देखा कि वह लम्बी टोपी पहने हुए हैं तो पूछने पर बताया कि ऐ बेटे! यह मेरी ज़ीनत इल्म की ज़ीनत के बाइस है। फिर मैंने दरयात किया कि मालिक बिन अनस कहां हैं? तो फरमाया कि फ़ोक़ फ़ौक़ यानी ऊपर ऊपर। वह अपना मुंह उठा कर यह लफ़्ज़ कहते रहे हत्ता कि उनकी टोपी गिर गई।

(७३) इब्ने असाकिर ने ख़शनाम से (जो बशर हाफी के भांजे थे) रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि मैंने अपने मामूं को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि अल्लाह ने आपके साथ क्या बर्ताव किया? तो उन्होंने फरमाया कि बहुत अच्छा बर्ताव किया और फरमाया कि ऐ बशर! तूने

मुझ से हया की और उस नफ़्स पर डरा जो मेरे लिए था।

(७४) इब्ने असाकिर ने हुसैन बिन इस्माईल मुहामली से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने क़ाशनी को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि खुदा ने आपके साथ क्या बर्ताव किया? जवाब दिया कि बहुत मुसीबत से छुटकारा हुआ। मैंने पूछा कि अहमद बिन हंबल का क्या हाल है? कहा कि अल्लाह तआला ने उनकी मग़्फ़िरत फरमा दी। मैंने पूछा कि बिश्र हाफ़ी का क्या मुआमला रहा। तो उन्होंने जवाब दिया कि उनको खुदा की तरफ़ से हर दिन दो मरतबा शर्फ़ व करामत मिलती है।

(७५) इब्ने असाकिर ने आसिम जहनी से रिवायत की। वह कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं किसी जगह गया हूं। वहां मेरी मुलाक़ात बिश्र हाफी से हुई। मैंने दरयाफ़्त किया कि कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं। तो बोले कि इल्लीयीन से आ रहा हूं। मैंने पूछा कि खुदा ने अहमद बिन हंबल अलैहिर्रहमा के साथ क्या बर्ताव किया। तो उन्होंने फरमाया कि मैं अहमद बिन हंबल अलैहिर्रहमा और अब्दुल-वहाब दर्राक़ अलैहिर्रहमा को अभी खुदा के सामने छोड़ कर आया हूं, वह खा पी रहे हैं और खुशियां मना रहे थे। मैंने पूछा कि आपका क्या हाल है तो बोले कि अल्लाह तआला खाने से मेरी बेरग़बती जानता है, उसने मुझ को अपने दीदार की नेमत से सरफराज़ फरमा दिया।

(७६) इब्ने असाकिर ने अबू जाफर सक़ा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने बिश्र हाफी को ख़्वाब में देखा और मारूफ़ करख़ी उनके हमराह थे। मैंने पूछा कि कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं? तो फरमाया कि जन्नतुल-फिर्दौस से मूसा अलैहिस्सलाम कलीमुल्लाह की ज़्यारत करके आ रहे हैं।

(७७) इब्ने असाकिर ने क़ासिम बिन मंबा से रिवायत की, वह फ़रमाते हैं कि मैंने बिश्र हाफी को ख़्वाब में देख कर दरयाफ़्त किया कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या मुआमला किया तो फरमाने लगे कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि मैंने तुम को बख़्श और तुम्हारे जनाज़े में जो शरीक हुआ उसको भी। तो मैंने अर्ज़ की कि ऐ खुदा उनको भी बख़्श दे जो मुझ से मुहब्बत करें, अल्लाह ने फरमाया कि उनको भी बख़्श दिया।

(७८) इब्ने असाकिर ने अहमद दरूक़ी से रिवायत की। वह कहते हैं कि मेरा एक पड़ोसी मर गया। मैंने उसको ख़्वाब में देखा वह दो हुल्ले पहने हुए था। मैंने उस से दरयाफ़्त किया कि यह कहां से आए? उस ने जवाब दिया कि हमारे क़ब्रिस्तान में बिश्र हाफ़ी को दफन किया गया है उसकी खुशी में हर मुर्दा को दो-दो हुल्ले पहनाए गये हैं।

(७९) इब्ने असाकिर ने एक शख़्स से रिवायत की, उस ने कहा मैंने ख़्वाब में बिश्र हाफी को देखा तो पूछा कि खुदा ने आपके साथ क्या बर्ताव किया है? जवाब दिया कि खुदा ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी और फरमाया कि ऐ बिश्र तूने मेरी इतनी इबादत भी न की, जितनी कि मैंने तेरे नाम की क़द्र व मंज़िलत बढ़ा दी।

(८०) इब्ने असाकिर ने एक दूसरे शख़्स से रिवायत की कि उसने बिश्र हाफ़ी अलैहिर्रहमा को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या किया तो उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी और फरमाया कि ऐ बिश्र! अगर तू दहकते हुए अंगारों पर भी मेरे लिए सज्दा करता तब भी तू मेरे इस एहसान का बदला न चुका सकता जो मैंने तेरी अज़्मत लोगों के दिलों में डाल कर किया।

(८१) इब्ने असाकिर ने मुहम्मद बिन खुज़ैमा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि जब अहमद बिन हंबल रह० की वफ़ात हुई तो मैं बहुत ही ग़म्गीन हुआ। एक रात उनको ख़्वाब में देखा कि नाज़ व अंदाज़ से चल रहे हैं। मैंने पूछा कि ऐ अबू अब्दुल्लाह यह कैसी चाल है? तो उन्होंने फरमाया कि यह ख़ादिमों की जन्नत में चाल है। मैंने पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या बर्ताव किया? तो उन्होंने फरमाया कि उसने मेरी मग़्फ़िरत कर दी, मुझे ताज पहनाया और सोने की दो जूतियां पहनाई और फरमाया कि ऐ अहमद! यह सब कुछ इस वजह से है कि तूने यह कहा कि कुरआन मेरा कलाम है। फिर खुदा ने फरमाया कि ऐ अहमद! मुझ से वह दुआ किया करो जो तुम दुनिया में करते थे। मैंने कहा कि ऐ मेरे रब! हर चीज़ मैं अभी इतना कहने ही पाया था कि उसने फरमाया। हर चीज़ तुम्हारे लिए मौजूद है। फिर मैंने कहा कि हर चीज़ पर तेरी कुदरत के सबब। उसने फरमाया कि तुमने सच कहा। मैंने अर्ज़ की मुझ से कुछ न पूछना और मेरी मग़्फ़िरत कर देना। उसने फरमाया कि जाओ ऐसा ही कर दिया। फिर फरमाया कि ऐ अहमद! यह जन्नत है इस में दाख़िल हो जाओ। जब मैं वहां दाख़िल हुआ तो सुफियान सूरी मौजूद थे उनके दो पर थे जिन से वह एक खजूर के दरख़्त से दूसरे दरख़्त पर उड़ रहे थे और कह रहे थे कि सब तारीफ़ें इस खुदा के लिए हैं जिसने हम से किए हुए वादे को सच कर दिखाया और सर ज़मीने जन्नत का हम को वारिस बनाया। जन्नत में हम जहां चाहते हैं ठिकाना बनाते हैं तो अमल करने वालों का अज्र बहुत ही बेहतर है। मैंने पूछा कि अब्दुल-वहाब वर्राक़ का क्या हाल है? तो उन्होंने फरमाया कि मैं उनको नूर के समुन्द्र में छोड़ कर आया

हूं। मैंने दरयाफ़्त किया कि बिश्र हाफी किस हाल में हैं? कहा कि वह खुदा की बारगाह में हैं, उनके सामने एक ख़्वान है और रब्बे जलील उन पर मुतवज्जह है और फरमा रहा है कि ऐ दुनिया में न खाने और न पीने वाले! इस जहान में खा और लुत्फ़ अन्दोज़ हो।

(८२) इब्ने असाकिर ने अलिफ़ बिन अबी दल्फ़ अजली से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैं ने अपने बाप को ख़्वाब में देखा वह दीवारों वाले वहशतनाक घर में हैं और उस घर की ज़मीन में ख़ौफ़ का असर है, वह नंगे हैं और अपना सर घुटनों में दिए हुए हैं। मुझ से पूछा क्या तुम अलिफ़ हो? मैंने कहा कि हां। तो उन्होंने यह शेअर पढ़े मेरे घर वालों को इत्तिला पहुंचा दो कि बरज़ख़ में मेरा हाल यह है। हम से तमाम कामों के बारे में पूछ गछ की गई, घर वालों से कह दो कि मेरी वहशत पर रहम करो। फिर मुझ से कहा कि क्या समझ गये? मैंने कहा कि हां। फिर यह शेअर पढ़े कि अगर मौत के बाद नजात होती, तो हर ज़िन्दा के लिए मौत राहत होती। लेकिन हम मरने के बाद उठाए जाएंगे और हर बात की जवाब देही करना होगी। यह कह कर वह चल दिए और मैं जाग उठा।

(८३) इब्ने असाकिर ने अस्मई से रिवायत की, वह अपने बाप से रिवायत करते हैं उन्होंने कहा कि मैंने हज्जाज को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि अल्लाह तआला ने तेरे साथ क्या बर्ताव किया? उसने जवाब दिया कि हर इंसान के बदले में जिसे मैंने क़त्ल किया था, सत्तर मरतबा क़त्ल किया गया। फिर एक साल बाद दोबारा सवाल किया। तो कहा कि पहले साल पूछ तो चुके हो।

(८४) इब्ने असाकिर ने उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में एक मुरदार पड़ा हुआ देखा तो पूछा यह क्या है? तो आवाज़ आई कि अगर तुम उससे कलाम करोगे तो यह बोलने लगेगा। मैंने उसके ठोकर मारी, उसने आंखें खोलीं। मैंने पूछा कि तू कौन है? उसने कहा कि हज्जाज हूं खुदा तआला की बारगाह में आया तो उसे सख़्त अज़ाब वाला पाया, उसने मुझे हर क़त्ल के एवज़ सत्तर मरतबा क़त्ल किया और अब मैं उसके सामने मुन्तज़िर हूं कि वह जन्नत का फ़ैसला देता है या जहन्नम का।

(८५) इब्ने असाकिर ने अशअस से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैने ख़्वाब में हज्जाज को देखा तो बहुत ही बुरे हाल में था मैंने पूछा कि खुदा ने तेरे साथ क्या मुआमला किया? कहने लगा कि हर क़त्ल के बदले उसने मुझ को क़त्ल किया। और अब मैं उसी चीज़ का मुन्तज़िर

हूं जिसका एक मुन्तज़िर होता है।

(८६) इब्ने असाकिर ने अबुल-हुसैन से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं एक कुशादा मकान में दाख़िल हो रहा हूं। मकान में तख़्त पर एक साहब बैठे हैं, और उनके सामने एक शख़्स बैठा हुआ कुछ भून रहा है। मैंने दरयाफ़्त किया कि यह दोनों कौन हैं तो मालूम हुआ कि तख़्त पर बैठने वाले यज़ीद नहवी हैं और दूसरे अबू मुस्लिम खुरासानी, मैंने पूछा कि इब्राहीम सुनार का क्या हाल है? कहा कि वह आला इल्लीयीन में हैं। मैंने पूछा कि उन तक किस की रसाई होगी? कहा कि अबुल-हुसैन की। यही ख़्वाब समरक़न्द, जो रजान और खुरासान के चन्द अफ़राद ने देखा।

(८७) इब्ने असाकिर ने अहमद बिन अब्दुर्रहमान मुअब्बर से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने सालेह बिन अब्दुल-कुद्दूस को ख़्वाब में खुश व खुर्रम देखा तो पूछा कि तुम्हारे रब ने तुम से क्या सुलूक किया और बेदीनी का इल्ज़ाम जो तुम पर था उसका क्या हुआ? उन्होंने जवाब दिया कि मैं उस रब की बारगाह में आया जिस पर कोई चीज़ पोशीदा नहीं तो उसने अपनी रहमत से मेरी मग़्फ़िरत कर दी। और बेदीनी के इल्ज़ाम से मेरी बराअत दुनिया ही में हो गई थी।

(८८) इब्ने असाकिर ने अबू यज़ीद तैफूर बुस्तामी से रिवायत की कि आपने ख़्वाब में हज़रत अली को देखा तो पूछा कि ऐ अमीरुल-मुमिनीन! मुझ को कुछ नसीहत फरमा दीजिए। तो फरमाया कि मालदारों का महज़ रज़ाए इलाही की ख़ातिर ग़रीबों से तवाज़ो के साथ मिलना बहुत अच्छी चीज़ है। मैंने अर्ज़ की कि कोई और नसीहत फरमाइए। आपने फरमाया कि इस से अच्छी नसीहत यह है कि फुक़रा का अग़्निया पर एतमाद मैंने कहा कि और कोई नसीहत कीजिए तो कहने लगे यह देखो, और अपनी मुट्ठी खोल दी जिस में सुनहरी पानी से लिखा था कि तू मुर्दा था ज़िन्दा हो गया और जल्द फिर मुर्दा हो जाएगा, तो दारुल-फ़ना का घर ढा कर दारुल-बक़ा में घर बना लो।

(८६) इब्ने असाकिर ने किसी मक्की से रिवायत की कि उसने कहा कि मैंने सईद बिन सालिम क़दाह को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि इस क़ब्रिस्तान में अफ़ज़ल कौन है? तो उन्होंने इशारा से बताया कि फलां क़बर वाला हम से अफ़ज़ल है। मैंने पूछा कि वह फ़ज़ीलत किस सबब से है। उसने कहा कि उसकी आज़माइश की गई, मगर साबिर रहा। मैंने कहा कि फुज़ैल बिन अयाज़ का हाल क्या है? तो उसने कहा कि उनको ऐसा हिला दिया गया है कि तमाम दुनिया उसके किनारे के

बराबर भी नहीं है।

(६०) इब्ने असाकिर ने अबुल-फर्ज गैस बिन अली से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने अबुल-हसन आक़ूली मुक़री को ख़्वाब में देखा कि बहुत ही अच्छी हालत में हैं। मैंने दरयाफ़्त किया कि क्या हाल है? कहा कि अच्छा हाल है। मैंने कहा कि आप तो मर चुके हैं। उन्होंने कहा कि बेशक मैंने कहा कि मौत कैसी है कहा कि अच्छी है। मैंने कहा कि खुदा आपकी मग़्फ़िरत फरमा कर दाख़िले जन्नत करे। मैंने पूछा कि सबसे बेहतर क्या है। उन्होंने कहा कि सबसे ज़ाइद नफ़ा देने वाला अमल इस्तिग़फ़ार है।

(६१) इब्ने असाकिर ने हसन बिन यूनुस से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने हाजूर को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया? तो कहा कि उसने मेरी मग़्फ़िरत कर दी। मैंने कहा कि किस सबब से? कहा कि मैं मुसलमानों और हाजियों के रास्ते की हिफ़ाज़त करता था।

(६२) इब्ने असाकिर ने अबू नस्र हन्फ़ वज़ान से रिवायत की कि किसी शख़्स ने यूसुफ़ बिन हुसैन राज़ी सूफ़ी को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि खुदा ने आपके साथ क्या बर्ताव किया तो फरमाया कि मग़्फ़िरत व रहमत का बर्ताव किया। पूछा कि किस सबब से? कहा कि इन चन्द कलिमात के बाइस जो मैंने बवक़्त मौत अदा किए थे और वह यह हैं।

ऐ अल्लाह! मैंने लोगों को नसीहत की, लेकिन खुद अमल न किया, तो मरे अमल की कोताही को मेरे क़ौल की अच्छाई की वजह से मआफ़ कर दे।

(६३) इब्ने असाकिर ने अब्दुल्लाह बिन सालेह से रिवायत की कि किसी शख़्स ने अबू नवास (शइर) को ख़्वाब में देखा। वह बहुत ही मज़े में थे। पूछा क्या हाल है? तो बताया कि अल्लाह तआला ने मेरी मग़्फ़िरत फरमा दी है और यह नेमत अता फरमाई है। पूछा गया कि तुम तो बहुत गड़ बड़ करने वाले थे, फिर यह क्यों हुआ। कहा एक रात खुदा का एक नेक बन्दा क़ब्रिस्तान में आया और अपनी चादर बिछा कर दो रकअत नमाज़ अदा की और इन दो रकअत में उसने दो हज़ार मरतबा कुल हुवल्लाहु अहद। पढ़ी और उसका सवाब क़ब्रिस्तान के तमाम मुर्दों को हदिया किया, मैं भी खुश क़िस्मती से उन्हीं लोगों की सफ़ में आ गया।

(६४) इब्ने असाकिर ने मुहम्मद नाफ़े से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने अबू नवास को नीम बेदारी के आलम में देखा तो पूछा, क्या

तू अबू नवास है? कहा यह कुन्नियत से पुकारने का वक़्त नहीं। तो मैंने कहा कि हसन बिन हानी हो? कहा हां। मैंने कहा कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया? कहा कि मेरी मग़्फ़िरत कर दी। पूछा कि किस सबब से? कहा कि चन्द शेअरों की वजह से जो मेरे घर में फलां गधे के नीचे हैं। मैं उसके घर पहुंचा, गधा उठा कर देखा तो एक काग़ज़ पर यह अश्आर लिखे हुए थे।

ऐ मेरे रब! अगरचे मेरे गुनाह बहुत हैं, मगर तेरी रहमत ज़्यादा बड़ी है। अगर तू सिर्फ़ नेकों की उम्मीदगाह है तो मुजिरम किस की पनाह लें? ऐ खुदा मैं तेरे हुक्म के मुताबिक़ आह व ज़ारी कर रहा हूं। अगर तूने मेरे दस्ते सवाल को रद्द किया तो कौन रहम करेगा। मेरे पास तुझ तक पहुंच का कोई वसीला नहीं सिवाए उम्मीद, और तेरी मुआफ़ी के नीज़ यह कि मैं मुसलमान हूं।

(६५) इब्ने असाकिर ने अबू बकर अस्बहानी से रिवायत की कि किसी शख़्स ने अबू नवास को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया तो जवाब दिया कि उसने मुझे इन अश्आर की वजह से बख़्श दिया जो मैंने नरगिस के बारे में कहे थे और वह यह हैं :

ऐ इंसान! ज़मीन से उगने वाले पौदों को देख। और खुदा वन्दे कुद्दूस की कारीगरी का मंज़र देख, ऐसा मालूम होता है कि जैसे चांदी की आंखें सुनहरी पुतलियों से देख रही हैं यह आंखें ज़बर जदी शाख़ों पर खुदा की तौहीद और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिन्न व इन्स की तरफ रसूल होने की शहादत दे रही हैं।

(६६) इब्ने असाकिर ने अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मरुज़ी से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने हाफिज़ याक़ूब बिन सुफियान को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि हाल क्या है? उन्होंने कि अल्लाह ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी और फरमाया कि तुम जिस तरह दुनिया में हदीस बयान करते थे, आसमान पर भी बयान करो चुनांचे मैंने चौथे आसमान पर हदीस बयान की और फरिश्तों ने उसको सुनहरी क़ल्मों से लिखा, जिब्रील भी लिखने वालों में थे।

(६७) इब्ने असाकिर ने अबू उबैद बिन हरबवैह से रिवायत की, वह कहते हैं एक शख़्स सिर्री सक़्ती के जनाज़ा में शरीक हुआ। रात को ख़्वाब में सिर्री सक़्ती को देखा तो पूछा कि क्या हाल है। फरमाया कि अल्लाह ने मेरी और मेरे जनाज़े में शरीक होने वालों की मग़्फ़िरत फरमा दी। उस शख़्स ने अर्ज़ की कि हुज़ूर मैं भी आपके जनाज़े में शरीक था। तो आपने एक लिस्ट निकाली मगर उस शख़्स का नाम

मौजूद न था, जब बग़ौर देखा तो हाशिया पर उसका नाम लिखा था।

(९८) इब्ने असाकिर ने अबुल-क़ासिम साबित बिन अहमद बिन हुसैन बग़दादी से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने अबुल-क़ासिम सअद बिन मुहम्मद ज़ंजानी को ख़्वाब में देखा, वह बार-बार फरमाते थे कि ऐ अबुल-क़ासिम अल्लाह तआला मुहद्देसीन के लिए उनकी हर मज्लिस के एवज जन्नत में एक घर बनाता है।

(९९) इब्ने असाकिर ने मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन दारा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने अबू ज़रआ को ख़्वाब में देखा तो पूछा कि क्या हाल है? फरमाया कि हर हाल में अल्लाह तआला का शुक्र है, मुझे खुदा तआला के सामने पेश किया गया। उसने दरयाफ़्त किया कि ऐ उबैदुल्लाह! तूने मेरे बन्दों से सख़्त गुफ़्तारी क्यों की? मैंने अर्ज़ की इलाही। उन्होंने तेरे दीन की बेहुरमती का इरादा किया। अल्लाह तआला ने फरमाया कि सच कहा। फिर ताहिर ख़ल्क़ानी को पेश किया गया। मैंने उन पर खुदा की बारगाह में दावा किया तो उनको सौ कोड़े मारे गये। फिर क़ैद ख़ाने में भेज दिया गया। फिर फरमाया कि उबैदुल्लाह को उसके साथियों अबू अब्दुल्लाह सुफ़ियान सूरी, अबू अब्दुल्लाह मालिक बिन अनस और अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन हंबल के पास ले जाओ।

(१००) इब्ने असाकिर ने हफ़्स बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने अबू ज़रआ को ख़्वाब में देखा कि आसमाने दुनिया पर मलाइका के साथ मसरूफ़े नमाज़ हैं, मैंने दरयाफ़्त किया कि यह फ़ज़ीलत आपको कैसे मिली? फरमाया कि मैंने एक लाख अहादीस अपने हाथ से लिखीं हर हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मुकम्मल दरूद शरीफ़ लिखा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस ने मुझ पर एक मरतबा दरूद शरीफ़ पढ़ा। अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फरमाएगा।

(१०१) इब्ने असाकिर ने यज़ीद बिन मुख़्लिद तरतूसी से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने अबू ज़रआ को ख़्वाब में देखा कि वह सफेद कपड़े पहने हुए हैं और आसमाने दुनिया पर नमाज़ पढ़ा रहे हैं। उनके साथ सफेद पोश लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं और नमाज़ में रफा यदैन कर रहे हैं मैंने दरयाफ़्त किया कि ऐ अबू ज़रआ! यह कौन लोग हैं? कहा कि यह फरिश्ते हैं। मैंने दरयाफ़्त किया कि आपने यह फज़ीलत क्यों कर पाई? फरमाया कि नमाज़ में रफ़ा यदैन की वजह से। मैंने कहा कि जहमीया ने हमारे रब के साथियों को तंग कर रखा है। आपने फरमाया

कि ख़ामोश रहो क्योंकि अहमद बिन हंबल अलैहिर्रहमा ने उन पर ऊपर से पानी बन्द कर दिया है।

(१०२) इब्ने असाकिर ने अबुल-अब्बास मुरादी से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने अबू ज़रआ को ख़्वाब में देखा तो पूछा क्या हाल है। तो फरमाया कि मैं खुदा की बारगाह में हाज़िर हुआ तो उसने फरमाया कि ऐ अबू ज़रआ! मेरे पास एक बच्चा आता है तो मैं उसे दाख़िले जन्नत करता हूं तो फिर उस शख़्स का क्या हाल होगा कि जिसने मेरे बन्दों पर शरीअत की राहें वाज़ेह कर दीं और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को याद किया। जाओ जन्नत में जहां चाहो ठिकाना बनाओ।

(१०३) इब्ने असाकिर ने सदक़ा बिन यज़ीद से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि तराबुलस के एक टीले पर मैंने तीन क़बरें देखीं, उनमें एक पर लिखा था कि ज़िन्दगी की लज़्ज़त वह इंसान कैसे पा सकता है जिसको पूरा यक़ीन हो कि मौत उसको जल्द ही आ दबोचेगी। उसकी बादशहत और तकब्बुर छीन लेगी और उसको तारीक कोठरी में डाल देगी।

दूसरी पर लिखा था। ज़िन्दगी की लज़्ज़त वह इंसान कैसे पा सकता है जो जानता है कि खुदा उस से पूछ गछ करेगा और उसको उसके अमल और नेकी की जज़ा देगा।

तीसरी पर लिखा था कि : ज़िन्दगी की लज़्ज़त वह इंसान कैसे पा सकता है जो ऐसी क़ब्र का मकीन बनने वाला है जो उसके हुस्न व शबाब को मलियामेट करके रख कर देगी। उसके चेहरे की चमक दमक जल्द ही ख़त्म कर देगी और उसको जोड़-जोड़ कर इलाहिदा कर देगी।

मैं यह मंज़र देख कर क़रीबी बस्ती में पहुंचा और वहां के बुजुर्ग से यह वाक़या बयान किया तो उन्होंने फरमाया कि उनका वाक़या उस से भी ज़ाइद अजब है। मैंने दरयाफ़्त किया वह क्या है। उन्होंने फरमाया कि उन में से एक बादशाह का मसाहिब था जो लश्करों और शहरों का अमीर था। दूसरा एक मालदार ताजिर था और तीसरा ज़ाहिद था जो गोश नशीन हो गया था। ज़ाहिद के मरने का वक़्त आया तो उसका भाई जो बादशाह का मसाहिब था आया। यह उस वक़्त अब्दुल-मलिक बिन मरवान की तरफ़ से हाकिम था और ताजिर भी आया, दोनों ने कहा कि ऐ भाई क्या तुम कुछ वसीयत करते हो? उसने कहा कि मैं किस चीज़ की वसीयत करूं, न मुझ पर किसी का क़र्ज़ है और न ही मेरे पास दौलत है। अलबत्ता मैं तुम से एक मुआहेदा करना चाहता

हूं और वह यह है क जब मैं मर जाऊं तो मुझे टीले पर दफन करना और मेरी क़ब्र पर यह लिख देना (और फिर वही अश्आर बताए जो उसकी क़ब्र पर लिखे हुए थे) और फिर तीन रोज़ तक तुम मेरी क़बर पर आना, शायद कि तुम को नसीहत हासिल हो। चुनांचे भाईयों ने ऐसा ही किया। जब तीसरे रोज़ हाकिम आया और जाने लगा तो क़ब्र के अन्दर से आवाज़ सुनी, जिस से वह बहुत ही मरऊब हुआ और डरा। रात को ख़्वाब में उसने अपने भाई को देखा तो पूछा कि ऐ भाई! यह हैबतनाक आवाज़ किसी चीज़ की है? उसने कहा कि यह गुर्ज़ की आवाज़ थी। मुझ से कहा गया कि तूने एक मरतबा मज़्लूम को देखा लेकिन उसकी इम्दाद न की। दूसरे दिन सुबह हाकिम ने अपने दोस्त व अहबाब को बुला कर कहा कि तुम सब गवाह रहो कि अब मैं तुम्हारे दर्मियान न रहूंगा। चुनांचे उस ने इमारत छोड़ कर बादिया पैमाई शुरू कर दी और इसी तरह ज़िन्दगी गुज़रती रही, हत्ता कि वफ़ात का वक़्त आ गया तो उसका ताजिर भाई आया और कहा कि अगर कुछ वसीयत करना हो तो कर दो। उसने कहा कि बस यही वसीयत है कि जब मैं मर जाऊं तो मेरी क़ब्र मेरे भाई के पहलू में बनाना और उस पर यह अश्आर लिख देना (और वही शेअर बताए जो उसकी क़ब्र पर लिखे हुए थे) और मेरी क़ब्र पर तीन रोज़ तक आना चुनांचे उसने दोनों वसीयतें पूरी कर दीं। जब वह तीसरे रोज़ क़ब्र से वापस जाने लगा तो उस ने क़बर से दहशतनाक आवाज़ सुनी। वह डर कर घर आ गया। रात को ख़्वाब में भाई को देखा तो माजरा सुनाया और पूछा कि आप किस तरह हैं कहा कि हर तरह ख़ैरियत से हूं, तोबा हर चीज़ का बाइस बनती है। फिर दरयाफ़्त किया, मेरे भाई का क्या हाल है? कहा कि वह अबरार व मुत्तक़ीन के साथ हैं जो इंसान ज़िन्दगी में अमल करता है उसका बदला यहां पाता है तो तुम भी अपनी मुहताजी को माल्दारी से ग़नीमत समझो। दूसरे दिन उस भाई ने भी दुनिया से किनारा अख़्तियार किया और फ़िक्र व फ़ाक़ा की ज़िन्दगी शुरू कर दी और उसके बेटे ने कमाई शुरू कर दी। जब बाप की वफात का वक़्त क़रीब आया तो बेटे ने बाप से वसीयत दरयाफ़्त की तो उसने भी अपने दोनों भाईयों की तरह यह वसीयत की कि यह मेरी क़बर पर अश्आर लिख देना (जो उसकी क़बर पर लिखे गये) और तीन रोज़ तक आना और मेरी क़बर मेरे दोनों भाईयों के साथ बनाना। चुनांचे उसने ऐसा ही किया। जब तीसरे रोज़ लड़का अपने बाप की क़बर से जाने लगा तो उसने हौलनाक आवाज़ सुनी और डर कर घर आया। रात को ख़्वाब में वालिद

की ज़ियारत हुई तो बाप ने कहा ऐ बेटे! तुम जल्द ही हमारे पास आने वाले हो, मुआमला मुश्किल है तैयारी करो और बहादुरों की तरह न इतराओ कि वह अपनी उमरों पर नाज़ करते रहे और अमल में कोताही करते रहे फिर उम्र के ज़ाए होने पर अफ़सोस करेंगे। ऐ मेरे बेटे जल्दी कर जल्दी कर जल्दी कर। शैख़ ने कहा कि इस ख़्वाब की सुबह को मैं इस नौजवान से मिला तो उसने सब वाक़या मुझे सुनाया और कहा कि मेरी ज़िन्दगी के तीन माह बाक़ी हैं या तीन दिन, क्योंकि मेरे बाप ने मुझ को तीन मरतबा डराया था। जब तीसरा दिन हुआ तो उसने अपने तमाम अह्लो अयाल को बुलाया और उनको रुख़्सत किया फिर अपना चेहरा क़िब्ला की तरफ़ किया और कलिम-ए-शहादत पढ़ कर जान बहक़ हुआ।

मुर्दे को ज़िन्दों की बातों से तक्लीफ़ पहुंचने का बयान और मुर्दे को बुरा कहने की मुमानेअत

(१) दैलमी ने हज़रत आइशा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुर्दे को क़ब्र में इस चीज़ से तक्लीफ़ पहुंचती है जिस चीज़ से कि उसको घर में तक्लीफ़ पहुंचती थी।

कुरतबी कहते हैं कि मुम्किन है कि अल्लाह तआला ने कोई फरिश्ता मुक़र्रर कर दिया हो, जो मैयत को ज़िन्दों की बातों से आगाह करता हो। इससे मालूम हुआ कि मुर्दों के बारे में बदगोई करना मम्नूअ है और यह भी मुम्किन है कि इससे मुराद फरिश्ते का मुर्दे को इसकी बदअमलियों की बिना पर तक्लीफ़ देना है।

(२) निसई ने सफीया बिन्ते शैबा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक मुर्दे का ज़िक्र बुरे अल्फ़ाज़ में किया गया तो आपने फरमाया कि अपने मुर्दों का ज़िक्र अच्छे अल्फ़ाज़ में करो।

(३) अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने अबी अद्दुनिया ने इब्ने उमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अपने मुर्दों की अच्छाईयों का बयान करो और उनकी बुराईयों के बयान से बाज़ रहो।

(४) इब्ने अबी अद्दुनिया ने आइशा से रिवायत की, वह फरमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि अपने मुर्दों का ज़िक्र अच्छे अल्फ़ाज़ में करो, क्योंकि अगर तुमने उनको बुरे अल्फ़ाज़ से याद किया और वह अल्लाह तआला के

नज़्दीक अहले जन्नत से हैं तो तुम गुनहगार होगे। और अगर अहले जहन्नम से हैं तो वही सज़ा काफी है जो उनको मिल रही है।

मुर्दे को नौहा से तक्लीफ़ पहुंचने का बयान

(१) शैख़ैन ने हज़रत आइशा से रिवायत की कि किसी ने आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हु से अर्ज़ की कि इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (मरफूअन) कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुर्दे को घर वालों के नौहा करने से तक्लीफ और अज़ाब होता है। तो उन्होंने फरमाया कि अबू अब्दुर्रहमान भूल गये आपने यह फरमाया था कि मैयत के घर वाले रोने में मश्गूल होते हैं हालांकि मुर्दे को उसके जराइम की वजह से गुनाह (अज़ाब) हो रहा होता हैं

(२) इब्ने सअद ने यूसुफ़ बिन मालिक से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत इब्ने उमर राफ़े बिन ख़दीज क़े जनाज़े में शरीक हुए और कहा कि मुर्दे को उसके घर वालों के रोने की वजह से अज़ाब होता है। तो इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैयत को उसके घर वालों के रोने से अज़ाब नहीं होता है। जिस हदीस में अज़ाब होने का तज़्किरा है उसके रावी अबू बकर, उमर, अनस, इमरान बिन हसीन, समरा बिन जुन्दुब, अबू हुरैरह, अबू यअ़ला, मुग़ीरह इब्ने शैबा हैं इसलिए इस मस्अला में उलमा के दर्मियान इख़्तिलाफ़ हो गया। पहला क़ौल यह है कि यह हदीस अपने ज़ाहिर पर है और वाक़ई अज़ाब होता है। यह मज़्हब हज़रत उमर बिन अल-ख़त्ताब और उनके साहबज़ादे इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु का है। दूसरा क़ौल यह है कि बिल्कुल अज़ाब नहीं होता। तीसरा क़ौल यह है कि बा हाल के लिए है और मानी यह हैं कि :

हालांकि मैयत को उन लोगों के रोने के वक़्त अपने गुनाहों के सबब अज़ाब हो रहा है। और चौथा यह कि यह हदीस काफिर के साथ ख़ास है। यह दोनों क़ौल आइश के हैं पांचवां यह कि यह उस वक़्त है कि जब रस्म व रिवाज के तौर पर रोया जाए। यही मज़्हब इमाम बुख़ारी अलैहिर्रहमा का है। छठे यह कि गुनाह और अज़ाब उसको होगा जो उसकी वसीयत करके मरा होगा। जैसे किसी ने कहा था कि जब मैं मर जाऊं तो ऐ बिन्ते माबद! तू अपना गरीबान चाक करना और मुझ पर मेरी शान के लाइक़ रोना। सातवां क़ौल यह है कि यह उस वक़्त कि जब किसी को मालूम है कि मेरे यहां नौहा करने का रिवाज है और फिर नौहा न करने की वसीयत न करे। आठवां यह कि अज़ाब इन

सिफ़ात के बयान की वजह से है जो मुर्दे में बयान की जाती थीं। मसलन कहा जाता था कि ऐ औरतों को रांड और बच्चों को यतीम करने वाले और घरों को वीरान करने वाले। नवां यह कि उस से मुराद फरिश्ता का मुर्दे का तंबीह करना और झिड़कना है। उसके रिश्तेदारों के नुदबा और बैन की वजह से जैसा कि तिर्मिज़ी हाकिम और इब्ने माजा की हदीस मरफूअ से ज़ाहिर है कि जब कोई मरता है और उसके रोने वाले खड़े होकर कहते हैं कि ऐ पहाड़! ऐ हमारे मल्जा व मावा! तो अल्लाह तआला दो फरिश्ते उस पर मुक़र्रर कर देता है जो उसको झिड़कते और डांटते हैं और पूछते हैं कि क्या तू ऐसा ही था। दसवां क़ौल यह है कि मैयत को घर वालों के रोने से ईज़ा होती है क्योंकि तबरानी की हदीस (२३) में है कि सफीया बिन्ते मुख़्रिमा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने अपने मरे हुए बच्चे का ज़िक्र किया और रोने लगीं तो आपने फरमाया कि ऐ अल्लाह के बन्दो! अपने मुर्दों को तक्लीफ़ न दो। उसे इब्ने जरीर अलैहिर्रहमा और इब्ने तैमिया अलैहिर्रहमा वग़ैरहुम ने पसन्द किया।

(३) तबरानी ने इब्ने उमर से रिवायत की वह फरमाते हैं कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा पर बेहोशी तारी हुई तो नौहा करने वाली औरत खड़ी हुई। इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आए, उन्हें होश आ गया तो अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ पर बेहोशी तारी हुई तो औरतें चीख़ने लगीं कि वअइज़्ज़ाहु व अजबिल्लाहु तो एक फरिश्ता मेरे ऊपर गुर्ज़ लेकर खड़ा हुआ और कहा। क्या तू ऐसा ही था? मैंने कहा नहीं फरिश्ते ने कहा कि अगर तुम हां कहते तो मैं तुम को इस गुर्ज़ से मारता।

(४) तबरानी ने हसन से रिवायत की कि मआज़ बिन जबल पर बेहोशी तारी हुई उनकी बहन कहने लगीं कि वाजिबिल्लाहु जब होश आया तो फरमाने लगे कि ऐ बहन! तू आज तक मुझ को तक्लीफ दे रही है। तो उन्होंने फरमाया कि मैं तुमको क्यों कर तक्लीफ पहुंचा सकती हूं? तो आपने फरमाया कि जब तूने वाकिज़न वाकिज़न कहा था तो उस वक़्त एक फरिश्ता मुझे सख़्त तरीक़ा पर झिड़क रहा था।

(५) इब्ने सअद ने मिक़्दाम बिन माअ्दी करब से रिवायत की कि जब हज़रत उमर के ज़ख़्म आए तो हज़रत हफ़्सा उनके पास आईं और कहा कि हाय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी और उनके खुसर और मोमिनों के अमीर। तो आपने फरमायाः कि ऐ बहन! अगर तुम मेरा कुछ हक़ अपने ऊपर समझती हो तो अब कभी

मुझ पर बीन न करना। क्योंकि जब किसी मैयत के वस्फ़ बयान करके रोया जाता है, तो फरिश्ता उसको डांटता है और तक्लीफ देता है।

(६) अहमद ने अबुज़्ज़बी से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के साथ एक जनाज़ा में शिर्कत की तो आपने एक आदमी के चीख़ने की आवाज़ सुनी। तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक शख़्स को उसके पास भेज कर उसको चुप कराया। तो लोगों ने दरयाफ़्त किया कि आपने उसको क्यों चुप कराया? तो आपने फरमाया कि मैयत के ऊपर रोने से मैयत को तक्लीफ पहुंचती है हत्ता कि वह क़ब्र में दाख़िल हो जाए।

(७) सईद बिन मन्सूर ने इब्ने मसऊद से रिवायत की कि उन्होंने कुछ औरतों को जनाज़े में देखा तो फरमाया कि जाओ गुनाह समेट कर तमाम ज़िन्दों को आज़माइश में मुब्तला करती हो, मुर्दों को भी तक्लीफ़ पहुंचाती हो। यहिया बिन मुईन ने अपनी सनद से इतना टुक्ड़ा और बयान किया कि मैयत के लिए सबसे बुरे वह लोग हैं जो उस पर रोते तो ख़ूब हैं, मगर उसका क़र्ज़ अदा नहीं करते।

मैयत को दूसरे तरीक़ों से तक्लीफ़ पहुंचना

(१) इब्ने अबी शैबा ने और हाकिम ने उक़्बा बिन आमिर से रिवायत की कि वह फरमाते थे कि मैं अंगारों या तल्वारों की धार पर चलना पसन्द करूंगा। मगर किसी मुसलमान की क़बर रौंदना पसन्द न करूंगा। और क़ब्रिस्तान में बैठ कर क़ज़ाए हाजत करना मेरे नज़्दीक बाज़ार में क़ज़ाए हाजत करने के बराबर है। इब्ने माजा ने इसको हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरफ़ूअन रिवायत किया।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने किताबुल-कुबूर में सलीम बिन उतर से रिवायत की कि उनका गुज़र एक क़ब्रिस्तान पर हुआ। उनको पेशाब की शदीद हाजत थी लोगों ने कहा कि यहां क़ज़ाए हाजत कर लीजिए। आपने फरमाया कि सुब्हानल्लाह! बख़ुदा मैं मुर्दों से ऐसी ही शर्म करता हूँ कि जैसी ज़िन्दों से।

(३) तबरानी ने हाकिम और इब्ने मुन्दह ने अम्मारह बिन हज़्म से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ को एक क़ब्र पर बैठे हुए देखा तो फरमाया कि क़ब्र से नीचे उतरो। न तुम क़ब्र वाले को तक्लीफ़ पहुंचाओ न क़ब्र वाला तुम को तक्लीफ़ पहुंचाए।

(४) सईद बिन मन्सूर ने इब्ने मसऊद से रिवायत की कि उन से

सवाल किया गया कि क़ब्र के रौंदने के बारे में आप क्या फरमाते हैं? तो आपने फरमाया। मैं जिस तरह ज़िन्दा इंसान के तक्लीफ़ पहुंचाने को बुरा समझता हूं इसी तरह मुर्दा इंसान की तक्लीफ़ को भी बुरा समझता हूं।

(५) इब्ने अबी शैबा ने इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि मुर्दा को तक्लीफ़ देना ज़िन्दा को तक्लीफ़ देने की तरह है।

(६) इब्ने मुन्दा ने क़ासिम बिन मख़्मीरह से रिवायत की कि मेरे नज़्दीक यह बेहतर है कि मैं अपने नेज़े की नोक पर क़दम रखूं और वह मेरे सर से निकल जाए, लेकिन मैं क़ब्र को रौंदना हरगिज़ पसन्द न करूंगा। फिर मज़ीद फरमाया कि एक शख़्स ने एक क़ब्र को रौंदा तो क़ब्र से आवाज़ आई कि ऐ शख़्स! मुझ को ईज़ा न दे।

मोमिन की क़ब्र की हिफ़ाज़त करने वालों का बयान

(१) अबू नईम ने अबू सईद से रिवायत की कि वह फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप फरमाते थे कि जब अल्लाह तआला मोमिन की रूह क़ब्ज़ फरमा लेता है तो उसके फरिश्ते आसमान पर चढ़ जाते हैं और अर्ज़ करते हैं कि ऐ हमारे रब तूने हम को अपने मोमिन बन्दे के आमाल लिखने पर मुक़र्रर फरमाया था। अब तूने उसकी रूह को क़ब्ज़ कर लिया है, तो अब तू हम को इजाज़त दे कि हम आसमान पर इक़ामत करें। तो अल्लाह फरमाएगा कि हर आसमान मेरी तस्बीह व तक़्दीस करने वाले फरिश्तों से पुर है। तो वह अर्ज़ करेंगे कि फिर ज़मीन पर रहने की इजाज़त हो। अल्लाह तआला फरमाएगा कि मेरी ज़मीन पर मेरी तस्बीह करने वाली मख़्लूक़ के साथ वहां उसी बन्दे की क़ब्र पर जा कर खड़े हो जाओ और वहां मेरी तस्बीह, तहलील और बड़ाई बयान करो और क़्यामत तक ऐसा ही करते रहो और यह सब मेरे बन्दे के नाम-ए-आमाल में लिखो। बाज़ रिवायात में है कि काफ़िर के फरिश्तों से कहा जाता है कि उसकी क़ब्र पर वापस जाओ और उस पर लानत करो।

मैयत को क़ब्र में नफ़ा देने वाली चीज़ों का बयान

(१) इब्ने अबी अद्दुनिया ने और अबू नईम ने हुलिया में साबित बनानी से रिवायत की कि जब आदमी क़ब्र में जाता है तो उसके आमाले सालेहा उसको घेर लेते हैं। फिर जब फरिश्तए अज़ाब आता है तो उसके आमाले सालेहा में से एक अमल कहता है कि दूर हो अगर मैं ही तन्हा होता तो तू क़रीब न आ सकता था।

(२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने साबित बनानी से रिवायत की वह फरमाते हैं कि जब मोमिन को क़बर में रखा जाता है तो उसे जन्नत का एक बिछौना दिया जाता है और कहा जाता है कि तेरी आंखें ठण्डी हों, आराम से सो और खुदा तुझ से राज़ी हो और हद्दे निगाह तक उसकी क़ब्र में वुस्अत कर दी जाती है और एक खिड़की जन्नत की जानिब खोल दी जाती है, वह जन्नत की नेमतों और खुशबुओं से लुत्फ़ अन्दोज़ होता है। उसके पास उसके नेक आमाल आते हैं और कहते हैं कि हम ने तुझको प्यासा रखा, बेदार रखा तो मुसीबत में डाला, तो आज हम तेरे मूनिस व ग़म्गुसार हैं, हत्ता कि तू जन्नत में दाख़िल हो।

(३) बज़्ज़ार, तबरानी और हाकिम ने अनस से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दोस्त तीन क़िस्म के होते हैं एक दोस्त वह है जो कहता है कि जो तू ख़र्च करे वह तेरा और रोके वह ग़ैर का। यह माल है। दूसरा वह है जो कहता है कि मैं हर वक़्त तेरे साथ हूं जब तू बादशह के दरवाज़े पर आएगा तो मैं तेरा साथ छोडूंगा। यह उसकी इज़्ज़त और अह्लो अयाल हैं। तीसरा वह जो कहता है कि मैं हमा वक़्त तेरे साथ जहां भी तू हो और यह उसका अमल है। इंसान कहता है कि ऐ मेरे दोस्त मैं तुझ ही को सब से हक़ीर समझता था।

(४) शैख़ैन ने हज़रत अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब इंसान का इंतिक़ाल हो जाता है तो तीन चीज़ें उसके हमराह जाती हैं, दो वापस आ जाती हैं और एक रह जाती है। घर वाले, माल, अमल यह तीन चीज़ें हैं। पहली दो वापस आ जाती हैं और अमल रह जाता है।

(५) बज़्ज़ार, तबरानी और हाकिम ने नौमान बिन बशीर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इंसान और मौत की मिसाल उस शख़्स की सी है जिसके तीन दोस्त थे एक ने कहा कि यह मेरा माल है जो चाहो लो और जो चाहो छोड़ दो। दूसरे ने कहा कि जब तक तू ज़िन्दा है मैं तेरे साथ हूं। जब तू मर जाएगा तो मैं तेरा साथ छोड़ दूंगा। तीसरे ने कहा कि मैं हमा वक़्त तेरे साथ रहूंगा। पहला उसका माल है, दूसरा उसके अहलो अयाल हैं, तीसरा उसका अमल है।

(६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने कअब से रिवायत की कि जब मोमिन को क़ब्र में रखा जाता है तो मोमिन के आमाले सालेहा उसको घेर लेते हैं। नमाज़, रोज़ा, हज, जिहाद, सदक़ा अब जब अज़ाब के फरिश्ते

पैरों की तरफ़ से आते हैं तो नमाज़ कहती है कि पीछे हट, क्योंकि उन पैरों से खड़ा हो कर यह खुदा तआला की इबादत करता था। तो अज़ाब सर की जानिब से आता है तो रोज़ा कहता है कि दूर रहो कि यह खुदा के लिए प्यासा रहा। तो अज़ाब जिस्म की तरफ़ से आता है तो हज और जिहाद आड़े आते हैं तो अज़ाब हाथों की जानिब से बढ़ता है तो सदक़ा हाइल होता है और कहता है कि इन हाथों को क्यों कर अज़ाब हो सकता है जो अल्लाह की राह में रिज़्क़ बांटते थे। फिर उस इंसान को मुबारकबाद दी जाती है और कहा जाता है कि तू ज़िन्दगी और मौत दोनों ही में कामयाब रहा। फिर फरिश्ते उसके लिए जन्नती बिछौना बिछाते हैं और उसकी क़ब्र को हद्दे निगाह तक वसीअ कर दिया जाता है और एक क़िन्दील क़्यामत तक के लिए वहां रौशन कर दिया जाता है।

(६) इब्ने अबी अद्दुनिया ने यज़ीद बिन अबी मन्सूर से रिवायत की कि एक शख़्स कुरआन पढ़ता था जब उसकी मौत का वक़्त आया तो रहमत के फरिश्ते आए कि उसकी रूह क़ब्ज़ करें तो कुरआन निकल आया और कहने लगा कि ऐ मौला! इसका सीना मेरी क़्यामगाह था। तो अल्लाह तआला फरमाएगा कि उसको छोड़ दो।

(७) बुख़ारी ने अदब में और मुस्लिम ने रिवायत की कि जब इंसान मर जाता है तो उसके सब अमल मुन्क़ता हो जाते हैं, सिवाए तीन आमाल के : सदक़-ए-जारिया, इल्मे नाफ़े और नेक औलाद, जो वालिदैन के लिए दुआ करती रहे।

(८) मुस्लिम ने जरीर बिन अब्दुल्लाह से मरफ़ूअन रिवायत की कि चार शख़्सों का अमल जारी रहता है। (१) मुजाहिद फी सबीलिल्लाह (२) आलिम (३) सदक़-ए-जारिया (४) वलदे सालेह जो उसके लिए दुआ करे।

(९) मुस्लिम ने जरीर बिन अब्दुल्लाह से मरफ़ूअन रिवायत की कि जिसने इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा जारी किया तो उसका बदला उसको भी मिलेगा और जितने लोग उस पर अमल करेंगे और उनके अजवर में कुछ कमी न की जाएगी। और जिसने कोई बुरा तरीक़ा जारी किया तो उसको उसकी सज़ा मिलेगी और क़्यामत तक जितने लोग उस पर अमल करेंगे उनकी सज़ा भी मिलेगी और उनकी सज़ा में कमी न होगी।

(१०) इब्ने सअद ने रजा बिन हयात से रिवायत की कि उन्होंने सुलेमान बिन अब्दुल-मलिक से कहा कि अगर आप क़बर में महफ़ूज़ रहना चाहते हैं तो किसी मर्दे सालेह को ख़लीफ़ा बनाएं।

(११) इब्ने असाकिर ने अबू सईद खुदरी से मरफ़ूअन रिवायत की कि जिसने अल्लाह की किताब से एक आयत पढ़ी या इल्मे दीन का कोई बाब पढ़ा तो अल्लाह तआला उसका अज्र क़यामत तक बढ़ाएगा।

(१२) इब्ने माजा और इब्ने खुज़ैमा ने अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि चन्द चीज़ें हैं जिनका सवाब क़ब्र में इंसान को पहुंचता है। इल्म, वलदे सालेह, कोई किताब, कोई मस्जिद, मुसाफिर खाना, नहर, कुवां, खुजूर (वग़ैरह) का दरख़्त, सदक़-ए-जारिया, इन तमाम अशिया का सवाब मरने के बाद भी मिलेगा।

(१३) तबरानी ने सौबान से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने तुमको क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया था। अब तुम ज़ियारत करो और मुर्दों के लिए दुआए रहम और तलबे मग़्फ़िरत करो।

(१४) अबू नईम ने ताऊस से रिवायत की, वह कहते हैं कि मैंने अपने बाप से दरयाफ़्त किया कि मैयत के पास सबसे बेहतर कलिमा क्या है? तो आपने फरमाया कि इस्तिग़फ़ार।

(१५) तबरानी ने औसत में और बैहक़ी ने अपनी सुनन में अबू हुरैरा से रिवायत की कि अल्लाह तआला नेक बन्दे का दरजा जन्नत में बुलन्द फरमाता है तो बन्दा पूछता है कि ऐ अल्लाह यह किस सबब से है? तो अल्लाह तआला फरमाता है कि यह तेरी औलाद के इस्तिग़फ़ार के बाइस है। इसी को बुख़ारी ने अल-अदब में अबू हुरैरा से मौक़ूफ़न रिवायत किया।

(१६) बैहक़ी ने शुअ़बुल-ईमान और दैलमी ने इब्ने अब्बारिस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुर्दा का हाल क़ब्र में डूबते इंसान के हाल की मानिन्द है कि वह शिद्दत से इंतिज़ार करता है कि कोई रिश्तेदार या दोस्त उसकी मदद को पहुंचे और जब कोई उसकी मदद को पहुंचता है तो उसके नज़्दीक वह दुनिया व माफीहा से बेहतर होता है। अल्लाह तआला क़ब्र वालों को उनके ज़िन्दा मुतअल्लेक़ीन की तरफ़ से हदिया किया हुआ सवाब पहाड़ों की मानिन्द अता फरमाता है ज़िन्दों का हदिया मुर्दों को इस्तिग़फ़ार है।

(१७) इब्ने अबी अद्दुनिया ने सैना से रिवायत की, कि वह फरमाते हैं कि अस्लाफ़ में यह बात मशहूर थी कि मुर्दों को दुआओं की हाजत ज़िन्दों के खाने पीने से भी कहीं ज़ाइद है और उस पर इज्मा कि मैयत

को दुआ का सवाब पहुंचता है और दुआ उसके हक़ में नाफ़े होती है और उसकी दलील कुरआन से यह है कि और वह लोग जो उनके बाद आए कहते हैं कि ऐ हमारे रब! तू हम को और हमारे उन भाईयों को बख़्श दे जो हम से क़ब्ल बहालते इस्लाम दुनिया से रुख़्सत हो चुके।

(१८) इब्ने अबी अद्दुनिया ने एक बुजुर्ग से रिवायत की। उन्होंने कहा कि एक रात मैंने अपने भाई को क़बर में देखा तो पूछा कि ऐ भाई! क्या हम लोगों की दुआ तुम को पहुंचती है? तो उन्होंने जवाब दिया कि हां वह नूरानी लिबास की शक्ल में आती है जो हम पहन लेते हैं।

(१९) इब्ने अबी अद्दुनिया ने अबू क़लाबा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैं शाम से बसरा आया तो एक ख़न्दक़ में उतरा, वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ अदा की। फिर अपना सर एक क़बर पर रख कर सो गया। ख़्वाब में देखता हूं कि साहिबे क़बर मुझ से कह रहा है कि तुमने मुझको तक्लीफ़ पहुंचाई हम जानते हैं और तुम को पता नहीं, हम अमल पर क़ादिर नहीं। तुमने दो रकअत जो नमाज़ पढ़ी वह दुनिया व माफीहा से बेहतर है। फिर उसने कहा कि अह्ले दुनिया को अल्लाह हमारी तरफ़ से जज़ाए ख़ैर दे जब वह हम को ईसाले सवाब करते हैं तो वह सवाबे नूर के पहाड़ की मिस्ल हम पर दाख़िल होता है।

(२०) इब्ने अबी अद्दुनिया ने बाज़ मोतक़ेदीन से रिवायत की कि एक क़ब्रिस्तान से गुज़रा, तो वहां दुआ मांगी, तो एक ग़ैबी आवाज़ आई कि उनके दुआए रहम करो क्योंकि उनमें ग़म्गीन और मख़्ज़ून सब ही हैं। इब्ने रजब ने रिवायत की कि जाफर खुल्दी ने अपनी सनद से रिवायत की कि मेरे बाप ने किसी एक सालेह को ख़्वाब में देखा वह शिकायत फरमा रहे हैं कि तुमने अपने हदिए हम को भेजना क्यों छोड़ दिए? उन्होंने सवाल किया, क्या जनाब मुर्दे भी ज़िन्दों के हदियों को पहचानते हैं। तो उन्होंने फरमाया कि अगर ज़िन्दे न होते तो मुर्दे तबाह हो जाते।

(२१) इब्ने नज्जार ने अपनी तारीख़ में मालिक बिन दीनार से रिवायत की कि मैं जुमा की रात एक क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुआ तो देखा कि एक नूर चमक रहा है। तो मैंने कहा कि ला इलाहा इल्लल्लाह, ऐसा मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने क़ब्रिस्तान वालों की मग़्फ़िरत कर दी है। तो एक ग़ैबी आवाज़ आती है कि ऐ मालिक बिन दीनार! यह मोमिनों का तोहफ़ा है अपने मोमिन भाईयों के लिए। मैंने ग़ैबी आवाज़ को खुदा का वास्ता देकर पूछा कि यह सवाब किस ने भेजा है? तो

आवाज़ आई कि एक मोमिन बन्दा इस क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुआ और अच्छी तरह वुज़ू किया और फिर दो रकअत नमाज़ अदा की और उसका सवाब अहले मक़ाबिर के लिए बख़्श दिया। तो अल्लाह तआला ने उस सवाब की वजह से यह रौशनी और नूर हम को दे दिया। मालिक कहते हैं कि फिर मैं भी हर शब जुमा को सवाब हदिया करने लगा। तो ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई। आप फरमा रहे थे कि ऐ मालिक! जितने नूर तूने हदिया किए उनके बदले अल्लाह तआला ने तेरी मग़्फ़िरत कर दी और तेरे लिए जन्नत में क़स्रे मनीफ़ बना दिया।

(२२) इब्ने अबी अद्दुनिया ने यसार बिन ग़ालिब से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया कि मैंने एक रात ख़्वाब में राबेआ बसरीया को देखा। मैं उनके लिए बहुत दुआ करता था। उन्होंने मुझ से कहा कि ऐ यसार! तुम्हारे भेजे हुए हिदाया मुझ को नूरानी तब्बाक़ों में रेशमी रूमालों से ढक कर पेश किए जाते हैं।

(२३) तबरानी ने औसत में अपनी सनद से अनस से रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि : मेरी उम्मत क़बर में गुनाह समेत दाख़िल होगी और जब निकलेगी तो बेगुनाह होगी क्योंकि वह मोमिनीन की दुआओं से बख़्श दी जाती है।

(२४) इब्ने अबी शैबा ने हसन से रिवायत की। अल्लाह तआला ने दो चीज़ें इंसान को दीं, जो उसकी न थीं : वसीयत। हालांकि माल दूसरे का हो जाता। और मुसलमान के लिए दुआ, हालांकि उसमें मुसलमान का कुछ ख़र्च नहीं होता।

(२५) दारमी ने अपनी मुसनद में इब्ने मसऊद से रिवायत की कि चार चीज़ें इंसान को मौत के बाद मिलती हैं : तिहाई माल (यानी जो वसीयत बिल-मारूफ़ में ख़र्च किया) नेक बच्चा जो दुआ करता रहे, नेक रस्म जिस पर लोग बाद में अमल करते रहें।

(२६) शैख़ैन ने हज़रत आइशा से रिवायत की कि एक शख़्स ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मेरी मां अचानक मर गई। मेरा ख़्याल है कि अगर बोलती तो सदक़ा का हुक्म देती। तो क्या अगर मैं उसकी तरफ़ से सदक़ा कर दूं, तो उसको अज्र मिलेगा? तो आपने फरमाया कि हां।

(२७) बुख़ारी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की कि सअद बिन उबादा रज़ि अल्लाहु अन्हु की वालिदा उनकी ग़ैर मौजूदगी में वफ़ात पा गईं। जब वह आए तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की बारगाह में हाज़िर

हुए और अर्ज़ की कि अगर मैं उनकी तरफ़ से सदक़ा करूं तो क्या काफ़ी है? आपने फरमाया कि हां। तो उन्होंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गवाह बनाते हुए कहा कि मेरा यह बाग़ मेरी मां की तरफ़ से सदक़ा है।

(२८) अहमद और असहाबे सुनने अरबा ने रिवायत की कि हज़रत सअद ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं अपनी मां की तरफ़ से सदक़ा करना चाहता हूं, कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल रहेगा? आपने फरमाया कि पानी। चुनांचे उन्होंने एक कुवां खुदवाया और कहा कि यह उम्मे सअद का है।

(२६) तबरानी ने उक़्बा बिन आमिर से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सदक़ा करने वाले क़बर की गर्मियों से महफ़ूज़ रहेंगे।

(३०) तबरानी ने औसत में बसनद सही अनस रज़ि० से रिवायत की कि हज़रत सअद की मुलाक़ात सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुई तो उन्होंने अर्ज़ की कि मेरी मां का इंतिक़ाल हो गया और वह कुछ वसीयत न कर सकीं, तो क्या उनकी जानिब से मैं सदक़ा कर दूं? आपने फरमाया कि हां और पानी का (वक़्फ़) करो।

(३१) तबरानी ने सअद बिन उबादा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मेरी वालिदा बेग़ैर वसीयत के इंतिक़ाल कर गई हैं, तो क्या मेरा सदक़ा करना उनको नफ़ा देगा? तो आपने फरमाया, हां अगरचे बकरी के जले हुए पाये भी तुम सदक़ा करो।

(३२) तबरानी ने इब्ने उमर से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब कोई शख़्स सदक़ा करे तो उसका सवाब अपने वालिदैन को पहुंचाए क्योंकि इस तरह उसके सवाब में से कुछ कम न होगा।

(३३) तबरानी ने औसत में अनस से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना कि जब कोई शख़्स मैयत को ईसाले सवाब करता है तो जिब्रील अलैहिस्सलाम उसे नूरे तबाक़ में रख कर क़बर के किनारे पर खड़े होते हैं और कहते हैं कि ऐ क़ब्र वाले! यह हदिया तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर। यह सुन कर वह खुश होता है और उसके पड़ोसी अपनी महरूमी पर ग़मगीन होते हैं।

(३४) इब्ने अबी शैबा ने सईद इब्ने सईद से रिवायत की मैयत की जानिब से अगर बकरी के पाया का भी सदक़ा किया तो उसका सवाब भी उसे मिलेगा।

(३५) बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान और अस्बहानी ने तरग़ीब में इब्ने उमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने अपने वालिदैन की वफात के बाद उनकी तरफ़ से हज किया तो अल्लाह उसे जहन्नम की आग से आज़ाद कर देगा और जिनकी तरफ से हज किया गया है उनको पूरा अज्र मिलेगा। नीज़ आपने फरमाया कि सबसे बेहतर सिला रहमी यह है कि अपने मुर्दा रिश्तेदार की जानिब से हज किया जाए।

(३६) अबू अब्दुल्लाह सक़्फी ने अपनी किताब सक़्फ़ियात में ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने अपने वालिदैन की जानिब से हज किया तोउसको उसकी जज़ा मिलेगी और आसमानों में उसको खुशख़बरी दी जाएगी। नीज़ अल्लाह तआला के नज़्दीक वह फरमाने बरदार लिखा जाएगा।

(३७) बज़्ज़ार व तबरानी ने बसनद हसन अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि एक शख़्स हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ की कि मेरा बाप मर गया और हज फर्ज अदा नहीं किया तो आप ने फरमाया कि बताओ तो सही कि अगर उस पर कुछ क़र्ज़ होता तो तुम क्या अदा न करते? उसने कहा कि ज़रूर अदा करता। तो आपने फरमाया कि यह उस पर क़र्ज़ है अदा करो।

(३८) तबरानी ने उक़्बा बिन आमिर से रिवायत की कि एक औरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ की कि मेरी मां मर चुकी है क्या मैं उसकी तरफ़ से हज करूं? तो आपने फरमाया कि हां।

(३९) तबरानी ने औसत में अबू हुरैरा से रिवायत की उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने मैयत की तरफ से हज किया तो हज करने वाले और जिस की तरफ से हज किया है, दोनों ही को सवाब मिलेगा।

(४०) इब्ने अबी शैबा ने अता और ज़ैद बिन अस्लम से रिवायत की कि एक शख़्स हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और

अर्ज़ की कि मेरी मां मर चुकी है। क्या मैं उसकी तरफ़ से गुलाम आज़ाद करूं। तो आपने फरमाया, हां।

(४१) इब्ने अबी शैबा ने अता से रिवायत की कि मैयत के मरने के बाद गुलाम आज़ाद करना और सदक़ा मैयत के लिए मुफ़ीद है।

(४२) इब्ने अबी शैबा ने इब्ने जाफर से रिवायत की कि हसन व हुसैन हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की शहादत के बाद उनकी तरफ से आज़ाद करते थे।

(४३) इब्ने सअद ने क़ासिम बिन मुहम्मद से रिवायत की कि आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने अपने भाई अब्दुर्रहमान की तरफ से उनके ईसाले सवाब के लिए एक गुलाम आज़ाद किया।

(४४) अबू शैख़ ने किताबुल-वसाया में हज़रत अमरु बिन-आस से रिवायत की कि उन्होंने हुज़ूर अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आस ने वसीयत की थी कि उनकी जानिब से सौ गुलाम आज़ाद किए जाएं तो हिशाम ने पचास आज़ाद कर दिए। तो आपने फरमाया कि नहीं, हज, सदक़ा और आज़ादी मुस्लिम ही की तरफ से की जाएगी।

(४५) इब्ने अबी शैबा ने हज्जाज बिन दीनार से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि वालिदैन की इताअत के बाद नेकी यह है कि तुम अपनी नमाज़ के साथ उसके लिए नमाज़ पढ़ो और अपने रोज़े के साथ उनके लिए रोज़ा रखो, और अपने सदक़ा के साथ उनके लिए सदक़ा करो।

(४६) मुस्लिम ने बुरीदह से रिवायत की कि एक औरत ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मेरी मां पर दो माह के रोज़े थे, क्या मैं उनकी जानिब से रोज़े रख सकती हूं आपने फरमाया कि हां। उसने अर्ज़ की कि मेरी मां ने हज भी कभी नहीं किया, तो क्या मैं उनकी तरफ से हज कर सकती हूं? आपने फरमाया कि हां।

(४७) शैख़ैन ने हज़रत आइशा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अगर कोई शख़्स मर जाए और उस पर रोज़े हों तो उसका वली रख सकता है।

क़ब्र पर मैयत के लिए कुरआन पढ़ना

(१) मैयत के लिए कुरआन पढ़ने से आया मैयत को सवाब मिलता है या नहीं? इस में इख़्तिलाफ़ है। जम्हूर सलफ़ और अइम्मा मुज्तहेदीन सवाब पहुंचने के क़ाइल हैं। हमारे इमाम इमाम शाफ़ई ने इख़्तिलाफ़ किया। उनकी दलील यह आयत है कि व अन लैसा लिल-इंसाने इल्ला मा सआ। इंसान को उसी की कोशिश का बदला मिलेगा। लेकिन इस आयत का जवाब चन्द वजूह से दिया गया है।

अव्वल : तो यह कि यह आयत मन्सूख़ है इस आयत से, वल्लज़ीना आमनू वत्तबअ़तुम जुर्रियतहुम और वह लोग जो ईमान लाए और उनके बाद उनकी जुर्रियत आई। इस आयत का मफ़ाद यह है कि बेटों को बाप की नेकी से जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।

दोम : यह कि यह आयत क़ौम इब्राहीम व मूसा के साथ ख़ास है, लेकिन यह उम्मते मरहूमा तो उसको वह भी मिलेगा जो खुद करेगी और वह भी जो उसके लिए किया जाएगा। यह क़ौल इकरमा अलैहिर्रहमा का है।

तीसरे : यह कि इंसान से मुराद यहां काफिर है और मोमिन उस से मुस्तस्ना हैं, यह क़ौल रबी बिन अनस का है।

चौथे : यह क़ानून अद्ल है और दूसरे के किए से फाइदा का पहुंचना उसका फज़्ल है यह हुसैन बिन फज़्ल का क़ौल है।

पांचवें : लाम बमाना अला है कि इंसान को ज़रर उसके किए हुए गुनाह का होगा, न कि दूसरे का। जो हज़रात सवाब के पहुंचने के क़ाइल हैं वह यही क़्यास करते हैं कि जब हज, सदक़ा, वक़्फ़, दुआ, क़िरअत का सवाब पहुंच सकता है तो दूसरी इबादात को भी पहुंच सकता है। अगरचे यह अहादीस ज़ईफ़ हैं, लेकिन उनकी मज्मूई हैसियत से ईसाले सवाब की असल साबित हो सकती है नीज़ क़दीम से मुसलमान अपने मुर्दों के लिए जमा हो कर कुरआन पढ़ते रहे और किसी ने इंकार न किया। इससे इज्माए मुस्लिमीन भी साबित होता है यह सब कुछ हाफिज़ शम्सुद्दीन बिन अब्दुल-वाहिद अल-मुक़द्दसी अल-हंबली ने अपने एक रिसाला में ज़िक्र किया।

कुरतबी ने कहा कि शैख़ अज़्ज़ुद्दीन बिन सलाम से ईसाले सवाब के क़ाइल न थे। जब उनका इंतिक़ाल हो गया तो बाज़ लोगों ने उनको ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि आप दुनिया में ईसाले सवाब

के क़ाइल न थे, अब क्या हाल है? तो कहा कि हां पहले तो यही कहता था मगर अब मालूम हुआ कि खुदा के फ़ज़ल व करम से सवाब पहुंचता है और अब मैंने रुजूअ़ कर लिया है।

क़बर पर कुरआन पढ़ने के बारे में हमारे अस्हाब ने जवाज़ का क़ौल किया है। ज़ाफ़रानी कहते हैं कि मैंने इमाम शाफ़ई से दरयाफ़्त किया कि क़ब्र के पास कुरआन पढ़ना कैसा है? तो आपने फरमाया कि हरज नहीं।

नूदी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया शरह मुहज़्ज़ब में कि ज़ियारत करने वाले के लिए मुस्तहब है कि वह ज़ियारत के बाद कुरआन पढ़े और दुआ करे इस पर इमाम शाफई की तस्रीह भी है और उनके अस्हाब भी उस पर मुत्तफ़िक़ हैं। और दूसरे मक़ाम पर फरमाते हैं कि अगर कुरआन ख़त्म करें तो अफ़ज़ल है इमाम अहमद बिन हंबल पहले उसका इंकार करते थे क्योंकि उनको इस सिलसिला में कोई हदीस न मिली थी लेकिन उनको वह हदीस मिली जो हम दफन के वक़्त क्या कहा जाए? के बाब में ज़िक्र कर आए जिसके इब्ने उमरु और अला बिन हलाज रावी हैं और हदीस मरफ़ूअ है तो रुजूअ कर लिया।

(२) ख़लाल ने जामे में शअ़बी से रिवायत की जब अंसार का कोई मर जाता तो वह उसकी क़ब्र पर आते जाते और कुरआन पढ़ते।

(३) अबू मुहम्मद समरक़न्दी ने सूरः इख़्लास के फज़ाइल में ज़िक्र किया (मरफ़ूअन) कि जिसने क़ब्रिस्तान से गुज़रते हुए ग्यारह मरतबा सूरः इख़्लास पढ़ी और उसका सवाब मुर्दों को बख़्श दिया तो मुर्दों की तादाद के मुताबिक़ उसे अज्र मिलेगा।

(४) अबुल-क़ासिम सअद बिन अली ज़ंजानी ने अपने फ़वाइद में अबू हुरैरह से रिवायत की, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। जो क़ब्रिस्तान पर गुज़रा और उसने सूरः फातिहा, इख़्लास और अल्हाकुमुत्तकासुर पढ़ी। फिर यह दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मैंने जो कुरआन पढ़ा है उसका सवाब मोमिन मर्द और औरत दोनों को देना। तो वह क़ब्र वाले क़्यामत के दिन उसके सिफ़ारशी होंगे।

(५) क़ाज़ी अबू बकर बिन अब्दुल-बाक़ी अंसारी ने सलमा बिन उबैद से रिवायत की। वह कहते हैं कि हम्माद मक्की ने बताया कि एक रात मैं मक्का के क़ब्रिस्तान की तरफ़ चला गया और एक क़ब्र पर सर रख कर सो गया, तो देखा कि क़बरों वाले हल्क़ा दर हल्क़ा खड़े हैं। मैंने

उन से दरयाफ़्त किया कि क्या क़्यामत क़ायम हो गई? उन्होंने कहा कि नहीं, हां हमारे एक भाई ने सूरः इख़्लास पढ़ कर हम को सवाब पहुंचाया तो वह सवाब हम एक साल से तक़्सीम कर रहे हैं।

(६) अब्दुल-अज़ीज़ जो ख़लाल के साथी, उन्होंने रिवायत की कि अनस ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस ने क़ब्रिस्तान में यासीन पढ़ी तो अल्लाह तआला उसकी बरकात से मुर्दों के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ फरमा देगा और पढ़ने वाले को मुर्दों की तादाद के बराबर सवाब मिलेगा। कुरतबी कहते हैं कि यह हदीस कि अपने मुर्दों के पास यासीन पढ़ो दो एहतमाल रखती है। एक तो यह कि मरते वक़्त और दूसरा यह कि क़ब्र पर। पहला क़ौल जम्हूर का है और दूसरा अब्दुल-वाहिद मुक़द्दसी का है और हमारे उल्माए मुतअख़्ख़ेरीन में से मुहिब्बे तबरी ने इसको आम रखा। ग़ज़ाली ने अहया में। और अब्दुल-हक़ ने अहमद बिन हंबल अलैहिर्रहमा से रिवायत करते हुए आक़िबत में बयान किया कि जब तुम क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो तो सूरः फातिहा, मुअव्वज़तैन और इख़्लास पढ़ो और उनका सवाब अहले क़ब्र को पहुंचा दो क्योंकि यह पहुंचता है।

कुरतबी कहते हैं कि एक क़ौल यह है कि पढ़ने का सवाब पढ़ने वाले को है और मैयत को सुनने का सवाब है इसी लिए तो नुस्से कुरआनी के बमूजिब कुरआन के सुनने वाले पर रहम होता है। कुरतबी फरमाते हैं कि खुदा के करम से कुछ बईद नहीं कि वह पढ़ने और सुनने दोनों का सवाब मुर्दे को पहुंचा दे हन्फ़ियों के फतावा क़ाज़ी ख़ान में है कि जो मैयत को मानूस करना चाहे तो वह क़बर के पास कुरआन पढ़े, वरना जहां चाहे पढ़े क्योंकि खुदा हर जगह की क़िरअत सुनने वाला है।

फ़सल

कुरतबी कहते हैं कि हमारे बाज़ उल्मा ने मैयत को सवाब पहुंचने पर हदीस ऐब से इस्तिदलाल किया है और वह यह कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुलाहिज़ा फरमाया कि दो क़बर वालों को अज़ाब हो रहा है तो आपने एक तर शाख़ मंगाई और उसके दो टुकड़े किए और हर एक क़ब्र पर एक टुकड़ा लगा दिया, और फरमाया कि जब तक यह तर रहेंगी क़ब्र वालों से अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होगी। ख़त्ताबी कहते हैं कि अली ने उसके मानी यह बताए कि चीज़ें जब तक अपनी अस्लियत

पर रहती हैं, सब्ज़ रहती हैं या तर रहती हैं, खुदा की तस्बीह करती हैं, ख़त्ताबी के अलावा दीगर उलमा कहते हैं कि जब अल्लाह तआला दरख़्तों वग़ैरह की तस्बीह से अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ फरमाता है तो मोमिन क़बर के पास अगर कुरआन पढ़ेगा तो क्या हाल होगा। फिर यह क़ब्रों के पास दरख़्त लगाने में असल है।

(१) इब्ने असाकिर ने हम्माद बिन सलमा की सनद से रिवायत की कि अबू बरज़ह अस्लमी रज़ि अल्लाहु अन्हु हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते थे कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक क़ब्र पर गुज़रे क़ब्र वाले पर अज़ाब हो रहा था तो आपने एक टहनी उस पर लगा दी और फरमाया कि शायद उस पर से अज़ाब में कमी हो।

अबू बरज़ह की वसीयत थी कि जब मैं मर जाऊं तो क़ब्र में मेरे साथ दो टहनियां रख देना। रावी कहते हैं कि वह करमां और क़ौमस के दर्मियान एक जंगल में वफात पा गये तो साथियों ने ज़िक्र किया वसीयत के लिए। मगर वहां शख़ें न मिलीं। अभी वह हैरान ही थे कि क्या करें। अचानक सजिस्तान की जानिब से कुछ सवार आते दिखाई दिए उनके पास कुछ शख़ें थीं, उन्होंने दो शख़ें उन से ले लीं, और उन्हें क़बर में साथ ही रख दिया।

(२) इब्ने सअद ने मूरक़ से रिवायत की, वह कहते हैं कि बरीदह ने वसीयत की कि उनकी क़ब्र में दो शाख़ें रख दी जाएं। तारीख़ इब्ने नज्जार में कसीर बिन सालिम हीती के तज़्किरे में है कि उन्होंने बड़ी शिद्दत से यह वसीयत की कि उनकी क़बर जब मिट जाए तो उसकी दोबारा तामीर न की जाए क्योंकि अल्लाह तआला उनकी तरफ नज़रे रहमत फरमाता है जिनकी क़ब्रें मिट जाती हैं तो मैं तमन्ना रखता हूं कि मेरा भी शुमार उन्हीं लोगों में हो जाए। इब्ने नज्जार कहते हैं कि आसार में इस क़िस्म की रिवायात मिलती हैं। फिर उन्होंने अपनी सनद से वहब बिन मंबा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि अर्मिया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ ऐसी क़ब्रों पर गुज़रे जिनको अज़ाब हो रहा था फिर एक साल बाद गुज़रे तो अज़ाब ख़त्म हो चुका था। तो उन्होंने बारगाहे ईज़्दी में अर्ज़ की कि ऐ मौला! क्या वजह है कि पहले उनको अज़ाब हो रहा था अब ख़त्म हो गया? तो आसमान से निदा आई कि ऐ अर्मिया उनके कफन फट गये, बाल बिखर गये और

क़ब्रें मिट गईं, तो मैंने उन पर रहम किया और ऐसे लोगों पर मैं रहम किया ही करता हूं।

मौत का बेहतरीन वक़्त

(१) अबू नईम ने इब्ने मसऊद से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसका इंतिक़ाल ख़त्म रमज़ान पर हुआ, जन्नत में दाख़िल होगा। जिसका इंतिक़ाल ख़त्मे अरफ़ा पर हुआ, जन्नत में दाख़िल होगा। जिस का इंतिक़ाल सदक़ा के इख़्तिताम पर हुआ, वह भी जन्नत में दाख़िल होगा।

(२) अहमद ने हुज़ैफा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने कलिमा महज़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए पढ़ा वह जन्नत में दाख़िल होगा और उसका ख़ात्मा भी कलिमा पर होगा और जिस ने किसी दिन अल्लाह तआला की रज़ा जोई के लिए रोज़ा रखा तो उसका ख़ात्मा भी उस पर होगा और दाख़िले जन्नत होगा। और जिस ने अल्लाह की रज़ा के लिए सदक़ा किया उसका ख़ात्मा भी उस पर होगा और वह दाख़िले जन्नत होगा।

(३) अबू नईम ने ख़सीमा से रिवायत की सहाबा इस बात को बहुत पसन्द करते थे कि किसी शख़्स का इंतिक़ाल किसी अच्छे काम के बाद हो, मसलन हज, उमरा, ग़ज़वह (जिहाद) रमज़ान के रोज़े वग़ैरह।

(४) दैलमी ने हज़रत आइशा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो बहालते रोज़ा मरा, क़यामत तक अल्लाह तआला उसके हिसाब में रोज़े लिख देगा।

(५) अबू नईम ने जाबिर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो जुमा के दिन या जुमा की रात को वफात पाएगा वह अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ रहेगा, और क़यामत के दिन उस पर शोहदा की मुहर होगी।

(६) हमीद ने अपनी तरग़ीब में अपनी सनद से अबू जाफर से रिवायत की कि जुमा की रात रौशन है और उसका दिन झिलमिलाता है। जो शख़्स जुमा की रात को मरेगा वह अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ रहेगा और जो जुमा के दिन मरेगा वह अज़ाबे जहन्नम से आज़ाद होगा।

उन आमाल का बयान जो मरने के बाद जल्द जन्नत में पहुंचने का ज़रिया होते हैं

(१) निसई और इब्ने हिब्बान ने अपनी तसहीह में और इब्ने मरदवीया और दारे कुतनी ने अबू उमामा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस ने हर नमाज़ के बाद आयतुल-कुर्सी पढ़ी वह मरते ही जन्नत में जाएगा। बैहक़ी ने भी ऐसी ही रिवायत की।

मैयत के जिस्म के गलने और सड़ने का बयान अंबिया और चन्द अश्ख़ास मुस्तस्ना हैं

(१) बुख़ारी ने जुन्दुब बिजली से रिवायत की। सबसे पहले इंसान का पेट सड़ता है।

(२) अबू नईम ने वहब बिन मंबा से रिवायत की, वह फरमाते हैं कि मैंने बाज़ किताबों में पढ़ा कि अल्लाह तआला फरमाता है कि अगर मैं मैयत के जिस्म को न सड़ाता तो लोग मुर्दों को घर में ही रखे रहते।

(३) इब्ने असाकिर ने ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरफूअन रिवायत की कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मैंने बन्दों पर तीन चीज़ों से फराख़ी की, ग़ल्ला में घिन पैदा कर दिया वरना बादशह उसको जमा कर लेते जैसे सोना, चांदी जमा करते हैं, मैयत का जिस्म सड़ा दिया वरना कोई मैयत को दफन न करता और ग़मगीन को उसका ग़म भुला दिया वरना वह कभी चैन से न बैठता।

(४) इब्ने असाकिर ने अबू क़लाबा से रिवायत की। अल्लाह तआला ने रूह से ज़ाइद अच्छी चीज़ पैदा न फरमाई। यह जिस से निकाल ली जाए उसमें बदबू पैदा हो जाती है।

(५) मुस्लिम ने अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, कि इंसान की हर चीज़ गल सड़ जाती है सिवाए रीढ़ की हड्डी के, और उसी से क़यामत के दिन उसे मुरक्कब किया जाएगा।

(६) मुस्लिम, अबू दाऊद और निसई ने अबू हुरैरा से रिवायत की

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बनी आदम के तमाम अज्ज़ा को मिट्टी खा लेती है सिवाए रीढ की हड्डी के और इसी से इंसान मुरक्कब है।

(७) शरेह मवाक़िफ़ कहते हैं कि क्या अल्लाह अज्ज़ाए बदनीया को मअ्दूम कर देता है और फिर पैदा फरमाता है या मुंतशिर कर देता है और फिर मुज्तमा फरमाएगा? हक़ तो यह है कि इस सिलसिले में कोई सराहत मौजूद नहीं तो किसी चीज़ पर यक़ीन नहीं कर सकते। और अल्लाह तआला के क़ौल हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवाए खुदा के। में कोई दलील नहीं, क्योंकि जिस तरह आदाम हलाक है इसी तरह तफ़रीक़ भी हलाक है।

(८) अबू दाऊद व हाकिम ने औस बिन औस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जुमा के रोज़ मुझ पर बकसरत दरूद व सलाम भेजो क्योंकि तुम्हारा दरूद व सलाम मुझ पर पेश किया जाता है। तो सहाबा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम आप पर दरूद क्यों भेजें, हालांकि आप तो मिट्टी में मिल चुके होंगे? आपने फरमाया कि अल्लाह ने ज़मीन पर नबियों के जिस्मों को हराम कर दिया है।

(६) इब्ने माजा ने अबुद्दर्दा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। जब भी तुम मुझ पर दरूद भेजते हो, तो तुम्हारा दरूद मुझ पर पेश किया जाता है तो सहाबा ने अर्ज़ की क्या मौत के बाद भी? आपने फरमाया कि हां मौत के बाद भी, क्योंकि अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अंबिया के अज्साम को हराम फरमा दिया है।

(१०) मालिक ने अब्दुर्रहमान बिन अबी सअ्सआ से रिवायत की कि उनको मालूम हुआ है कि अमरु बिन हमूह और अब्दुल्लाह बिन अमरु की क़ब्रों को सैलाब ने खोल दिया। दोनों एक ही क़ब्र में थे और जंगे उहुद में शहीद हुए थे, तो लोगों ने उनको खोदा कि दूसरी जगह मुन्तक़िल कर दें तो ऐसा मालूम हुआ कि उनको अभी किसी ने दफन किया है। उन में से एक अपने ज़ख़्म पर हाथ रखे थे। हाथ को हटाया गया मगर उन्होंने फिर वहीं रख लिया हालांकि यह वाक़या ग़ज़्व-ए-उहुद के छियालिस साल बाद का है।

(११) बैहक़ी ने दलाइल में दूसरी सनद से इस वाक़्या को बयान किया कि जब उनका हाथ हटाया गया तो ख़ून बह निकला। फिर जब हाथ रख दिया तो बन्द हो गया। कहा जाता है कि हज़रत मुआविया ने इरादा किया कि पानी का चश्मा निकालें, तो एलान कर दिया कि यहां जिसका साथी दफन हो, आ जाए। तो लोग आए और अपने मुर्दों को देखा तो वह बिल्कुल ताज़ा थे हत्ता कि एक शख़्स के पैर पर फावड़ा लग गया तो ख़ून बह निकला। इस मौक़ा पर अबू सईद खुदरी ने कहा कि इसके बाद कोई मुंकिर इंकार न करेगा। लोग मिट्टी खोद रहे थे तो उनको एक मिट्टी से मुश्क की खुशबू आई। वाक़ेदी ने अपने शुयूख़ से इसी क़िस्म की रिवायत की।

(१२) बैहक़ी ने दलाइल में (मौसूलन) जाबिर से रिवायत करते हुए इतना इज़ाफ़ा किया कि फावड़ा हज़रत हम्ज़ा के पैर पर लग गया और उस से ख़ून बह निकला।

(१३) तबरानी इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तलबे सवाब के लिए अज़ान देने वाला शहीद की मानिन्द है। जब वह मरता है तो उसकी क़बर में कीड़े नहीं पड़ते। क़ुरतबी कहते हैं कि बज़ाहिर उसका मक़्सद यह है कि उसको कीड़े नहीं खाते।

(१४) अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने अपनी मुसन्नफ़ में मुजाहिद से रिवायत की कि मुअज़्ज़िनों की गर्दनें लम्बी होंगी और उनकी क़ब्रों में कीड़े न पड़ेंगे।

(१५) इब्ने मुन्दह ने जाबिर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब हाफिज़ मरता है तो खुदा तआला ज़मीन को हुक्म देता है कि उसके जिस्म को न खाना तो ज़मीन कहती है कि ऐ खुदावन्द! मैं उसके जिस्म को कैसे खा सकती हूं, इसमें तो तेरा कलाम है। इब्ने मुन्दह कहते हैं कि इस सिलसिला में अबू हुरैरा और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु की अहादीस भी हैं।

ख़ात्मा रूह से मुतअल्लेक़ा फ़वाइद के बयान में

इन में से अक्सर मैंने इब्ने क़ैयिम की किताबुर्रूह से लिए हैं।

(१) शैख़ैन ने इब्ने मसऊद से रिवायत की। मैं हुज़ूरे अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह मक्का के एक वीराने में था। आप एक शाख़ पर टेक लगाए हुए थे, तो कुछ यहूद गुज़रे और उन्होंने कहा कि इन से रूह के बारे में पूछो। बाज़ ने कहा कि न पूछो। बिल-आख़िर फ़ैसला पूछने पर ही हुआ। वह बढ़े और कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रूह क्या है? तो आप लकड़ी पर टेक लगाए बदस्तूर खड़े रहे, हत्ता कि मुझे गुमान हुआ कि आप पर वह्य आ रही है। फिर आपने फरमाया कि यह तुझ से रूह के बारे में पूछते हैं। कह दे कि रूह मेरे रब के आलमे अम्र से है और तुम्हें बहुत ही कम इल्म दिया गया है। अब रूह के बारे में दो गरोह हो गये। एक ख़्याल है कि इस सिलसिला में गुफ़्तगू न की जाए क्योंकि यह खुदा का भेद है। यह तरीक़ा पसन्दीदा है।

जुनैद का क़ौल है कि रूह का इल्म खुदा के साथ है, उस ने यह अपनी मख़्लूक़ को नहीं दिया। तो इसमें बहस न करनी चाहिए, हां यह मौजूद है। यही इब्ने अब्बास और अक्सर सलफ़ से मन्कूल है। चुनांचे इब्ने अब्बास रूह की तफ़सीर न करते थे।

(२) इब्ने अबी हातिम ने इकरमा से रिवायत की कि इब्ने अब्बास से रूह के बारे में सवाल किया गया तो आपने फरमाया कि रूह मेरे रब के आलमे अम्र से है, तुम उसकी हक़ीक़त को नहीं पा सकते। तुम वही कहो जो खुदा ने फरमाया और उसके नबी ने सिखाया कि वमा ऊतीतुम मिनल-इल्मे इल्ला क़लीला।

(३) इब्ने जरीर ने अपनी सनद से रिवायत की कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो यहूद ने कहा कि यही हमारी किताब में है।

मैं यह कहता हूं कि यह वह मस्अला है जिस को खुदा तआला ने कुरआन और तौरात व इंजील में पोशीदा रखा। तो उसका इल्म सही किस को हो सकता है।

अबुल-क़ासिम कुशैरी ने कहा कि अफ़ज़ल तरीन फ़लासफ़ा इस मस्अले में ख़ामोश हो गये और कहा कि यह तक़्दीर की तरह एक भेद है। इब्ने बत्ताल कहते हैं कि उसके इल्म से ख़ल्क़ को महरूम करने का फाइदा यह है कि वह अपने इज्ज़ को जान लें। कुरतबी कहते हैं कि उसमें तंबीह है कि ऐ इंसान जब तू अपनी हक़ीक़त के पहचानने से आजिज़ है तो अपने ख़ालिक़ की हक़ीक़त क्योंकर पहचान सकता

है? यह बिल्कुल ऐसा है जैसे इंसान की निगाह खुद अपने आपको नहीं देख सकती।

एक फिरक़े ने उसकी हक़ीक़त पर बहस की है। इमाम नौवी कहते हैं कि इस में सही तरीन क़ौल इमामुल-हरमैन का है कि यह एक लतीफ़ जिस्म है जो कसीफ अज्साम में इस तरह दाख़िल है जिस तरह सब्ज़ लकड़ी में पानी।

जो लोग कहते हैं कि रूह का इल्म किसी को न था वह इस बात में मुख़्तलिफ़ है। कि आया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी था या नहीं? इब्ने अबी हातिम अपनी तफ़सीर में कहते हैं कि हम को अब्दुल्लाह बिन बुरीदह से रिवायत पहुंची है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम की वफ़ात हो गई और आपको रूह की हक़ीक़त का इल्म न हुआ। और एक गरोह कहता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रूह का इल्म था लेकिन बताने का हुक्म न था। यह इख़्तिलाफ़ बिल्कुल इल्मे साअत (क़यामत) के इख़्तिलाफ़ की तरह है।

(४) अक्सर मुसलमानों का मज़्हब है कि रूह भी एक जिस्म है और किताब व सुन्नत व इज्मा से भी यही साबित है क्योंकि उसके लिए सिफाते अज्साम साबित हैं, मसलन क़ब्ज़ करना, छोड़ना लेना, निकालना, निकलना, आराम पाना, तक्लीफ उठाना, जाना, वापस आना, राज़ी होना, नाराज़ होना, मुन्तक़िल होना, खाना पीना, सैर करना, आराम करना, लटकना, बोलना, पहचानना, न पहचानना वग़ैरह। यह सब वह सिफात हैं जो किसी अर्ज़ को लाहिक़ नहीं हो सकतीं। फिर यह चीज़ भी शक से बाला तर है कि रूह अपने ख़ालिक़ को पहचानती है और मअ्क़ूलात व मुदरिकात को जानती है यह सब उलूम अर्ज़ हैं और अगर रूह को भी अर्ज़ कहें तो क़यामुल-अर्ज़ बिल-अर्ज़ लाज़िम आएगा और यह मुहाल है। उस्ताद अबुल-क़ासिम कुशैरी अलैहिर्रहमा कहते हैं कि रूह की सूरत का अज्सामे लतीफ़ा से होना बिल्कुल फरिश्तों और शयातीन (जिन्नात) की मानिन्द है।

(५) सही यह है कि रूह और नफ़्स एक ही चीज़ है। अल्लाह तआला ने फरमाया कि ऐ मुत्मइन नफ़्स! अपने रब की तरफ लौट जा। दूसरी जगह फरमाया कि रू का नफ़्स को ख़्वाहिश से। कहते हैं फ़ज़्तु नफ़्सेही यानी मर गया और जान निकल गई।

बाज़ कहते हैं कि जो रूह क़ब्ज़ की जाती है वह नफ़्स के अलावा है। उसकी ताईद वह तफ़सीर करती है जो इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास के हवाले से, अल्लाह तआला के क़ौल अल्लाहु यतवफ़्फ़ल-अंफ़ुसा हीना मौतिहा। में की कि इंसान में रूह और नफ़्स है और उनका तअल्लुक़ ऐसा है जैसा आफताब का अपनी शुआ से। पस नींद में अल्लाह नफ़्स को क़ब्ज़ कर लेता है और रूह को छोड़ देता है, वह इंसान में रहती है। अब अगर अल्लाह तआला उसके क़ब्ज़ का भी इरादा करे तो रूह को क़ब्ज़ कर लेता है और इंसान मर जाता है। और अगर अभी इस इंसान की ज़िन्दगी होती है तो नफ़्स को उसकी जगह वापस कर देता है।

मक़ातिल कहते हैं कि इंसान के लिए ज़िन्दगी, नफ़्स और रूह तीन चीज़ें हैं जब इंसान सोता है तो उसका वह नफ़्स निकल जाता है जिस से वह चीज़ों को पहचानता है और पूरी तरह नहीं निकलता, बल्कि इस तरह जैसे कि कोई रस्सी खींच दी जाए। तो वह नफ़्स ख़्वाब देखता है और ज़िन्दगी रूह के हमराह जिस्म ही में रहती है जिस से इंसान सांस लेता है। जब जिस्म को हिलाया जाए तो वह चश्म ज़दन से ज़्यादा जल्दी वापस आ जाती है। जब अल्लाह तआला उसको मारने का इरादा करता है तो उस नफ़्स को रोक लेता है। आपने फरमाया कि यह नफ़्स ख़्वाब देख कर वापस आता है और रूह को इत्तिला देता है और रूह क़ल्ब को इत्तिला देती है। इस तरह इंसान जान लेता है कि उस ने क्या देखा और क्या न देखा।

(६) अबू शैख़ ने किताबुल-उज़मा में और इब्ने अब्दुल-बर ने तम्हीद में वहब बिन मंबा से रिवायत की कि इंसान का नफ़्स भी चौपायों की तरह पैदा किया गया है कि वह ख़्वाहिशें रखता है और इंसान को बुराई की तरफ बुलाता है और उसकी क़्यामगाह पेट है। इंसान की फज़ीलत उसकी रूह से है, उसका मस्कन दिमाग़ है इंसान उस से ज़िन्दा रहता है और यही इंसान को भलाई की दावत देती है। फिर वहब ने अपने हाथ पर नाक से हवा निकाल कर कहा कि देखो यह ठण्डी है क्योंकि रूह से है और फिर हवा ख़ारिज की, और कहा कि यह गर्म है, क्योंकि नफ़्स से है। उनकी मिसाल मियाँ बीवी की सी है कि जब रूह भाग कर नफ़्स के पास आ जाती है तो इंसान आराम पाता है और सो जाता है और जब जागता है तो रूह अपनी जगह आ जाती है। उसकी तौज़ीह

यह है कि जब तुम सो कर जागते हो तो ऐसा महसूस करते हो कि कोई चीज़ तुम्हारे सर में हरकत कर रही है। दिल की मिसाल बादशाह की सी है और आज़ा ख़ादिम हैं, जब नफ़्स बुराई का हुक्म देता है तो आज़ा मुतहर्रिक हो जाते हैं मगर रूह रोकती है और ख़ैर की दावत देती है। अगर दिल मोमिन होता है तो रूह की इताअत करता है, और अगर काफिर होता है तो नफ़्स की इताअत करता है और रूह की मुख़ालिफ़त करता है।

(७) इब्ने सअद ने अपनी तब्क़ात में वहब बिन मंबा से रिवायत की कि अल्लाह तआला ने इब्ने आदम को मिट्टी और पानी से पैदा किया। फिर उस में नफ़्स पैदा किया जिसके सबब खड़ा होता है और बैठता है, सुनता, देखता और जानता है और जिन चीज़ों से चौपाए बचते हैं उन से ही वह बचता है। फिर अल्लाह तआला ने रूह पैदा की, जिस के सबब उसने हक़ व बातिल की पहचान की। हिदायत और गुम्राही को जाना। इसी की वजह से डरा और आगे बढ़ा और कामों के अंजाम को मालूम किया।

इब्ने अब्दुल बर ने तम्हीद में कहा कि अबू इस्हाक़ मुहम्मद बिन क़ासिम बिन शाबान ने ज़िक्र किया कि अब्दुर्रहमान जो मालिक के मसाहिब थे उन्होंने फरमाया कि नफ़्स इंसान के जिस्म की तरह एक जिस्म है और रूह जारी पानी की मानिन्द है और दलील यह आयत है कि : अल्लाहु यतवफ़्फ़ल-अंफुस, अल्लाह नफ़्सों को मौत देता है। फिर यह कि अल्लाह सोने वाले के नफ़्स को मौत दे देता है और उसकी रूह चढ़ती और उतरती रहती है और नफ़्स जगह-जगह सैर करता है। जब अल्लाह तआला उस नफ़्स को जिस्म में वापस आने की इजाज़त दे देता है तो जिस्म जाग उठता है। उनके नज़्दीक नफ़्स और रूह दो अलग-अलग चीज़ें हैं और रूह उस पानी की मानिन्द है जो बाग़ में जारी रहता है और जब खुदा तआला उस बाग़ को फासिद करना चाहता है, पानी को रोक लेता है। इसी तरह रूहे इंसानी और उसके जिस्म का हाल है।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि उबैदुल्लाह इब्ने अबी जाफर ने फरमाया कि मैयत को जब तख़्त पर लेकर चलते हैं तो उसकी रूह एक फरिश्ता के हाथ में होती है जो उसके हमराह चलता है फिर जब उसको नमाज़

के लिए रखते हैं तो वह रुक जाता है। और फिर जब दफन के लिए लेकर चलते हैं तो वह भी साथ चलता है। और जब उसको क़ब्र में रख दिया जाता है तो अल्लाह उसकी रूह को वापस कर देता है ताकि फरिश्ते सवाल व जवाब करें जब सवाल करने वाले फरिश्ते फिरते हैं तो एक फरिश्ते को हुक्म होता है कि वह उसके नफ़्स को निकाल ले और जहां अल्लाह हुक्म दे पहुंचा दे। यह फरिश्ता मलकुल-मौत के मददगारों में से होता है। शैख़ अज़्ज़ुद्दीन इब्ने सलाम कहते हैं कि हर इंसान में दो रूहें हैं : एक रूह यक़्ज़ा है, यानी वह रूह कि जब वह जिस्म में हो तो आदतन इंसान बेदार होता है और जब वह निकल जाए तो आदतन इंसान सो जाता है और यह इंसान ख़्वाब देखता है और दूसरी रूहे हयात कि जब वह जिस्म में हो तो आदतन वह जिस्म ज़िन्दा होता है। और जब उसे निकाल दिया जाए, तो आदतन वह मर जाता है और जब वह रूह लौट आए तो जिस्म ज़िन्दा हो जाता है। यह दोनों रूहें इंसान के बातिन में हैं, उनका ठिकाना अल्लाह ही जानता है।

बाज़ मुतकल्लेमीन कहते हैं कि रूह क़ल्बे इंसानी के क़रीब है। इब्ने अब्दुस्सलाम कहते हैं कि बहुत मुम्किन है कि रूह क़ल्ब में हो। नीज़ यह कि मुम्किन है तमाम अरवाह लतीफ़ हों और मुम्किन है कि मुमिनीन की अरवाह के साथ ख़ास हो। रूहे हयात और रूहे यक़्ज़ा के वजूद पर यह आयत दलालत करती है कि अल्लाह नफ़्सों को वफात देता है। तो जिनके लिए उसने मौत का फ़ैसला कर दिया है उन्हें रोक लेता है और यह रूहे हयात है। और जिनके लिए ज़िन्दगी मुक़द्दर है उन्हें छोड़ देता है और यह रूहे यक़्ज़ा है। रूहे हयात मरती नहीं बल्कि आसमान की तरफ उठ जाती है। अब अगर काफिर की रूह होती है तो उसके लिए आसमान का दरवाज़ा नहीं खुलता है उसे ज़मीन पर वापस कर दिया जाता है। और मुमिनीन के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं ताकि वह रब्बुल-आलमीन के हुज़ूर पेश हो सकें। शैख़ अज़्ज़ुद्दीन की तरह इमाम ग़ज़ाली भी रूह के लिए क़ल्ब ही को मुस्तक़िर मानते हैं। और मुझे इस सिलसिले में एक हदीस भी मिली है!

(८) इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में ज़ुहरी से रिवायत की कि ख़ुज़ैमा बिन हकीम हुज़ूर की बारगाह में फतहे मक्का के रोज़ आए और

अर्ज़ की कि मुझे रात की तारीकी, दिन की रौशनी और सर्दी में पानी की गर्मी और गर्मी में पानी की सर्दी और बादल और मर्द व औरत के पानी के ठहरने का हाल, और नफ़्स का मक़ाम, यह सब कुछ बताइए। तो उन्होंने हदीस ज़िक्र की और फरमाया कि नफ़्स की क़यामगाह दिल है और यह लोगों को ख़ून से सैराब करता है। जब क़ल्ब मर जाता है तो रगें मुन्क़ता हो जाती हैं।

(९) अहले सुन्नत का इज्मा है कि रूह हादिस है और मख़्लूक़ है। ज़िन्दीक़ों के अलावा इसमें किसी ने इख़्तिलाफ़ न किया। इब्ने कुतैबा और मुहम्मद बिन नस्र मरुज़ी इज्मा के नक़्ल करने वाले हैं।

(१०) अब इस में इख़्तिलाफ़ है कि रूह पहले पैदा हुई या जिस्म। बाज़ कहते हैं कि रूह पहले पैदा हुई। चुनांचे मुहम्मद बिन नस्र और इब्ने हज़्म ने उस पर इज्मा का दावा किया। उनकी दलील यह है कि इब्ने मुन्दह ने अमर बिन मंबा से मरफ़ूअन रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने बन्दों की रूहों को बन्दों से दो हज़ार साल पहले पैदा किया तो जिन्होंने एक दूसरे को पहचाना वह मिल गईं और जिन्होंने न पहचाना वह मुख़्तलिफ़ हो गईं। नीज़ यह कि ज़ुर्रियते आदम को उनकी पुश्त से निकालने वाली अहादीस। नीज़ यह कि अल्लाह ने जब आदम को पैदा फरमाया तो उनकी पुश्त पर हाथ फेरा तो क़यामत तक पैदा होने वाली ज़ुर्रियत आपकी पीठ से निकल आई। हाकिम ने उसे अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। नीज़ हाकिम ने उबय बिन कअब से इज़ अख़ज़ा रब्बुका मिन बनी आदमा मिन ज़ुहूरेहिम। की तफ़सीर करते हुए लिखा कि अल्लाह तआला ने उन सबकी अरवाह को निकाला। उनको सूरत और कुव्वते गोयाई अता फरमाई तो उन्होंने गुफ़्तगू की और अल्लाह तआला से मुआहेदा कर लिया। बाज़ लोग कहते हैं कि जिस्म पहले पैदा हुए, चुनांचे कुरआन शरीफ़ में है। हल अता अलल-इंसाने हीना मिनद्दहरे लम यकुन शैअन मज़्कूरा। इंसान पर एक ऐसा ज़माना आया वह उस में कुछ भी न था।

(११) मरवी है कि पुतल-ए-इंसानी नफ़्ख़े रूह से चालीस साल क़ब्ल तक ठहरा रहा। इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि तुम्हारी पैदाइश इस तरह है कि तुम चालीस रोज़ तक मां के पेट में

रहे फिर अल्क़ा हुआ फिर मुज़्ग़ा हुआ। फिर फरिश्ता ने आकर रूह फूंक दी। नफ़ख़े रूह, और ख़ल्क़े रूह दो अलग-अलग चीज़ें और उनमें फ़र्क़ यह है कि रूह तवील अरसा से मख़्लूक़ है।

(१२) मुसलमानों के नज़्दीक रूह बदन के फना के बाद भी बाक़ी रहती है, इसमें फलासफ़ा का इख़्तिलाफ़ है। हमारी दलील अल्लाह तआला का यह क़ौल है कि हर नफ़्स मौत को चखने वाला है और ज़ाहिर है कि चखने वाला चखी जाने वाली चीज़ के बाद बाक़ी रहता है। उसके अलावा दूसरी दलीलों का मुफ़स्सल बयान गुज़रा। बाज़ कहते हैं कि क़्यामत के दिन फना हो जाएगी और फिर लौटाई जाएगी क्योंकि खुदा का वादा है कि कुल्लु मन अलैहा फानिन। जो भी ज़मीन पर है फना होगा। और बाज़ कहते हैं कि यह इल्ला मन यशअल्लाह से मुस्तस्ना है।

सुबकी ने अपनी तफ़सीर दुर्रे नज़ीम में कहा कि सही यह है कि रूह फना न होगी जैसे कि मैं इब्ने क़ैयिम ने अपनी किताब किताबुर्रूह में इस इख़्तिलाफ़ को ज़िक्र किया कि क्या रूहे बदन के बाद बाक़ी है या फना हो जाएगी। और फैसला यह दिया कि अगर ज़ाइक़ा मौत से मुराद जिस्म से जुदा होना है तो सही है और अगर मअ़दूम होना है तो तस्लीम नहीं क्योंकि रूह पैदा होने के बाद इज्माई तौर पर बाक़ी रहने वाली है। ख़्वाह नेमत में या ज़हमत में हो। इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ दमिश्क़ में अपनी सनद से ज़िक्र किया कि किसी ने सहनून बिन सईद से कहा कि एक शख़्स कहता है कि रूह भी बदन के साथ मर जाती है तो आपने फरमाया कि मआज़ल्लाह यह तो अह्ले बिदअत का क़ौल है।

(१३) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान अल-अरवाहल-जुनूदे मुजन्नदतुन में इख़्तिलाफ़ है कि उसके मानी क्या हैं। एक क़ौल तो यह है कि उससे मुराद ख़ैर व शर, सलाह व फ़साद में मुशबिहत है। ख़ैर, ख़ैर ही की तरफ रग़बत करेगा और बुरा, बुरे की तरफ़, तो रूहों का तआरुफ़ तबीअतों के लिहाज़ से होता है। जब तबीअतें मुत्तफ़िक़ हो जाती हैं तो मिल जाती और मुतआरिफ़ हो जाती हैं।

(१४) रूह अगरचे एक ही जिन्स है, ताहम अपने औसाफ़ के लिहाज़ से मुख़्तलिफ़ है हर क़िस्म की रूह अपनी हम शक्ल से मुहब्बत रखती है और मुख़ालिफ़ से नफ़रत करती है। तारीख़ में इब्ने असाकिर ने

अपनी सनद से हरम बिन सिनान से रिवायत की है कि वह कहते हैं कि मैं अवैस क़रनी के पास आया। मेरी और उनकी इससे क़ब्ल कभी मुलाक़ात न हुई थी, लेकिन आपने फौरन जवाब दिया कि व अलैकुम अस्सलाम या हरम इब्ने सिनान। मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि आपने मेरा और मेरे बाप का नाम क्योंकर पहचान लिया? तो आपने फरमाया कि जब मैंने तुमसे गुफ़्तगू की तो मेरी रूह ने तुम्हारी रूह को शनाख़्त कर लिया क्योंकि जिस्मों के नफ़्स की तरह रूहों का भी नफ़्स होता है और मोमिन की रूहें एक दूसरे को पहचानती हैं और अल्लाह की रहमत की वजह से बिला देखे एक दूसरे से मुहब्बत रखती हैं।

(१५) तूसी ने उयूनुल-अख़्बार में हज़रत आइश से रिवायत की कि मक्का में एक औरत थी जो कुरैश की औरतों के पास आती और उन्हें हंसाती थी। जब हिजरत करके मदीना आई तो मेरे पास आई। मैंने पूछा कि कहां ठहरी हो? कहा कि मदीना में फलां हंसाने वाली औरत के हां जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो दरयाफ़्त किया कि क्या फलां हंसाने वाली औरत तुम्हारे पास है? मैंने कहा कि हां। आपने फ़रमाया कि किसके यहां ठहरी है मैंने कहा कि फलां हंसा वाली औरत के पास। आपने फरमाया कि अल्हम्दु लिल्लाह रूहों का भी एक लश्कर है जिनका तआरुफ़ होता है वह मिल जाती हैं और जिनका तआरुफ़ नहीं होता वह नहीं मिलतीं।

(१६) इब्ने क़ैयिम कहते हैं कि जिस्म से जुदा होने के बाद रूहें एक दूसरे से क्योंकर मुम्ताज़ होती हैं, हत्ता कि बाज़ अरवाह दूसरी अरवाह से मिलती हैं और बाज़ नफ़रत करती हैं? तो उसका जवाब मज़्हबे अह्ले सुन्नत (खुदा उनमें इज़ाफ़ा करे) के मुताबिक़ यह है कि रूह एक ज़ात है जो चढ़ती उतरती है, मिलती और जुदा होती है, आती जाती है, मुतहर्रक होती और ठहरती है। उस पर एक सौ से ज़ाइद दलीलें हैं, उन में से चन्द यह हैं :

अल्लाह तआला फरमाता है कि क़सम है नफ़्स की और उसको बराबर करने वाले की पता चला कि नफ़्स बराबर किया हुआ है, जैसे कि बदन के बारे में फरमाया कि वह खुदा जिस ने तुझ को पैदा किया और बराबर किया। यानी नफ़्स को रूह के मुताबिक़ कर दिया तो बदन की बराबरी नफ़्स की बराबरी और तस्विया के ताबे है। यहीं से यह

भी मालूम हुआ कि नफ़्स बदन से एक ऐसी सूरत हासिल करता है जिस के बाइस वह दूसरे नुफूस से मुम्ताज़ क़रार पाता है। क्योंकि जिस तरह जिस्म नफ़्स से मुतअस्सिर होता है इसी तरह नफ़्स बदन से मुतअस्सिर होता है। और इस तरह वह एक इम्तियाज़ हासिल करता है नुफूस का इम्यिाज़ अब्दान के इम्तियाज़ से कहीं ज़ाइद है। कभी जिस्म एक दूसरे के मुशाबेह होते हैं मगर नुफूस क़तअन एक दूसरे से मुम्ताज़ रहते हैं। उसकी दलील यह है कि हम ने अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के जिस्मों का मुशाहिदा कभी नहीं किया हालांकि वह हमारे इल्म में एक दूसरे से मुम्ताज़ हैं और यह इम्तियाज़ उनके जिस्मों की वजह नहीं बल्कि उनके रूहानी सिफात के इख़्तिलाफ़ से है। हम दो सगे भाईयों की शक्ल व सूरत में बेहद मुशाबेहत पाते हैं मगर उनका अरवाह में पूरी मुख़ालिफ़त होती है। फिर बसा औक़ात हम एक क़बीह और बुरी शक्ल देखते हैं तो उसकी रूह को भी उसकी बदसूरती से कुछ न कुछ तअल्लुक़ होता है। जब किसी का बदन आफतज़दह होता है तो उसकी रूह भी कुछ न कुछ आफत रसीदा ज़रूर होती है। इसलिए समझदार लोग सूरत देख कर इंसान के लिए बातनी हालात का पता चलाते हैं।

जब हम किसी हसीन व जमील सूरत को देखते हैं तो वही हुस्न व ख़ूबी उसकी रूह में भी पाते हैं फिर मलाइका बदन और जिस्म न होने के बावजूद एक दूसरे से मुम्ताज़ होते हैं तो जिन्न और इंसानों की रूहें बतरीक़ औला मु ज़ होंगी। अद्दरतुल-फ़ाख़िरह में ग़ज़ाली अलैहिर्रहमा ने लिखा है कि मुसलमान की रूह शहद की मक्खी की सूरत पर होती है जब कि काफिर की रूह टिड्डी की शक्ल पर होती है। लेकिन उस चीज़ का हदीस में कोई वजूद नहीं, बल्कि हदीस में तो यह है कि इस्राफील अलैहिस्सलाम जब रूहों को पुकारेंगे तो मोमिन की रूहें भड़कदार नूर की मानिन्द आएंगी और काफिरों की अरवाह अन्धेरे की मानिन्द। फिर सबको जमा करके सूर में रखेंगे, फिर सूर फूंकेंगे। तो अल्लाह फरमाएगा कि मुझ को अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम हर रूह अपने जिस्म की तरफ वापस लौट जाए। तो रूहे शहद की मक्खियों की मानिन्द ज़मीन व आसमान को पुर कर देंगे।

और हर रूह अपने जिस्म की जानिब चली जाएगी और जिस्म में इस तरह दाख़िल होगी जैसे जिस्म में ज़हर सरायत करता है। तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने इस क़ौल में रूहों को शक्ल व सूरत में शहद की मक्खियों से तश्बीह नहीं दी है बल्कि महज़ निकल कर मुंतशिर होने में शहद की मक्खियों से तश्बीह दी है। यह बिल्कुल ऐसा है जैसे हक़ तआला ने फरमाया कि वह क़ब्रों से मुंतशिर टिड्डियों की मानिन्द निकलेंगे। इस हदीस में यह भी है कि मुमिनीन को रूहें जाबिया से और काफिरों की बरहूत से आएंगी। और वह अपने जिस्मों को इस तरह पहचानती हैं जिस तरह तुम अपनी सवारियों को बल्कि उस से भी ज़ाइद। मुमिनों की रूहें सफेद होंगी और काफिरों की सियाह इब्ने मुन्दह, इब्ने अब्बास से रिवायत करते हैं कि क़यामत के रोज़ लोगों में इख़्तिलाफ़ होगा हत्ता कि रूह व जिस्म में भी इख़्लिाफ़ होगा। रूह जिस्म से कहेगी कि यह काम तूने किया है और जिस्म रूह पर इल्ज़ाम रखेगा। तो अल्लाह तआला एक फरिश्ते को फैसला के लिए भेजेगा। फरिश्ता कहेगा कि तुम्हारी मिसाल तो अंधे और लंगड़े की सी है कि वह एक बाग़ में दाख़िल हो गये और खाने लगे। मालिक ने पकड़ लिया। तो अब तुम खुद बताओ कि मुजिरम कौन है, तो रूह और जिस्म दोनों बोले कि दोनों ही मुजिरम हैं क्योंकि तोड़ने वाला लंगड़ा था और उसको लाने वाला अंधा। फरिश्ता बोला कि बस तुमने खुद अपने ही ख़िलाफ़ फैसला कर लिया। यानी जिस्म रूह के लिए बमंज़िल-ए-सवारी है।

दारु कुतनी ने अनस से मरफून यह रिवायत की कि जिस्म क़यामत के दिन कहेगा कि मैं तो शहतीर के मानिन्द पड़ा था, यह बस कारगुज़ारी रूह की है। रूह कहेगी कि मैं तो हवा के मानिन्द थी, यह सब कारगुज़ारी जिस्म की है। तो फरिश्ते ने उनको लंगड़े और अंधे की मिसाल दी उसको अब्दुल्लाह बिन अहमद ने ज़वाइदुज़्ज़हद में रिवायत किया। उन्होंने रूह के बजाए क़ल्ब का ज़िक्र किया। इस से पता चला कि रूह का मुस्तक़िर क़ल्ब है।

वल्लाहु आलमु बिस्सवाब व इलैहिल-मरजिओ वल-मआब।